॥ श्री महावीराय नम ॥

स्वास्थ्य बोधामृत

परमपूज्य महान् योगी, उग्र तपस्वी,
सौम्य मूर्ति, चारित्र चक्रवर्ती
आचार्यरत्न श्री १०८ श्री धर्मसागरजी महाराज
के
शुभाशीर्वाद से प्रेरित

संकलनकर्त्ता –
धर्म दिवाकर श्री १०५ क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज

सम्पादक –
ब्र० प्यारेलालजी बड़जात्या
अजमेरवाले

प्रतिष्ठाता –
श्री दिगं. जैन आचार्य धर्मसागर व्रती आश्रम
सीकर (राजस्थान)

卐

स्वास्थ्य बोधामृत

•

संकलनकर्त्ता

धर्म दिवाकर श्री १०५ क्षुल्लकरत्न सिद्धसागरजी महाराज

•

प्रस्तावना

क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज

•

सम्पादकीय

ब्र० प्यारेलालजी बड़जात्या

•

प्रकाशकीय

ब्र० प० विद्याकुमारजी सेठी

प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान
(१) श्री दि० जैन आचार्य धर्मसागर व्रती आश्रम
सीकर (राजस्थान)
(२) श्री चन्द्रसागर स्मारक ट्रस्ट, लाडनू (राजस्थान)

•

मुद्रक
मनोज प्रिन्टर्स
गोदीको का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर (राज०)

•

प्रथमावृत्ति ५०००
द्वितीयावृत्ति ५०००

•

माघ कृष्णा ६, वीर० नि० स० २५०८
(स्व० श्री १०८ आचार्य महावीर कीर्त्तिजी
महाराज की १०वी पुण्य तिथि)

•

मूल्य .
अध्ययन और स्वास्थ्य लाभ

卐

स्व० आचार्यकल्प १०८ श्री चन्द्रसागरजी महाराज

हे मुनिपुङ्गव ! शत शत वन्दन !

जब धर्म मार्ग अवरुद्ध हुआ, पथ भूल भटकते थे प्राणी ।
सद्‌गुरु के उपदेश बिना, नहीं जान सके थे जिनवाणी ।।
धर दीक्षा मुनि-मार्ग बताया, स्वयं बने निश्चल ध्यानी ।
प्रणम् श्रीगुरु चन्द्र सिन्धु को, जिनकी महिमा सब जगजानी ।।

(आर्यिकारत्न श्री सुपार्श्वमतीजी)

आचार्यकल्प श्री चन्द्रसागरजी महाराज का तप और त्यागमय जीवन आज के साधु वर्ग के लिए आदर्श प्रस्तुत करता है, आप अपनी उच्चतम चरित्र विशुद्धता से अपने जीवन को उन्नत बनाते चले गये, यद्यपि आज आपका पार्थिव शरीर तो नही है, परन्तु आपके बताये हुए मार्ग पर चलने वाले साधु एव श्रावको की शृ खला जैन धर्म को उन्नत बनाये हुए है । आपका जीवन रत्नत्रय की निधि के आलोक से आलोकित था, जिस व्यक्ति ने आपको वाणीरूपी शीतल चान्दनी का आश्रय लिया वह सन्मार्गगामी बन गया, मारवाड प्रात मे आपने जैन धर्म की दुन्दुभि वजाकर सर्व साधारण का जो उपकार किया, वह इतिहास के पन्नो पर अकित रहेगा। आप आत्मध्यान और कठिन तपश्चरण के बल से नाना प्रकार की परिषदो को हसते हंसते सहन करने की क्षमता रखते थे, आपका अधिकतर समय आत्म निरीक्षण–परिवीक्षण करके तत्त्वो का चिन्तन करने मे लगता था। इसके अतिरिक्त मुमुक्षुओ को तथा पथच्युत भोले मानवो को सद्‌बोध देने मे कल्प वृक्ष सदृश था। आपके उपदेशो मे निश्चय और व्यवहार निमित्त और उपादान, द्रव्य निरूपण, तत्त्वदशन, साधु और श्रावक की चर्या, कर्म–मीमासा, अनेकान्त अपरिग्रह और अहिसा आदि विषयो का सारगर्भित विवेचन होता था, आप सस्मरण के आलोक मे परम वन्दनीय साधुराज थे। ऐसे योगीराज की आत्मा को मै मन-वचन और कर्म से सिर झुकाकर नमोस्तु करता हुआ अपने को धन्य मानता हूँ।

चरण सेवक –

क्षुल्लक सिद्धसागर

स्व. आचार्यवर्य १०८ श्री महावीरकीर्तिजी महाराज

स्वर्गीय तपोनिधि १०८ आचार्य श्री महावीरकीर्तिजी महाराज वर्त्तमान की स्वपरोद्धारक महान् विभूतियों में से एक थे, आप विशिष्ट सिद्धान्तज्ञ और अनेक भाषा के प्रज्ञा-पुञ्ज थे। आप आत्म निष्ठा की ओर अत्यन्त तन्मय रहते थे, आपने अपने जीवन काल में अनेकानेक जीवो को आत्म-कल्याण के पथिक बनाये। आप निरन्तर स्वाध्याय, नि स्पृहवृत्ति, आगमानुसार चर्या, जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति मे त्रियोगरत, सन्मार्ग-प्रवर्त्तक, ध्यानासक्त तथा विशुद्ध चारित्र के परिपालक, तीर्थ प्रेमी आगमभक्त साधुरत्न थे। आपकी मधुरवाणी का अमृत-पान जिसने कर लिया वह व्यक्ति मिथ्यात्व का परित्याग करके आत्मोन्मुख बन गया। आपके द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण करने वाला मानव मानवोचित गुणो से परिपूर्ण हो गया आज आप पार्थिव देह मे नही हैं तथापि आपको कीर्ति की सुगन्ध शेष है, जिससे मन मानस सुवासित होता रहता है। अद्यतन मुनिवर्ग मे आपका सर्वोपरि स्थान था, आपके सघ की परम्परा आज भी धर्म की मर्यादा को लिए हुए देश के कोने-कोने मे विहार करके आपका नाम अमर कर रही है। आपका जीवन साधना की आँच मे तपकर पूर्ण रूपेण कुन्दनवत् निखर चुका था, आपके सरल व्यवहार, अगाधवात्सल्य, अपरिमित वैयावृत्य भावना और प्राणीमात्र पर अनुकम्पा आदि से स्पष्ट प्रतीत होता था कि आपके हृदय मे अथाह धर्मानुराग की गगा बहती है। ऐसे गुरुदेव के चरण कमलों मे मैं त्रिधा नमोस्तु करता हूँ।

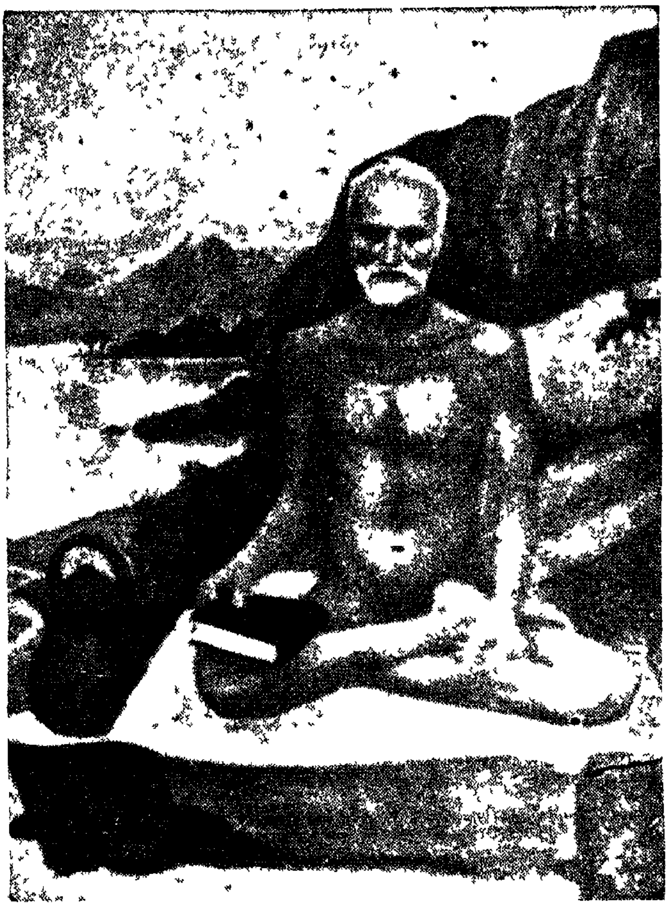
चरणानुयायी—
क्षुल्लक सिद्धसागर

स्वास्थ्य बोधामृत

स्वर्गीय परमपूज्य, आर्षमार्गप्रवर्तक, उग्रतपस्वी

निर्भीक-ओजस्वी वक्ता

आचार्यकल्प १०८ श्री चन्द्रसागरजी महाराज



जन्म माघ कृष्णा त्रयोदशी, विक्रम सम्वत् १६४०

समाधि फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा, विक्रम सम्वत् २००१

स्वास्थ्य बोधामृत

स्वर्गीय परम पूज्य, सिद्धक्षेत्रवन्दना-भक्तशिरोमणि

तरण-तारण, तपोनिधि, आचार्यवर्य

श्री १०८ श्री महावीरकीर्तिजी महाराज



जन्म	मुनिदीक्षा	समाधि
वि स १६६७	वि स १९९९	मेहसाना, ६ १-१९७२

महायोगेश्वरा धीरा, मनसा शिरसा गिरा ।

वन्द्यास्ते साधवो नित्य सुरैरपि सुवेष्टिता ।।



समर्पण

मेरे जीवन के निर्माण, विकास एवं अभ्युदय में जिन
महापुरुष का आशीर्वाद बीज बनकर रहा और
जिनका वरदहस्त मेरे दर्शन, ज्ञान व चारित्र की
दिशा को सदा प्रोत्साहित करता रहा, उन
श्रद्धेय गुरुदेव स्व० परमपूज्य प्रात
स्मरणीय, तरण-तारण, जगद्वन्द्य,
शतेन्द्र नमस्करणीय, चारित्र
शिरोमणि

दि० जैनाचार्य श्री १०८ महावीरकीर्त्तिजी महाराज

की

आठवीं पुण्य तिथि के
उपलक्ष्य में, उनके प्रशस्त मार्गा-
नुयायी, परमपूज्य चारित्र-चक्रवर्त्ती, योगीन्द्र
चूडामणि, सतत प्रसन्न मुख, वर्तमान मे जैनधर्म के
प्रमुख पुरस्कर्ता, अद्वितीय सन्त,

गुरुवर श्री १०८ आचार्य धर्मसागरजी महाराज

के

पुनीत करकमलों मे अनन्य श्रद्धा एव भक्ति पूर्वक

卐 सादर समर्पित 卐

क्षुल्लक सिद्धसागर
(लाडनूं वाला)

卐 ॐ 卐
卐卐 卐卐

अनन्य श्रद्धा एवं भक्ति से आप्लावित हृदय के उद्‌गार

卐

हे परमपूज्य ! शत-शत वन्दन ।
हे विश्ववन्द्य ! शत अभिनन्दन ।।

卐 卐

चन्द्रसिन्धु की छाया में रह, निर्मल चन्द्रसमान हुए ।
वीरसिन्धु के पद चिह्नों चल, जग में अति प्रख्यात हुए ।।
धन्य आपके त्याग अरु तप को, अमर रहेगी भव्य कहानी ।
युग युग तक सब याद करेंगे, गुरुवर आपकी मीठी वाणी ।।

卐 卐

हे परमशांत ! हे वीतराग ! हे सौम्यमूर्ति ! हे तेजधाम ।
हे बालब्रह्म अद्वितीय सन्त ! तव चरणों में शत शत प्रणाम ।।

क्षुल्लक सिद्धसागर

卐 卐 卐

परम पूज्य १०८ आचार्य श्री धर्मसागरजी महाराज

वर्तमान समय मे दिगम्बर जैन मुनिराजों में, आचार्य धर्मसागरजी महाराज का जीवन, अत्यन्त गौरवपूर्ण एवं श्रद्धा के आधार का केन्द्र है, सरल हृदय और सत्वेषु मैत्री भावना के कारण आप लोकोत्तर साधुराज हैं, आपकी आगम निष्ठा एवं तपश्चर्या श्लाघनीय है, आपकी सौम्यभाव सयुक्त छवि का अवलोकन कर मानव समता रस का पान कर सकता है, आपके मुख पर रहने वाली सतत मुस्कान, उत्तम-क्षमा और उत्कृष्ट सहिष्णुता का परिचय कराती है, नीतिकारो ने कहा है कि "वक्त्रं वक्ति हि मानसम्" अर्थात् मुख की चेष्टा एव बातचीत से मानव के हृदय का पता लगता है, आपकी वाणी मे भी अद्भुत आकर्षण है। स्वामी समन्तभद्राचार्य ने साधु का लक्षण बतलाते हुए कहा है कि—

विषयाशावशातीतो, निरारम्भोऽपरिग्रह ।
ज्ञानध्यानतपोरक्त स्तपस्वी स प्रशस्यते ॥१॥

उल्लिखित गुणो की साक्षात् मूर्त्ति, पूज्य गुरुवर धर्मसागरजी महाराज मे विद्यमान है, आप निरन्तर ज्ञान-ध्यान और तपश्चरण में तल्लीन रहते हैं, आरम्भ-परिग्रह से आप कोसो दूर रहते हैं।

आपने देश के कोने-कोने मे विहार करके धर्म की प्रभावना को सम्बल दिया है, विशेषकर भारत की राजधानी दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश मे उल्लेखनीय प्रभावना हुई है, आपके उज्ज्वल चारित्र के प्रभाव से प्रभावित होकर अनेकानेक प्राणियो ने सन्मार्ग अपनाया है, आपके धर्मोपदेश मे धर्म सिद्धान्त और कर्त्तव्य आदि का समावेश होता है, जो पुण्यात्मा एक बार भी आपका दर्शन कर लेता है, वह आनन्दित होकर अपना अहोभाग्य मानने लगता है, ऐसे परम तपस्वी, तरण-तारण पूज्य गुरुदेव के चरण कमलो मे मेरा शत शत वन्दन! शत शत वन्दन! शत शत वन्दन!

हे परम पूज्य! शत शत वन्दन!
हे विश्ववन्द्य! शत अभिनन्दन!

चरण चञ्चरीक
क्षुल्लक – सिद्धसागर।

'धर्मदिवाकर' व्याख्यान-वाचस्पति पूज्य श्री १०५ क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज लाडनूं वालों का संक्षिप्त जीवन-परिचय

स जातो येन जातेन, याति वंशः समुन्नतिम् ।
परिवर्तिनि ससारे, मृतः को वा न जायते ।।१।।

संसार की परिवर्त्तन शीलता के कारण अनेक मानव इस संसार में आते और जाते हैं। ऐसे ही मानवों में कुछ ऐसी महान् विभूतियों का प्रादुर्भाव होता है, जिनका जीवन स्व और जनकल्याण के लिये सार्थक होता है, जिससे वे जन-जन के हृदय-पटल पर सुशोभित होकर स्थान कर लेते हैं, ऐसी विभूतियो मे क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज की दिव्य आत्मा का प्रकाश आज ससार मे जगमगा रहा है।

— जन्म-काल एव वंश-परिचय —

आपका शुभ जन्म श्रावण कृष्णा ५ सवत् १९८१ मे लाडनूं (राजस्थान) मे लब्ध-प्रतिष्ठ श्रीमान् सेठ मांगीलालजी जैनाग्रवाल के घर हुआ, आपकी माताजी का नाम श्रीमती मोजीदेवी है, आपका नाम श्री शिवकरणजी रखा गया, आपके माता-पिता का जीवन धार्मिक प्रवृत्तियो से ओत-प्रोत है उन सद्वृत्तियो का प्रभाव आपके जीवन पर पड़ा। वास्तव में आपका पूरा परिवार धर्मनिष्ठ है।

— वंश - वृक्ष —

गर्ग गोत्रीय श्रेष्ठिवर्य श्री रामदयालजी जैनाग्रवाल (धनावत)

↓

मनसुखदासजी, सूरजचन्दजी, छोगमलजी, मिर्जामलजी, नथमलजी, बालचन्दजी

↓

आसकरणजी, रावतमलजी, मांगीलालजी, चोथमलजी

↓

(शिवकरणजी चरित्र नायक पूज्य श्री १०५ क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज) | रामनिवासजी | लादूरामजी

↓

सावरमल | गिरधारीमल | विजयकुमार

↓ | ↓ | ↓

अमतलाल | पदमकुमार, महावीरप्रसाद | चंद्रप्रकाश

परम पूज्य १०८ आचार्य

श्री धर्मसागरजी महाराज



जन्म गम्भीरा (राज०) पौष शुक्ला पूर्णिमा विक्रम सम्वत् १९७०

मुनिदीक्षा फुलेरा (राज०) कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी, वि० सम्वत् २००८

तुभ्य नमोऽस्तु शुभधर्मसमर्थकाय,
तुभ्य नमोऽस्तु जनतापविनाशकाय ।
तुभ्य नमोऽस्तु भवशोषकपद्मबन्धो !
तुभ्य नमोऽस्तु गणपोषकधर्मसिन्धो ।।

धर्मदिवाकर

श्री १०५ क्षुल्लक श्री सिद्धसागरजी महाराज



जन्म श्रावण कृष्णा पचमी, विक्रम सम्वत् १९८१, लाडनू (राजस्थान)
क्षुल्लकदीक्षा माघ शुक्ला पचमी, वि स २०३२ मुजफ्फरनगर (उ प्र)

— बाल्य-काल —

आपके जन्म से ही समस्त परिवार को बहुत प्रसन्नता हुई, 'होनहार बिरवान के होते चीकने पात' के अनुसार आपमें शुभ लक्षण दिखाई देते थे, आप बचपन से ही तीक्ष्ण बुद्धि थे फलस्वरूप छोटी अवस्था में आपने उस समय की दसवीं कक्षा में सफलता प्राप्त की, धार्मिक प्रवृत्तियो के दृढतम सस्कारो के कारण ही आपने ११ वर्ष की उम्र मे ही पमरपूज्य प्रात स्मरणीय आचार्य कल्प उत्कृष्ट तपस्वी श्री १०८ श्री चन्द्रसागरजी महाराज के कर कमलो के द्वारा रत्नत्रय के प्रतीक यज्ञोपवीत धारण किया, सच तो यह है कि आप मे यहीं से धर्म की दिव्यता एव गम्भीरता के तत्व को पहचानने के अकुर प्रारम्भ हुये।

— युवा - काल —

आपका शुभ विवाह सवत् १९९७ मे श्रीमान् रामगोपालजी खेतावत की सुपुत्री यथा नाम तथा गुणावली श्रीमती सरस्वती देवी के साथ हुआ, आपको धर्म पत्नी का सुयोग भी अपने धार्मिक विचारानुकूल ही प्राप्त हुआ। आप दोनो के दाम्पत्य जीवन का अधिकाश समय धार्मिक कार्यों मे व्यतीत होता था, क्योंकि आपकी पत्नी के हृदय में कोमलता और करुणाभाव निरन्तर रहते थे, धार्मिक रुचि के कारण तीर्थ स्थानो की यात्रा-हेतु एव साधुजनो की सेवार्थ श्रीमती सरस्वतीदेवी आपके साथ जाया करती थी, अधिक क्या लिखे अतिम १५ वर्षों मे तो आपकी धर्मपत्नी ने ७७ बार श्री सम्मेद शिखर को तथा ६२ बार श्री गिरनार सिद्ध क्षेत्र की वदना की इसी तरह आपने प्राय. सभी तीर्थ क्षेत्रो की अनेक बार वदना करके अपने जीवन को आदर्श बनाया। जीवन भर उल्लेखनीय उत्तम सस्कारों के बल से ही आपका समाधि-मरण हुआ था, समाधि के दिन दोपहर ४ बजे ही चारो प्रकार के आहारो का त्याग आपने स्वेच्छा पूर्वक किया, अतिम समय मे आपने समाधि-पूर्वक पंच परमेष्ठी का स्मरण करते २ नश्वर

शरीर का परित्याग किया, ऐसा आदर्श-मरण विरले जीवो को ही प्राप्त होता है, जैसा आपकी धर्मपत्नी को प्राप्त हुआ।

सवत् २०१६ मे, जब लाडन नगर मे श्री चन्द्रसागर स्मारक की पंच कल्याणक प्रतिष्ठा आपके पिताजी द्वारा सुसम्पन्न हुई थी, उस समय आपने अपनी पत्नी सहित सौधर्मेन्द्र तथा इन्द्राणी के पद को सुशोभित करते हुये परम पूज्य १०८ आचार्य श्री शिवसागरजी महाराज के चरण-सानिध्य मे आजीवन ब्रह्मचर्य-व्रत धारण किया, इस प्रकार युवावस्था मे ही इस दम्पति-रत्न ने भौतिक वाद के युग मे भी असिधारा-व्रत पालन कर एक अनुकरणीय अपूर्व साहस का कार्य किया। उल्लेखनीय बात यह है कि आपने अपने जीवन मे लगातार १० वर्षों तक दश लक्षण पर्व के दस-दस उपवास एवं २८ बार अष्टान्हिका के आठ २ उपवास आदि अनेक व्रतो को उत्साह पूर्वक किया।

– वैराग्य की ओर –

आपने परमपूज्य आचार्य श्री १०८ महावीर कीर्तिजी महाराज के समक्ष सवत् २०२६ मे गजपथा क्षेत्र पर द्वितीय प्रतिमा के व्रत के साथ, आजीवन एक भुक्ति व्रत ग्रहण किया, पश्चात् सवत् २०२६ मे परमपूज्य आचार्य श्री धर्मसागरजी महाराज के लाडनू चातुर्मास मे सप्तम प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये।

जब आप सवत् २०३२ के माघ मास मे विजयनगर (आसाम) की बिम्ब-प्रतिष्ठा मे सम्मिलित होने जा रहे थे तो आप बीच मे ही मुजफ्फरनगर मे पूज्य आचार्य श्री धर्मसागरजी महाराज के दर्शनार्थ रुके। वहा माघ शुक्ला पचमी को १० दीक्षायें होने वाली थी। आपका विचार दीक्षा-समारोह देखकर उसी दिन दोपहर की गाडी से कलकत्ता होकर विजयनगर जाने का था, इसके लिए आपने मुजफ्फर नगर से कलकत्ता का टिकिट भी खरीद लिया था तथा कलकत्ता टेलीफोन करके गोहाटी के लिये हवाई जहाज का टिकिट भी रिजर्व करा लिया था, यह सब कर लेने के बाद माघ शुक्ला चतुर्थी के सायकाल के समय ससार को असार समझ करके विशाल परिवार

एव सम्पत्ति के होते हुये भी आपके हृदय में अकस्मात् वैराग्य-समुद्र उमड पडा, फलत आपने आचार्य श्री से क्षुल्लक दीक्षा के लिए प्रार्थना की, उसी समय आचार्य श्री ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान करदी, अतः आपने माघ शुक्ला पंचमी को विशाल जन-समुदाय के बीच में आचार्य श्री के कर कमलो से क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की।

— दीक्षा के पश्चात् —

उत्तर प्रदेश मे आपने आचार्य श्री के सघ मे मुजफ्फरनगर, श्यामली, कादला, कैरना, शाहपुर आदि स्थानों पर विहार किया, आपके प्रभावशाली भाषणो को सुनकर कई भाइयो ने पच अणुव्रत और अष्ट मूल गुण ग्रहण किये और सप्त व्यसनो का त्याग किया। असाता के उदय से वहा की जलवायु अनुकूल न होने से आचार्य श्री के आदेशानुसार तथा वैद्यो के परामर्शानुसार राजस्थान के लिये आपको विहार करना पडा।

राजस्थान मे सीकर, कुचामन लाडनू, सुजानगढ, राणोली, कोछोर आदि अनेक गावो मे आपने धार्मिक, सामाजिक, सार्वजनिक हित के कार्य करके जनता मे अपूर्व जागृति का सदेश दिया, इस प्रकार विहार करते २ सवत् २०२४ मे आपने सीकर मे चातुर्मास किया, उस समय आपके तेजोमय प्रवचनो से प्रभावित होकर धर्मानुरागी सज्जनों ने दिगबर जैन आचार्य धर्मसागर व्रती आश्रम की स्थापना की, जिसमे देश के कोने २ से आगन्तुक विद्वान एव व्रती गण अपने आत्म-विकास की राह मे आगे बढ रहे है, वास्तव मे ऐसे आदर्श धर्मायतनो से ही देश व धर्म की सस्कृति का रक्षण हो सकता है तथा व्रती गणो की नि:शुल्क सेवा एवं वैयावृत्य करके धर्म का गौरव बढाते हुये अनुपम पुण्य सचय की वृद्धि हो सकती है। गांव २ मे आपके प्रभाव से नवीन वेदियो का निर्माण एव धार्मिक शिक्षा के लिये विद्यालयो की स्थापना तथा मदिरो के जीर्णोद्धार आदि सत्कार्य हो रहे हैं जैसे-कुचामन के मान-स्तम्भ निर्माण एव पचकल्याणक प्रतिष्ठा होने का

श्रेय भी आपको ही है। इसी वर्ष मूंडवाडा ग्राम की वेदी-प्रतिष्ठा एव बाडलवास ग्राम मे नवीन जिन चैत्यालय की स्थापना भी आपके सत्प्रयत्नों का ही फल है। अधिक कहा तक लिखा जाय, आपके द्वारा धर्म-प्रभावना हो रही है वह स्तुत्य एव श्लाघनीय है।

– अपूर्व धर्म-प्रभावना –

मनुष्य का जीवन सत्कार्यों के करने से उल्लेखनीय बन जाता है और उन सत्कार्यों से अपना तो भला होता ही है साथ २ ही अन्य व्यक्तियो को भी सन्मार्ग की ओर अग्रसर होने के लिये बहुत बडी प्रेरणा मिलती है, सच तो यह है कि इन सब सत्कार्यों मे क्षुल्लकजी महाराज का अपने हृदयस्थ गुरु महाराज का शुभाशीर्वाद ही वरद हस्त के रूप मे कार्य कर रहा है, परिणाम स्वरूप आप गुरुस्मरण पूर्वक जो कुछ भी कहते हैं वे भविष्यवाणियां अक्षरशः सत्य होती हैं, उन भविष्यवाणियो के द्वारा कई महानुभावो ने अपना आत्मकल्याण किया है उदाहरणार्थ —

संयोगवश कुचामन पच कल्याणक मे ब्र० नेमीचंदजी पचारवाले आये, आप अतिसार रोग से पीडित थे, उस समय क्षुल्लकजी महाराज ने उनकी मुखाकृति के परमाणुओ को देखकर के तीन दिन पूर्व ही स्पष्ट सकेत किया की आप की आयु फाल्गुन शुक्ला त्रयोदशी को रात्रि के तीन बज कर पाच मिनट तक की है, अत आप चाहो तो आत्म-कल्याण कर सकते हो, ऐसा सुनकर ब्र नेमीचन्दजी ने तत्काल भगवान् के सामने और आपके सामने श्रीफल चढाकर क्षुल्लक दीक्षा अगीकार की, फलत आपके सकेतानुसार उपर्युक्त समय पर चारो प्रकार के आहार का त्याग कर समाधि-मरण पूर्वक हसते २ इस नश्वर शरीर का परित्याग किया, इस अपूर्व बात से प्रभावित होकर क्षुल्लक उदयसागरजी महाराज जो वही पर बिराज रहे थे- उन्होने आपके समक्ष भावना व्यक्त की कि महाराज

मेरा भी समाधि मरण इसी प्रकार आपके सानिध्य में हो इसके लिये मुझे आप आश्वासन दीजिये, तब क्षुल्लकजी महाराज ने स्पष्टतया कहा कि आपकी आयु आगामी पोष शुक्ला पूर्णिमा के आस पास है अतः आप मेरे साथ ही चातुर्मास करें तो मै अपने मन, वचन, काय से प्रयत्न पूर्वक आपको समाधि कराने में योग दूंगा और अपने कर्तव्य का पालन करूंगा, निमित्तवश आप दोनो का एक साथ सीकर में चातुर्मास हुआ, चातुर्मास मे ही आपको 'कैंसर' जैसे भयकर रोग ने घेर लिया, फिर चातुर्मास के समापन पर सीकर, इद्रध्वज विधान में आपने अपनी आयु का ध्यान रखते हुये कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को हजारो जन समूह के बीच आजीवन अन्न का त्याग कर दिया, इसके पश्चात् क्रमश पौष शुक्ला अष्टमी के दिन अपने गुरु के आदेशानुसार भगवान पार्श्वनाथ के सामने, भारी जन समूह के बीच पूज्य क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज के सानिध्य मे मुनिदीक्षा अगीकार की, साथ २ दूध, छाछ और पानी के अतिरिक्त ससार के समस्त पदार्थों का परित्याग कर दिया, फिर क्रमश आप ८ दिन के भीतर ही भीतर दूध, छाछ और पानी का भी त्याग करके उत्कृष्ट समाधि पर हर्ष पूर्वक आरूढ हो गये, आपके परिणामो मे साहस और उत्साह इतना था कि आपको देखकर चतुर्थ काल के मुनिराजो का स्मरण होता था, माघ कृष्णा ५ को प्रात काल ६।।। बजे पद्मासन से बैठकर भगवान् की मूर्ति के सामने णमोकार मत्र जपते २ आपने नश्वर शरीर को छोड दिया, ऐसा ज्वलन्त उदाहरण वर्तमान मे कम ही देखने में आता है।

इसी प्रकार आपने और भी कई महानुभावो को समाधि की ओर अग्रसर होने का अवसर प्रदान किया है, जिससे अपूर्व धर्म-प्रभावना हो रही है। आपकी मगल मय प्रेरणा एवं सत्साहस को देखकर लोग सहज में ही प्रभावित हो जाते हैं, क्यो कि आपका हृदय निरंतर नि स्वार्थ, कारुण्य भावना से आप्लावित रहता है।

स्वास्थ्य विज्ञान एवं धर्म प्रचार

क्षुल्लकजी महाराज की दिव्य प्रवचन शैली एवं लेखन शैली से जहा हजारो व्यक्ति लाभ उठाते हैं उसी प्रकार रोगाक्रात लोग भी आसानी से लाभ उठा लेते हैं। आप अधिकतर व्यावहारिक स्वास्थ्य को ठीक कर पारमार्थिक स्वास्थय सिद्धि का सकेत करते हैं, औषध दान करने की आपकी एक विचित्र शैली है। बडे-बडे असाध्य रोगी को भी आपने गुरु-प्रदत औषधियो ऐव मन्त्रो से ठीक किया है। औषधि बताते समय आप सर्व प्रथम रोगी को पूर्ण सान्त्वना देकर अभय प्रदान करते है, जिससे उसका आधा रोग तो स्वत ही मिट जता है, फिर आप यथा योग्य पात्रानुसार, सदाचरण सम्बन्धी ५-७ आवश्यक नियम देकर ही औषध प्रयोग बतलाते हैं। आपकी मान्यता है कि सदाचरण ग्रहण करने से प्राय रोगो का उपशमन हो जाता है और रोगी को धर्मोन्मुख होने के कारण, मानसिक बल भी बढ जाता है, साथ-साथ आसानी से प्राप्त होने वाली औषधि का प्रयोग बताते हैं, उदाहरण स्वरूप सीकर, कुचामन आदि के निकटतम कई ग्रामो मे श्वास (दमा) के करीब ३०० रोगियो को आपने रोग मुक्त किया है। वायु का दर्द एव गठिया वात आदि के सैकडो रोगियो को दर्द-नाशक तेल द्वारा शान्ति पहुँचाई है। आँख के नाना प्रकार के सैकडो रोगियो को औषध-मिश्रित कज्जल से लाभ पहुचाया है। किं बहुना, आपने अनेक प्रकार के रोगियो को जो स्वास्थ्य लाभ कराया है तथा दुराचारो से हटाकर धर्म-मार्ग पर लगाया है उन सबकी गुणगाथा इतिहास के पन्नो मे अकित रहेगी।

पिछली साल, जब आप सीकर आ रहे थे उस समय रास्ते में एक ग्राम मे, एक कुम्हार जाति के लडके को सर्प ने डसा था! उस समय उसके पारिवारिक २०-३० व्यक्तियो को सप्त व्यसन का त्याग दिलवाकर गुरु-प्रदत्त मन्त्र से बच्चे के विष का निवारण करते

हुये जीवन-दान दिया और जैन-धर्म के प्रति लोगो को श्रद्धालु बनाया; ऐसे चमत्कारी उदाहरण आगे बड़े-बड़े महर्षियो के सुने जाते थे उन्हीं की स्मृति आपके द्वारा हो जाती है।

कुछ दिनो पहले सीकर मे कैलाशचन्द्रजी जैन जो वाटर-वर्क्स मे अधिकारी हैं, उनको हार्ट अटेक होकर मूर्च्छा आ गई थी, उस समय उनके पारिवारिक जनो मे हा हा कार मच गया था, लोगों ने आकर महाराज से निवेदन किया, महाराज तत्काल अपनी अनुभूत औषधि को आँख मे डालकर अपनी पिच्छिका को, उनके सिर पर रखते हुये गुरु का स्मरण किया, उसी समय वे असाध्य रोग से मुक्त हो गये। इसके अतिरिक्त जब मै स्वयं उदयसागरजी महाराज की समाधि के समय सीकर आया था उस समय मेरा स्वास्थ्य अत्यन्त बिगडा हुआ था, जयपुर के बड़े-बड़े डाक्टरो को दिखाने से मालूम हुआ कि मै रक्तचाप रोग से ग्रस्त हूँ, नमक घृत आदि वस्तुओ को न खाने का परामर्श डाक्टरो ने दिया था; ऐसी गम्भीर परिस्थिति में आपके पास पहुँचते ही मुझे स्पष्ट शब्दो मे कहा कि पण्डितजी यदि आप आजीवन ऊनि वस्त्रो का अपने शरीर पर प्रयोग न करें तो मे आपको पाँच दिन मे आरोग्य लाभ करा सकता हूं, मैने सहर्ष आपके कहे अनुसार व्रत ग्रहण किया, तब आपने जीवन प्रदायिनि औषधि मेरी आखो मे डाली जिससे पाच दिन के भीतर २ मैं पूर्ण स्वस्थ हो गया। वस्तुत ऐसे महान् उपकारो से व्यक्ति एव समाज का भारी हित हो सकता है। इस प्रकार महाराज के द्वारा जो जन-हित हो रहा है तथा जैन धर्म की प्रभावना हो रही है वह सदा सर्वदा अमर रहेगी और मानव समाज आपका चिर-कृतज्ञ रहेगा।

मुझे क्षुल्लक जी महाराज के विषय मे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आप स्वः पर कल्याण करते हुए जैन धर्म का भारी उद्योत करेगे। आपकी तेजस्विता, कार्य-कुशलता एव परोपकार मय भावना से मैं

अत्यन्त प्रभावित हूं और अन्त में वीर भगवान् से प्रार्थना करता हूं कि आप धर्म-प्रभावना में उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुये कालान्तर मे अक्षय सुख को प्राप्त करें । मैं आपके पुनीत चरणों मे मन, वचन काय से वन्दना करता हूं ।

विनीत –

'प्रतिष्ठा भूषण' प. लाडली प्रसाद पापड़ीवाल 'नवीन'

सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

—प्रस्तावना—

– स्वास्थ्य की आवश्यकता –

प्राणियो का स्वास्थ्य अच्छा रहने पर ही धर्मसाधनादि हो सकता है। कहा भी है कि — "धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्य मूल कारणम्" अर्थात्-धर्म-अर्थ काम और मोक्ष चारो पुरुषार्थों का समीचीनरूप से पालन स्वस्थ एव निरोग व्यक्ति ही कर सकता है। जगत् में नीरोग रहने से बडा कोई सुख नही है, इसीलिए तो कहा है कि "पहला सुख निरोगी काया" स्वस्थ रहकर हो मानव लौकिक और पारलौकिक सुख प्राप्त कर सकता है। अस्वस्थता दुःखो और आपत्तियो की खान है, अर्थात् रोगी व्यक्ति सदैव चिन्तित रहता है, वह स्वय तो दु खी होता ही है, परन्तु उसके कारण पारिवारिक तथा प्रियजन भी परेशान से रहते हैं। ज्ञानीजनो ने ससार के जीवो को सम्बोधित करते हुए कहा कि अपने शरीर को यत्नाचार पूर्वक रक्खो, क्योकि मानव शरीर धर्म ध्यान का साधन है, "शरीर माद्य खलु धर्मसाधनम्" साराश यह है कि धर्म का साधन शरीर है, स्वास्थ्य लाभ ही सबसे बडा धन है। कई लोग अपने स्वास्थ्य पर ध्यान न देते हुए मात्र धनोपार्जन व उसकी रक्षा मे ही लगे रहते हैं, ऐसा करना अच्छा नही है, नीतिकारो ने कहा है कि धन से खाने का सामान मिल सकता है,भूख नही, धन से सुन्दर वस्त्रादि मिल सकते है, सौन्दर्य नही।धन से चश्मा मिल सकता है दृष्टि नही। धन से सुन्दर औषधि मिल सकती है,स्वास्थ्य नही। धन से कोमल शय्या मिल सकती है,नीद नही, धन से सुखप्रद सामग्रिया मिल सकती है,आनन्द नही। धन से शक्ति प्रद वस्तुए मिल सकती हैं बल नही। अभिप्राय यह है कि मात्र धन से मानव को शाति नही मिलसकती,अत धन कमाने के साथ-साथ अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना चाहिये और भी कहा है कि-

"न धर्मस्य कर्त्ता, न चार्थस्य हर्त्ता, न कामस्य भोक्ता न मोक्षस्य पाता।
नरो बुद्धिमान् धीरसत्वोऽपि रोगी, यतस्तद्विनाशाद्भवेन्नैव मर्त्य . ॥"

अर्थ – मानव बुद्धिमान् दृढमनस्क होने पर भी यदि रोगी हो तो वह

धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष पुरुषार्थों की सिद्धि नहीं कर सकता है, अत अपने आरोग्य की रक्षा करते हुए मानवो को सत् पुरुषार्थों का पालन करना चाहिये।

– चिकित्सा का महत्त्व और फल –

चिकित्सित पाप विनाशनार्थ, चिकित्सित धर्म विवृद्धयेच ।
चिकित्सित चोभयलोकसाधन चिकित्सिता-नास्ति पर तपश्च ।।

(कल्याण कारक-पृष्ठ ११३)

रोगियो की चिकित्सा करना पाप नाश का कारण होता है, चिकित्सा से धर्म की वृद्धि होती है। चिकित्सा इहलोक और परलोक में सुख देने वाली होती है, किं बहुना ! चिकित्सा से उत्कृष्ट कोई तप नही है, ऐसा भी कल्याण कारक ग्रन्थ मे कहा है। हाँ आदर सत्कार की इच्छा से या अपने यश, ख्याति व पूजा की चाह से तथा लोभ आदि से की गई चिकित्सा को आचार्यों ने तप का कारण नही बताया है, केवल जीवो के प्रति दया भाव से एव परलोक साधन हेतु या कर्मक्षय होने के लिए की गई चिकित्सा तप का कारण होती है। विद्वानो ने चिकित्सा का उद्देश्य बताते हुए कहा है कि—"कारुण्य बुद्धया परलोक हेतोः कर्मक्षयार्थं विदधीत विद्वान्"। इसके अतिरिक्त आचार्य श्री पूज्य पाद स्वामी ने कहा है कि साधुजनो को भी दयाभाव करके चिकित्सा बनानी चाहिये। देखिये कल्याण-कारक पृष्ट ५५६ पर लिखा है कि मुनियो को भी आयुर्वेदशास्त्रो की जानकारी रखना अति उत्तम है।

"आरोग्य शास्त्रमधिगम्य मुनिर्विपश्चित्, स्वास्थ्य स साधयति सिद्धसुखैकहेतुम् ।
अन्यस्स्वदोषकृत रोगनिपीड़िताणो, बध्नाति कर्म निजदुष्परिणामभेदात्" ।।

(कल्याणकारक)

जो विद्वान् मुनि आरोग्य शास्त्र को भली प्रकार जानकर उसी प्रकार अपना आहार-विहार रखते हुए अपने स्वास्थ्य की रक्षा कर लेते हैं, वे मोक्ष-सुख के मार्ग को भी प्राप्त कर लेते हैं। परन्तु जो साधु स्वास्थ्य रक्षा विधान को न जानकर अपने आरोग्य की रक्षा

नही कर सकते हैं, वे अनेक दोषो से पीडित होकर नाना प्रकार के दुष्परिणामों से कर्म बन्ध कर सकते है। तात्पर्य यह है कि जो साधुराज अपने स्वास्थ्य की रक्षा नही कर सकते तो भला वे सघस्थ साधुओ की स्वास्थ्य रक्षा कैसे करेंगे ? अथवा वे करुणा करके अस्वस्थ प्राणियो को आरोग्य लाभ कैसे करायेंगे ? यहा यह बात विचारणीय है कि कई व्यक्ति जानकारी के अभाव मे कह देते हैं कि साधुजनों को चिकित्सा सम्बन्धी बातें नही बताना चाहिये, यह तो आयुर्वेद शास्त्रो का तथा वैद्यो का काम है, सो वे भाई भली प्रकार स्वाध्याय करते तो ऐसा नही कहते। यथार्थ मे आयुर्वेद ग्रन्थ सर्वज्ञ भगवान् की ही वाणी है।

– आयुर्वेद विद्या तीर्थंकर वाणी –

जिस प्रकार जैनाचार्यों ने न्याय-काव्य, अलकार, कोष, छन्द व दर्शन-शास्त्रो की रचना की है, उसी प्रकार उन्होने ज्योतिष तथा वैद्यक ग्रन्थो की भी रचना की है। उन महर्षियो ने अपने जप-तप और ध्यान से बचे हुए अमूल्य समय को जीवो के कल्याणार्थ लगाया था। इसी हेतु से उन्होने अनेक ग्रन्थो का निर्माण किया था, आज समाज पर उनका अनन्त उपकार है। आयुर्वेद विद्या भी तीर्थंकरो द्वारा प्रतिपादित है, इसलिए यह जिनागम है। लोक में समस्त आयुर्वेद शास्त्रो की रचना परम्परा से गणधर, प्रतिगणधरो ने की है, आज जो अनेकानेक सिद्धौषध आयुर्वेदीय वैद्यजन प्रचार मे लाते हैं, ये सब जैनाचार्यों की प्रतिभा व अविश्रात परिश्रम का ही फल है। आगे अनेक प्रतिभावान्, त्यागी, विरागी आचार्यों ने अपने जन्मभर विचार पूर्वक परिश्रम, प्रयोग पूर्वक अनुभव लेकर अनेक औषधरत्नो के शास्त्रो का भंडार सगृहीत किया था, परन्तु खेद है कि आज उन ग्रन्थो का दर्शन भी नहीं होता जो कुछ भी उपलब्ध है, उसके उद्धार की चिन्ता हमारे उदार धनिकों व विद्वानो को नही है, ग्रन्थ धीरे-धीरे कीटभक्ष्य बनते जा रहे हैं। वस्तुत आचार्यों ने वैद्यक शास्त्रो की

रचना इसलिए की थी कि जगत् के स्वस्थ पुरुषो का स्वास्थ्यरक्षण व रोगियों का रोग मोक्षण हो।

सर्वज्ञ भगवान् की वाणी में आचाराग आदि बारह भेदों में विभक्त करके निरूपण किया गया है, इनमे बारहवे अंग के चौदह उत्तर भेद हैं, जिनमे "प्राण वायपूर्व" भी एक भेद है, इसके विषय मे लिखा है कि "काय चिकित्साष्टाग आयुर्वेद - भूतकर्म जागुलि प्रक्रम प्राणोपान विभागोऽपि यत्र विस्तरेण वर्णितस्तत्प्राणवायम्" अर्थात् जिस शास्त्र मे काय, तद्गतदोष व चिकित्सा आदि अष्टाग आयुर्वेद का विस्तार से वर्णन किमा गया हो उसे 'प्राणवायपूर्व शास्त्र' कहते हैं। इस पूर्व का विवेचन तीर्थंकर भगवान् के समवशरण मे दिव्यध्वनि से प्रकट हुआ था। आयुर्वेद के अष्टाग निम्न प्रकार हैं, (१) काय चिकित्सा (२) बाल चिकित्सा (३) गह चिकित्सा (४) ऊर्ध्वांग चिकित्सा (५) शल्य चिकित्सा (६) दृष्टा चिकित्सा (७) जरा चिकित्सा (८) वृष चिकित्सा। आज भी श्री उग्रादित्याचार्य कृत "कल्याण कारक" ग्रन्थराज उपलब्ध है, जिसमे उन्होने पूज्यपाद, समतभद्र, पात्रस्वामी, सिद्धसेन, दशरथ गुरु, मेघनाथ आदि आचार्यो के वैद्यक ग्रन्थो का उल्लेख किया है। ये आचार्यवर छठी शताब्दी के पहले हो गये हैं। अत कल्याण कारक ग्रन्थ को पढने वाले पाठक स्वय अध्ययन करके उसकी महत्ता को समझ सकते हैं। साराश यह है कि लौकिक और परमार्थिक विषयो को जानने वाले विशेषज्ञ पूवाचार्यों ने लोक मे हिताहित प्राप्ति परिहार रूपी कर्तव्य सिद्धि का भलीप्रकार प्रतिपादन किया है।

श्री विद्यानुवाद ग्रन्थराज में लिखा है कि रोगी को दवा देते समय निम्न प्रकार मन्त्र को ६ बार पढकर देने से तथा प्रेम व परोपकार बुद्धि से दी जाने वाली दवा अमृत रूप हो जाती है, दयाभाव से किया हुआ काम निश्चय ही सुखकर होता है—

"ॐ" अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतरूपे इदमौषधममृत कुरु-कुरु भगवति विषेस्वाहा"।

वास्तव मे दया ही धर्म का मूल है, दयाभाव से ओतप्रोत हृदय वाला व्यक्ति ही चिकित्सा कर सकता है।

—स्वास्थ्य के दो भेद—

आचार्यों ने स्वास्थ्य के दो भेद बताये हैं, एक पारमार्थिक स्वास्थ्य और दूसरा व्यावहारिक। ज्ञानावरणादि आठ कर्मों के नाश से उत्पन्न अविनश्वर, अतीन्द्रिय व अद्वितीय आत्मीय सुखको पारमार्थिक स्वास्थ्य कहा है तथा शरीर स्थित सप्तधातु, अग्नि व वात, पित्तादि दोषो मे समता रहना, इन्द्रियो मे प्रसन्नता व मन मे आनन्द रहना अर्थात् -शरीर निरोग रहना इसे व्यावहारिक स्वास्थ्य कहा है। यह जीव स्वोपार्जित पाप और पुण्य के उदय काल मे बिना प्रयत्न के ही सुख और दु ख का अनुभव करता है। वातपित्तादि दोषो के प्रकोप और उपशम में शुभाशुभ कर्म फल देने मे निमित्त कारण हैं। शरीर मे सर्व विकार (रोग) सहेतुक ही होते हैं, परन्तु उन हेतुओ को जानने के लिए गौण और मुख्य विवक्षा विवेक से काम लेने की आवश्यकता है। रोगादिक विकारो का मुख्य हेतु अपने पूर्वकृत कर्म है, बाकी के सब उसके विशेषण हैं अर्थात् निमित्त कारण हैं। (गौण हैं) कर्म की पर्याय के विषय में स्पष्टीकरण :—

स्वभावकालग्रहकर्म, दैवविधातृ पुण्येश्वरभाग्यपापम्।

विधि कृतांतो नियति, यमश्च पुराकृतस्यैव विशेषसंज्ञा ॥१॥

अर्थात् —स्वभाव, काल, ग्रह, कर्म, दैव, विधाता (ब्रह्मा), पुण्य, ईश्वर, भाग्य, पाप, विधि, कृतांत, नियति और यम ये समस्त पूर्वजन्मकृत कर्म के ही अपर नाम हैं, अत जो लोग ऐसा कहा करते हैं कि "काल बिगड गया" ग्रह दोष मुझे दु ख दे रहा है, दैव रुष्ठ हैं, ब्रह्मा ने ऐसा ही लिखा था, ईश्वर की ऐसी ही मर्जी थी, यम महान दुष्ट हैं, होनहार बड़ा प्रबल हैं, इन सब का यही अर्थ है कि पूर्वोपार्जित कर्म के उदय में प्राणी को सुख-दु ख मिलता है।

— रोग उत्पत्ति के मुख्य कारण —

न भूतकोपान्नच दोषकोपान्न, चैव सावत्सरिको परिष्टान् ।
ग्रह प्रकोपात्प्रभवति रोगा, कर्मोदयोदीरण भावतस्ते ॥२॥

अर्थात् :- पृथ्वी आदि भूतो के कोप से राग उत्पन्न नही होते हैं और न कोई दोषो के प्रकोप से होते हैं तथा वर्षफल के खराब होने से और मंगल आदि ग्रहो के प्रकोप से भी रोगो की उत्पत्ति नही होती है, परन्तु कर्मों के उदय और उदीरण से रोग उत्पन्न होते है ।

यथार्थ मे कर्मोपशान्ति करने वाली क्रिया ही चिकित्सा है, ऐसा आचार्यों का अभिमत है कहा भी है कि--

तस्मात्स्वकर्मोपशमक्रियायाः, व्याधिप्रशांति प्रवदति तज्ज्ञा ।
स्वकर्मपाको द्विविधोयथाव, दुपायकाल क्रम भेदभिन्न ॥३॥

अर्थात् - कर्मों की उपशमनक्रिया (देव पूजा ध्यानादि) को रोग शान्ति करने वाली क्रिया तथा चिकित्सा कहते हैं । अपने कर्मों को पकाना दो प्रकार से होता है, एक तो यथाकाल स्वयं पकना, दूसरा उपाय से पकाना । जैसे महा पुरुष तपस्यादि विशुद्ध उपायो से अपने कर्मों को असमय मे ही उदय मे लाकर पकाते हैं, यथा समय कालान्तर मे कर्म पककर स्वय उदयकाल मे फल देते हैं। उदाहरणार्थ-जिस प्रकार वृक्ष के फल समय आने पर स्वय पकते हैं, परन्तु बुद्धिमान् लोग उन्हे उपायो से भी पकाते हैं, ठीक उसी प्रकार प्रकुपित रोग भी उपाय (चिकित्सा) और कालक्रम से पकते हैं । रोग की कचावट को दूर करने वाली औषधियो का प्रयोग करके दोषो (रोगो) को पकाना 'उपाय पाक' कहलाता है तथा कालन्तर मे अपनी अवधि के अन्दर स्वयमेव बिना औषधि के ही पकजाने को 'कालपाक' कहते हैं, जैसे पशु-पक्षी और अनाथो मे देखा जाता है । तात्पर्य यह है कि बुद्धिमानों को पुरुषार्थ करके अपने शरीर के आगन्तुक रोगो को शुद्ध औषधियों से मिटाना चाहिये । अत आरोग्य के लिए प्रयत्न पूर्वक अपने शरीर को रोगो से बचाना चाहिये, क्योंकि यह मानव देह रत्नमय धर्म का

साधन है। कई भाई अज्ञानवश कहते हैं कि यदि आयु बाकी है तो हमारा कुछ बिगडने वाला नही है उपचार करने से क्या होता है? उन बन्धुओ को याद रखना चाहिये कि पुरुषार्थ के बिना कार्य की सिद्धि कदापि नही होती, ऐसा महापुरुषों का अभिमत है, प्रमादी व्यक्ति ही ऐसा कह सकते हैं, किन्तु पुरुषार्थी जन तो अपने कार्य की सिद्धि के लिए सदैव उद्यमशील रहते हैं।

लोक मे यह बात सर्व मान्य है कि जीवो के रोगो की उत्पत्ति पाप के उदय से होती है, पाप और धर्म परस्पर विरोधी हैं। धर्म के अस्तित्व मे पाप का नाश हो जाता है, क्यो कि धर्म पाप का प्रतिपक्षी है, अर्थात् पाप अपना प्रभाव धर्म के सामने नही चला सकता है, यथार्थ मे प्रतिपक्ष की प्रबलता होने पर अन्य पक्ष का नाश होने मे आश्चर्य ही क्या है! अत रोग शान्ति मे धर्म अभ्यन्तर कारण है और बाह्य चिकित्सा सहकारी कारण है। फिर भी आज के लोग रोग उत्पन्न होने पर पापमय औषधिया सेवन करते देखे जाते है, इस विषय मे तनिक विचार करना चाहिये कि क्या रक्त से सना हुआ कपडा रक्त से धोया जा सकता है? अर्थात् नहीं। उसी प्रकार पाप से उत्पन्न रोग पाप से नही मिटाये जाते हैं, परन्तु धर्माचरण से व शुद्ध औषधियो से उन रोगो का शमन हो सकता है। इस बात को समस्त प्राणी जो पाप पुण्य मे आस्था रखते हैं वे अवश्य स्वीकार करेगे।

खेद के साथ लिखना पडता है कि आज रोग हो जाने पर प्राय मानव, धर्म ध्यान से विमुख देखे जाते हैं। थोडा रोग होते ही नित्य नियम व भगवान् की पूजा आदि छोड देते हैं, पूछने पर कहते हैं कि अजी महाराज आज जरा तबियत ठीक न होने से पूजादि नही कर सके। भाई! जरा सोचो! क्या धार्मिक कार्यों के न करने से आपकी तबियत अच्छी हो जायगी। आचार्यों ने सुन्दर ढग से समझाया है कि यदि आपके शरीर में रोग हो गया है तो आप विशेष धर्म ध्यान में जुट जाओ, जिससे आपका असाताकर्म सातारूप मे बदल जाय, परन्तु फिर

भी न जाने इसमें क्या हेतु है कि मानव रोग होने पर अक्सर धर्म कार्यों से उदास देखे जाते हैं। अत रोगादि हो जाने पर धार्मिक कार्यों में अपना विशेष योग देना चाहिए तथा शुद्ध औषधियों से रोग मिटाना चाहिए। इसके अतिरिक्त कई भाई रोगादि होने पर अपने लिए हुये व्रतो में भी दूषण लगाने को तैयार हो जाते हैं तथा रोग शमनार्थ अभक्ष्य पदार्थ व मद्य-मास-मधु मिश्रित औषधिया सेवन करने से भी नही चूकते हैं। अहो ! क्या मानवो का विवेक इतना हीन हो गया जो वे पाप कार्यों से रोग मिटाना चाहते हैं ? किन्तु भाई, याद रखो पाप प्रवृत्तियो से रोग नही मिट सकेंगे, होना तो यह चाहिए कि रोग उत्पन्न होते ही आप दान आदि सत्कार्यों मे अपने मन-वचन और काय से योग देते अर्थात् भगवद् भक्ति मे लग जाते। वस्तुत भगवद् भक्ति से वह शक्ति है जो व्यक्ति को दु ख से निकाल कर सुख मे स्थापित करदे। कहा भी है कि—

"व्रतं शीलं तपोदान सयमोऽर्हत् पूजनम्।
दु खविच्छित्तये सर्वं, प्रोक्तमेतन्न सशय. ।।४।।

अर्थात् – धार्मिक क्रियाओ से दुःख का नाश हो जाता है, इसमें कोई सशय नही है। अत प्राणियो को सत्कार्यों मे उत्साह रखते हुए सोचना चाहिए कि यह रोग तो रोगो का घर है "शरीर व्याधि मन्दिरम्"। आचार्यों ने रोगो की गणना करते हुए बताया है कि इस शरीर मे, पाच करोड, अडसठ लाख, निवासी हजार और पाँच सौ चौरासी रोग हो सकते हैं, ये सब पापोदय मे होते है और पाप के अस्त होने पर मिटते हैं।

इसके अतिरिक्त रोगोत्पत्ति मे बाह्य कारण-विरुद्ध आहार-विहार व असत् आचरण आदि भी है, अत रोगो से बचने के लिए खान-पान की शुद्धता व सदाचार पूर्ण क्रियाओ की आवश्यकता होती है। यदि पापोदय मे रोग से बचने का उपाय न दिखता हो तथा असाध्य रोग होकर आयु समाप्ति का समय आ गया हो तो मानवो को

बिना प्रमाद के सल्लेखना (समाधि मरण) के सन्मुख हो जाना चाहिए। ससार-शरीर और भोगो से विरक्त होकर बारह भावनाओ का चिंतन करते हुए उत्तरोत्तर अपने परिणामो को विशुद्ध बनाना चाहिए, इस प्रकार अर्हद् भक्ति मे तल्लीन होते हुए समस्त पदार्थों से ममत्व हटाकर साम्यभावों से समाधिमरण करना चाहिए। इसीसे मानव जन्म की सार्थकता होती है। यदि मानव पर्याय प्राप्त करके मात्र पचेन्द्रियो की भोग वासना मे व शरीर के व्यामोह में ही व्यतीत कर दिया तो यह बडी भारी भूल होगी अर्थात् अन्त मे पश्चात्ताप के अतिरिक्त कुछ भी न बचेगा।

प्रस्तुत ग्रन्थ मे प्रायः सभी रोगो की चिकित्सा एवम् तन्त्रविद्या का सुसम्बद्ध रूप से विवेचन किया गया है तथा आसानी से प्राप्त होने वाली साधारण औषधियो का उपयोग दर्शाया गया है। उल्लेखनीय बात यह है कि इस ग्रन्थ मे किसी भी औषधि प्रयोग मे मद्य-मास और मधु आदि का उपयोग नही किया गया है, क्योकि ये हिंसाजन्य वस्तुएँ हैं। इनकी प्राप्ति मे असख्यात जीवो का सहार करना पडता है, बिना हिंसा के इन चीजो की प्राप्ति होती नही, दूसरी बात यह है कि इन वस्तुओ से रोगो की शान्ति नही होती है ये वस्तुएँ घृणित हैं, इनका नाम लेने से ही ग्लानि आती है, पाप-पुण्य में विश्वास करने वाले व्यक्ति तो ऐसी चीजो को स्पर्श करने मे ही अपना अहित मानते हैं, अतएव अहिसा (दया) धर्म के आदर्श का सरक्षण करने हेतु इनका परित्याग अत्यावश्यक है। इसके अलावा ये पापमय पदार्थ चिकित्सा कार्य मे अनिवार्य भी नही हैं, आज पाश्चात्य देशो के वैज्ञानिक व डाक्टर महाशय भी मानव शरीर के लिए इन पदार्थों की निरुपयोगिता सिद्ध कर रहे हैं, तो भला आर्य सस्कृति के लिए तो हिंसाजन्य निंद्य पदार्थों की आवश्यकता ही नही रहती। देखो, आज देश मे औषधियो के बहाने लाखो प्राणियो की हिंसा की जाती है, यदि मानव इन बुरी वस्तुओं का परहेज रखे तो हिंसा का अवसर ही नही मिले। अत

मानवो को शुद्धाशुद्ध, योग्यायोग्य, भोग्याभोग्य, भक्ष्याभक्ष्य, पेयापेय, गम्यागम्य आदि लोक व्यवहार देखकर भी काम करना चाहिए। प्राणियो के शरीर मे जो पीडा होती है, उसे रोग कहते है वे रोग दो प्रकार के होते हैं, कायिक और मानसिक, कायिक रोग को 'व्याधि' कहते हैं और मानसिक को 'आधि' कहते हैं, सो ये दोनो ही बात, पित्त और कफ रूप होकर शरीर मे नाना प्रकार के रोगो को उत्पन्न करते हैं। अधिकतर तो लोगो के खोटे खान पान से, गन्दे और बुरे वस्त्रो के पहनने से व गलत आचरणो से तथा गन्दे विचारो से ही रोगो की उत्पत्ति होती है। पुराकाल मे देश मे डाक्टरो व वैद्यो तथा चिकित्सालयो की बहुलता नही थी, उस समय रोग शुद्ध आहार-विहार व सयम आदि पर पूरा ध्यान रखते थे, जिसमे स्वस्थ रहते थे, किसी कारण यदि कभी रोग हो भी जाता तो वे लघन व गर्म जल का प्रयोग कर लेते थे, इसके अतिरिक्त वे औषधि भी लेते तो अडूसा, तुलसी, नीम, सोठ, पीपल, अजवायन, मेथी, हर्ड आदि का प्रयोग करके आरोग्य लाभ प्राप्त कर लेते थे। आज भी गावो मे ज्वर आने पर तुलसी, कालीमिर्च, सोठ अजवायन का क्वाथ तथा खासी होने पर अडूसा के पचाग का स्वरस, अतिसार मे बेलगिरी का चूर्ण व कब्ज मे त्रिफला आदि प्रयोगो का प्रचलन देखा जाता है। परन्तु आज तो लोग इतने परतन्त्र हो गये है कि साधारण सा रोग होते ही बडे-बडे इन्जेक्शन व ग्लूकोज चढाना, केप्शूल, टेबलेट तथा आधुनिक यत्रो से आपरेशन आदि के चक्कर मे आ जाते है, परिणाम यह होता हैं कि उनका रोगो से पीछा नही छूटता। आज लोग बाजारू आटा, मसाला, पापड, बडी तथा मिलावटी घी, तेल दूध आदि का सेवन करते है तथा होटलो मे अमर्यादित वस्तुओ को खाते हैं, व अनछान पानी पीते देखे जाते है, वे जिह्वा की लोलुपता से यद्वा-तद्वा पदार्थों को खालेते हैं, परन्तु वे लोग अपने स्वास्थ्य के विषय में तनिक भी ध्यान नही देते हैं। फलस्वरूप उन्हे रोगो का निशाना बनना पड़ता है,

वास्तव में अधिकतर रोग तो लोगो की गलतियों से ही होते हैं ।

जैनाचार्यों ने जगत् के प्राणियो को करुण करके सम्बोधन करते हुए कहा है कि भो लोगो ! आप यदि दुःख से बचना चाहते हो तथा सुखी रहना चाहते हो तो कम से कम अपने जीवन मे सदाचार को अपनाओ, समबुद्धि रखकर बोलो, विचार पूर्वक कार्य करो, देखकर चलो, सत्य का पक्ष लो, प्राणीमात्र पर करुण भाव रखो, पराई वस्तु को मत अपनावो, क्षमावान बने रहो, इन्द्रीय-भोगो मे अनासक्त रहो, पूर्वाचार्यों के बताए हुए मार्ग पर चलो, अधर्म का परिहार करो, धर्म पर श्रद्धान करो, अभक्ष्य भक्षण मत करो, अन्याय के मार्ग को मत अपनाओ, अति तृष्णा मत करो, पर स्त्री को माता समान समझो, सप्तव्यसनो से बचो, इतना ही नही मानवोचित मानवता को अपनाओ, तथा देव-शास्त्र और गुरुओ की श्रद्धा सहित भक्ति करो, इन सत् आचरणो से आप अनेक प्रकार के दुखो से बचकर अपने जीवन को सुखमय बना सकते हो, तथा अपने भविष्य को उज्जवल बना सकते हो । परन्तु जो लोग दुराचारी होते हैं वे अपने उभय लोक को बिगाड लेते हैं ।

प्रस्तुत ग्रन्थ को सकलित करने का मेरा उद्देश्य यही है कि रोगाक्रान्त प्राणियो को इसमे लिखी हुई औषधियो से स्वास्थ्य लाभ हो तथा अभक्ष्य और पापमय औषधियो का प्रयोग न करते हुए अपने धर्म की रक्षा की जाय और इसमे बताई हुई दैनिक चर्या को पालते हुए आत्महित की ओर प्रवृत्ति को जाय । मैने सावधानी पूर्वक परम्परागत शास्त्रो के आधार से ही इन प्रयोगो का संकलन किया है । किसी प्रकार की ख्याति-प्रतिष्ठा आदि कि भावना से नही, कहा भी है कि –

"नैवातिवाक्पटुतया न च काव्यदर्पा न्नैवान्यशास्त्रमद भजन हेतुना वा ।
कितु स्वकीयतप इत्यवधार्यवयं, माचार्यमार्गमधिगम्य विधास्यते तत् ।।५।।

अर्थात् – अपने वाक्चातुर्य को दिखाने के लिए या काव्य के अभिमान से या दूसरे विद्वानो की विद्वत्ता के मद को भंग करने के लिए मैं इस ग्रन्थराज की रचना नही कर रहा हूँ, परन्तु मै ग्रन्थ रचना को अपना

एक तपश्चरण मानता हूँ। आचार्यों ने स्वाध्याय तथा ग्रन्थ रचना को तप बतलाया है, इन सब बातो को ध्यान में रखकर ही मैंने इस ग्रन्थ का सकलन स्व–पर कल्याण हेतु किया है, ख्याति व कीर्त्ति की कामना से नही, अत विद्वद्जन मेरी भूलो को सुधारकर ही पढें तथा मेरा मार्ग-दर्शन करावें ताकि आगे के सस्करण मे सुधार किया जा सके।

वैसे मै कोई वैद्य नहीं हूँ और न मैंने आयुर्वेद शास्त्रो का गहराई से अध्ययन ही किया है, किन्तु मेरे हृदय मे एक भावना रहती है कि बीमार रहने से व्यक्ति व्यथा के कारण धर्म साधन से वञ्चित रहता है, अत रुग्णजनो को चिकित्सा का सरल उपाय मिल जाय तो वे शरीर के रोगो की उपशान्ति करके सासारिक एवम् धार्मिक कार्यों मे अपना योग लगाकर सन्ताप व क्लेशो से बच सकते हैं। इसीलिए मैंने कुछ तो अपने अनुभव के आधार पर तथा पूर्वाचार्यों के वैद्यक शास्त्रो मे से चुन-चुनकर इस ग्रन्थ मे स्वास्थ्य-रक्षण के लिए अति उत्तम ढंग से वर्गीकरण किया है। सच तो यह है कि मैंने सबसे ज्यादा अनुभव तो स्व० १०८ आचार्य प्रवर श्री महावीरकीर्त्तिजी महाराज के सम्पर्क से प्राप्त किया था, उन गुरुराज के चरणो मे रहने का अवसर मुझे काफी मिला था। वे ऋषिराज आयुर्वेद के मर्म को जानते थे, उनके हृदय मे करुणा (दया) का समुद्र बहता था, कभी-कभी वे करुणा करके अपने अनुभव की बाते भी बताते थे। इसके अतिरिक्त उनकी औषध प्रयोगो की डायरियाँ भी मेरे पास हैं, जिनको मैंने प्रस्तुत ग्रन्थ मे लिखकर सदुपयोग किया है। प० महेन्द्रकुमारजी अजमेरा पचेवर वालो को लिखी "घरेलू चिकित्सा' नामक किताब से भी कुछ प्रयोग लिखे गये हैं। इसके अलावा श्री उग्रादित्याचार्य के बनाये हुए 'कल्याण-कारक' ग्रथ से बहुत से प्रयोग लिखे हैं तथा कुचामन के श्री अजमेरो मदिर मे विराजमान शास्त्र भडार से बहुत से शास्त्रो मे आयुर्वेद का अच्छा वर्णन है, उनमें से सग्रह किया है और कुछ आयुर्वेद के अन्य ग्रथो से भी लिया है। उपरोक्त शास्त्रो के आधार से मैंने सकलन करके इस ग्रथ का निर्माण किया है, फिर कई विद्वान् वैद्यो को दिखाकर इसका सशोधन किया है।

अत मे मै मङ्गलमय दयानिधि भगवान् महावीर से प्रार्थना करता हूँ कि ससार के समस्त प्राणियों को मुक्ति पथ पर चलने का सौभाग्य प्राप्त हो तथा उन्हे 'आयुरारोग्यैश्वर्यादि' का लाभ हो, जिससे वे अपना आत्महित करते हुए देश धर्म और समाज के उत्थान के कार्यों में अपना योग देते रहें। औषधदान की सिद्धि के लिए एवम् सज्जन वैद्यों के साथ वात्सल्य भाव के लिए तथा तप की पूर्ति के लिए और धर्म की प्रभावना हेतु इस ग्रथ की रचना हुई है। मेरा यह दृढ विश्वास है कि समीचीन औषधियो के सेवन से शरीर आरोग्य युक्त व सुदृढ बन जाता है। स्वस्थ शरीर से मानव चाहे तो भली प्रकार धर्म सेवन करता हुआ अतिम पुरुषार्थ (मोक्ष) को भी प्राप्त कर सकता है।

मै अपने मन-वचन और काय से यही शुभकामना करता हूँ कि यह ग्रथ प्राणी मात्र के हित साधन मे सहयोगी बने तथा धर्म का प्रकाश फैलाते हुए जयशील होवे, ऐसी मेरी शुभकामना है।

प्रस्तुत पुस्तक की द्वितीयावृत्ति की ५,००० प्रतियाँ प्रकाशित कराने वाले श्रीमान् चम्पालालजी जैनाग्रवाल एवम् श्रीमती सौभाग्यवती सुसोमाबाई को मै हार्दिक शुभाशीर्वाद देना अपना नैतिक दायित्व समझता हूँ, जिन्होने इस जनहित के पुण्यकार्य मे अप्रमित आर्थिक सहयोग प्रदान करके अपनी चञ्चल लक्ष्मी का सदुपयोग किया है।

इस पुस्तक की उपयोगिता तथा लोकप्रियता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि प्रथमावृत्ति मे छपने वाली ५,००० पुस्तको का तीन वर्ष के अल्प समय मे वितरण किये जाने पर भी लोगो की माँग उत्तरोत्तर बढती हो जा रही है।

—क्षुल्लक सिद्धसागर महाराज
(लाडनू वाले)

– सम्पादकीय –

इस वर्ष सीकर मे धर्म दिवाकर पूज्य १०५ क्षुल्लक श्री सिद्धसागरजी महाराज ने श्री दिगम्बर जैन आचार्य धर्मसागर व्रती आश्रम मे चतुर्मास किया, मुझे भी आपके सान्निध्य में चतुर्मास मे रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, आपकी लिखी हुई मानव मार्ग दर्शन प्रथम, द्वितीय एव तृतीय भाग को आद्योपान्त पढा और मैंने मध्याह्न सभा में वाचन भी किया, जिससे लोगो मे बहुत ही रुचि उत्पन्न हुई, आपने इनमे बडी सरल भाषा मे तथा हृदयग्राही वैराग्य वर्द्धक व वस्तु स्थिति का प्रतिपादन किया है। यथार्थ मे आपकी लेखनी का शब्द-विन्यास बहुत ही सरल है, जिससे गभीर अर्थ का भी बोध हो जाता है, आत्मस्वरूप का विवेचन करने की आपकी प्रक्रिया अनूठी व बेजोड है। इसके अतिरिक्त आपके प्रवचनो को सुनने से मानव आत्मतत्त्व की श्रेष्ठता को समझकर अनादिकालीन मिथ्यात्व को छोडकर अन्तर्मुख हो सकता है, अर्थात् आपकी शैली अति उत्तम है, श्रोताओ को सबोधित करते समय आप भाव-विभोर हो जाते हैं, जिससे जाना जाता है कि आपके हृदय मे व्यापक उदारता व धर्मोद्योत करने की महती भावना है। आपके प्रवचनो मे साम्प्रदायिक अभिनिवेश की गन्ध न होते हुए मात्र धर्म सिद्धान्त और आचार प्रणाली तथा मानव जीवन के क्रमिक विकास की प्रक्रिया का तेज चमकता है, जिससे सर्वसाधारण जन चाहे जैन हो या अजैन सभी लोग प्रभावित होकर अपने दोषो व व्यसनो को सहज मे ही छोड़ने के लिए तैयार हो जाते है।

प्रस्तुत ग्रन्थ 'स्वास्थ्य बोधामृत' का सकलन आपके आदर्श ग्रन्थो के आधार से भारी परिश्रम करके किया है, आपके मन मे करुणा व परोपकार की गगा बहती है, इस ग्रन्थ का सशोधक मैंने गहराई से अध्ययन करके किया है। इन औषधियो के प्रयोगो से जनमानस का विशेष हित होगा, उल्लेखनीय बात तो यह है कि इसमे मद्य-मांस और मधु का प्रयोग सर्वथा नही किया गया है, कही कही पर गोमूत्र

का प्रयोग औषधियो में आया है, इनके प्रयोग आचार्य प्रणीत ग्रन्थो मे भी स्थान-स्थान पर मिलते हैं, हाँ ऐसे प्रयोगो को व्रतीलोग अपने-अपने पद के अनुसार विचार कर सकते हैं, परन्तु सर्वसाधारण लोगो के लिए औषध के रूप में लिए बिना काम चलता नही। आज जो लोग मद्य मास आदि से मिश्रित केपसूल व पीने की औषधियो को तथा इन्जेक्शन आदि को काम में लेते है, जिसमे अनेक जीवों का घात होता है, ऐसी वस्तुओ से बचने के लिए आयुर्वेद औषधिया पर्याप्त हो सकती हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ मे श्री क्षुल्लकजी महाराज ने करुणाभाव से व जन हित के लिए जो प्रयोगो का सकलन किया है वह आपकी प्रतिभा व सुप्रयत्न का परिचय है, जिसके लिए समाज आपका चिर ऋणी रहेगा। मुझे दृढ विश्वास है कि आपके सगृहीत औषधरत्नो से अनेकानेक प्राणियो का बडा भारी हित होगा तथा स्वास्थ्य लाभ होगा। वास्तव मे साधुजनो के शुभाशीर्वाद से ही जीवो को शान्ति मिलती है, तो भला सन्तजनो द्वारा कारुण्यबुद्धि से बताये गये प्रयोग अवश्य ही लाभदायक सिद्ध होते हैं। मैंने प्रत्यक्ष मे कई बार देखा और अनुभव किया कि आप रोग पीडित व्यक्तियो को उनकी योग्यतानुसार ५-४ नियम दिलाकर जो औषध प्रयोग बता देते हैं वह प्रयोग रामबाण औषधि बन जाता है, जिससे लोगो मे धर्म के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है और धर्म प्रभावना होती है। सबसे बडी विशेषता तो यह है कि आप रोगी को सान्त्वना देकर अभय प्रदान कर देते हैं, जिससे रोगाक्रान्त प्राणी चिन्ता मुक्त हो जाता है, इतना ही नही, आप वैयावृत्य को अपना मुख्य तप मानते है, उदाहरणार्थ इसी चतुर्मास में एक दिन मेरे ज्वर (बुखार) हो गया और साथ-साथ मे कुछ हार्ट एटेक के कारण छाती मे दर्द हो गया, उस समय आप स्वय मेरे सीने पर तेल मालिश करने लगे तो मैंने कहा महाराज, आप यह क्या करते हो, तो बोले, कि ब्रह्मचारीजो, मैं अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहा हूं। थोड़ी देर बाद जब मै पीडा से मुक्त हुआ तो आपने अत्यन्त प्रसन्नता

प्रगट की, इन सब बातो को देखकर मैं आपसे अत्यन्त प्रभावित हुआ। ऐसा वात्सल्य अन्यत्र देखने में कम ही आता है।

भावपक्ष की दृष्टि से इस ग्रन्थ में पूर्वाचार्यों के बताये हुए औषध प्रयोगों का सकलन किया गया है और कलापक्ष से देखा जाय तो श्री क्षुल्लकजी महाराज ने अपने अनुभवो से सदाचरण के नियमो से इसे सुसज्जित किया है।

जिन सज्जनो ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन का व्यय-भार वहन किया है वे अतिशय धन्यवाद के पात्र हैं। पूज्य क्षुल्लकजी महाराज ने अस्वस्थ होते हुए भी पूर्ण रूप से परिश्रम कर इस ग्रथ की रचना की है मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ। आपने इस बृहत् कृति के निर्दोष सम्पादन का भारी उत्तरदायित्व मुझे सौंपा उसका निर्वाह मै किस हद तक कर सका हूँ, इसका निर्णय तो पूज्य महाराज श्री या सुधीपाठकगण ही करेंगे। महाराज श्री ने मुझ पर अनुग्रह करके इसके सम्पादन का सुअवसर मुझे प्रदान किया इसके लिए मे उनका अत्यन्त अनुगृहीत हूँ, प० विद्या कुमारजी साहब सेठी का भी मैं आभारी हूँ जिन्होने इस ग्रथ के प्रूफ संशोधन मे तथा अपनी बुद्धि और परिश्रमपूर्वक सक्रिय सहयोग दिया है।

द्वितीयावृत्ति

गत वर्ष इन दिनो मे, मे सीकर व्रती आश्रम मे था और आश्रम के कार्यकर्त्तागण व समाज के बधुओ के अनुरोध से मुझे ३ महिने वहाँ रुकना पडा, मैने वहाँ देखा कि कोई भी ऐसा दिन नही आया जिस रोज डाक से ३–४ व कभी २ इससे भी अधिक पत्र लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्तियो के, '**स्वास्थ्य बोधामृत**' ग्रन्थ की माँग हेतु तथा इसकी प्रशसा के नही आये हो। पूज्य धर्म दिवाकर श्री १०५ क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज का चातुर्मास उस समय भागलपुर (श्री चम्पापुर सिद्ध क्षेत्र) में था।

व्रती आश्रम में इस पुस्तक की प्रतियाँ नही के बराबर होने से, श्री धर्मसागर व्रती आश्रम के मन्त्री महोदय पुस्तक की प्रतियाँ

भेजने में असमर्थ थे। मैंने पूज्य क्षुल्लकजी महाराज को सीकर से पत्र भी लिखा था कि इस पुस्तक की इतनी ज्यादा माग बढ रही है, अतः या तो इसका द्वितीय सस्करण निकलवाया जाय, या समाज सम्बन्धी पत्रो द्वारा सूचना दे दी जाय कि इस ग्रथ की प्रतियाँ अब उपलब्ध नहीं हैं, जिससे पाठकजन पुस्तक की माग न करें। जब महाराज साहब ने इस वर्षा काल मे चातुर्मास अजमेर करने की स्वीकृति प्रदान कर दी और चातुर्मास शुरू हुआ, उस समय मे बाहर था। यहाँ आने पर बातचीत के दौरान मालूम हुआ कि इसका दूसरा सस्करण अप्रेल १९८२ में छपने के लिये दे दिया है और लगभग पुस्तक पूरी छप चुकी है। इसका पहला सस्करण (५००० प्रतियें) वीर नि० सवत् २५०६ में छपा था और नि शुल्क वितरण किया गया था। आपके द्वारा लिखे गये ४ भाग, मानव मार्ग दर्शन व सल्लेखना की झलक और मानव धर्म आदि ग्रंथ प्रकाशित हुये हैं, जिस पर साधुवर्ग आदि को लेकर समाज प्रतिष्ठित श्रेष्ठी वर्ग, विद्वद्गण म अन्य समाज द्वारा सैंकडो प्रशसापत्र प्राप्त हुये हैं व उनमे से कुछ सम्मतिया भी ग्रन्थ मे समय २ पर प्रकाशित हुई हैं। 'स्वास्थ्य बोधामृत' पर भी इसी प्रकार सेकडो प्रशसा पत्र प्राप्त हुये हैं, जिनमे काफी सम्माननीय वैद्यो और डाक्टरो के भी अभिमत हैं।

इधर मे कुछ समय से सामाजिक पत्रो में 'स्वास्थ्य बोधामृत' के विषय मे लेखमालाये चल रही हैं कि इसमे मल-मूत्र अस्थि आदि जैसे अभक्ष्य व घृणित पदार्थों का निदान हेतु उपचार लिखा गया है, जो जैनाचार्यों की मान्यता के विरुद्ध है, इसी सदर्भ मे स्थानीय चातुर्मास समिति ने एक लिखित विज्ञप्ति द्वारा पूज्य क्षुल्लकजी महाराज के विचारों का स्पष्टीकरण कर दिया था, व कुछ एक पत्रो ने भी इस विज्ञप्ति का प्रकाशन भी किया कि इसमे छपे प्रयोग प्रायः श्री उग्रादित्याचार्य द्वारा रचित कल्याण कारक ग्रन्थ से सकलित किये हैं। यह एक वैद्यक ग्रन्थ है और जैनाचार्य द्वारा रचित है। "चोर को क्यो मारो,

चोर की नानी को मारो, जिससे न रहे बास न बजे बासुरी" वाली प्रसिद्ध कहावत के अनुसार श्री उग्रादित्याचार्य को ऐसे लेखको ने "सतनामी, पल्टूदासी, आपापंथी, बीजमार्गी जंसे सदिग्ध शब्दो मे किन्तु कौल सम्प्रदाय के हो सकते हैं कि ये कोई अघोरपन्थी हैं, ऐसे जघन्य शब्दो मे लिखने का दुसहास किया है तथा लिखा है कि यद्यपि इन मत-वाले मद्य-मास का सेवन नही करते, मल, मूत्र, वीर्य आदि का भक्षण कर आनन्द मानते हैं" आदि २ कई व्यर्थ की बातें सिद्ध करने की चेष्टा की है।

यह ग्रन्थ ई० १९४० में रावजी सखारामजी दोशी, शोलापुर द्वारा प्रकाशित है, इसके पहले परिच्छेद मे, प्रारम्भ मे श्री आदिनाथ भगवान् को तत्पश्चात् कई श्लोको मे भिन्न २ दृष्टियो से देव, शास्त्र, गुरु का यथायोग्य विनय किया है। इससे यह बात सिद्ध है कि ये कोई जैनाचार्य थे, चाहे ब्राह्मण (जैसा कुछ इतिहास वेत्ता कहते हैं) हो, महावीर स्वामी के गणधर भो ब्राह्मण थे यह ग्रन्थ विक्रम की ९वी शती का सिद्ध किया है। इसमे अपने पूर्वज आचार्य पूज्यपाद, समतभद्र, पात्र केसरो, मित्रसेन, दशरथ गुरु, मेघनाथ आदि का भी स्मरण है। ग्रन्थकार ने यह भो प्रतिज्ञा की है, इसमे मद्य, मास, मधु का प्रयोग नही है जो कि जैनाचार्यों को दृष्टि से अभक्ष्य माना गया है, स्थान २ पर उल्लेख है। पूज्य क्षुल्लकजी महाराज ने भी इस विषय का अपनी प्रस्तावना मे पहले सस्करण मे विशद विवेचन भी किया है।

जैनाचार्य कृत यही एक वैद्यक ग्रन्थ अभी तक मेरे देखने में आया है हो सकता है, शास्त्र भण्डारो मे और भी आगम ग्रन्थों मे जैसे प्रवचन सार में, आख के दर्द मे शखचूर्ण, कान के दर्द मे बकरे का मूत्र प्रयोग मे आया हैं। समयसार मे नागिनी–हस्तिनी, तस्या तोय मूत्र अर्थात् हथिनी का मूत्र का प्रयोग लिखा गया है। धवला ग्रन्थ मे, स्थापना निक्षेप के प्रकरण में हाथी दात की जिन प्रतिमा का भी उल्लेख

मिलता है। कस्तूरी, गोरोचन, मुक्ता, शृंग, सीप आदि का भी औषधियों मे प्रयोग देखा जाता है। वैद्यो का तो यहां तक कहना है कि कई रोगों की दवाई तो स्वयं के पास है। आंख रोग, चेप्या, मोतिया बिन्द आदि चर्म रोगो पर अपना थूंक ही काम दे जाता है, नाभि के नीचे के रोगो पर स्वयं का मूत्र भी औषधि है जैसे बवासीर अपने मूत्र से गुदा धोने पर जड मूल से नष्ट हो जाती है।

"वत्थु सहभाओ धम्मो" जैन धर्म विश्व धर्म है, प्राणी मात्र का कल्याण करने वाला है, तिर्यंच भी इसका यथायोग्य पालन करते हैं वे भी चतुर्थ गुणस्थानवर्ती देखे जाते है, पापी से पापी भी छोटे से नियम को लेकर व श्रद्धा के बल पर क्रमश विकास करता हुआ, तीर्थंकर तक बन जाता है, पुराण कथाकोष ऐसे उदाहरण से भरा हुआ है, केवल नाम धारी जैन मात्र का नही है, औषधियो का प्रयोग भी जनकल्याण के लिये है, प्राणवाद पूर्व मे इसका वर्णन मिलता है। व्यक्ति अपनी शक्ति के अनुसार तथा नियमानुसार औषधि का प्रयोग करे यह उसको इच्छा पर निर्भर है, जैसे माली के पास अनेक प्रकार के शाक व फल हैं उसमे प्याज, लहसुन, बड फल, अजीर आदि लेना न लेना अपनी इच्छा पर हैं। प्रत्येक वस्तु मे गण व दोष भी होते हैं। वह सामान्य एवं विशेषात्मक है।

पूज्य क्षुल्लकजी महाराज के विषय मे मैं अधिक नहीं लिखता हूं इनका व्यक्तित्व तो अपने आप सब जगह प्रसिद्ध हो रहा है जिनके यशकीर्त्ति का उदय है उसे कोई नही रोक सकता, पहले सस्करण में मैंने कुछ लिखा भी है, यह केवल पिष्ट पेषण है कि "सूर्य का उजाला, उल्लू को नही सुहाता" पराये दोष को कहने में अपनी एक अगुलि सकेत करती है पर स्वयं की ओर तीन अगुलि हो जाती है खेद है कि यह आलोचक को नही मालूम होता है कि कथनी और करनी मे कितना अंतर है? यह 'स्वास्थ्य बोधामृत" ग्रन्थ मेरे आने से पहले करीब २

छप चुका था, पूज्य महाराज साहब ने संपादकीय पद के लिये मुझे प्रेरित किया, इसके लिये मैं उनका बहुत आभारी हूँ इसकी द्वितीयावृत्ति कराने मे जो भी सज्जन योगदान दे रहे हैं वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

विनीत :
प्यारेलाल बड़जात्या
भूतपूर्व राजकीय अवकाश प्राप्त निरीक्षक
केन्द्रीय तार घर जयपुर

– प्रकाशकीय –

जन-जन के हृदय में विराजने वाले धर्म दिवाकर व्याख्यान वाचस्पति पूज्य १०५ श्री क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज ने अपनी विद्वत्तापूर्ण कृतियो से जैनजगत् को ही नहीं, किन्तु मानव-मात्र को प्रभावित कर दिया। जिसकी साक्षी आपकी लिखी हुई मानव-मार्ग दर्शन तीनों भाग एव 'सल्लेखना की झलक' नाम की पुस्तकें हैं, आपकी लेखनी से संसार की क्षणिक वस्तुओं से विरक्ति होकर निष्कलंक, शाश्वत और ज्ञान-दर्शनमय आत्मा का साक्षात्कार होता है, जिससे मानव रत्नत्रय धर्म की ओर बढ सकता है। इसके अतिरिक्त आपके तेजोमय प्रवचनो मे सरलता व वास्तविकता का रसास्वादन करते हुए श्रोतागण मुग्ध से हो जाते हैं, क्योकि आपकी वाणी का केन्द्र-बिन्दु अनुपम एवं अक्षय सुख की प्राप्ति तथा मानवोचित गुणो को अवधारण कराने हेतु ही है, आपकी लेखनी एवं अमृतोपम ओजस्वी प्रवचनो मे जटिल और दृढ विषयो को सरल बनाने की अद्भुत कला है, आपकी भावना यही रहती है कि प्राणी मात्र मानवता अपनाते हुए अपने आत्मिक सुख को जानकर उसे प्राप्त करने के मार्ग को अपनाए।

इसी सद् भावना के कारण आपको सफलता की प्राप्ति सहज में हो जाया करती है, जिससे आपने जन-मानस के हृदय मे अपना स्थान बना लिया है। इन सबको देखकर विश्वास होता है कि सयम व तपश्चरण से व्यक्ति में एक अद्भुत शक्ति एव क्षमता प्रकट हो जाती है, जिसका साक्षात्कार आपके समक्ष होता है। आप शरीर से रुग्ण होते हुए भी प्रतिदिन आठ घण्टे अध्ययन एवं लेखन कार्य मे लगे रहते हैं, प्रमाद, आलस्य और निद्रारूपी तस्करो से सतर्क आपका चित्त 'ज्ञान-ध्यान' मे लीन रहता है, आपका 'ज्योतिर्मय जीवन प्रतिक्षण गुरु भक्ति के स्रोत से आप्लावित रहता है, जिससे आपके

मनोबल, वचनबल और कायबल तीनों ही दृढ और अध्यवसायी रहते है, आप मे विशेषता यह है कि आप किसी धर्म (दर्शन) पर कटाक्ष न करते हुए ,लोगो के विचार समीचीन बनाने की क्षमता रखते हैं, जिससे वस्तु स्वरूप की यथार्थता सामने आ जाती है और लोग नत-मस्तक होकर अपने हित मार्ग को अपना लेते हैं।

आपकी छत्र-छाया मे अनेकानेक व्यक्तियों ने धर्म के मर्म को समझकर अपने जीवन को धर्म मार्ग मे लगाया है, जिस गाव या नगर में आपका विहार होता है, वहाँ के जैनाजैन सभी सज्जन अपना महोभाग्य समझते हैं, आपके निमित्त से हजारो व्यक्तियो के आचरण में परिवर्तन एव परिमार्जन हुआ है, क्यो कि आपमें महत्ता की सूचक दयालुता तथा जीवो के कल्याण की नि स्वार्थ भावना आदि सभी गुण हैं। आपके अध्ययन की विशालता एव अनुभव चिन्तन-मनन की गभीरता आपके रचित ग्रन्थो की प्रत्येक पक्ति मे मुखरित हो रही है, यदि एक शब्द मे कहा जाय तो ये स्वय ही आपका परिचय है। फिर भी इनके समर्थन मे जो आचार्य-साधु-त्यागी वर्ग व विद्वज्जन महानुभाव, वैद्यजन और राज्य के उच्च अधिकारी जनो के शुभाशीर्वाद एव अभिमत आये हैं, वे प्रस्तुत ग्रन्थ के अन्तिम पृष्ठों पर अकित किए गये हैं, इन सबको देखने से लगता है कि आपका साहित्य अमूल्य मणि बनकर चमक रहा है।

प्रस्तुत कृति भी आपकी उज्ज्वल एवं अनुकम्पामय शृङ्खला की एक कडी है। इस ग्रन्थ मे आपने अथाह परिश्रम करके आदर्श ग्रन्थो से पाँच हजार औषध प्रयोगो को चुन-चुनकर सग्रह किया है, जिनका सदुपयोग प्रायः सभी रोगो के लिए कार्यकारी है। अत्यन्त हर्ष है कि आपने पूर्वाचार्यों के रचित ग्रन्थो के आधार से तथा अपने अनुभव आभा से औषध प्रयोगों को ज्योतिमय बनाकर स्वर्ण आबंधन (गोल्डनफ्रेम) मे गु फित किया है, जो बार-बार प्रशसा करने पर भी स्तुत्य ही रहेगा, आपके इस संकलन मे हृदय की वेधकता और अपनापन तथा

प्राणीमात्र पर परोपकार मयी भावना झलकती है, इस ग्रन्थ के मनन एव अध्ययन से पाठक जन भाव विभोर होकर औषधदान की महत्ता पर चिन्तन के लिए अपना योग देंगे ऐसा मुझे विश्वास है। बहुत से वैद्य विद्वान् बन्धुओ ने इस ग्रन्थ के मुद्रण के पूर्व पाडु-लिपि को देखकर मुक्तकण्ठ से प्रशसा की और कही पर सशोधन की आवश्यकता पडी तो उन्होंने उसका परिमार्जन भी कर दिया, जिसके लिए मैं उन सबका अत्यन्त आभारी हूँ। इस ग्रन्थराज मे मद्य-मास और मधु जैसी निन्दनीय वस्तुओं का किसी भी औषध प्रयोग मे उपयोग नहीं किया गया है, हाँ गौमूत्र आदि पदार्थों का कही-कही प्रयोग देखा गया है, जिनका उल्लेख प्राचीन ग्रन्थो में भी पाया जाता है, 'देखिये कल्याण कारक' ग्रन्थ के पृष्ठ ७६, श्लोक ३५ पर

"गोऽजामहिष्याश्वखरोष्ट्र हस्तिशस्ता विसभूतमिहाष्ट भेदम्।
मूत्रं कृमिघ्न कटुतिक्तमुष्णम्, रूक्ष लघुश्लेष्ममरुद्विनाशि ॥

साराश यह है कि इनमे शका करने का प्रश्न ही नही उठता, अतः व्यक्तियो को छिद्रान्वेषी न बनकर गुणानुरागी बनना चाहिये और इस महोपकृति से पूर्ण लाभ उठाना चाहिये। अन्त में हम सब क्षुल्लकजी महाराज के अत्यन्त आभारी हैं, आपने इस वृहत् कृति को लिखकर जो प्राणीमात्र का उपकार और धर्म की प्रभावना की है वह इतिहास के पन्नो पर अकित रहेगा और मानव समाज आपका चिरकाल तक ऋणी रहेगा। इसके अतिरिक्त 'मानव-मार्ग दर्शन का चतुर्थ भाग' जो आपने लिखकर प्राय तैयार कर लिया है जो अब मुद्रण के लिए प्रेस मे आने वाला है, उसमे आपने प्रेरणादायी अनुभवो को सकलित किया है, जो विचारो के अन्धकार मे भटकते हुए मानवो को प्रशस्त मार्ग बतला सकेगा, उसमे नवीनता एव मौलिकता की सपुट लगी हुई है, जिससे वह ग्रन्थ अधिक प्रभास्वर, तेजस्वी और जगत् की निधि के रूप मे सूर्यवत् चमकेगा।

चरणसेवक—पं० विद्याकुमार सेठी, न्यायकाव्यतीर्थ
भूतपूर्व अधिष्ठाता
श्री दिग० जैन आचार्य धर्मसागर व्रती आश्रम-सीकर

धर्मदिवाकर पूज्य श्री १०५ क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज के प्रति मेरा अटूट विश्वास

धर्म दिवाकर पूज्य १०५ क्षुल्लक श्री सिद्धसागरजी महाराज संस्कृति, साहित्य और श्रुत-सेवा मे सतत सलग्न रहते हैं, अध्ययन, अनुशीलन, चिन्तन-मनन और लेखन आपके जीवन के उदात्त ध्येय हैं। आपने मानव-मार्ग दर्शन के तीनो भाग एवं 'सल्लेखना की झलक' पुस्तक लिखकर अपनी नवीन शैली में सुन्दर विवेचना करके विद्वत्ता का परिचय दिया है, आपकी स्फुरणशील प्रतिभा एव साहित्य रचनाओ से जैन समाज ही नही, बल्कि सम्पूर्ण मानव समाज गौरवान्वित होगा ऐसा विश्वास होता है। वास्तव मे आपकी कृतियो में अभिव्यक्ति का चमत्कार दिखाई देता है, जो पाठक को भाव विभोर करके कुछ क्षण के लिए अव्यक्त सवेदन मे रोककर उसे चिन्तन के लिए मजबूर कर देता है।

प्रस्तुत स्वास्थ्य-बोधामृत ग्रन्थ मे आपने अत्यन्त विलक्षण दृष्टि से विस्तार के साथ निरीक्षण-परीक्षण करके आदर्श ग्रन्थो को आधारभूत मानकर औषध प्रयोगो का सकलन किया है, जिससे अनेकानेक मानव लाभान्वित होगे, आपने इन प्रयोगो को व्यावहारिक जीवन के रस मे वैसे ही डुबाकर प्रस्तुत किये हैं, जैसे-किसी फीके पकवान को शक्कर की चासनी मे डुबाकर प्रस्तुत किया जाता है, आपने पूर्वाचार्यों के सार्वभौम प्रयत्नो को एकत्रित करके इस ग्रन्थ मे नये रूप से प्रस्तुत किया है, आपकी इस अद्भुत कृति के औषध प्रयोगो पर जब मै व्यक्त भावो और विचारो की गहराई पर विचार करता हूँ तो मुझे आपके करुणामय हृदय की अर्थात्, 'सर्वजन हिताय-सर्वभूत सुखाय' भावना की झलक दृष्टिगोचर होती है।

मै आपकी इस अनुपम कृति की हार्दिक अनुमोदना करता हूँ और सुयोग्य सपादक ब्र० श्री प्यारेलालजी का आभार मानता हूँ, जिन्होने इस वहृत् ग्रन्थ के निर्दोष सम्पादन में अपना उत्तरदायित्व निभाया है।

विनीत.—

'जैन रत्न' श्री महावीरप्रसादजी काला लालासवाले

अध्यक्ष

श्री दिग० जैन० बीसपथ समाज—सीकर

卐 द्रव्य-प्रदाता 卐

प्रस्तुत ग्रन्थ की पांच हजार प्रतियों के प्रकाशन का व्यय-भार निम्न लिखितानुसार उदारमना महानुभावो ने वहन कर धर्म के प्रचार-प्रसार मे सराहनीय सहयोग दिया है, वे प्रशसा और धन्यवाद के पात्र हैं। इसी प्रकार धार्मिक कार्यों मे उनकी निष्ठा सदैव बनी रहे यही शुभ कामना है।

—प्रकाशक

१. २५०० प्रतियां श्रीयुत चम्पालालजी, पदमकुमारजी जैनाग्रवाल नेपालगंज वालो ने अपने स्व० पिताजी नथमलजी एव माताजी सुरजी देवी की पुण्य स्मृति मे प्रकाशित करवाई।

२ २५०० प्रतिया 'सेदपुर' निवासी स्व० विश्वनाथजी सिंघानिया व उनकी धर्म पत्नी स्व० गिनोया बाई की पुण्य स्मृति मे, उनकी सुपुत्री सीमादेवी गोरखपुर वाली ने प्रकाशित करवाई।

उपरोक्त महानुभावो ने इस पुण्य कृति के प्रकाशन मे सहयोग देकर सर्व साधारण के हितार्थ अनुपम आदर्श कार्य किया है।

श्रीयुत चम्पालालजी जैनाग्रवाल (धनावत) नेपालगंज (उ० प्र०)

मान् चम्पालालजी जैनाग्रवाल धर्मनिष्ठ, विनम्र, हँसमुख और अत्यन्त सरल स्वभावी महानुभाव हैं, आपकी धर्म पत्नी भी पतिव्रता एवं धर्मपरायण नारी रत्न है, आप दोनो ही गृहस्थोचित षट्कर्मों का सुन्दर भावना से निरन्तर पालन करते हैं, धार्मिक कार्यों मे आपका योगदान सराहनीय है। समय-समय पर तीर्थ यात्रा, गुरुजनो के दर्शनार्थ जाते हैं, सार्वजनिक कामो मे आपका स्तुत्य सहयोग रहता है, उदारता और परोपकार की उज्ज्वल भावना के कारण आपका 'नेपालगज' मे अच्छा समादर है। आपके सुपुत्र श्री पदमकुमारजी, शान्तिकुमार जी और विमलकुमारजी तीनो ही भाई धार्मिक कामो मे सोत्साह भाग लेते हैं, वैसे आपका परिवार ही धर्म भावना से सुशोभित है। आपका व्यवसाय नेपालगज में है। आपको धर्म भावना मे आगे बढाने का श्रेय आपके पिताजी एवं माताजी सुरजी देवी को है, जिन्होने उच्च विचारो का खजाना आपको विरासत मे प्रदान किया था।

आपके दादाजी स्व० रामदियालजी, पिताजी स्व० नथमलजी का नाम लाडनू (राजस्थान) मे गौरव के साथ लिया जाता है, अपने जन्म स्थान लाडनू में उन्होने जो उल्लेखनीय काम किए थे, जिनकी गुण गाथा आज भी जन-मानस को मुग्ध कर रही है, जन सेवा के कामो में आपका नाम अग्रणी माना जाता है।

आपकी धर्म निष्ठा और परोपकार बुद्धि सतत बनी रहे, यही हमारी कामना है।

— वंश वृक्ष —

गर्ग गोत्रीय श्रेष्ठीवर श्री रामदियालजी जैनाग्रवाल (धनावत)

↓

मनसुखदासजी, खूबचन्दजी, छोगमलजी,
मिर्जामलजी, नथमलजी, बालचन्दजी।

↓

रामपालजी, रामनारायणजी, चम्पालालजी,

↓

पदमकुमारजी, शान्तिकुमारजी, विमलकुमारजी

गिरधारीमल जैनाग्रवाल
मत्री, श्री चन्द्रसागर स्मारक ट्रस्ट
लाडनू (राजस्थान)

स्व० श्री विश्वनाथजी सिंघानिया
सेदपुर (बांगला देश)

आपका जन्म सिंघानिया परिवार में हुआ था, बचपन से ही आप उच्च विचारो से सुसज्जित थे, आपका व्यापार सेदपुर में था। आपकी धर्म पत्नी स्व० श्री गिनिया बाई अत्यन्त सरल स्वभावी पतिव्रता महिला रत्न थी, आप स्व० सेठ रामपालजी जैनाग्रवाल भद्रपुर वालो की सुपुत्री थी, धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत होने के कारण सेदपुर महिला समाज में आपकी अच्छी ख्याति थी। आप दोनों ही दम्पत्ति धर्मानुरागी एवं परोपकार परायण थे, जन-कल्याण के उदात्त ध्येय आज भी आपके जीवन को ऊंचा उठा रहे हैं। खेद के साथ लिखना पडता है कि बागलादेश की भयानक नर सहार लडाई के समय दुर्घटना मे आप दोनो की जीवन लीला समाप्त हो गई थी। विधि के विधान के आगे किसी का वश नही चलता, सयोग वश आपके नाम को उजागर करने वाली आपकी एक कन्या 'सुसीमा' नाम की बच गई, जिसका पाणिग्रहण गोरखपुर निवासी बाबू ज्योतिप्रसादजी मस्करा के साथ हुआ, जोकि सम्पन्न परिवार के और व्यवसायी हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ की २५०० प्रतिया श्रीमती सौभाग्यवती सीमा देवी ने अपने माता-पिता की यादगार मे प्रकाशित कराकर जनहित मे योग देकर अपने माता-पिता की अन्तिम इच्छा को कार्यरूप मे परिणत किया है।

जन साधारण को स्वास्थ्य लाभ के सरल उपायो का परिज्ञान कराने वाले प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशित कराना, आपके तथा आपके परिवारजनो को सुखकर होगा। हमारी यही भावना है कि आप निरन्तर धार्मिक कामो मे अग्रसर रहे और अपने मानव जन्म को सार्थक करे।

भगवानलाल जैनाग्रवाल
मत्री, श्री दि० जैन समाज
फारबिसगंज (बिहार)

❋ मंगल स्तवन ❋

रचयित्ता-

पण्डितरत्न न्यायालंकार श्री मक्खनलालजी शास्त्री

卐

सुध्यान में लवलीन हो, जब घातिया चारों हने।
सर्वज्ञ बोध विरागता को, पा लिया तब आपने।।
उपदेश दे हितकर अनेकों, भव्य निज सम कर लिए।
रवि ज्ञान किरण प्रकाश डालो, वीर! मेरे भी हिये।।

(वीर स्तवन)

卐

स्याद्वाद नय षट् द्रव्य गुण, पर्याय और प्रमाण का।
जड़-कर्म चेतन बन्ध का, अरु कर्म के अवसान का।।
कह कर स्वरूप यथार्थ जग का, जो किया उपकार है।
उसके लिए जिनवाणि! तुमको, वन्दना शत बार है।।

(जिनवाणी स्तवन)

卐

धरि कवच संयम, उग्र ध्यान, कठोर असि निज हाथ ले।
व्रत, समिति, गुप्ति सुधर्म भावन, वीर भट भी साथ ले।।
परचक्र-राग-द्वेष हनि, स्वातन्त्र्य निधि पाते हुए।।
वे स्व-पर तारक गुरु-तपोनिधि मुक्तिपथ जाते हुए।।

(गुरु स्तवन)

* सब ठाठ पड़ा रह जाएगा *

सब ठाठ पडा रह जाएगा, जब लाद चलेगा बंजारा।
यह पुत्र कलत्र-कुटुम्बीजन, कोई काम न तेरे आएगा।।
क्यो भूल रहा इन पर इतना, तू चेत तभी कल पाएगा।।१।।
ये दो दिन के सब साथी हैं, तू हंस अकेला जाएगा।
इस पुण्य पाप की गठरी का, तू इकला बोझ उठाएगा।।२।।
इसलिए चेत रे मूरख चेतन! क्यो नाहक भरमाया है।
इस दो दिन की जिन्दगानी पर, तू इतना क्यो इठलाया है।।३।।
ये तन-धन-यौवन-रूप-विभव, सबही इक दिन मिट जाना है।
क्यो इन पर इतना करे गरब, ये कर्मों का अफसाना है।।
तू निरख अरे! निज चेतन को, जो काम आएगा सदा तेरे।।४।।
इस जगत् जाल मे क्या रक्खा, यह भूलभुलैया सभी अरे।
मत करे सोच इन परिजन का, ये काम न आएगे तेरे।।
तू बोएगा सो काटेगा, ये सब बटमार तेरे नेरे।।५।।
जिस दिन यहां से तू करे कूच, ये सभी गैल मे छोडेगे।
यह गौन तेरी जो भरी पडी, इसके बांटन-हित दौडेंगे।।६।।
फिर नाम कोई न ले तेरा, मुख तेरे से सब मोडेगे।
जग की है यही रीति चेतन! ये इसे भला क्यो तोडेंगे।।७।।
तू चला यहां से कर खाली, तब सगे जो कहलाते तेरे।
मन मे हंस रहे केरी पूंजी के, लालचवश आए नेरे।।८।।
जिस गृहिणी पुत्र-कलत्र आदि को, अपना है तू मान रहा।
ये कारागृह की बेडी हैं, जिन पर इतना दे ध्यान रहा।।९।।
सोया बहु 'चक्र' नीद त्यागो, आतम के हित पागो जागो।
इस स्वप्नदशा से निकल, रूप निज निरखो याके हित पागो।१०।
कहते हैं गुरु सुन रे भविजन!, अजहू न जगे तो फिर न जगे।
ये आखिर तोको दाव मिलो, हित आतम के तू क्यो न पगे।११।

卐 चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तवन 卐

जिनधर्म और जिनराज की, जय बोलो, बोलो, बोलो ।
श्री चौबीसों भगवान की, जय बोलो, बोलो, बोलो ॥

ऋषभनाथ जिनधर्म बताया, अजितनाथ रिपु मोह हराया ।
सम्भव भव दुःख दूर भगाया, अभिनन्दन आनन्द बढ़ाया ॥
कर्मजयी जिनराज की, जय बोलो, बोलो, बोलो ॥१॥

सुमति, पद्म शिवपद के दाता, श्रीसुपार्श्व भव-फन्द मिटाता ।
चन्द्रप्रभु जब मन मे आता, समन्तभद्र तब माथ नवाता ॥
पुष्पदन्त सुखकार की, जय बोलो, बोलो, बोलो ॥२॥

शीतलनाथ, श्रेयांस महन्ता, वासुपूज्य हैं जग-पूजन्ता ।
विमल विमलपद निर्मल दाता, अनन्तनाथ है जगविख्याता ॥
धर्मनाथ भगवान की, जय बोलो, बोलो, बोलो ॥३॥

शान्ति, कुन्थु प्रभु सुख के दाता, अर मल्लि हैं जग के त्राता ।
मुनिसुव्रत व्रत ग्रहण करन्ता, नमि, नेमी वैराग्य धरन्ता ॥
वीतराग भगवान की, जय बोलो, बोलो, बोलो ॥४॥

पार्श्वनाथ आतम-तप धरता, कमठ दुष्ट उपसर्ग है करता ;
महावीर पशु-यज्ञ हटाता, विश्व-प्रेम का पाठ पढ़ाता ॥
वर्धमान जिनराज की, जय बोलो, बोलो, बोलो ॥५॥

ऋषभ आदि महावीर जिनेश्वर, वीतराग सर्वज्ञ जगेश्वर ।
ये ही हैं सच्चे परमेश्वर, सिद्धसागर नमो नमोस्तु जिनेश्वर ।
विश्व-धर्म सरताज की, जय बोलो, बोलो, बोलो ॥६॥

विषय-सूची

★

विषय-	पृष्ठ संख्या
शिर - गंज रोग	८६
कफ - रोग	८६
पित्त - रोग	६०
खांसी - रोग	६७
दमा (श्वास) रोग	१०७
क्षय रोग (तपेदिक)	११३
बालको के ज्वर तथा अन्य रोग	११८
दन्त - रोग	१२३
मुख के छाले	१३१
गले के रोग	१३४
हिचकी - रोग	१४१
बल पुरुषार्थ और मगज पुष्ट	१४४
नेत्र - रोग	१४८
कान - रोग	१६४
नाक - रोग	१७०
वमन - रोग	१७२
हैजा - रोग	१७८
पत्थरी - रोग	१८१
लीवर (यकृत्) रोग	१८३
तिल्ली (लिप) रोग	१८६
हृदय - रोग	१६१
रक्त चाप (ब्लड प्रेशर)	१६६
जलोदर - रोग	१६८
उदर (पेट) रोग	२०१
पेट की गैस (वायु)	२०६
कब्ज - रोग	२१७

विषय—	पृष्ठ संख्या
अग्नि से जले हुये तथा अन्य उपाय	३०६
अदीठ फोडा, विषाली, कीडी नाल, नहरुआ आदि	३११
सर्प, बिच्छू तथा हिडक्या (पागल) कुत्ता आदि के काटने पर	३१४
स्त्री चिकित्सा	३१८
आरोग्य सम्बन्धी दोहे	३२७
विशेष नुस्खे	३३०
卐 मानव-मार्ग - दर्शन तृतीय भाग पर प्राप्त आशीर्वाद एव अभिमत	३४६ से ३६८

॥ श्री महावीराय नम ॥

स्वास्थ्य बोधामृत

॥ श्री जिनायनम ॥

* मंगलाचरण *

श्री आदि-वीर जिनेन्द्र को, बार बार शिर नाय।
सग्रह स्वास्थ्याचार का, करूं स्व-पर सुखदाय॥

स्वास्थ्य सम्बन्धी उपयोगी नियम

१ प्रात काल सूर्योदय से १॥ घन्टा पहले उठकर परमपिता परमात्मा का नाम स्मरण करना चाहिय क्योकि इस समय को अमृतवेला कहते हैं। वास्तव मे इस समय की वायु अमृत सदृश लाभदायक होती है, इतना ही नही इस समय कठिन से कठिन कार्य किया जाय तो भी वह आसानी से सिद्ध हो सकता है, कारण कि रातभर सोने से मस्तिष्क हल्का हो जाता है और उस समय का वातावरण भी बडा शान्त रहता है, परन्तु जो व्यक्ति उठने में प्रमाद करके

दिन चढने तक सोये रहते हैं, उनकी आरोग्यता नष्ट होती है व मन मलीन रहता है, फिर दिन भर उनके सुस्ती रहती है व आलस्य घेरे रहता है तथा उनका काम करने मे मन नही लगता। अंत आरोग्यता और सुख चाहने वाले प्राणियो को रात्रि मे समय पर सोना और प्रात काल जल्दी उठ जाना जरूरी है।

२ **शौचकार्य**– अमृतवेला मे उठकर प्रभु का नाम स्मरण कर शौचादि क्रियाओ से निवृत्ति लेना चाहिये, क्योकि शौचादि से निपट लेने से शरीर हल्का और फुर्तीला रहता है, मल आदि के वेग को कदापि नही रोकना चाहिये, जो लोग इसके वेग को रोकते है, उन्हे कई बीमारियो का सामना करना पडता है, जैसे- पेट फूलना, शूल होना, बुरी डकारे आना, बवासीर रोग का होना इत्यादि अनेक रोग उत्पन्न होते है, इससे पाखाना की इच्छा भी मद होती है व कब्ज हो जाता है, अत शौच-क्रिया मे प्रमाद नही करना चाहिये। फिर मिट्टी व भस्म (राख) से हाथ पाव अच्छी तरह धोना चाहिये।

३ **दन्त-धोवन**–रात्रि को मुँह मे मल का पीला थर जम जाता है, यदि उसे अच्छी तरह साफ न किया जाय तो वह मल (जहर) पेट मे जाकर आतो मे हानि पहुचाता है तथा दाँतो की अच्छी सफाई हुए बिना उनमे अन्न के कण रह जाते है, फिर वे सड कर उनमे कृमि उत्पन्न करते है और इससे दाँतो के पायरिया आदि अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हे। अत दाँतो को नित्य नीम, बबूल आदि की दातून या मन्जन से साफ करना चाहिये। वास्तव मे दाँतो को साफ करने से दाँतो का मैल, दुर्गन्ध, कफ नाश होता है, इससे मन प्रफुल्लित रहता है तथा मुँह भी अच्छा दिखता है।

४ **उषा-पान**– सूर्योदय से पूर्व उठकर शौचादि क्रियाओ व दतमजन आदि करके १ - १॥ गिलास पानी पीना स्वास्थ्य के लिए हितकारी होता है, इस समय का जल पीना अमृतपान समान बताया है, इससे मल विसर्जन अच्छा होता है, अर्थात् मलावरोध नही होता

है तथा इस समय का जल-पान आमाशय और आँतो को साफ करता है, इतना ही नही इससे मूत्राघात, नेत्ररोग, ज्वर, संग्रहणी, रक्तपित, गले व सिर के रोग भी मिटते हैं।

५ **वायु सेवन**– मानव का मुख्य आहार वायु ही है अत शुद्ध हवा का सेवन ज्यादा से ज्यादा करना चाहिये, प्रतिदिन सुबह-शाम अपनी शक्ति के अनुसार २-४ मील घूमना चाहिये जिससे अनेक रोगो का शमन सरलता से हो जाता है, कहा भी है कि "सौ दवा और एक हवा" इससे शरीर मे स्फूर्ति आती है और तेज बढता है अत जहाँ सूर्य का प्रकाश व शुद्ध हवा हो उसी स्थान मे रहना चाहिये श्वास निरन्तर नाक मे लेना अच्छा होता है मुँह से लेना हानिकारक होता है, क्योकि नाक के दोनो छिद्रो मे पर्दे होते है वे छनने का काम करते है, जिससे गन्दगी अन्दर नही जाती है, यदि मुँह से श्वास लिया जायेगा तो हवा की गन्दगी फेफडो मे चली जाएगी और उससे आरोग्यता बिगड जाएगी।

६ **धूप में बैठना**– रोजाना प्रात थोडी देर धूप मे बैठना चाहिये। इस समय की सूर्य किरणे रक्त शोधक, रोग विनाशक और शक्ति-दायिनी होती हैं, सूर्य का प्रकाश भी स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होता है।

७ **व्यायाम**– व्यायाम करने से शरीर मे हल्कापन और हर काम करने की सामर्थ्य होती है, इससे शरीर के प्रत्येक अवयव दृढ एव सुविभक्त होते है, शरीर सम्बन्धी रोगो का नाश होता है, जठराग्नि की वृद्धि होती है, काम करने की शक्ति होती है, अति-रिक्त मानसिक परिश्रम करने से जो परेशानी होती है उसकी पूर्ति व्यायाम से हो जाती है। व्यायाम करने वालो मे सहनशीलता, निर्भयता, आत्मविश्वास और चरित्र की दृढता आदि गुणों का विकास होता है। अत प्रातः शौचादिकार्यों से निवृत्त होकर कम से कम १५-२० मिनट व्यायाम अवश्य करना चाहिये।

८ **तैलमालिश**—तेल की मालिश करने से शरीर में रस, रक्त, मास आदि धातुओ की वृद्धि होती है, जैसे वृक्ष की जड मे पानी देने से उसकी पत्तिया और फूल आदि बढती हैं व फैलती हैं तथा वृक्ष हरा भरा मजबूत हो जाता है। सर्दी के दिनो मे तो अत्यन्त गुणकारी होता है। मालिश करना भी एक तरह का व्यायाम है, मालिश कर चुकने के बाद शरीर को अच्छी तरह से रगडकर नहाना चाहिये और खद्दर के तौलिये से साफ कर लेना चाहिये।

९ **स्नान**—स्नान करने से शरीर की त्वचा की सफाई होती है और रोम कूप खुल जाते हैं, स्नान न करने से रोम कूप बन्द होकर रोग उत्पन्न होते हैं, स्नान करने से थकावट, दाह, प्यास, खाज, पसीना आदि नष्ट होकर मन प्रसन्न हो जाता है, इससे पुरुषार्थ बढता है, रक्त साफ होता है और अग्नि प्रदीप्त होती है। अत प्रात काल ताजे पानी से स्नान करना लाभदायक है, स्नान के लिए पानी ज्यादा गर्म और ठण्डा हानिकारक होता है। यदि सिर पर गर्म पानी डालकर स्नान किया जाय तो नेत्र रोग की उत्पत्ति हो जायेगी। याद रहे स्नान करते समय सर्व प्रथम पानी सिर पर डालना चाहिए। अन्यथा शरीर की गर्मी ऊपर चढकर सिरदद आदि होने को सभावना रहती है।

१०. **शुद्धजल-पान**—यथार्थ मे शरीर की स्थिति बनाये रखने मे वायु के पश्चात् दूसरा स्थान जल का है, आहार न मिलने से व्यक्ति एकदम मर नही सकता, किन्तु पानी न मिलने पर बेहोश होकर प्राण भी छूट सकते हैं। जल के द्वारा ही भोज्य पदार्थों के अ श मे मिलकर शरीर के विभिन्न भागो मे पहुचते हैं, जल से ही शरीर के मल-रूप निकृष्ट हानिकारक पदार्थ बाहर निकलते हैं, इस प्रकार रक्त और शरीर के अनेक रस जल से ही बनते हैं। अत स्वच्छ जल पीना चाहिये, यह सबसे श्रेष्ठ पेय है, पानी को घूंट घूंट करके सरलता से पीना चाहिये, एकदम नहीं पीना चाहिये। याद

रहे-मैथुन आदि के पीछे तथा पसीने मे व भूख, शोक और क्रोध की दशा मे पिया हुआ पानी तत्काल रोग पैदा करता है, भोजन के पहले पानी पीने से जठराग्नि मन्द हो जाती है तथा भोजन के अन्त मे ज्यादा पानी पीने से शरीर मोटा हो जाता है अत भोजन के बीच मे जल पीना अच्छा होता है तथा भोजन के एक घन्टा बाद पानी पीना लाभदायक होता है। प्रात काल का जल पीना अमृत तुल्य है, वात और कफ विकार मे उष्ण पानी तथा पित्त और रक्त विकार मे शीतल पानी पीना चाहिये। पानी हमेशा ही छानकर पीना आत्म-स्वास्थ्य और शरीर स्वास्थ्य दानो के ही लिए हितकर होता है।

११ आहार—आहार से शरीर मे गर्मी पहुंचती है, आहारादि पदार्थ पचकर ही रस-रक्तादि बनते हैं। बिना आहार के जीवन नही रह सकता है। इससे ही देह को धारण करने वाली आयु, तेज, उत्साह कान्ति आदि बढती है, दिनभर काम करने से जो परिश्रम पडता है और उससे शरीर की शक्ति का क्षय होता है, उस क्षति की पूर्ति आहार से होती है। अत आहार सम्बन्धी नियमो का निम्न प्रकार पालन करना चाहिये।

(१) नियत समय पर सब काम छोड कर भोजन अवश्य कर लेना चाहिये अर्थात् जिस प्रकार बिना ईधन के आग बुझ जाती है उसी प्रकार भूख लगने पर भोजन न करने से जठराग्नि मद पड जाती है।

(२) भोजन को खूब चबाकर करना चाहिये, सुहाता गर्म भोजन करना चाहिये।

(३) भोजन करते समय मौन रहना चाहिये तथा भोजन करते समय प्रसन्न रहना चाहिये।

(४) भोजन उतना ही करना चाहिये जिसको पचाने मे तकलीफ न हो।

(५) भोजन बनाने मे आटा हाथचक्की का उत्तम रहता है तथा मोटा चोकर युक्त व दाल छिलकेदार व चावल माड मिले हुये सेवन करना चाहिये ।

(६) सब आहारो मे श्रेष्ठ फलाहार माना गया है, अत फलो का सेवन विशेष करना चाहिये ।

(७) हरी सब्जियो की तरकारी खून को साफ करती है, कब्ज मिटाती है अत भोजन मे तरकारी पर्याप्त मात्रा मे खानी चाहिये ।

(८) पेय पदार्थो मे दूध अच्छा पदार्थ है, इसमे प्राय सभी गुण मौजूद है इससे शरीर का पोषण होता है, शक्ति बढती है, अत भोजन के अन्त मे तथा प्रात व शाम को दूध जरूर पीना चाहिये ।

(९) भोजन ताजा रस युक्त, हल्का, स्नेह युक्त और प्रिय होना चाहिये जैसे गेहूँ, चावल, जौ, मूग, चना, दूध, घृत, शक्कर, सेधानमक, अच्छे ताजे फल आदि । इनको सात्विक आहार कहते हैं । अत्यन्त उष्ण, ठण्डा, कडवा, रूखा, चटपटा, खट्टा, गरिष्ठ, लालमिर्च, प्याज, लहसुन, शराब, मास, चाय, काफी, तम्बाकू, गाजा आदि तामसी आहार कहलाता है । इनसे काम क्रोध आदि बढते हैं और आयु, तेज, सौभाग्य आदि घटते हैं, अतएव इनका परहेज रखना चाहिये ।

(१०) भोजन के समय विचार पवित्र व अच्छे होने चाहिये क्योकि विचारो का भोजन से गहरा सम्बन्ध है ।

(११) भोजन के पश्चात् कम से कम १०० कदम जरूर टहलना चाहिये ।

(१२) भोजन करने के बाद कम से कम मानसिक और शारीरिक परिश्रम नही करना चाहिये ।

(१३) भोजन करते समय इधर-उधर भागना नही चाहिये ।

(१४) भोजन करने वाले को चौकी या आसन पर बैठकर सामने

भोजन की थाली को थोडा ऊँचा पाटा या चौकी पर रखना चाहिये ।

१२ **निद्रा**—शरीर के लिए निद्रा की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। यह आयुष्य, बुद्धि और स्वास्थ्य वृद्धि का एक प्रबल कारण है, व्यक्ति को नीद अच्छी आ जावे तो समझना चाहिये कि शरीर के अवयव अपना-अपना काम कर रहे है अर्थात् कोई रोग नही है। जब मानव काम करते करते थक जाता है या मानसिक विचारो से मन क्लात हो जाता है तब इन्द्रिया सब कामो से निवृत्त होकर विश्राम करना चाहती हैं, उस समय व्यक्ति सा जाता है, फिर अच्छी निद्रा आने से शरीर मे जीवनी शक्ति का सचार होता है, जिससे शरीर स्वस्थ होता है किन्तु निद्रा न आने पर शरीर मे आलस्य, पाचन-शक्ति का अभाव, बद्धकोष्ठता आदि अनेक विकार होते है। अत प्रत्येक मनुष्य को कम से कम ६-७ घन्टा अच्छी नीद अवश्य लेनी चाहिये।

१३ **ब्रह्मचर्य**—मानव यदि ब्रह्मचर्य से रहित है तो पौष्टिक पदार्थों का सेवन करने पर भी बलिष्ठ नही होता, जबकि रूखा भोजन करने वाला यदि ब्रह्मचर्य से रहता है तो मनुष्य बलिष्ठ हो सकता है। देखा ! मनुष्य जो कुछ खाता है, वह पाक स्थली मे जाकर उसका रस बनता है, रस से रक्त, रक्त से मास, माँस से मेद, मेद से अस्थि अस्थि से मज्जा और मज्जा से वीर्य की उत्पत्ति होती है अत वीर्य शरीर का तेज-काति और जीवन का आधार है। शरीर का सर्वोत्तम अग मस्तिष्क है, उसमे शरीर के सारभूत पदार्थ भरे रहते हैं। वीर्य के नाश होने पर मस्तिष्क निस्सारमा हो जाता है, जिससे स्मृति, बुद्धि, प्रतिभा आदि नष्ट हो जाती है सिर घूमने लगता है, प्रकृति रूखी, क्रोधी व भीरूपन की हो जाती है, मन सदा चचल और उदासीन रहता है। अत "ब्रह्मचर्य ही जीवन है" इसका पूर्ण ध्यान रखकर दृढता पूर्वक पालन करना चाहिये।

१४ उपवास—कम से कम मनुष्य को १ महिने में चार उपवास तो जरूर करना चाहिये जिससे पाचक अवयवों को विश्राम मिलता रहे, शरीर की स्वस्थता मे उपवास अपना सर्वोपरि स्थान रखता है, उपवास करने से सचित होने वाले विजातीय द्रव्य जो कुपथ्य आदि से पैदा होते हैं, उन्हे बाहर निकालने मे उपवास राम-बाण दवा है। अत तब तक कुछ न खाइये जब तक भूख न लगे इसका अर्थ यह है कि पाचन क्रिया को ठीक अवस्था मे रखना। वास्तव मे उपवास के दिन निराहार रहना चाहिये, कई भाई रसना इन्द्रिय की लोलुपता से उपवास के दिन मावा, रबडी, मलाई, सिघाडे का हलुआ आदि भक्षण करते हैं, इस प्रकार के उपवास से तो रोटी साग खाना बहुत अच्छा है, क्योकि सादा भोजन करने से शरीर में अशान्ति न होगी जबकि गरिष्ठ पदार्थों से शरीर पर बुरा प्रभाव पडता है। वस्तुत उपवास करना इन्द्रियो की लोलुपता मन्द करना है, न कि इन्द्रियो और मन को उत्तेजित करने वाले गरिष्ठ पदार्थ खाना। साराश यह है कि उपवास से जीवन मे धर्म के प्रति रुचि और स्वास्थ्य मे लाभ होता है अतः उपवास के दूसरे दिन भी फलाहार या हल्का भोजन करना उचित है, जिससे मन का वेग भी शान्त रहे व स्वास्थ्य मे भी लाभदायक हो।

१५. वेग—अपानवायु, मल-मूत्र, छीक, पिपासा, क्षुधा, निद्रा, खासी, श्रम, श्वास, जमुहाई, छर्दि, आँसू, शुक्रवेग आदि को नही रोकना चाहिये, इन्हे रोकने से कई प्रकार के रोग हो जाते हैं, जैसे— अपानवायु रोकने से गुल्म-उदावर्त, मल का वेग रोकने से सिरदर्द, उदर सम्बन्धी रोग, मूत्रवेग रोकने से पथरी पड जाना व मूत्रेन्द्रिय मे पीड़ा आदि हो जाना, अतः वेगों को कदापि रोकना नहीं चाहिये। मानव अज्ञान से व प्रमाद वश उपरोक्त वेगों को रोककर अपना भारी अहित कर लेते हैं, जिससे उन्हें

भयंकर रोगो का सामना करना पड़ता है। अत यथा समय वेग सम्बन्धी कामो को करना चाहिये।

१६. **विचारों की पवित्रता**—अच्छे स्वास्थ्य के लिए पवित्र विचारो का होना आवश्यक होता है, मनुष्य को काम, क्रोध, मद और लोभादि विकारों से बचना चाहिये। कहा भी है कि—

काम क्रोध मद लोभ वृत्तिया, करती नित जीवन का ह्रास।
समता तुला बिगड़ी इससे, नही फटकता सुख नीज पास।।

तत्त्वज्ञ पुरुषो ने बताया है कि अच्छे विचार तब हो सकते हैं, जबकि प्राणियो का मन शुद्ध हो, मन के शुद्ध होने के लिए शुद्ध अन्नादि का होना आवश्यक होता है, शुद्ध अन्न उसे कहते हैं जो परिश्रमपूर्वक ईमानदारी से उपार्जन (कमाया) हुआ हो तथा देख शोधकर तैयार किया हो, इसके अलावा छल कपट से कमाया हुआ अन्न खाने से विचारो मे पवित्रता नहीं आती, जैसे दीपक अन्धकार तथा काले पदार्थों को खाता है और कज्जल को उगलता है। कहा भी है कि "जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन" साराश यह है कि न्यायोपार्जित अन्न का सेवन करना उत्तम है तथा निकृष्ट मनोवृत्तियो से मन की रक्षा के लिए आगम शास्त्रो का स्वाध्याय करना चाहिये तथा उत्तम विचारों के लिए सज्जनो की सगति मे रहना चाहिए।

१७ **वस्त्र**—सर्दी और गर्मी के मौसम के अनुसार वस्त्र पहनना चाहिये, मात्र दिखावे के लिए कपडा नही पहना जाता है, परन्तु स्वच्छ और खादी आदि के कपड़े पहनने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है, वस्त्र ऐसे पहनने चाहिये जो शरीर को प्रकाश और हवा से सम्पर्क मे बाधक न हो, बहुत गफ व चिकना तथा गहरे रग का कपडा पहनने से भी स्वास्थ्य बिगडता है तथा ज्यादा भडकीले व अधिक कीमती कपडे पहनने से भी मन मे विकार भाव पैदा होता है। सारांश यह है कि कपड़ा सादा और स्वच्छ पहनाना ही लाभदायक

होता है। अत इस ओर विशेष ध्यान देकर सादा वस्त्र पहनना चाहिये।

१८. **यथेष्ट परिश्रम**—परिश्रम न करने से मानव आलसी व प्रमादी बन जाता है तथा स्वास्थ्य भी बिगड़ जाता है, फिर आलसी मनुष्य का जीवन उस पानी के गड्ढे के समान होता है, जो काम न आने से अथवा न बहने से सड जाता है, इसी प्रकार जो व्यक्ति परिश्रम नही करता है, उसे किसी भी कार्य मे सफलता नही मिलती है, बेकार रहने से स्वास्थ्य भी खराब हो जाता है। अत शरीर से यथाशक्ति प्रतिदिन परिश्रम करते रहना चाहिये।

१९ **जीवन का लक्ष्य**—मनुष्य को अपना जन्म सार्थक बनाने के लिए जीवन का कुछ लक्ष्य जरूर बनाना चाहिये और उसकी पूर्ति के लिए एक समय विभाग चक्र बनाकर फिर उसी के अनुसार नियमित रूप से कार्य करना चाहिये, नियत समय पर किया हुआ काम अच्छा व सुखप्रद होता है क्योकि समय अमूल्य है, गया हुआ समय वापस नही आता, अत अपने जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ नही गमाना चाहिये। प्रतिक्षण विचार करना चाहिये कि मै अपने कर्त्तव्यो का पालन किस प्रकार कर रहा हूं तथा कौनसे काम मे त्रुटि हो रही है, ऐसे विचार कर अपनी गल्तियों को निकालना ही मानव जीवन का सार है। यथार्थ मे जो व्यक्ति गल्ती करके उसे छिपाता है, वह आचार्यों की दृष्टि मे महापापी होता है क्योकि गल्ती करने का पाप जो कहता है फिर उसे छिपाकर उससे भी ज्यादा पाप और बाधता है। तात्पर्य यह है कि अपनी गल्तियो को निकालना ही सफलता के पास पहुचना है।

२० **मौन**—मानसिक विकारो के शमन हेतु मौन रखना अनिवार्य है। इससे गला, नाक और मस्तिष्क सम्बन्धी रोगो में अत्यन्त लाभ होता है, इतना ही नही मौन के समय आत्म चिन्तन करने से

मानसिक शक्ति का अद्भुत विकास होता है। याद रहे कि मन के मौन बिना मात्र जिह्वा के मौन से प्राय लाभ न होकर हानि हो जाती है। देखो! मन मे बोलने की इच्छा हो और जीभ से यदि न बोला जाय तो विशेष लाभ नही होता। मौन के समय कोई अनुचित कार्य करना व सोचना हानिप्रद है, यहा तक कि मौन के समय लेखनी या सकेत करना भी अच्छा नही होता। मनुष्य को प्रतिदिन कम से कम एक घण्टा तो मौन जरूर रखना चाहिये, यदि विधिपूर्वक मौन रखा जाय तो फेफडा, गला, नेत्र और हृदय सम्बन्धी सभी प्रमुख रोगो का निवारण हो सकता है।

२१ चाय—स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए मनुष्य को चाय और कॉफी का परित्याग कर देना चाहिये इसका नियमित प्रयोग मन्दाग्नि उत्पन्न करता है, अत आरोग्यता के लिए इन हानि-कारक पेय पदार्थों का त्याग करना आवश्यक होता है।

२२ भोजन करने के पश्चात् मनुष्य को धीरे-धीरे १०० कदम जरूर चलना चाहिये। इससे भोजन किया हुआ अन्न का समूह उदर मे स्थिर होता है और गर्दन, घुटने तथा कमर को आराम मिलता है। भोजन के बाद प्रथम सीधा लेटकर ८ श्वास लेवे फिर दाहिनी करवट से लेटकर १६ श्वास लेवे फिर बाई करवट से सोकर ३२ श्वास लेवे। इससे अनेक प्रकार की बीमारिया मिटती हैं।

२४. दिन मे निद्रा लेना अच्छा नही होता क्योकि दिन मे सोने से कफ बढता है और उससे कई रोग उत्पन्न होते हैं। ग्रीष्म ऋतु को छोडकर दिन मे नही सोना चाहिये, यदि आदत पड गई हो तो थोडा सा सो जाना चाहिये।

२५ आयुर्वेदाचार्यों ने मात्रा से अधिक खाने का निषेध किया है क्योकि मात्रा से अधिक अन्न खाने से आलस्य, भारीपन, बद-हजमी, अजीर्ण, पेट फूलना इत्यादि विकार हो जाते हैं।

२५ निरोग रहने की भावना रखने वालो को पेट के दो भाग अन्नादि से भरकर, तीसरा भाग पानी से भरना चाहिये और चौथा भाग वायु (प्राण) के चलने-फिरने के लिये रखना चाहिये। पानी भोजन करते समय बीच-बीच में पीना चाहिये, जिससे यह शरीर कई प्रकार की व्याधियो से बच जावे।

२६ मात्रा से ज्यादा, स्वभाव से भारी और सस्कार से भारी पदार्थों को ज्यादा न खाना चाहिये, क्योंकि अधिक खाने से सिवाय हानि के और कुछ लाभ नही होता।

२७ सेंधे नमक को छोडकर शेष सभी नमक आँखो के लिये अहित-कारी होते हैं। अत सेंधा नमक का उपयोग करना अच्छा होता है, इसके अतिरिक्त सेधा नमक खनिज पदार्थ होता है, अत गुणकारी है।

२८ गर्म पदार्थों के साथ दही, तेल और दूध आदि भी त्याज्य होते है।

२९. खटाई और मिर्च अधिक सेवन करने से स्वास्थ्य पर बुरा असर पडता है।

३० पानी पीने वालो को बैठकर शान्ति से पानी पीना चाहिये, खडे-खडे पानी पीने से स्वास्थ्य मे हानि होती है।

३१. घृत पीने की विधि और लाभ—गाय का शुद्ध ताजा घृत गरम करके काली मिर्च के साथ सदा पीने से शरीर मे रूखापन, वात, पित्त, विष आदि नष्ट हो जाते हैं, इतना ही नही घृत-पान से नेत्र ज्योति बढ़ती है और चश्मा भी उतर जाता है तथा शक्ति दायक होता है।

३२ जल से कई रोगों का उपचार–१ सेर का १ पाव पानी पक कर रहने से रोगी को दिया जाय तो मलरोधक और अग्नि को दीपन करने वाला होता है, वास्तव में गर्म पानी हल्का, स्वच्छ, वस्ति-शोधक, पसली पीड़ा, पीनस, अफारा, तृषा, श्वास, शूल रोग, खांसी आदि रोगों में बडा हितकर होता है। अतः पानी को

पकाकर स्वत ही ठण्डा होने पर तथा कुछ गुनगुना पीना चाहिये । याद रहे रात्रि में पकाया हुआ पानी रात्रि मे और दिन मे पकाया हुआ दिन मे पीना चाहिये, कई व्यक्ति अजानकारी से पानी ज्यादा गर्म होने पर उसमे ठण्डा मिलाकर काम में लेते हैं सो ऐसा करना रोगों को आमन्त्रण करना है, अर्थात् हानिकारक होता है । यहाँ एक बात और जानने की है कि गर्म पानी को ऊपर से धार बाँधकर या पखे के नीचे रखकर ठण्डा करने से वह जल भारी पड जाता है तथा कठिनता से पचता है । वस्तुत गर्म पानी एक प्रकार की औषधि है, इससे आत्म-स्वास्थ्य तथा शरीर-स्वास्थ्य दोनो मे ही लाभ होता है ।

३४. सयमित शुद्ध स्वच्छ भोजन पान का सुसस्कृत जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध रहता है, अत शाकाहार भोजन का महत्त्व सभ्य जीवन मे पडता है । शाकाहार भोजन मानव जीवन के विकास का मूल है, इससे प्राणियो की रक्षा होते हुए स्वास्थ्य जीवन की रक्षा भी होती है, तात्पर्य यह है कि सुखार्थीजनो को अपने स्वास्थ्य और धर्म को कायम रखने के लिए सात्त्विक भोजन करना चाहिये ।

३५ मर्यादा के बाहर खाने-पीने से रोगो की उत्पत्ति होती है । अत मनुष्य को भोजन करते समय अपने पेट के दो भागों को अन्न से भरना चाहिये तथा तीसरा भाग पानी से भरना चाहिये और चौथा भाग वायु (प्राण) के चलने-फिरने के लिए खाली रखना चाहिए । पानी को अधिक तथा कम मात्रा मे पीने से भी हानि होती है, अत प्यास के अनुसार पीना अच्छा रहता है, भोजन के मध्य मे भी जल पीना आवश्यक होता है ।

३६ प्राय: स्वास्थ्य अच्छा रखने में मन की विशुद्धता भी एक उत्तम औषधि है, जिन लोगों के मन में गलत बाते रहती हैं, उनका स्वास्थ्य अधिकतर बिगड़ जाता है । अत: स्वास्थ्य लाभ के लिए

दृढ विश्वास, सम्यग्श्रद्धा, सदाचार, वस्तु स्वरूप का ज्ञान, गन्दे विचारो का अभाव व बुरी वासनाओ का परित्याग करना अत्यावश्यक होता है। तात्पर्य यह है कि स्वास्थ्य लाभ का अनुभव वही व्यक्ति कर सकता है जो सदाचार, प्रेम उदारता, शान्त-चित्त रहता हो, परन्तु जिसका हृदय इनसे शून्य होता है वह चाहे जितनी कीमती औषधियो का उपयोग करते रहे, किन्तु वह व्यक्ति निरोग अवस्था को प्राप्त नही कर सकता है।

३७ लोक मे दोषो की विषमता को रोग कहते हैं और दोषो की समता को आरोग्यता कहते हैं। मोटे रूप मे रोग चार प्रकार के होते है १-स्वाभाविक २-आगन्तुक ३-मानसिक ४-कामिक। जैसे-भूख-प्यास निद्रा, इच्छा, वृद्धावस्था आदि स्वाभाविक रोग होते हैं। जन्मान्धता तथा पत्थर आदि की चोट लग जाना आगन्तुक रोग होते है। काम, क्रोध, लोभ, भय, मोह, दीनता, अभिमान, शोक, खेद, चुगली, ईर्ष्या, मात्सर्यता, उन्माद, मृगी मूर्च्छा और भ्रम आदि मानसिक रोग होते हैं। ज्वरादि कायिक रोग होते हैं।

३८ मनुष्य को चाहिये कि वे अपने शरीर मे रोग उत्पन्न होते ही तत्काल इलाज करे और पथ्य से रहे, क्योकि अग्नि, शत्रु और रोग बढते देर नही लगती है। देखो! जो रोग साध्य होता है उसकी समय पर चिकित्सा न करने से वह रोग कष्ट साध्य हो जाता है और कष्ट साध्य-असाध्य बन जाता है फिर चिकित्सा करने पर भी वह रोग मिटना दुर्लभ हो जाता है और अति वेदना देते हुए प्राणी को मृत्यु की गोद मे सुला देता है। अत रोग होते ही बिना प्रमाद के चिकित्सा करनी आवश्यक है तथा रोगी के लिए पथ्य से रहना भी नितात जरूरी है, क्योकि यदि रोगी पथ्य की जगह कुपथ्य करें तो एक नही अनेक औषधियो के सेवन से भी वह निरोग होना मुश्किल हो जाता है। कभी-कभी बिना

औषध के मात्र पथ्य की साधना से रोग शांत हो जाता है, अत: जो वस्तु अपनी प्रकृति के अनुकूल हो तथा वैद्यराज की आज्ञानुसार खाना-पीना आदि पथ्य है।

३९. पहले किया हुआ भोजन पचजाने पर दुबारा करना, मल-मूत्रादि के वेगो को न रोकना, ब्रह्मचर्य और अहिंसा का पालन करना, दुस्साहस कार्यों का त्याग देना यह स बजीवन के लिए हितकारी है, अतएव मनुष्य को अपना हिताहित देखकर स्वास्थ्य रक्षार्थ साधन से रहना चाहिये।

४० मनुष्य को नियमानुसार दिनचर्या, रात्रिचर्या तथा ऋतुचर्या करनी चाहिये जिससे आरोग्यता बनी रहे परन्तु समय पर क्रियाएँ न करने से स्वास्थ्य बिगड जाता है यदि मनुष्य समय पर कार्य करने की आदत डाल ले तो वह शारीरिक और मानसिक रोगो से बच सकता है, यह रामबाण औषधि है।

४१. मनुष्य को भोजन करते समय प्रसन्न रहना चाहिये जिससे बल तथा शक्ति की वृद्धि हो सके, इसके विपरीत अनादर से किया हुआ भोजन शरीर और मन पर उल्टा प्रभाव डालता है। यह बात आज के मनोविज्ञान की कसोटी पर भी खरी उतरती है, कहा भी है कि मनोभावो का पाचन शक्ति पर प्रभाव पडता है, जबकि बुरी भावनाये शरीर मे ऐसे रस उत्पन्न करती है, जो पाचन रसो को नष्ट या विकृत कर देती हैं। अत. जो भोजन भक्ष्य हो सादा हो विशुद्ध हो उसे आदर सहित प्रसन्नचित्त से ग्रहण करना चाहिये, जिससे स्वास्थ्य तथा धर्म दोनो की रक्षा हो सके।

औषध क्रिया की परिभाषा

स्वरस, कल्क, क्वाथ, हिम, फांट, चूर्ण, अवलेह, गुटिका, स्नेह आदि औषध-क्रिया कहलाती हैं।

१. **स्वरस-क्रिया**— जो वनस्पति ताजी हो, कीडो से खाई हुई न हो जिसकी मिट्टी आदि साफ करदी हो ऐसी वनस्पति को तत्का कूटकर मसलकर वस्त्र आदि से निचोडकर उसका रस निकाल को "स्वरस" कहते हैं। यदि ताजी वनस्पति न मिले तो सूख औषधि को दुगने पानी मे चूर्ण कर मिट्टी के बर्तन मे आ पहर (दिन-रात) भीगने दें फिर उसे वस्त्र से निचोडक छानलें। अथवा सूखी औषधि को आठ गुना पानी मे औटाक चौथाई रहजाय तो छानलें। यह स्वरस बनाने की विधि है।

२. **कल्क क्रिया की विधि**—गीली वनस्पति को चटनी की तरह महीन पीसले तथा सूखी औषधि को पानी के साथ पीसकर तैयार करले, इसे कल्क विधि कहते हैं।

३ **क्वाथ क्रिया**—औषध से १६ गुना पानी डालकर मिट्टी के बर्तन मे आग पर चढादे, आच मद रखे तथा पात्र का मुँह खुला रखे जब पानी का अष्टांश रह जाय तब उतार कर छानलें और कुछ गर्म रहे तो पीलें इसे क्वाथ (काढा) कहते हैं।

४ **हिम-क्रिया**—औषध को कूटकर छह गुना पानी मे रात को भिगोदे प्रात काल छानकर पीवें इसे हिम (ठन्डा क्वाथ) कहते हैं।

५. **फांट-क्रिया**—वनस्पति का महीन चूर्ण बनाकर रखलो, फिर मिट्टी के पात्र मे १ पाव पानी डालकर आग पर औटावो और उस चूर्ण को डालदो फिर छानकर ठण्डा करलो, इसे फांट कहते हैं।

६. **चूर्ण क्रिया**—अत्यन्त सूखी वनस्पति दवा को कूट कपडछान करने को चूर्ण कहते हैं। यदि नीम्बू के रसादि का पुट देना हो तो उस रस मे चूर्ण पूर्ण रूप से भीग जाय उतना मिलाना चाहिये।

७ **अवलेह क्रिया**—औषधियों के क्वाथादि को पुनः पात्र में डालकर औटाते-औटाते गाढ़ा हो जाय अर्थात् वह चाटने योग्य हो जाय उसे अवलेह (लेह) कहते हैं।

८. **गोलियां बनाने की क्रिया**—चासनी या पानी या गुड़ व शक्कर तथा

दूध आदि में औषधि का चूर्ण मिलाकर गोली बना लेना चाहिये।

९. चूने का पानी बनाने की विधि– एक बोतल पानी में १ तोला कली का चूना ताजा डालकर कार्क लगादें और उसे हिलाकर रखदें। १२ घन्टे बाद जब चूना बोतल के पैंदे मे जम जाय तब नितरा हुआ पानी छानकर दूसरी बोतल मे भरले, फिर जरुरत माफिक काम में लेवें।

१०. दूध का तोड़ बनाने की विधि—उबलते हुए दूध मे नीम्बू का रस या फिटकड़ी डालने से दूध फट जाता है, उस फटे हुए दूध को छानने के बाद जो पानी रहता है उसे तोड कहते हैं, यह तोड कई प्रकार की बीमारियो में उपयोगी होता है।

११. यूष क्रिया–जिसका यूष बनाना हो उसके ५१ या कम ज्यादा दाने ले, जैसे मू ग का बनाना हो तो ५१ मू ग ले पीपल नग ३, काली मिर्च नग ३, सोंठ २ माशा, सेंधा नमक २॥ माशा, पानी १ सेर। ऊपर लिखी सभी चीजो को साबुत लेकर नये मिट्टी के बर्तन मे डालकर थोडी देर आंच से पकावें, जब चौथाश रहे तब रोगी को पिलावें। २ घन्टा बाद यह यूष खराब हो जाता है अत जरुरत होने पर दूसरा बनाना चाहिए।

१२. घृत और तेल सिद्ध होने की विधि–जिस वनस्पति का घृत या तेल बनाना हो तो पहले उसका कल्क बनालो, फिर उसमे चार गुना घृत या तेल (जो बनाना हो) के साथ एक मिट्टी के चिकने बर्तन मे या लोहे की कढाई मे डाल दो फिर उसी में दूध या गोमूत्रादि जो पदार्थ डालना हो वह डालकर आग पर चढा दो जब आँच देते-देते केवल घृत या तेल मात्र शेष रह जावे तब उतारकर छानलें। यही घृत या तेल प्रस्तुत हो गया जानो।

१३. पाताल यन्त्र से तेल निकालने की विधि–जमीन में एक गढ्ढा खोदकर अन्दर चीनी मिट्टी का प्याला रखें, उसके ऊपर एक मिट्टी के पात्र में छेद करके रखदें और दवा जिसका निकालना हो उस

पात्र में भरदें और कपड़ मिट्टी कर उसका मुह बन्द करदें, फिर मिट्टी के गढ्ढे को आधा भरदें ऊपर कन्डे (उपले) जलाकर आग लगावें, जब उपले सब जलकर ठन्डे हो जायें तो गढ्ढे से राख और मिट्टी दूर करके पात्र को हटाले और उस प्याले में टपका हुआ तेल शीशी में भरलें इसी को पाताल यन्त्र से तैल निकालना कहते हैं।

१४. **चावल के धोवन की विधि**—२ तोला चावल को मोटा-मोटा कूटले, फिर पानी में धोकर आठ गुने पानी में भिगोदें, १ घन्टा पश्चात् मसलकर छानलें।

१५ **लेप**—हरी अथवा सूखी औषधियों को पीसकर उसका चूर्ण पानी छाछ या गुलाबजल आदि में पीसकर दर्द वाली जगह पर अथवा शोथ-व्रण आदि पर लेप करना चाहिये, लेप को मोटा लगावें फिर सूखने के बाद उतार दें।

१६ **भावना**—दवा के चूर्ण या भस्म को खरल मे डालकर दवा का रस या क्वाथ मिलाकर रबड़ी जैसा करलें उसे भावना देना कहते हैं।

१७ हींग को घी में भूनकर उपयोग में लेवें। याद रहे हींग जो गन्दी वस्तुओ मे सड़ाकर तैयार की जाती है, वह हानिकारक है और धर्म के भी विरुद्ध है, अत· जिसे हिंगोड़ा (हींगड़ा) कहते हैं जो वृक्षो का एक प्रकार का दूध सा होता है, उसे हिंगोड़ा कहते हैं अर्थात् हिंगोड़ा को ही काम में लेना चाहिये।

१८ यदि गोली बनाने के किसी द्रव का नाम न लिखा हो तो पानी, लेना चाहिये। यदि तैल का नाम स्पष्ट न हो तो तिल का तैल काम मे लेना चाहिये। यदि नमक का नाम स्पष्ट न हो तो सेंधा-नमक काम में लेना चाहिये।

१९. जहां औषधियो का तोल न लिखा हो वहा सब औषधियां सम-भाग लेना चाहिये।

२० **जहरीली दवाइयां**—संखिया, मेनसिल, हरताल बच्छनाग, गंधक,

कुचिला, पारद, हिंगुल, रसकपूर, भिलावा, कनेर, आक, नीला-थोथा, टकरण तथा धातु उपधातु सभी को शुद्ध करके काम मे लेना चाहिये, यदि दवा के आगे शुद्ध न लिखा गया हो तो भी खाने की औषधियो मे शुद्ध करके ही प्रयोग में लेना चाहिये।

२१ यदि औषधि के ग्रहण करने के लिए जड, पत्र, छाल आदि न लिखा हो तो जड को ग्रहण करना चाहिये।

२२. यदि औषधि सेवन करने का काल न कहा गया हो तो प्रात काल समझना चाहिये।

—औषधि की मात्रा—

२३. इस ग्रन्थ मे प्राय. औषधियों की मात्रा लिखी है, परन्तु कई प्रयोगों मे औषधि की मात्रा नही लिखी गई है जिसका यह कारण है कि मुझे प्राचीन ग्रन्थो में जैसी लिखी मिली वैसे ही लिखी है, परन्तु फिर भी इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि औषधियां प्रायः गुणकारी और निर्विष ली गई हैं, इसलिये मात्रा से न्यूनाधिक लेने तथा देने से भी कोई नुकसान की बात नही, फिर भी रोग और रोगी की अवस्था और बल आदि देखकर ही औषधि देनी चाहिये, 'विष-बूटी' में आक, धतूरा तथा कनेर आदि जहां लिखी हैं वहां पर प्राय. उनकी मात्रा भी लिखी है।

वैसे तो क्वाथादि औषधियो की मात्रा के विषय में आयुर्वेदिक ग्रन्थो का भिन्न-भिन्न मत है तथापि विद्वान् आयुर्वेदाचार्यों का अन्तिम सिद्धान्त यही है कि मात्र शास्त्रोक्त मात्रा पर ही निर्भर न रहा जाय, किन्तु देश-काल, अवस्था, बल, वातादि प्रकृति देखकर ही औषधि की मात्रा देनी चाहिये। जैसे बढी हुई अग्नि थोड़े पानी से शान्त नहीं हो सकती है वैसे ही बढ़ा हुआ रोग भी नियत मात्रा से नष्ट नही होता हो तो वहां रोगानुसार मात्रा बढ़ाना-घटाना चाहिये।

२४. नवजात शिशु को प्रथम मास में औषधि चूर्ण की १ रत्ती की मात्रा दूध, घी या मिश्री की चासनी मे मिला कर चटाना चाहिये, इस तरह दूसरे मास मे २ रत्ती, तीसरे में ३ रत्ती इसी प्रकार १२ मास मे बालक को १२ रत्ती तक दे सकते हैं, १ वर्ष की आयु से १६ वर्ष तक की आयु मे एक-एक माशा बढ़ाकर १६ माशा तक दी जाती हैं, १६ वर्ष से ७० वर्ष तक यही मात्रा है फिर ७० वर्ष से ऊपर धीरे-धीरे घटा देनी चाहिये, क्योकि बालक और वृद्ध की चिकित्सा समान ही करनी चाहिये।

२५ यदि रोगी कडवी औषधि लेने से हिचकिचाता हो तो उसे पहले अकरकरा चबा दो फिर उसे दवा के कडवेपन का ज्ञान नही होगा।

रोग तथा दोष विज्ञान

"रोगस्तु दोष वैषम्यं, दोष साम्यमरोगता"

अर्थात् वात, पित्त और कफ दोषो में धर्म-कर्म मे विषमता का आ जाना रोग की परिस्थिति है। जब यह शारीरिक शक्तियां शरीर का पोषण और वर्धन का काम न कर विकृत हो जाती हैं, तब रोग होता है। किन्तु जब यह वात, पित्त और कफ आवश्यक अंश मे उपस्थित रहकर समभाव मे रहते हैं और शरीर का परिचालन तथा वर्धन करते हैं तब आरोग्यता की स्थिति रहती है। जब कोई दोष आवश्यकता से कम या अधिक हो जाते हैं। तब एक दूसरे को दूषित कर देते हैं। अतएव शरीर संरक्षण का कार्य उस समय उनसे नही बन पाता। इतना ही नहीं, यह दोष शरीर के रस रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र नामक धातुओं को और स्वेद मूत्र, पुरीष नामक मलो को भी दूषित कर देते हैं। अतएव स्वास्थ्य

का बने रहना असम्भव सा हो जाता है। वास्तव में स्वास्थ्य के नियमों का पालन न करने और आहार, विहार, व्यायामादि पर ध्यान न देने तथा तरह-तरह के भोग विलास व आधुनिक वस्तुओं में अपने मन और इन्द्रियों को आसक्त कर देने से इनमे विकृति उत्पन्न हो जाती है और इस विकृति का परिणाम शरीर में रोगो की उत्पत्ति है।

—वात—

इन तीनो दोषो में वायु सबसे बलवान् होती है, क्योंकि यह शरीर के सारे धातु-मलादि का विभाग करती है, यह रजो गुण वाली सूक्ष्म, शीतवीर्य, रूखी, हल्की और चचल है, इसके ५ भेद होते हैं। १–उदान २–प्राण ३–समान ४–अपान ५–व्यान।

१. उदानवायु—यह गले मे घूमती है. इसी की शक्ति से यह प्राणी बोलता और गीत आदि गाता है, जब यह वायु कुपित होती है तब कण्ठगत रोग उत्पन्न होते हैं।

२. प्राण वायु—इस वायु का स्थान हृदय होता है, यह वायु प्राणो को धारण करती है और सदैव मुँह मे चलती है, यह भोजन किये हुए अन्नादि को भीतर प्रवेश कराती है और प्राणों की रक्षा होती है। यह कुपित होने से हिचकी और श्वास आदि रोग पैदा होते हैं।

३ समान वायु—यह वायु आमाशय और पक्वाशय में विचरती है और जठराग्नि के सम्बन्ध से अन्नादि को पचाती है, फिर अन्नादि से उत्पन्न हुए मल-मूत्रादि को अलग-अलग करती है। यह कुपित होकर मन्दाग्नि, अतिसार और वायुगोला आदि रोगों को पैदा करती है।

४. अपान वायु—यह वायु पक्वाशय मे रहती है, मल-मूत्र, शुक्र, गर्भ और आर्तव इनको निकालकर बाहर करती है, इस वायु के कुपित होने से मूत्राशय और गुर्दा के रोग पैदा होते हैं एव शुक्र

दोष, प्रमेह आदि रोगों की उत्पत्ति करती है।

५. व्यान वायु—यह वायु सारे शरीर में विचरती है यह रस पसीना और खून को बहाती है। जब यह कुपित होती है तब समस्त शरीर के रोगों को प्रगट करती है। इसके अलावा जब यह पाँचों वायु एक साथ कुपित होती हैं तब सारे शरार मे रोगों का तहलका मचा देती हैं।

—वायु कुपित होने के कारण—

मल-मूत्रादि के वेगो को रोकने से, स्त्री संग ज्यादा करने से, चटपटा, कडुवा, कषैले रसो को अधिक खाने से, रुक्ष-लघु और शीत वीर्य वाले पदार्थों के ज्यादा भक्षण करने से, ठण्डे पानी से स्नान करने से तथा अपने से बलवान् के साथ लड़ने, आदि कारणो से वायु कुपित होती है।

—पित्त—

यह एक द्रव्य पदार्थ है, गर्म, चिकना, लघु, हल्का, तीक्ष्ण और दुर्गन्धियुक्त, विस्ठा को नीचे बहाने वाला होता है। इसका रग पीला और नीला होता है। सतोगुण प्रधान और अम्ल विपाक वाला होता है। इसके ५ भेद होते हैं १—पाचक २—रजक ३—साधक ४—आलोचक ५—भ्राजक।

१. पाचक पित्त—यह आमाशय और पक्वाशय मे रहकर आहार को पचाता है, रस-दोष-मल-मूत्र को अलग-अलग करता है तथा शेष चार प्रकार के पित्तों के बल को बढाता है।

२. रजक पित्त—यह यकृत और प्लीहा मे रहकर रस का रुधिर बनाता है।

३. साधक पित्त—इसका स्थान हृदय है, यह बुद्धि-धारण और शक्ति को बढाता है।

४. आलोचक पित्त—इसका स्थान दोनों नेत्र होते हैं, इसका काम रुपादि ग्रहण करना है।

५. भ्राजक पित्त—यह सारे शरीर में और चमड़े में रहता है, इसका काम कान्तिकारक, लेप, मालिश, स्नानादि कार्यों के द्रव्यों को सुखाना है। इनकी विकृति से जिस पित्त में विकार हो उसी के कार्य में बाधा पड़ती है, जैसे—पाचक पित्त बिगड़ने से अविपाक, रंजक बिगड़ने से रुधिर का कम बनना या ठीक न बनना इत्यादि।

—पित्त प्रकोप का कारण—

क्रोध, शोक, भय, परिश्रम, उपवास, जले हुए अन्न खाना, मैथुन, चटपटा, खट्टा, लवण रसो का अति सेवन, तीक्ष्ण, उष्ण, दाहकारक पदार्थों का विशेष खाना, धूप मे चलना अति चलना और मद्य आदि मादक पदार्थों का सेवन करना पित्त कोप कारक हैं।

—कफ—

चिकना, शीतल, भारी, गाढा, श्वेत रंगवाला, मधुर गुणवाला लवण विपाकवाला है, इसमे तमोगुण अधिक रहता है। यह पाच प्रकार का है, १. क्लेदन २. अवलम्बन ३. रसन ४. स्नेहल ५. श्लेस्मक।

१. क्लेदन कफ—यह आमाशय मे रहता है। अन्न को गीला करता है और अपनी शक्ति से कफ के दूसरे स्थानो को भी जल कर्म द्वारा सहायता देता है।

२ अवलम्बन कफ—इसका स्थान हृदय है। यह रस युक्त वीर्य से हृदय के भाग का अवलम्बन और त्रिकहड्डी को धारण करता है।

३. रसन कफ—इसका स्थान कण्ठ है, मधुरादि षट् रसों का ज्ञान कराता है।

४. स्नेहन कफ—इसका स्थान शिर है, यह चिकनाई देकर समस्त इन्द्रियों को तृप्त करता है।

५ श्लेस्मक कफ—यह सब सन्धियो में रहता है, इसका काम सब सन्धियों को जोड़ना है।

—कफ प्रकोप का कारण—

दिन में ज्यादा सोना, शारीरिक श्रम न करने से, मीठा-खट्टा नमकीन

रसों के अधिक खाने से तथा शीतल, चिकने, भारी, गाढ़े और गरिष्ठ पदार्थों के अति सेवन से और दूध, दही, तिल, खीर, खिचड़ी खाने से कफ कुपित होता है ।

—वात प्रकोप के लक्षण—

सन्धि स्थान की शिथिलता, कम्प, शूल, गात्र शून्यता, हाथ पैर भड़कना, नाड़ियो का खिचाव, तीक्ष्ण दर्द, तोड़ने के समान दर्द, झटका रोमांच, रूक्षता, रक्त का श्याम वर्ण, शोष, जड़ता, गात्र मे कठोरता, अगों में वायु का भरा रहना, प्रलाप, भ्रम, चक्कर, मूर्च्छा, मल संग्रह, मूत्रावरोध, शुक्रपतन, शरीर टेढा हो जाना और मुंह का कषैला रहना तथा मुंह सूखना, पेट पर आफरा रहना, भूख-प्यास कम-ज्यादा लगना, थोड़ी भी सर्दी जुकाम होने पर सारा बदन अकड़ जाना व दर्द होना । यह सब वात प्रकृति के लक्षण जानना चाहिये ।

—पित्त प्रकोप के लक्षण—

दाह, शरीर लाल पीला हो जाना, शरीर मे गर्मी बढ़ना, पसीना, शोष, अतृप्ति, खट्टी डकार, दुर्गन्ध, वमन, पतलादस्त, बेचैनी, बाहर के पदार्थ पीले दिखना, चमड़ी फटना, फोड़े-फुन्सिया होकर पकना, रक्त स्राव, पीली आंख, पीले दांत, मल-मूत्र पीला, प्रलाप, भ्रम, मूर्च्छा, निद्रानाश, वीर्य पतला होना, स्वप्न में अग्नि दिखना और शीतल पदार्थों की इच्छा बनी रहना यह लक्षण होते हैं ।

—कफ प्रकोप के लक्षण—

शरीर चिकना, सफेद, शीतल और भारी होना, ठण्डी लगना, बुद्धि मन्दता, शक्ति की कमी होना, मुंह में मीठापन और चिकनापन, स्रोतोरोध, मुंह में लार गिरना, अरुचि, मन्दाग्नि, मल में चिकनापन सफेद मल-मूत्र, सब वस्तुएं सफेद दिखना, नाड़ी की मन्दगति-सूजन, खुजली, स्वप्न मे जल की प्रतीति, निद्रावृद्धि, तंद्रा, मधुर और नमकीन पदार्थ खाने की इच्छा आलस्य और थकावट आदि लक्षण होते हैं ।

—दोषों के विकृति नाशक गुण—

रूक्षादि गुण, उष्ण गुण युक्त होने पर वायु का संचय, शीतल गुण के युक्त होने पर वायु का प्रकोप तथा उष्ण स्निग्ध गुण वाली औषधियो से वायु का शमन होता है। तीक्ष्णादि गुण शीतरस युक्त होने पर पित्त का संचय, तीक्ष्णादि गुण युक्त उष्ण पदार्थों से पित्त का प्रकोप तथा मन्दाग्नि रस युक्त शीतल पदार्थों से पित्त का शमन होता है। स्निग्धादि पदार्थ शीतल गुण युक्त होने पर कफ का सचय स्निग्धादि रस युक्त उष्ण पदार्थों से कफ का शमन होता है।

—वायु कोप का समय—

दिन का अन्त और रात का अन्त तथा भोजन पचने के बाद व वर्षा ऋतु, हेमन्त व शिशिर ऋतु वायु कोप का समय है, वृद्धावस्था मे प्राय वायु का कोप रहता है।

—पित्त कोप का समय—

गर्मी का समय, शरद ऋतु, मध्याह्न काल, आधी-रात और भोजन पचते समय तथा जवानी मे पित्त कुपित होता है।

—कफ कोप का समय—

बसन्त मे, दिन के पहले भाग और रात के पहले भाग, भोजन करते समय तथा बालकपन मे कफ कुपित होता है।

—वात प्रकृति का लक्षण—

जो व्यक्ति थोडा सोता है और अधिक जागता है, जिसके बाल छोटे तथा कम होते हैं, जिसका शरीर दुबला-पतला होता है, जो जल्दी-जल्दी चलता है, जो ज्यादा बोलता है, जिसका शरीर रूखा होता है, जिसका चित्त एक जगह नही ठहरता है, स्वप्न मे आकाश मार्ग से चलता है यह सब वात प्रकृति वाले का लक्षण है।

—पित्त प्रकृति का लक्षण—

जिस व्यक्ति के बाल थोडी उम्र में सफेद हो जाते हैं, जिसके बहुत पसीना आता है, जो क्रोधी, विद्वान्, बहुत खाने वाला, लाल आंखो-

वाला, तथा स्वप्न में अग्नि–तारा–सूर्य–चन्द्रमा व बिजली आदि चमकीले पदार्थों को देखता हो, ये सब पित्त प्रकृति वाले के लक्षण है।

—कफ प्रकृति वाले के लक्षण—

जो व्यक्ति क्षमावान्, वीयवान्, महाबली, मोटा, बन्ध हुए शरीरवाला समडौल और स्थिरचित्त होता है एव स्वप्न मे नदी, तालाब, जलाशयो को देखा करता है वह कफ प्रकृति वाला होता है।

— द्विदोषज त्रिदोषज प्रकृति का लक्षण—

यदि २–२ दोषो के लक्षण दिखते हो तो द्वन्द्वज और यदि तीनो के लक्षण दृष्टिगत हो तो त्रिदोपज प्रकृति का जानले इसी प्रकार मिश्र प्रकृति भी समझे, यही सातो प्रकृतियाँ है।

—वात शामक उपाय—

सतर्पण चिकित्सा, स्नेहपान, स्वेदन, आदि सौम्यशोधन, स्निग्ध और उष्ण बस्ति, अनुवासन बस्ति, मात्राबस्ति, सेक, नस्य, मधुर, अम्ल, नमकीन और चटपटे रसयुक्त भोजन, पौष्टिक भोजन, घृत या तेल का मर्दन, हाथ पाव को दबाना, वस्त्र बान्धना, भय दिखाना, निद्रा, सूर्य का ताप, स्निग्ध उष्ण और नमकीन औषधियो के मृदुविरेचन, दीपन, पाचनादि औषधियो से सिद्ध घृतादि स्नेह या क्वाथादि सिंचन और गमवस्त्र का आच्छादन, गुनगुना पानी, गेहू, मुग घी, नवीन उर्द, लहसुन, मुनक्का, मीठा अनार, पके आम, आवला का कैथ, हर्ड, मिश्री, चीनी, गाय का दूध और सेधानमक आदि वायु को शान्त करते हैं।

— पित्त शामक उपाय—

घृत पान कषैला, मधुर और शीत वीर्य औषधियो का विरेचन, रक्त स्राव, दूध, शीतल, मधुर, कडवे और कसैले रस युक्त भोजन, शीतल जल मे बैठना, सुन्दर गायन सुनना, रत्न या सुगन्धित मनोहर शीतल पुष्पो की माला धारण करना, कपूर-चन्दन और खस आदि का लेप, शीतल वायु का सेवन, पखे की वायु, छाया, बगान या जलाशय के

किनारे रहना, रात्रि की चादनी में बैठना-सोना, विनोद से मधुर भाषा मे वार्तालाप करना, द्वार पर या कमरे में जल सिचन और पित्त शामक औषधियो का सेवन, मुनक्का, केला, आँवला, अनार परवल, खीरा ककडी, करेला, पुराने चावल, गेहू, मिश्री, चीनी, घी, अरहर, जौ, मू ग, चना, धान की खील, मसूर, कुटकी, निसोत, पित्त-पापडा, त्रिफला, आदि पित्तकोप को शान्त करने वाले हैं ।

—कफ शामक उपाय—

विधि पूर्वक तीक्ष्ण वमन, चरपरी औषधियो से विरेचन, शिरोविरेचन, चटपटे, कडवे और कषैले रस युक्त रूक्ष भोजन, क्षार, उष्ण भोजन, अल्पाहार, उपवास, तृषानिग्रह, कवल और गडूष धारण, जागरण, व्यायाम, मार्गगमन, जल मे तैरना, सुख का अभाव, चिन्ता, रूक्ष औषधियो से मर्दन, धूम्रपान, मेदोहर और कफघ्न औषधियो के सेवन, गर्म पानी पीना, गर्म घर मे रहना, त्रिफला का सेवन करना, सोंठी, चावल, चना, मू ग, लहसुन, प्याज, नीम, निसोत और कुटकी से कफ प्रकोप शान्त होता है ।

नोट —कफ नाशक जितनी चिकित्सा है, उनमे वमन कराना सबसे अच्छा समझा गया है, क्योकि वमनकारक औषधि पहले ही आमाशय मे जाकर विकार करने वाले कफ को जड से खीच लाती है । अत जब कफ की जड ही नष्ट हो जायेगी तो कफ के विकार भी स्वभाव से शान्त हो जायेगे ।

रोग निदान प्रकरण

ससार मे रोगी व्यक्तियो के रोग की परीक्षा साधारणत तीन तरह से होती है । १. रोगी को देखकर २ स्पर्श करके ३ रोगी का हाल पूछकर । विशेष रूप से ८ प्रकार से भी परीक्षा की जाती है । जैसे- १ नाडी परीक्षा २ नेत्र परीक्षा ३. मुख परीक्षा ४ जिह्वा

परीक्षा ५. शब्द परीक्षा ६. स्पर्श परीक्षा ७ मूत्र परीक्षा ८. मल परीक्षा, इन आठो की परीक्षा से जाना जाता है कि रोगी का कौनसा दोष विकृत है ।

नाड़ी परीक्षा-सुबह उठकर शौचादि के पश्चात् पुरुष के दाहिने हाथ की तथा स्त्री के बाये हाथ की नाडी जो हाथ को सीधा करके तथा थोडा झुका हुआ रखकर अगूठे की जड के नीचे कलाई मे तर्जनी, मध्यमा और अनामिका अगुली रखकर नाडी देखें। तर्जनी के नीचे वायु का, बीच मे पित्त का और अन्त मे कफ का बोध होता है। नाडी की गति की मन्दता से उस दोष की क्षीणता और वेगवान गति तथा उभाड से प्रकोप जाना जाता है। वायु की नाडी टेढी साप और जोक की चाल पर, पित्त की नाडी कूदती हुई मेढ़क तथा कौवा की चाल पर और कफ की नाडी धीरे-धीरे हस, कबूतर तथा मयूर की चाल पर चलती है। जो नाडी पहले धीमी और फिर तेज झरझराट से चलती है, वह दो दोषो की और जो कभी धीमे कभी बिल्कुल मन्द तीतर तथा बटेर की चाल चलती है वह सन्निपात की नाडी होती है। जो नाडी अपना स्थान छोड दे, ठहर-ठहर कर बहुत धीमी और ठण्डी चले वह प्राण नाशक होती है। ज्वर मे नाडी उष्ण चलती है, चिन्ता, भय, मन्दाग्नि, प्रदर और धातु क्षीणता की नाडी क्षीण और धीमे चलती है। एक दोष मे नाडी भरी हुई तथा गर्भावस्था मे गर्भवती स्त्री की नाडी गम्भीर, पुष्ट और हल्की चलती है।

मूत्र परीक्षा—रोगी को सूर्योदय से १-१॥ घण्टा पहले उठाकर काच के बर्तन मे मूत्र करावे, ध्यान रहे कि प्रथम धारा और अन्तिम धारा को बाहर निकाल देना चाहिये, मात्र बीच धारा को बर्तन में लेवें। फिर पात्र को ढककर रखदे तथा दो घन्टे बाद सूर्य के प्रकाश में परीक्षा करे। पहले एक मोटी सलाई से मूत्र को चलाकर फिर सूक्ष्म तृण शलाका से तेल की एक बूंद डाल दें। जब तेल की बूंद डालने से फैल जाय तो रोग साध्य जानना चाहिये, यदि स्थिर रहे तो कष्ट

साध्य और डूब जावे तो असाध्य रोग जानना चाहिये। वायु का पेशाब कुछ नोले रग का होता है तथा रूखा होता है, पित्त का पीला और कफ का सफेद होता है। धातु विकार और इन्द्रिय सम्बन्धी रोग होने से तेल के समान और जीर्ण ज्वर मे तथा क्षय रोग मे ललाई लिए हुई नीचे जाला सा फैला हुआ कुछ जमा हुआ दिखाई पडता है, मधु-मेह रोग में पेशाब के चीटे लगते हैं।

नेत्र पहिचान—जिस रोगी के नेत्र काले तथा कुछ ललाई लिए हो और भीतर मे कुछ जल की झलक मारते हो तथा वह पागल सदृश देखता हो तो उस रोगी पर वात का अधिक वेग जानना चाहिये। जिस रोगी के नेत्र हल्दी के समान पीले, लाल व हरे हो तथा दीपक न देख सकता हो व जलते हो तो समझलो इसके पित्त का वेग है। जिस रोगी के नेत्र चिकने, सफेद, ज्योति हीन और मन्द नजर हो तो कफ का अधिक वेग जानना चाहिये। इसके अलावा त्रिदोष रोगी के नेत्र भीतर धस जाते है, उनमे पानी बहने लगता है तथा तन्द्रा मोह से व्याकुल, काले फटे हुए से रूखे भयानक तथा लाल रग को लिए होते हैं, सन्निपात मे तीनो दोषो के लक्षण नेत्रो मे देखे जाते है तथा दो दोषो के कुपित होने पर दो रोगो के लक्षण दिखाई देते है।

जिह्वा से रोग की पहिचान—जिस रोगी की जीभ नीली तथा कुछ हरेपन को लिए व खरखरी और रूखी हो तो वात का प्रकोप जानना चाहिये। जिस रोगी की जीभ लाल या कुछ कालापन लिए हो तो पित्त का प्रकोप जानना चाहिये। जिस रोगी की जीभ चिकनी, नीली और सफेद हो तो उसके कफ का विकार जानना चाहिये। जिस रोगी की जीभ चारो ओर से जली हुई हो तथा काली और टेढी पड-गई हो तो त्रिदोष का कोप जानना चाहिये।

मुख से परीक्षा—जिसका मुख स्तब्ध व टेढ़ा हो तो वात का रोग जानना चाहिये। जिसका मुख लाल-पीला व तृप्त हो तो उस रोगी के पित्त का विकार समझना चाहिये। जिसका मुख भारी-चिकना, सूजनयुक्त

हो उसके कफ का प्रकोप जानना चाहिये। इस प्रकार दो दोषों से दो तथा त्रिदोषो के कोप से तीनो दोषो के लक्षण जाने जाते हैं।

शब्द से परीक्षा—कफ वाले रोगी का शब्द भारी होता है, पित्तवाला स्पष्ट बोलता है, वात वाला रोगी दोनो लक्षणो रहित अर्थात् घर-घर शब्द बोलता है।

स्पर्श से रोग की परीक्षा— पित्त वाले रोगी का बदन गर्म होता है, वात रोग वाले का ठण्डा रहता है व कफ के रोग वाले का शरीर चिकना व पानी से भीगा हुआ और सन्निपात वाले का सर्व लक्षण युक्त शरीर होता है।

मल से रोग की पहिचान—जिस रोगी का मल भाग मिला, रूखा, टूटा हुआ होता हो तो उसके वात विकार जानना चाहिये। वात कफ के कारण पीला और लाल-पीला (नारगी) जैसे रग का मल होता है। वात-पित्त के कोप से रोगी का मल पीला-काला, किञ्चित् पतला व चिकना होता है। त्रिदोष सन्निपात मे काला, पीला, टूटा, सफेद और बन्द मल उतरता है। अजीर्ण वाले रोगी का मल दुर्गन्धयुक्त ठण्डा होता है। वातादि दोष क्षीण होने से रोगी का मल काला और गाढा होता है। सफेद तथा अत्यन्त सडा मल दुर्गन्धयुक्त जलोदर रोग वाले का होता है। क्षय रोग वाले का मल काला होता है। आमवात रोगी के कमर मे पीडा तथा उसका मल पीला होता है। समीप मौत वाले का मल अतिकाला, अतिसफेद, अत्यन्त पीला और अतिलाल तथा अत्यन्त गर्म मल होता है। जिस रोगी के अग्नि तीक्ष्ण होती है उसका मल सूखा होता है। मदाग्नि वाले रोगी का मल पतला होता है। असाध्य रोगी का मल दुर्गन्ध तथा चन्द्रिका युक्त होता है।

—रोगी की मृत्यु की पहिचान—

जिस रोगी को रात मे दाह और दिन मे ठंड लगे और कण्ठ मे कफ का घर्राटा हो तो उसकी मृत्यु जानो।

जिस रोगी के नेत्र, देह और मुख का वर्ण बदल गया हो तो समझो

रोगी मृत्यु के मुँह मे है।

जिस रोगी के नाक की नोक ठण्डी हो तथा टेढी हो गई हो और शरीर मे शूल चले तो उसकी मृत्यु समीप है।

जिस रोगी की काति, बल, लज्जा आदि नष्ट हो जाये तथा स्वभाव क्रोधी जसा हो जावे, वह रोगी ज्यादा से ज्यादा छह मास तक जीवित रहता है।

जिस रोगी के पसीना किञ्चित् भी न आवे और कामदेव से हीन हो जावे तो वह तीन मास मे मरेगा।

जिस रोगी को पानी मे सूर्य का प्रतिबिम्ब कटा हुआ चारो ही दिशा मे दिखने लग जावे तो वह क्रम से ६-३-२-१ मास मे मरेगा।

जिम रोगी को सूर्य चन्द्रमा का धूएँ का सा रग दिखे तो दस दिन मे और प्रतिबिम्ब मे दक्षिण की ओर ज्वाला दीखे तो तत्काल मृत्यु होवे।

जिस पुरुष की नेत्र ज्योति न रहे और नेत्रो मे पीड़ा होवे तो वह चार मास मे मरे।

जिस रोगी के दात और अण्डकोश दबाने से कुछ भी पीडा न हो तो वह तीन महीने मे मरेगा।

जिस रोगी के निरन्तर सूर्य स्वर चले और चन्द्र स्वर न चले तो उसकी मृत्यु १५ दिन मे होय।

जिस रोगी का मल-मूत्र और अधोवायु एक साथ ही निकले वह १० दिन तक जीवेगा।

जिस रोगी को अपनी भृकुटि न दिखे उसकी ६ दिन मे और कानो से शब्द न सुने तो ७ दिन मे तथा तारा न दिखे तो १ दिन मे मृत्यु जानो।

यदि किसी रोगी के ललाट पर चन्दनादि का तिलक न सूखे तो तुरन्त मृत्यु जानो।

चिकित्सा प्रकरण

जिनेन्द्रमानंदित सर्वसत्वं, जरारुजामृत्युविनाशहेतुं ।
प्रणम्य वक्ष्यामि यथानुपूर्वं, चिकित्सित औषधमहाप्रयोगैः ॥

अर्थ —सर्वलोक को आनन्दित करने वाले तथा जन्म-जरा-मृत्यु को नाश करने के लिए कारणीभूत श्री जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार करके अब मैं औषध महाप्रयोगों के द्वारा यथाक्रम चिकित्सा का निरुपण करूंगा।

ज्वर रोग के कारण—जैसे जगल मे जानवरो का राजा सिंह होता है वैसे शरीर मे समस्त रोगो का राजा ज्वर (बुखार) होता है। यह ज्वर मुख्य रूप से आठ प्रकार का होता है १ वात ज्वर २ पित्त ज्वर ३ कफ ज्वर ४ वात-पित्त ज्वर ५ वात कफ ज्वर ६. कफ-पित्त ज्वर ७ सन्निपात ज्वर ८ आगन्तुक ज्वर। इन आठ प्रकार के ज्वरो से अनेक तरह के ज्वर उत्पन्न होते है। साधारणत समस्त प्रकार के ज्वर अहितकर होते है, आहार जैसे प्रकृति के विरुद्ध, असमय तथा अधिक मात्रा मे, अहितकारी विहार से उत्पन्न होते हैं। आमाशय मे रहनेवाली वायु, पित्त और कफ दोष, अनुचित आहार-विहार से कुपित होकर पेट की अग्नि को बाहर निकालते हुए रस आदि धातुओ को दूषित करके बुखार पैदा कर देते हैं।

ज्वर के सामान्य लक्षण-शरीर गर्म होना, पसीना न निकलना, भूख मद होना, अग जकडना, मस्तक मे पीडा होना, थकावट मालूम होना, हाथ-पैर टूटना, शरीर मलीन होना, काम मे मन न लगना, मुख का स्वाद बिगड जाना, आँखो से पानी आना, जम्हाई आदि आना ये सब लक्षण ज्वर मे होते हैं। ज्वर आते ही व्यक्ति के शरीर मे ये दश उपद्रव खडे हो जाते हैं—श्वास, मूर्च्छा, अरुचि, वमन, तृषा, अतिसार, कब्ज, हिचकी, खासी और शरीर मे दाह।

ज्वर मे गर्म पानी पीना चाहिये, हल्कालघन करना, वायु

रहित स्थान में रहना, हल्का पथ्य करना तथा ज्वर आने से तीन दिन तक खटाई तथा जुलाब न लेना।

ज्वर में पथ्य—मूंग, मसूर, कुलथी और सोंठ को उबालकर उसका पानी पीना चाहिये, साग मे घीया, तोरई, परबल तथा दूध आदि पथ्य है।

ज्वर में अपथ्य—भारी पदार्थ, पत्तो का साग, बेसन तथा मेदे का पदार्थ आदि का विशेष परहेज रखना चाहिये।

ज्वर में सावधानी—नवीन ज्वर में पहले २-३ दिन लघन करने से आम पचकर रोग जल्दी नष्ट हो जाता है, परन्तु ध्यान रहे कि क्षय, वात, काम, क्रोध तथा भय से उत्पन्न होने वाले ज्वर मे, प्रलाप तथा जीर्ण ज्वर व गर्भवती स्त्री को लघन न कराना चाहिये।

—वात ज्वर—

१ सेर भर पानी को उबालकर अष्टमांश रहने पर उस पानी को पीने से वात-ज्वर मिटता है।

२ १ प्याज और ३-४ कालीमिर्च को साथ-साथ दिन मे २ बार खाने से वात ज्वर मिटता है।

३. २ कालीमिर्च, १० तुलसी के पत्तो का काढा बनाकर दोनो समय पीकर गर्म कपडा ओढकर सोने से थोडी देर मे पसीना आकर वात-ज्वर उतर जाता है।

४. काढो पीवे सोठ का, जो कोई मिश्री मिलाय। तीन दिनां सेवन करे, वात-ज्वर मिट जाय।

५. देशी अजवाइन, कलोजी, सोफ, पित्तपापडा, मुलेठी, बनफसा, गावजवा, बालछड, इन सबको ३-३ माशा कूट छानकर देशी खाड के साथ काढा पीने से आराम मिलता है।

६. यह ज्वर प्रायः चोथे दिन तेज होता है, कुछ देर जुडी भी रहती है, इसमें गला-मुख सूखता है, शरीर कांपता है, सिर पीडा तथा पेट का फूलना होता है, मल बन्द हो जाता है।

७. गिलोय, सोंठ, नागरमोथा और जवासा इन सबका क्वाथ बनाकर देने से वात-ज्वर नष्ट होता है।

८ गिलोय, सोठ और पीपलामूल इन सबका काढा पीने से वात-ज्वर मिटता है।

९. चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, पित्तपापडा और धमासा इन सब का क्वाथ वात-पित्त ज्वर को नष्ट करता है।

१० अडूसा, गिलोय, नागरमोथा, परवल की पत्तियां और सोठ इन सब का क्वाथ देने से वात-ज्वर मिटता है।

११ पीपलामूल, पित्तपापडा, अडूसा का पत्ता, भाडगी, गिलोय का क्वाथ पीने से वात-ज्वर नष्ट हो जाता है।

१२ अमलतास, पीपलामूल, नागरमोथा, कुटकी, हरड का क्वाथ पीने से वात-ज्वर मिटता है।

१३, नागरमोथा, दोनो कटेनी, गिलोय सोठ का क्वाथ पीने से वात-ज्वर नष्ट हो जाता है।

—पित्त ज्वर—

पित्त-ज्वर वाले रोगी के नेत्रो मे दाह रहती है, प्यास ज्यादा होती है, चक्कर आता है, शरीर गर्म रहता है, वेग रहता है, मल पतला लगता है, वमन होता है, नीन्द कम आती है, पसीना आता है, मल-मूत्र नेत्र पीले हो जाते हैं ये लक्षण प्राय पित्त ज्वर वाले रोगी के होते हैं।

१. चावल की खील के पानी मे मिश्री मिलाकर देने से पित्त ज्वर मिटता है।

२. कुटकी, किरमाला की गिरी, नागरमोथा, हरड की छाल, पित्त-पापडा इन सब को ३-३ माशा लेकर कूटकर इनका काढा देने से पित्त-ज्वर तथा दाह, मूर्च्छा और प्रलाप को दूर भगाता है।

३. गेहू के आटे को पकाकर मिश्री मिलाकर पतला (हरोरा) करके खिलाने से पित्त-ज्वर मिटता है।

४ मीठी अनार (दाडम) का रस पिलाने से अथवा फालसा के रस

मे सेंधानमक डालकर पिलाने से पित्त ज्वर शान्त होता है।

५ मुनक्का के शरबत मे मिश्री मिलाकर पीने से पित्त ज्वर नष्ट हो जाता है।

६ पित्तपापडा, नागरमोथा, चिरायता इनका १ तोला का काढा देने से पित्त ज्वर मिट जाता है।

७ पदमाख, लालचन्दन, धणिया, गिलोय, नीम की छाल, इन सब को बराबर ३-३ माशा कूटकर काढा ५ दिन देने से पित्त ज्वर का नाश होता है। अथवा केलो के पत्तो पर सोने से पित्त ज्वर शान्त होता है।

८ एक हजार बार धोये घृत को शरीर पर मालिश करने मे पित्त ज्वर शान्त होता है।

९ नीम के कच्चे पत्तो को पीसकर उसमें पानी डालकर बिलोया जाय फिर जो भाग आवे उनको शरीर पर लगाने से पित्त ज्वर मिटता है।

१० धमासा, बासा, कुटकी, पित्तपापडा, मालकागनी और चिरायता का क्वाथ पीने से तृषा, शूल, अरुचि और पित्त ज्वर मिट जाता है।

११ नारगी का गूदा निकालकर उस पर शक्कर डालकर थोडा गर्म करके खाने से ज्वर तथा खासी मिटती है। इसका अर्क पिलाने से पित्त सम्बन्धी विकार मिटते हैं।

१२ पित्तपापडा का क्वाथ देने से पित्त ज्वर मिटता है।

१३ सेर भर का तीन पाव पानी औटाकर देने से भी पित्त ज्वर मिटता है।

१४ इन्द्रायण की जड की छाल का चूर्ण १ रत्ती शक्कर मिलाकर खाने से पित्त ज्वर मिटता है।

१५ बेर के कोमल पत्तो को नीम्बू के रस मे पीसकर लेप करने से दाह ज्वर मिटता है।

१६ सूखे बेर और उसकी जड़ को औटाकर पिलाने से पित्त ज्वर मिटता है ।

१७ गुलनिलोफर (नालकमल या कुमुदनी) गीले अरमनी (एक तरह की मिट्टी जो अरमन से आती है) सफेद चन्दन चूरा, सब १-१ तोला सफेद कपडे की पोटली मे बांधे, फिर हरी लोकी का रस २ तोला, ताजी ककडी का रस ३ तोला और हरे धनिया का रस ३ तोला लेकर तीनो रसो मे उस पोटली को भिगोकर सुंघावे इससे बेहोशी दूर हो जाती है। ज्वर के कारण बेहोशी व दिमाग मे गर्मी चढ जाने वाली बेहोशी दूर होती है ।

१८ खीरा ककडी के बीज, कासनी का बीज, कुलफा का बीज, काहू का बीज, बिहोदाना, गावजवा की पत्ती, कोइया की पत्ती, गुलाब की पत्ती इन सबको बराबर लेकर ३-३ माशा का काढा पीने से पित्त ज्वर मिटता है ।

१९ पित्त ज्वर मे कभी कम तथा अधिकता होती है इसमे दाह तथा जुडी भा होती है ।

२० पित्तपापडा, लालचन्दन, नेत्रवाला और सोठ इन सबका क्वाथ देने से पित्त ज्वर मिटता है ।

२१. मुनक्का, पित्तपापडा, अमलतास, कुटकी, नागरमोथा और हरड इन सबका काढ़ा पिलाने से पित्त ज्वर मिटता है, यह मूर्च्छा, कण्ठ शोष, दाह, तृषा तथा प्रलाप आदि को दूर करता है ।

२२ जवासा, कांगनी चिरायता, कुटकी, अडूसा के पत्ते और पित्त-पापडा इनका काढा पीने से पित्त ज्वर तथा तृषा, रक्तपित्त और दाह आदि को मिटा देता है ।

२३. गिलोय, हरड और पित्तपापडा का काढा पित्त ज्वर को दूर भगाता है ।

२४ पित्त ज्वर की वेदना, तीन दिवस मे जाय । काढ़ो कर पीवे लोय (लोक), पित्तपापडो लाय ।

२५ धान की खील, नेत्रबाला, आंवला, कच्चा कसेरु का क्वाथ पीने से पित्त ज्वर शान्त होता है ।

२६ मुनक्का, नागरमोथा, मुलेठी, नीम, कमल, सारिवा का क्वाथ पीने से पित्त ज्वर मिटता है ।

२७. धनिया, नीलकमल, नागरमोथा, कमल इन सबका क्वाथ देने से पित्त रोग की ज्वर मिटती है,

२८ सोठ, पित्तपापड़ा और धमासा का क्वाथ पिलाने से खांसीयुक्त पित्त ज्वर मिटता है ।

२९. नीम की कोमल पत्तियों को नीम्बू के रस मे पीसकर लेप करने से दाह तथा ज्वर मिट जाता है ।

३० आक की जड का चूर्ण २।। रत्ती फक्की लेने से पसीना होकर के सब तरह का ज्वर उतर जाता है जिस ज्वर मे अत्यन्त दाह होती है वह भी मिट जाती है ।

३१ तुलसी के पत्तो का शर्बत पिलाने से ज्वर सम्बन्धी घबराहट मिटती है ।

३२ ज्वर की घबराहट मिटाने के लिए पोदीने का शर्बत पिलाना चाहिये । अथवा सोफ का हिम पिलाना चाहिये ।

३३ यदि ज्वर मे गर्मी के कारण ज्यादा जलन हो तो सफेद चन्दन घिसकर २-२।। तोला नाभि पर लेप करना चाहिये जिससे तत्काल फायदा होगा ।

३४ यदि सारे शरीर मे जलन हो जाय तो नाभि पर कासी की कटोरी रखकर एक हाथ ऊचे से पानी की धार छोडनी चाहिये साथ मे णमोकार मन्त्र जपते रहना चाहिये निश्चित ही १०-१५ मिनट मे लाभ होगा ।

३५ कुटकी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, पाठ, कायफल का क्वाथ पीने से पित्त ज्वर मिटता है ।

३६ चिरायता, गिलोय, धणिया, रक्तचन्दन, पद्माख, पित्तपापडा का

क्वाथ करके पीने से पित्त ज्वर दूर होता है।

३७ पित्तपापडा, अडूसा, कुटकी, चिरायता, धमासा, फूलप्रियगु का क्वाथ पीने से पित्त ज्वर मिटता है।

३८ पटोलपत्र, इन्द्रजौ, धणिया मुलेठी का क्वाथ करके पीने से पित्त ज्वर मे शान्ति आती है।

—कफ ज्वर—

१ कफ ज्वर वाले रोगी को पानी औटाकार आधा रहने पर पिलाना चाहिये अथवा अडूसा का काढा १० दिन देने से फायदा होता है।

२. नीम की छाल, सोठ, गिलोय, कटा पोकर मूल, कुटकी, कचूर, अडूसा, कायफल, पीपली, सतावरी इन सब को ३–३ माशा कूटकर काढा देने से कफ ज्वर मिटे।

३ कायफल, पीपल, काकडासीगी, पोहकरमूल इन सब को महीन कूट कर ३ माशा मात्रा मे मिश्री की चासनी से चटावे तो कफ ज्वर मिटता है।

४ सोठ, मिर्च, पीपल, चित्रक, पीपलामूल, जीरा दोनो प्रकार का, लोग, इलायची, हिगोडा सेका हुआ, अजवाइन, अजमोद इन सब को समान भाग लेकर चूर्ण करके ३ माशा प्रमाण गर्म जल से लेने से कफ ज्वर मिटे तथा पाचन शक्ति बढे, भूख लगे।

५ अडूसा को ३ माशा मात्रा मे १० दिन लेने से कफ ज्वर तथा श्वास मे फायदा होता है।

६. सोठ, चिरायता, नागरमोथा और गिलोय का क्वाथ लेने से कफ ज्वर मिटता है।

७ त्रिफला तथा पीपल का चूर्ण मिश्री की चासनी मे चटाने से कफ ज्वर, श्वास, खासी मिटती है।

८. करंजवा की मीगी जल मे पीसकर नाभि मे टपकाने से कफ ज्वर मिटता है।

६ पीपल, बडे कजे की गुदी (करजवा) १–१ तोला, जीरा सफेद ६

माशा, बबूल की पत्ती ६ माशा, पुराने नीम की अन्तर छाल ३ तोला, इन सबको कूट पीसकर गुड मे बेर बराबर गोलियाँ बनाले फिर दिन मे ३ दफा लेने से ताप दूर हो जाता है।

१०. यह ज्वर प्रति समय रहता है परन्तु जब पित्त या वात मिलता है तो अधिक भी हो जाता है इसमे सर्दी मालूम होती है, ताप मध्यम, शरीर शीतल, आलस ज्यादा, अरुचि, मुख मीठा, मल मूत्र सफेद, रोमाच, अति निद्रा, नेत्र शुक्ल तथा बोलने की इच्छा नही रहती है। अर्थात् पित्त ज्वर के ये लक्षण हैं।

११ आोटी बहेडा लीजिए, ता पानी से खाय। छोटी पीपल पीस के, ज्वर कफ का मिट जाय।

१२ इलायची, अजवाइन, मिर्च, आवला, हडं, इनका क्वाथ लेने से कफ ज्वर मिट जाता है।

१३ अमलतास, नागरमोथा, सोठ, पीपल इनका क्वाथ देने से कफ-ज्वर मिटता है।

१४ चिरायता, नीम, दोनो कटेली और सोठ इन सब का क्वाथ देने से कफ-ज्वर मिटता है।

१५ एक सेर गाय के घृत को कढाई मे चढादो, फिर उसमे साफ कर के १-१ आक के पत्ते नया डालकर जलाते जावो इस प्रकार जब १०० पत्ते जल जाये, तब उस घृत को छान कर बोतल भरलो, फिर उस घृत को ३ माशा से १ तोला तक दूध या रोटी मे धीरे धीरे बढावे, इस तरह सेवन करने से कफ प्रकृति वाले रोगी के अत्यन्त ताकत आकर कफज व्याधि व पेट मे पडे हुए केचुएँ भी नष्ट होते है।

१६ गिलोय, पीपल, जटामासी और सोठ का क्वाथ पिलाने से कफ ज्वर मिटता है।

१७ फेफडो मे कफ भर जाने पर तथा श्वास मे रुकावट आने पर "बिना" के पत्ते २ छटाक थोड़ा कूटकर ६ माशा नमक मिलाकर

तथा थोड़ी मिश्री डालकर काढा लेने से फायदा होता है ।

१८. खूबकला, मुलेठी, कालीमिर्च और मिश्री की उकाली बनाकर लेने से कफ साफ होकर ज्वर भी मिटता है ।

१९. १ तोला हरी गिलोय के टुकड़े करके रात्रि मे भिगोदें और सुबह उसका पानी नितारकर उसमे ४ तोला शर्बत बिजूरी मिलाकर पीने से पुराना कफज ज्वर मिट जाता है ।

२०. गुलबनफसा ७ माशा, उस्तोखद्दूस ५ माशा, मुलेठी ५ माशा और मिश्री २ तोला लेकर सबको पानी मे औटाकर छानकर पीने से कफ पतला होकर बहकर निकल जाता है ।

२१ एक तोला अजवाइन को मिट्टी के कोरे बर्तन मे पानी मे भिगोदे फिर दिन मे छाया वाले स्थान मे व रात्रि को ओस मे रखे और दूसरे दिन उसका नितरा हुआ पानी रोगी को पिलावें । अथवा २ तोला सोठ का पानी भी इसी तरह बनाकर पिलाना चाहिये । इससे पुराना कब्ज ज्वर, पेशाब का पीलापन, जिगर (यकृत) और आमाशय के कफज विकार और पसली सूजन उतरती है ।

२२ लेप—कालीमिर्च, अकरकरा १।।–१।। तोला, लोग १४ माशा, फरफियुन १४ माशा, कलोजी ९ माशा और सोठ १।। तोला लेकर सबको महीन पीसकर गुलरोगन मे मिलाकर लेप करने से सभी प्रकार का कफज रोग मिटता है ।

—वाप कफ ज्वर—

वात कफ ज्वर वाले रोगी के लक्षण—खासी, अरुचि, शरीर की सधि–सधि मे पीडा होय, मथवाय, सताप, कम्पना, नीन्द न आना, शरीर भारी रहना, पसीना, श्वास, पेट मे शूल, नाड़ी सर्प तथा हस की की सी चाल चलना आदि ये सब होते हैं ।

१. वात कफ ज्वर वाले रोगी को लघमकरना चाहिये, पानी औटा हुआ पिलाना चाहिये । चिरायता, सोंठ, नागरमोथा, गिलोय इन सबको बराबर मात्रा मे ३ माशा का क्वाथ देना चाहिये, पथ्य

देना चाहिये ।

२. नागरमोथा, पित्तपापडा, सोठ, गिलोय और धमासा इन सबको बराबर जो कूट करके ३ माशा मात्रा मे क्वाथ बनाकर १० दिन देने से वात-कफ-ज्वर, दाह तथा प्यास को मिटाता है।

३. कटाली, सोठ, पीपल, गिलोय इनको बराबर लेकर ३ माशा का काढा देने से वात कफ ज्वर मिटता है ।

४. चिरायता, गिलोय, देवदारु, कायफल, बच इन सबको समान लेकर ४ माशा का काढा देने से वात कफ ज्वर नष्ट हो जाता है ।

५ कायफल, सोठ, बच, नागरमोथा, पित्तपापडा, धनिया, हरड, काकडासिगी, देवदारु और भारगी का काढा पिलाने से वात कफ ज्वर मिट जाता है ।

६ वात-कफ-ज्वर वाले को औटा हुआ जल देने से फायदा होता है। जो जल औटते २ धीरे-धीरे झाग रहित हो जाय तथा निर्मल हो जाय, उसे औटा हुआ जल कहते हैं।

७. १–२ दफा उबाला हुआ पानी रात्रि मे बार-बार पीने से वात कफ ज्वर मिटता है व अजीर्ण भी मिटता है।

—कफ पित्त ज्वर—

इस ज्वर वाले रोगी के जीभ और मुह में कफ लिपटा रहता है, तन्द्रा और खांसी, अरुचि, प्यास ज्यादा होती है, तथा बार-बार शरीर मे दाह व शीत ज्यादा लगती है, तथा शरीर मे पीडा होय, चक्कर आवे, भूख नही लगे, शरीर जकडा हुआ सा रहता है, इस कफ पित्त ज्वर वाले के नाडी हस की सी होय अथवा मेढक सरिसी चलती है, तथा उसका मूत्र सफेद, लाल व चिकना होय, मल भी लाल होय, उस रोगी के कफ पित्त ज्वर जानना ।

१. जल को उबालकर आठवां हिस्सा रहने पर पिलाना चाहिये, तथा लघन कराना चाहिये जिससे फायदा होय ।

२. गिलोय, लालचन्दन, सोठ नेत्रवाला, कायफल, दारुहल्दी इन

सबको बराबर लेकर ४ माशा का काढा १० दिन देने से कफ पित्त का रोग मिटता है।

३ नीम की छाल, लालचन्दन, पदमाख, गिलोय, धणिया इन सबका काढा १० दिन देने से कफ पित्त ज्वर तथा दाह प्यास मिटे।

४ गिलोय, इन्द्रजो, नीम की छाल, पटोल, कुटकी, सोठ, सफेद चन्दन, नागरमोथा, पीपल इन सबको समान भाग लेकर महीन कूट छानकर ४ माशा अष्टावशेष जल के साथ लेने से ज्वर, श्वास, अरुचि, खासी मिटती है।

५ गिलोय दोनो कटालो, कचूर, दारुहल्दी, पीपल, अडूसा, पटोल, नीम की छाल, चिरायता इन सबको लेकर जो कूट करे फिर ४ माशा का क्वाथ करके दोनो समय १० दिन लेने से पित्त कफ ज्वर दूर हो जाता है।

६. दाख, किरमाल की गिरी, धणिया, कुटकी, नागरमोथा, पीपलामूल, सोठ, पीपल, इन सब को बराबर लेकर जो कूट करके ४ माशा का काढा दोनो समय ११ दिन लेने से शूल, मूर्च्छा, अरुचि वमन, ज्वर आदि मिटता है।

७ लालचन्दन, पदमाख की छाल, धनिया, गिलोय, नीम की छाल इन सबका काढा लेने से कफ-पित्त ज्वर मिटता है।

८ मुलेठी और हँसराज ५-५ माशा तथा पीला रग का अजीर नग ५ और मिश्री २ तोला सब को उबालकर छानकर पीने से सर्दी का नजला, जुकाम मिटता है यदि ज्वर हो तो ५ माशा खुबकला और बढादे।

—वात पित्त ज्वर—

वात-पित्त वाले रोगी के मूर्च्छा होती है, चक्कर आता है, दाह होता है, नीन्द नही आती है, गला सूखता है, वमन होता है, अन्धारी आती है, सारा शरीर दुखता है तथा प्रलाप करता है ये लक्षण वात पित्त ज्वर वाले रोगी के होते है।

१ गिलोय, पित्तपापडा, सोठ, नागरमोथा, अडूसा इन सबको बराबर लेकर जो कूट करके ३ माशा का क्वाथ १३ दिन देने से वात-पित्त ज्वर नष्ट होता है।

२ चावल की खील के पानी मे मिश्री मिलाकर १० दिन देने से वात पित्त-ज्वर मिटता है।

३ सोठ, मिर्च, पीपल इनको समान भाग लेकर, बराबर मिश्री मिलाकर चूर्ण बनाकर ३ माशा प्रतिदिन मिश्री की चासनी के साथ १० दिन तक लेने से वात-पित्त-ज्वर मिटता है।

४ गिलोय, पित्तपापडा, नागरमोथा, चिरायता, सोठ इन सबका काढा पचभद्र कहलाता है, इससे वात-पित्त-ज्वर मिटता है।

५. पचमूल, गिलोय, नागरमोथा, सोठ, चिरायता का काढा देने से वात-पित्त-ज्वर नष्ट होता है।

६ बहेडा और जवासा का काढा बनाकर घृत डालकर पीने से पित्त और कफ ज्वर मिटता है तथा चक्कर आना मिटता है।

—सन्निपात ज्वर—

सन्निपात ज्वर वाले रोगी के कभी दाह और कभी शीत, सर्व शरीर मे व मस्तक मे पीडा, आखो मे आसू, नेत्र काला व लाल होय, कानो मे शब्द होता रहे, कण्ठ मे काटा हो जाय, खांसी, श्वास, अरुचि तथा भ्रम होता है, जीभ काली और खरदरी लठर जाती है, कफ मे खून, दिन मे नीन्द आवे, तथा रात्रि मे जगे, पसीना आवे या न आवे, गाना गावे, हँसे व रोवे सिर धुणे, प्यास ज्यादा लगे, मल-मूत्र कम लगे, शरीर कृश हो जाय, गले मे कफ का गुघरा बोले, गू गा हो जाय, पेट भारी होय ये लक्षण सन्निपात ज्वर के जानने चाहिये। यह सन्निपात ज्वर साक्षात् काल रूप होता है, इस प्रकार सन्निपात ज्वर की चिकित्सा करने वाला वैद्य उत्तम होता है।

१ इस ज्वर मे हवा न लगने देनी चाहिये, अच्छे कुएँ के पानी को औटा कर आधा रखे जिसमे ४ माशा सोंठ डालकर ओटावें।

दिन में औटाया दिन मे पिलावे व रात्रि मे औटाया जल रात्रि में देना चाहिये ।

२ कायफल, पीपला मूल, इन्द्रजौ, भारगी, सोठ, चिरायता, कालीमिर्च पीपल, काकडासिगी, पोहकरमूल, रास्ना, कटाली दोनो, अजमोद, छड, वच, पाठ, अडूसा, चव्य इन सब वस्तुओ को समान लेकर जौकूट करके ८ माशा का क्वाथ कर दोनो समय देने से सन्निपात, सर्व वात रोग, ज्ञान न होना, पेट का शूल, आफरा, वाय व कफ को मिटाता है ।

३ यदि सन्निपात मे जीभ लठर गई हो तो बिजोरा की केशर मे सेधानमक, मिर्च, पीपल इन सबको बराबर लेकर महीन खरल करके जीभ पर लेप करने से जडता दूर हो जाती है ।

४ यदि सन्निपात मे ज्ञान न रहे तो–बच, महूवो, सेधानमक, मिर्च, पीपल, इन सब को बराबर लेकर महीन खरल करके गर्म पानी से नश्य देवे तो ज्ञान हो जाता है ।

५ यदि सन्निपात मे शीत हो जाय तो सोठ, मिर्च, पीपल, हरड की छाल, लाद, पोहकरमूल, चिरायता, कुटकी, कूट, कचूर, इन्द्रजौ इन सब को महीन पीसकर शरीर के मर्दन करे तो पसीना व शीताग मिटे ।

६ लहसुन राई, सहिंजन की जड, इनको गौमूत्र मे पीसकर रोटी बनाले, फिर उस रोटी को सिर पर १ पहर रखे तो सन्निपात वाले को चेत हो जाय । इससे भी चेत न होय तो समझलो बचना दुर्लभ है ।

७ महा भयकर सन्निपात वाले को यदि बिच्छु कटावें तो तत्काल फायदा होता है ।

८ सन्निपात वाले रोगी के लोहे की शलाका को गर्म लाल करके पावो की पगथलियो मे या आखो के भवारा बीच या ललाट के बीच डाम देवे तो सन्निपात मिटता है ।

९ सन्निपात वाले रोगी के ठण्डा यत्न नही करना चाहिये, दिवस मे सोना नही चाहिये, अष्टावशेष जल पीना चाहिये, आम तथा कफ कम होय ऐसा उपचार करना चाहिये, दोष को देखते हुए लघन करना चाहिये ।

१० रूग्दाह वाले सन्निपात के रोगी के शरीर मे दाह होती है, पेट मे शूल चलती है, व्याकुल होता है, प्यास ज्यादा लगे । ऐसे रोगी को हरड की छाल, पित्तपापडा, नीम की छाल, कुटकी, देवदारु, किरमाला की गिरी, मुनक्का, नागरमोथा इन सबको बराबर जौ कूट कर के ८ माशा का काढा १५ दिन देने से रूग्दाह सन्निपात मिटे ।

११ **चित्तभ्रम सन्निपात का लक्षण**–चित्तभ्रम, ताप, मोह, बावला की माफिक नेत्र होय, हँसे, नाचे, गावे, सास, चढजाय । इस तरह के रोगी को ब्राह्मी, बच, लजालु, त्रिफला, कुटकी, खरेटी, किरमाला की गिरी नीम की छाल, नागरमोथा, कडवी तोरु की जड, मुनक्का शालपर्णी दोनो कटाली, गोखरू, बीलगिरी, अरण्यो, अरलु, कुमेरपाठो, इन सबको बराबर लेकर जौ कूट करके ८ माशा का काढा दोनो टाइम ११ दिन तक लेवे तो चित्तभ्रम सन्निपात मिटता है ।

१२ **शीताग सन्निपात के लक्षण**–शरीर ठण्डा हो जाय, कम्पन होय, हिचकी आवे, शिथिलता होय, श्वास चढे, खासी आवे, वमन होय, लार पडे, ऐसा रोग असाध्य होता है। ऐसे रोगी को बिच्छु कटाना चाहिये अथवा सिंगीमोरा को तेल मे मिलाकर शरीर पर मलना चाहिये अथवा सिंगीमोरा, लहसुन, राई पीसकर गौमूत्र मे मिलाय रोटो बनाकर सिर मुण्डाकर बान्धना चाहिये, जब तक शरीर गर्म न होय तब तक रखना चाहिये, यदि इस पर भी ताप न आवे तो मृत्यु जानो ।

१३ **कण्ठकुब्ज सन्निपात का लक्षण**–सिर ज्यादा दुखना, दाह होना,

हड्डियो मे अति पीडा होना, शरीर गर्म रहना, मूर्च्छा होना, गला रुक जाना, प्रलाप करना। ऐसे रोगी को काकडासिगी, चित्रक, हरड की छाल, अडूसा, कचूर, चिरायता, भाडगी, दारुहल्दी, कटराली, पोहकरमूल, नागरमोथा, कुडा की छाल, इन्द्रजौ, कुटकी, मिर्च इन सबको बराबर लेकर जौ कूट करके ८ माशा का काढा दोनो टाइम ८ दिन लेने से कण्ठ कुब्ज सन्निपात मिटे तथा और भी उपद्रव मिटे।

१४ **कर्णक सन्निपात का लक्षण**-कण्ठ मे पीडा होय, शरीर मे पीडा होय शरीर गर्म रहे, खासी होय, कर्णकामुलक सोजन होवे। ऐसे रोगी को रास्ना, असगध, नागरमोथा, दोनो कटाली, भाडगी, काकडासिगी, हरड की छाल, बच, पोहकरमूल, कुटकी इन सब को बराबर लेकर जौकूट करके ८-१० माशा का काढा दोनो टाइम २० दिन लेवे तो शान्ति मिले।

१५ **भग्ननेत्र सन्निपात का लक्षण**-स्मरण शक्ति न रहे, ज्वर का वेग होय, नेत्र बाका होय, तथा चचल होय, भ्रम कम्पन होय, प्रलाप करे। ऐसे रोगी को दारुहल्दी, पटोलपत्र, नागरमोथा, कुटकी, हल्दी, नीम की छाल, त्रिफला इन सबको बराबर लेकर ८ माशा का काढा दोनो टाइम १५ दिन देवे तो आराम होय।

१६ **रक्तष्ठीवी सन्निपात का लक्षण**-खखार मैं खून आना, श्वास तीव्र होना, पेट मे शूल होना, भ्रम होना, वमन होना, आफरा होना। ऐसे रोगी को नागरमोथा, पदमाख, पित्तपापडा, लालचन्दन, महूवा, नेत्रवाला, शतावरी, मलयागिर चन्दन, बकायण की छाल इन सबको बराबर लेकर जौकूट करके १० माशा का काढा १५ दिन देने से आराम होय अथवा दूव का रस तथा दाडम का फूल का रस की नश्य देने से रक्तष्ठीवी सन्निपात मिटता है।

१७ **जिम्भक सन्निपात का लक्षण**-श्वास खासी ज्यादा होना, ज्वर ज्यादा होय, जीभ लटक जाय, जीभ के काटा हो जाय, बहरा हो जाना,

शक्ति क्षीण होना। ऐसे रोगी को बच, कटाली, जवासा, रास्ना, गिलोय, नागरमोथा, सोठ, कुटकी, काकडासिंगी, पोहकरमूल, ब्राह्मी, भाडगी, नीम की छाल, अडूसा, कचूर इन सबको बराबर लेकर जोकूट करके ८ माशा का काढा १० दिन लेने से फायदा होय।

१८ लहसन, पीपल, मिर्च, बच, लुँकाबीज, सेंधानक, इन सबको बराबर लेकर कूट करके गोमूत्र मे घोटकर नेत्रो मे अजन करने से सर्व प्रकार का सन्निपात मिटता है।

१९ हिंगलु का निकाला हुआ पारा, शुद्ध गन्धक, अभ्रक, तामेश्वर, सोठ, कालीमिर्च, पीपल, हरड की छाल, बहेडा की छाल, आवला और शुद्ध जमाल गोटा इन सबको बराबर लेकर कुदढघल के पत्तो के रस मे ६ घन्टा तक खरल करे फिर धूप मे सूखाकर १ रत्ती प्रमाण गोलिया बनाले, १ गोली देने से सभी प्रकार का सन्निपात ज्वर, पेट की शूल, अजीर्ण, आमवात मे फायदा हो जाता है। इसे चिन्तामणि रस कहते हैं।

२० इलायची दालचीनी, पत्रज के साथ २ रत्ती जस्त-भस्म देने से सन्निपात मिटता है।

२१ सोठ ५ तोला, काली मिर्च ५ तोला, तेलिया सुहागा सोध्याहुआ ४ तोला, सिगीमोरा शुद्ध १। तोला, इन सब को महीन खरल करके ३ दिन तक नीम्बू के रस मे घोटें तथा ५ दिन अदरख के रस मे घोटे, नागरबेल के पान के रस मे ३ दिन घोटे, फिर १ रत्ती प्रमाण गोलिया बनानी चाहिये, १ गोली अदरख के रस मे देने से सन्निपात मिट जाता है। इसे "त्रिपुर भैरव रस" कहते है।

२२ "भस्मेसर रस"–आरणा छाणा की राख ४॥ तोला, काली मिर्च १ माशा तथा बछनाग १ माशा इनको महीन खरल कर के बनाना चाहिये। इससे सन्निपात ज्वर तथा त्रिदोष मिटता है।

२३. सन्निपात ज्वर मे जो कान के पीछे (जडमे) बडी-बडी सूजन हो

जाती है उसे कर्ण शूल कहते हैं। ऐसे रोगी को रास्का, सोठ, बिजोरे की जड, चीता, दारुहल्दी और अरनी इन सबको बराबर लेकर पीसकर लेप करें जिससे सूजन की पीडा मिटती है। जो गाठ ज्वर के आदि मे होती है वह असाध्य होती है, तथा जो ज्वर आने पर होती है वह कष्ट साध्य होती है, और जो ज्वर के अन्त मे आती है वह गाठ सुसाध्य होता है।

२४ कचूर, सोठ, पित्तपापडा, देवदारु, जवासा, छोटी कटेरी, नागरमोथा, कुटकी, चिरायता इन सब का काढा करके मिश्री तथा पीपल मिलाकर पीने से सन्निपात ज्वर, विषम ज्वर तथा जीर्ण ज्वर सर्वथा मिट जाते है।

२५ बडी कटेरी, गुरिच को, काढो पीवो जोय।
ज्वर त्रिदोष को जाता है, अचरज घनो न कोय ।।

२६ पीपलामूल, इन्द्रजौ, अमर (देवदारु), गूगल, बायबिडग, भाडगी, दालचीनी, सोठ, मिर्च, पीपल, चीता, कायफल, पोहकरमूल, रायसन, हरड की छाल, छोटी कटेरी, बडी कटेरी, अजवाइन, जटामासी, चिरायता, बच, चव्य, पाठ इन तेईस चीजो का क्वाथ पीने से सर्व प्रकार का सन्निपात, पागलपन, पसीना आना, ठण्ड लगना, प्रलाप, शूल, कफ रोग, वात रोग तथा प्रसूतिस्त्रियो का वात रोग मिट जाता है।

२७. आक की जड, जवासा, चिरायता, देवदारु, रायसन, सभालु के पत्ते, बच, अरनी, सहजना, पीपलामूल, पीपल, चव्य, चीता, सोठ, अतीस और भागरा इन १६ चीजो का काढा पीने से दारुण सन्निपात, धनुर्वात, दातो का जकडना, शरीर काम्पना, श्वास, खासी तथा प्रसूति स्त्रियो के होने वाले वात रोग भी शीघ्र नष्ट होते हैं।

२८. **विषम ज्वरान्तक बटी**–नीम के पत्ते, तुलसी के पत्ते, बेल के पत्ते और भाग १-१ तोला तथा कालीमिर्च ३ माशा इनको पानी के साथ

पीसकर चना प्रमाण गोलियां बनाले । मात्रा १ से २ तक दिन मे ३ बार पानी के साथ लें। इससे विषम-ज्वर १ ही दिन मे रुक जाता है।

—जीर्ण-ज्वर—

ज्यादातर शरीर के किसी भीतरी खराबी अथवा बुखार न टूटने पर या कमजोरी के कारण बुखार कम या ज्यादा बना रहता है, तब उसे जीर्ण-ज्वर कहते है। इस ज्वर मे शरीर मे दर्द, ग्रालस्य, ग्ररुचि दुर्बलता, हाडो मे फूटन, ग्रांखो व हाथ पैरो मे जलन, ग्रादि ग्रनेक लक्षण जीर्ण-ज्वर के होते हैं। जो वर्षों तक भी बने रहते हैं।

१ इस ज्वर मे दूध का सेवन हितकर होता है।

२ नीम की छाल का क्वाथ पाने से निरन्तर रहने वाला ज्वर तथा किसी ग्रौषधि से न मिटने वाला ज्वर मिट जाता है।

३ ग्रफीम, रसकपूर या सुरमे का लेप करने से फेफडा, दिल ग्रौर ग्रामाशय की भिल्ली की सूजन उतर जाती है तथा ग्राराम मिलता है।

४ धनिया ग्रौर पित्तपापडा का क्वाथ पीने से पुराना ज्वर मिटता है।

५ १ तोला गुड मे १ तोला पीपल का चूर्ण मिलाकर गोलिया बना कर देने से जीर्ण-ज्वर व खांसी, तथा मन्दाग्नि भी मिट जाती है।

६. गिलोय के स्वरस मे पीपल का चूर्ण तथा मिश्री की चासनी मे चाटने से जीर्ण-ज्वर, खांसी, दमा, कफ, प्लीहा, ग्ररुचि ग्रादि रोग मिट जाते हैं।

७ जो ज्वर कुनैन ग्रादि ग्रौषधियो से नही मिटता है वह ज्वर दारु-हल्दी का चूर्ण व क्वाथ लेने से मिट जाता है।

८ वृद्धावस्था मे जीर्ण-ज्वर व खांसी हो तो ग्रावला का क्वाथ दोनो समय लेने से मिटता है।

६ पित्तपापडा तथा गिलोय के काढ़ा मे कालीमिर्च का चूर्ण डालकर पीने से जीर्ण-ज्वर, खांसी मिटती है।

१० तुलसी के स्वरस मे कालीमिर्च का चूर्ण मिलाकर पिलाने से ज्वर तथा विषम-ज्वर मिटता है।

११ श्मशान मे पैदा हुई दूब की जड को रविवार के दिन लाकर सूत से लपेट कर हाथ मे बान्धने से सर्व प्रकार का ज्वर मिट जाता है।

१२ तुलसी के १० पत्तो का रस मिश्री की चासनी मे मिलाकर दिन मे ३ बार देने से मलेरिया, मियादि-ज्वर, शीत-ज्वर व पसली के दर्द मे फायदा करती है।

१३ चौलाई की जड को अपने सिर पर बान्धने से भयकर ज्वर भी मिटता है।

१४ कूट, नीम की छाल, आवला, वच, इन्द्रजौ, घृत, लाख और सरसो इन वस्तुओ का धूप देने से ज्वर मिटता है।

१५ गिलोय का सत ६ माशा, पोदीना ६ माशा, पीपल ६ माशा, कालीजन ६ माशा, कालीमिर्च ६ माशा, दालचीनी ६ माशा, मुलेठी ६ माशा, छोटी इलायची ६ माशा, चीता ६ माशा, काकडा-सिगी ६ माशा, बसलोचन ६ माशा, इन सब को खरल कर के फिर ६ माशा प्रमाण मिश्री की चासनी मे चाटने से जीर्ण-ज्वर मिट जाता है।

१६ जहरमोहरा, बसलोचन, सत्गिलोय और छोटी इलायची के दाने २-२ माशा तथा मिश्री २ तोला लेकर पीस छान कर चूर्ण बनावे। ६ माशा मात्रा और २ तोला बनफसा के शरबत के साथ सेवन करने से जीर्ण-ज्वर जो बिरेचन के बाद भी रह जाता है वह भी मिट जाता है।

१७ पीपल, कलोजी, चिरायता और गेरू १-१ माशा तथा भाग के पत्ते २ माशा लेकर कूट छान कर चूर्ण बनाले। मात्रा २ माशा जाडा आने के वक्त से १ घण्टा पहले देवे। इससे पुराना ज्वर मिटे।

१८ खूबकला असली ७ माशा को पानी मे उबाले फिर छानकर उसमे २ तोला शबत बनफसा मिलाकर पिलावे। पहले रोज

१ उबाल देकर पिलावे, दूसरे रोज २ उबाल देकर, इस तरह रोजाना एक-एक उबाल ज्यादा करते जावे, ७ रोज तक पिलावे। और फिर आठवे दिन से १-१ उबाल कम करते जावे इस प्रकार १४ दिन सेवन करने से पुराना से पुराना ज्वर मिट जाता है।

—मलेरिया बुखार—

१ सोठ, पीपल, मिर्च, तज, लोग वायविडग, ये सब २।।-२।। माशा तथा तुलसी और बेल के पत्ते २ २ तोला, एक मिट्टी के पात्र मे १ सेर पानी चढादे। उपरोक्त सब वस्तुएँ डालकर जब आधा पाव पानी रह जाय तो छानकर रोगा को दिन मे तीन बार पिलाना चाहिये जिससे मलेरिया तथा भयकर कफ-ज्वर तत्काल मिटे।

२. काली तुलसी के ११ पत्ते व कालीमिर्च ११, बुखार चढकर उतरने पर देने से मलेरिया-ज्वर छोड देती है।

३ गुलाबी फिटकडी का फूला बना कर आधा माशा मात्रा मे पतासा मे या चीनी मे तीन दिन देने से मलेरिया छटता है।

४ ५ अगुल गिलोय का टुकडा और १४ कालीमिर्च चिगदकर पाव भर पानी मे औटावे १ छटाक रहने पर पीने से मलेरिया मिट जाता है।

५. मलेरिया-ज्वर से छुटकारा पाने के लिए सर्वोत्तम और शर्तिया दवा, जो अमीर हो चाहे गरीब सबको आसानी से प्राप्त हो सकती है। १ मुट्ठी खाने का नमक पीसकर साफ तवे पर धीमी आच से हलका व भूरे रग का भून कर उतारले, फिर उस नमक को खाने का एक चम्मच लेकर एक गिलास गर्म पानी मे मिलाकर रोगी को देना चाहिये। नोट-रोजाना मलेरिया आने वाले रोगा को बुखार उतरने के २-३ घण्टे पीछे देवे। इकन्तरा या २-३-४ दिनो मे आने वाल बुखार के रोगी को १ दिन पहले देने से सब प्रकार का ज्वर नाश हो जाता है। परन्तु यह दवा खाली पेट लेना चाहिये, अत रोगी को दो दिन खाना-पीना बन्द रखना चाहिये, यदि

प्यासा ज्यादा लगे तो थोडा गर्म जल देना चाहिये। दवा देने के २ दिन बाद रोगी को थोडी चाय या मूगो का पानी देना चाहिये, इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिये कि रोगी कुछ खाये नही तथा ठड मे भी बचाना चाहिये।

६ नोसादर ३ रत्ती, और कालीमिर्च २ रत्ती का चूर्ण बारी से आने वाले बुखार के रोगी को बारी के दिन देना चाहिये इससे ज्वर नाश हो जाता है।

७ दूब के रस मे अतीस का चूर्ण दिन मे तीन बार चटाना चाहिये जिससे बारी से आने वाला ज्वर मिटता है।

८ नीम की अन्तर छाल के चूर्ण की फाकी लेने से बारी से आने वाला बुखार उतर जाता है।

९ नीम की कौपल तथा कालीमिर्च को घोट कर पीने से बारी से आने वाला बुखार मिटता है।

१० कलोजी को गुड के साथ मिला कर देने से विषम-ज्वर भी मिटता है।

११ दूधी की जड को कान के बांधने से बारी से आने वाला बुखार उतर जाता है।

१२ बकरी के दूध मे २।। माशा सोठ का चूर्ण की फाकी देने से गर्भवती स्त्री का भी विषम-ज्वर उतर जाता है।

१३ दालचीनी २ माशा व चीनी ४ माशा की फकी देने से गर्भवती स्त्री का मलेरिया-ज्वर उतर जाता है।

१४ २ माशा हिगोडा तथा २ माशा नमक को सेर भर पानी मे ओटा कर आधापाव रहने पर पिलाने से बारी से आने वाला ज्वर मिटता है। अथवा वच, हरड और घृत का धूप देने से विषम-ज्वर उतरता है।

१५ शीत-ज्वर मे कफ खासी हो तो थोडी-थोडी नारगी खिलाना चाहिये अथवा सोठ व पोदीना का क्वाथ पिलाना चाहिये।

१६ तुलसी के १० पत्ते, कालीमिर्च १०, खूबकला १ तोला, धनिया १ तोला, पोदीना आधा तोला, इन सब को दर दरा कर के आधा सेर पानी मे उबालें, आधा पाव रहने पर १ तोला मिश्री मिलाकर पीने से शीत-ज्वर मिटता है ।

१७ कालीमिर्च २५० ग्राम (पाव भर) खरल करके धतूरे का रस तीन दफा देकर घोटकर खरल करके मू ग प्रमाण गोली बनाले लगभग ३-४ गोली देने से मलेरिया मिट जाता है ।

१८ यदि रोगी का मलेरिया किसी भी औषधि से नही मिटता है तो उसे अकस्मात् ऐसी बात कहो ताकि वह चमक सा जाय फिर मलेरिया निश्चित मिट जायगा ।

१९ कडुवे नीम के २१ पत्तो के साथ ६ माशा गुड मिलाकर घोटना चाहिये फिर गोलिया बनाना चाहिये । ३ दिन तक २–२ गोली ताजे पानी से देने से तिजारी व इकान्तरा ज्वर अवश्य मिटेगा ।

२० कुनैन १ माशा व सत्गिलोय २ माशा, कीकर का गोद १ माशा, बसलोचन २ माशा, पानी मे घोट कर चने प्रमाण गोली बनालो मात्रा १ से २ गोली तक प्रात. काल पानी से लेवे । यह मौसमी बुखार, तथा मलेरिया के लिए अत्यन्त लाभदायक है, जाडे को तत्काल रोक देती है, मलेरिया के दिनो मे ३-४ दिनों से १ गोली लेने से मलेरिया का भय नही रहता ।

२१ काले धतूरे के बीज, रेवद चीनी और सोठ ३-३ माशा कूट छान कर मिश्री की चासनी मे मिर्च प्रमाण गोलिया बनाले । मात्रा ३ गोली सर्दी आने से १ घण्टा पहल पानी के साथ देवे । उस रोज ज्वर का समय बीतने से पहले खाना नही खाना चाहिये । इससे चोथिया बुखार मिट जाता है ।

२२ पलासपापड़ा (पलास के बीज ऊपर का लाल छिलका उतारे हुए) और करजवे की गिरी ६–६ माशा कूट छान कर पानी से मिर्च प्रमाण गोलियां बनाले । मात्रा प्रतिदिन २ से ४ गोली, इससे

सर्दी लगकर आने वाला ज्वर मिटता है।

२३ भाग और पोस्त का डोडा १-१ तोला लेकर दोनो को कूट छान कर चूर्ण बनाले। मात्रा १ माशा, जाडा लगने से १ घण्टा पहले देवे जिससे बारी से आने वाला बुखार तथा खाँसी मिटती है।

२४ मलेरिया-ज्वर मे या शरद ऋतु मे होने वाले पित्त-ज्वर मे जिसमे दस्त व उलटिया भी होती हो, उस रोगी को ज्वार के साठे चूसने से तत्काल शान्ति मिल जाती है। इतना ही नही २-४ दिन इन साठो को चूसने से एकातरा, तिजारी, चोथिया आदि ज्वर भी उतर जाता है।

२५ १ रत्ती अफीम, ढाई पत्ती नीम की मिलाकर गुड मे तीन गोली बनालो। फिर ज्वर आने के ३ घण्टे पहले १ गोली, तथा ज्वर आने पर दूसरी गोली देव। फिर भगवान् की कृपा से तीसरी गोली की जरूरत ही नही रहेगी।

२६ घोघी को अग्नि मे जलाकर बगला पान मे जवान व्यक्ति को २ रत्ती तथा बालक को अवस्था देखकर देने से सब प्रकार की तिजारी, चोथिया बुखार मिटता है।

२७ उल्लू की पाख तथा स्याह गूगल को वस्त्र मे लपेट कर घृत मे बत्ती बनाकर जलावे, उसका कज्जल आख मे आजने से ताप दूर होता है तथा चोथिया ज्वर भी मिट जाता है।

२८ घृत, गुवारपाठा की गिरी को औटावे फिर थोडी अफीम और हल्दी बारीक करके उसमे डाले पीछे छानकर कहवा (कहरवा) के साथ ३ दिन पीने से तिजारा, चोथिया बुखार नही रहता है।

२९ आक की कली जो अभी खिली न हो उसको गुड मे लपेट कर गोली बनाकर निगल जावे इस तरह तीसरे दिन भी करे, जिससे जुडी-ज्वर मिट जाता है।

३० आक की जड २ भाग, कालीमिर्च १ भाग दोनो बकरी के दूध मे

पीसकर चना प्रमाण गोली बनावें। फिर १ गोली जुडी-ज्वर आने के पहले सेवन करे तो ज्वर मिट जाय ।

३१ मसूर के बराबर अफीम तथा मटर के बराबर भाग पीसकर दोनो की गोली देने से ज्वर मिटता है ।

३२ एकान्तराज्वर वाले के लिए'–रविवार या मगलवार के दिन पोपल के हरे पत्ते पर यन्त्र लिख कर दाहिने हाथ पर बान्धना चाहिये ।

ह्री ह्री

८	१	६
३	५	७
४	९	२

ह्री ह्री

नोट -याद रहे बुखार उतर जाने पर ५ दिन पीछे उस पत्ते को कुए मे डाल देना चाहिये ।

३३ लालचन्दन, खश, धनिया, सोठ, पीपल और मोथा इन सबके क्वाथ मे मिश्री मिलाकर पीने से तीन दिन से आने वाला बुखार नष्ट हो जाता है ।

३४ १ वर्ष से ज्यादा पुराने घृत मे हीग मिला कर सू घने से चोथिया ज्वर भागता है ।

३५ अगस्त के पत्तो का रस निचोड कर सू ंघने मे चोथिया ज्वर नही आता है ।

३६ अडूसा के पत्ते, परबल, हरड, बहेडा, आवला, दाख, अमलतास, और नीम की छाल इन सबका काढा करके मिश्री मिलाकर पीने से एकान्तरा ज्वर मिटता है ।

३७ हिंगोडे के बीज की मीजी पीसकर १ शीशी मे रख ऊपर से १ नीम्बू का रस भरदे । फिर इसे ३ या ७ दिन तक नेत्रो में अजन करने से एकान्तरा, तिजारा, चोथिया व सतत सभी प्रकार के ज्वर मिट जाते है ।

३८ **बारी से आने वाले ज्वर के लिए मन्त्र —**

ॐ वाण युद्धे महाघोरे, द्वादशार्क समप्रभे ।

जातोऽसौक्षमहावीर्यो, मुञ्चत्यैकाहिक ज्वर ॥

उक्त मन्त्र को पीपल के पत्ते पर लिखकर वस्त्र मे लपेट कर पुरुष के दाहिने और स्त्री के बाये हाथ पर बान्धने से एकान्तरा ज्वर छूट जाता है ।

३९ तुलसी के २० पत्ते, कालीमिच नग ७ तथा १॥ तोला गुड मे २ गोली बनालें । बुखार चढने के २ घण्टे पहले १ गोली दे, फिर चढने पर देने से बारी से आने वाला ज्वर मिटता है ।

४० मकडी का जाला, कालीमिर्च ४ और गुड १॥ तोला मे गोलिया बनाकर ३ दिन तक बुखार की बारी-बारी लेने से तिजारी, चोथिया ज्वर भाग जाता है ।

४१ पोस्त का डोडा १, कालीमिर्च ७ औटाकर पिलाने से चोथिया ज्वर मिटता है ।

४२ सवेरे मूली का पत्ता, शाम को मूली, और रात को मूली के छिलका कई दिन खाने से तिजारी ज्वर छूट जाता है ।

४३ १–२ रत्ती इन्द्रायण चूर्ण काली बकरी के मूत्र मे भावना देकर लेने से तिजारी ज्वर मिटता है ।

— ताप निवारण मन्त्र —

४४ ॐ णमो लोए सव्व साहूण, ॐ णमो उवज्झायाण,
ॐ णमो आइरियाण, ॐ णमो सिद्धाण ॐ णमो अरहताण ॥
इस मन्त्र को पढते समय पाचवे चरण के अन्त मे ह्री पढते जावे, एक सफेद शुद्ध चदर लेकर उसके एक कोने पर उपरोक्त मन्त्र पढते जावे और गाठ देने की तरह उस चद्दर के कोने को मोड़ते जावे । इस प्रकार १०८ बार उस कोने पर मन्त्र पढें फिर उस चद्दर को रोगी को ओढादे, याद रहे गाठ सिर की तरफ रहे, जब रोगी का बखार उतरे या जिसके तीसरे-चौथे दिन बुखार आता है या

किसी भी प्रकार का ज्वर चढ़ता हो, जब तक ज्वर न उतरे तब तक रोगी उस चादर को ओढे रहें।

४५. ८ तोला चूने के पानी मे १ नीम्बू निचोड दें, बुखार आने के पहले आधा पानी पीवे और १ घण्टे बाद आधा और पीवें, इससे मलेरिया बुखार रुक जाता है।

टाईफाइड (मियादी) ज्वर

— लक्षण —

ज्वर, तन्द्रा, ओष्ठो मे कालापन, नाक, जीभ, मुख और कठ में ललाई तथा नेत्र पीले, इन लक्षणो सहित गले मे मोतियो के हार समान दानो की पक्ति निकलती है। इस ज्वर को मोतीझरा, पानीझरा, निकाला, टाईफाइड, मियादी, भाव आदि नामो से पुकारते हैं। ऐसे रोगो को सच्चे मोतियो का हार पहनाना लाभदायक होता है। ऐसे रोगी के पास स्वच्छतादि का पूरा ध्यान रखना चाहिये, ज्यादातर सफाई आदि का ध्यान न देने से रोगी के २१ दिनों मे सारे शरीर मे दाने फैल जाते हैं। यह रोग छोटा-बडा दो प्रकार का होता है। छोटे को पानी-झरा तथा बडे को मोतीझरा कहते हैं, इसकी उत्पत्ति वात-पित्त और कफ तीनो दोषो से होती है, तथा यह रोग कठिन होता है, इसमे कोई विशेष उपद्रव नही हो तो भी यह कष्ट साध्य रोग होता है, यदि उपद्रव सहित हो तो असाध्य रोग हो जाता है। इस रोग वाले को पवित्र स्थान मे रखना चाहिये तथा स्वच्छ वस्त्रादि पहनाना चाहिये, सेवा करने वाले भी साफ रहने चाहिये, तथा रोगी की दृष्टि मे भी अपवित्र वस्तुएँ नही आनी चाहिये, रोगी के कमरे के दरवाजे पर लाल कम्बल या रेशमी कपडे का पर्दा बान्धना चाहिये, धूप, अगरबत्ती, चन्दन, फूलो से तथा इत्र आदि सुगन्धित पदार्थों से रोगी के आवास को सुगन्धित रखना चाहिये। इस रोग मे ज्वर रहना चाहिये, ज्वर

को तोडने की औषधि न देना चाहिये। इस रोग मे जितना ज्यादा बार-बार पानी पिलाया जाय उतना ही अच्छा है।

१ लोग डालकर ताजा उबाला हुआ पानी पिलाना चाहिये।

२ ८ सेर पानी को औटाकर १ सेर रहने पर पिलाना चाहिये, बर्तन ताम्बे का होना जरूरी है।

३ गूलर के दूध को पानी मे औटाकर पिलाने से दबा हुआ निकाला भी बाहर आ जाता है।

४ रोगी के पीने के लिए ताम्बे के बर्तन मे पानी औटाना चाहिये, उसमे खूबकला के बीजो की पोटली बाधकर रखनी चाहिये तथा खूबकला रोगी के बिस्तरे पर बखेर देनी चाहिये, जिससे घबराहट और बेचैनी मिटकर दाने आराम से बाहर आ जाते हैं।

५. टाइफाईड रोग मे जहरी नारियल को स्त्री के दूध मे घिसकर रोजाना २-३ दफा देने से फायदा होता है।

६ सफेद चन्दन, लाल चन्दन नेत्रवाला, पित्तपापडा, नागरमोथा, सोठ, चिरायता और खस का क्वाथ पिलाने से दाह, ग्लानि, प्रलाप विकलता, तिमिर और पित्त आदि सब उपद्रवो को निकाले मे शान्त करता है।

७ लाल चन्दन, धणिया नेत्रवाला, पित्तपापडा, नागरमोथा और सोठ का क्वाथ देने से निकाले मे फायदा होता है।

८ कसुम्बे को औटाकर पिलाने से दबा हुआ निकाला वापिस बाहर आ जाता है।

९ जाविन्त्री, जायफल, पीपल, काली मिर्च, सोठ इनका घासा देने से कासी तप करके दिन मे २ दफा देने से निकाला आदि रोगो मे फायदा होता है।

१० साभरासीग, चन्दन, जीरा, नेत्रवाला, नागरमोथा, चिरायता, कूडा, कालाजीरा गिलोय, इलायची, कमलगट्टा को पीसकर पिलाने से निकाले का ज्वर शान्त होता है।

११. उन्नाव ५ दाना, खूबकला ७ माशा और निर्बीज मुनक्का ६ दाना लेकर तीनो को पानी मे औटाकर छानकर मिश्री मिलाकर पीने से मोतीझरा मे फायदा होता है।

१२ खूबकला, गावजँवा, बनफसा, तुलसी, ब्राह्मी, सोठ, मिर्च, पीपल और मुलेठी सब ३-३ माशा, और अमलतास का गूदा ६ माशा इन सब को पाव भर पानी मे उबालकर छटाक भर रहने पर छानकर मिश्री मिलाकर पीने से मोतीझरा मे फायदा होता है।

१३ ब्राह्मीबटी गोली १, लोग २, तुलसी के पत्ते ४, थोडी सोंठ इनका घासा दोनो टाइम देने से निकाला सब प्रकार का मिटता है।

१४ अचलजडी नग १ जावित्री १ रत्ती, सोठ ४ रत्ती, लोग नग ४ टोपी उतारकर, और नीम की सली का पिछला हिस्सा मोटावाला नग-५ और सूखा पोदीना २ रत्ती सबका घासा बनाकर दोनो टाइम देने से हवा लगकर बिगडा हुआ, दबा हुआ, निकाला सुधर जाता है। बाहर निकलकर शर्तिया आराम होता है।

१५ तुलसी का रस, गोबर का रस, जीरा, सोनामुखी की भस्म घिसकर देने से निकाला मे फायदा होता है।

१६ बनफसा का फूल ७ माशा, उन्नाव ६ दाना, मुनक्का निर्बीज ६ दाना, अजीर ३ दाना, और खूबकला ७ माशा इन सबको पानी मे उबालकर छानले और उसमे शर्बत उन्नाव मिलाकर पिलाने से चेचक, मोतीझरा मे अत्यन्त फायदा होता है।

निमोनिया-ज्वर

सामान्य लक्षण—इस रोग के शुरू मे सर्दी की बुखार, खासी, छाती ज्यादा गर्म रहना, मुंह और आखें लाल रहना, सिरदर्द, खुश्की, जीभ मैली, अरुचि, छाती मे दर्द, सूखी खासी तथा कफ मुश्किल से निकलना, कफ मे खून, थूक मे दुर्गन्ध आना आदि होते हैं। इसमें पहले फेफडो में सूजन होती है, खांसी ज्यादा आती है, श्वास मे कष्ट होता

है, आँखो का चढना, बेचैनी, चेहरा फीका रहना, होठो पर नीलापन, और पसलियो मे दर्द रहता है। यह रोग साधारणतः ६ से १० दिन ज्यादा कष्टप्रद रहता है।

१. इस रोग मे रोगी को हवा से बचाना चाहिये तथा गर्म स्थान मे रखना चाहिये।

२. सरसो के तेल मे थोडा अफीम डालकर मालिश करने से निमोनिया वाले को फायदा होता है।

३ पसली पर अरण्ड के पत्ते तेल लगाकर गर्म करके बान्धना चाहिये तथा नमक की पोटली का सेक करना चाहिये अथवा पसली का दर्द मिटाने के लिए असली हीना का इत्र लगाना चाहिये।

४ नीम की १०-१२ कच्ची कोपले भीगे कपडे मे पलेटकर गर्म भोबर मे दबादे, गम होने पर निकालकर पोसकर रोगी को सेवन कराने से पसली का दर्द मिट जाता है।

५ काली मिर्च नग ५ और मुनक्का १ तोला लेकर १ पाव पानी मे औटावें, छटाक भर रहने पर गर्म-गर्म दिन मे २-३ बार पिलाने से कफ पतला होकर निकल जाता है।

६ गूलर के दूध मे मिश्री मिलाकर दिन मे २-३ बार चाटने से कफ निकल जाता है।

७ १॥ रत्ती अकरकरा घोटकर पीने से कफ निकल जाता है।

८ बसन्तमालती पान के रस मे देने से इस रोग मे हृदय की दुर्बलता मिटती है।

९ हृदय मे ज्यादा वेदना होने पर तिल का तेल १ छटाक, देशी मोम १ तोला, कपूर और अफीम १॥-१॥ माशा सब पीसकर गर्म करके लेप करने से तत्काल आराम आता है।

१० चन्द्रोदय और स्वर्ण भस्म सेवन करने से निमोनिया वाले के आराम होता है।

११ गवारपाठे की १ फाक को खडी चीरकर उसमे १ गाठ हल्दी को महीन पीसकर भरदे, फिर गीले कपडे मे लपेटकर गर्म भोबर मे

दबादें, जब हल्दी पक जाय तब गिरी निकाल कर मिश्री मिलाकर गोलियां बनाले । इन गोलियो के सेवन से निमोनिया में फायदा होता है ।

१२ फिटकडी, सोनामुखी और शक्कर औटाकर पीने से निमोनिया ज्वर मे फायदा होता है ।

१३. १ सेर गौमूत्र और आधा पाव अजमोद को १ हाडी मे डालकर कपड मिट्टी करके धीरे-धीरे पकाते रहे, जब गौमूत्र खुश्क हो जाय तो उसे उतारकर बडे बेर के बराबर गोलियां बनाले । फिर दिन मे ३-४ बार खिलाने से निमोनिया मे शर्तिया फायदा होता है।

१४ गूलर के दूध का फोहा भरकर आधा सेर पानी मे औटालें, १ छटाक पानी रहने पर दोनो टाइम गुनगुना कर पिलाने से निमोनिया मे अत्यन्त फायदा होता है।

१५ अभ्रक भस्म और लोह भस्म १-१ रत्ती, पीपल और बंसलोचन २-२ माशा इन सबको खरल करके मात्रा ६ रत्ती मिश्री की चासनी मे दोनो टाइम चाटने से हृदय मे भी फायदा होता है ।

१६ सोफ, मुनक्का और लिसोडा का क्वाथ बनाकर देने से कफ पतला होकर निकलता है ।

१७ एक पाव पानी मे आधा तोला रोहीडा की अन्तर छाल, और घी कोडी भर फिटकडी सफेद उबाल कर २ पैसे भर पानी रहने से छानकर १।। तोला शक्कर मिलाकर देने से हृदय की दुर्बलता मिट जाती है ।

१८ बारहसिंगा के सीग को गौमूत्र मे घिसकर लेप करने से पसली का दर्द मिटता है ।

१९ सांभर सींग की भस्म आधा रत्ती से ४ रत्ती तक देने से कफ निकल जाता है ।

२०. बसलोचन, छोटी इलायची, मुलेठी, मुनक्का, गिलोय के सत् को खरल करके मिश्री की चासनी मे चाटने से कफ निकल जाता है।

२१. **पसली के दर्द पर सेक** –गुड के सिरके मे बालू रेत को भिगाकर कपड़े मे बान्ध पोटली बनाकर गर्म करके सेक करने से फायदा होता है ।

२२. रोहिष, तृण, धमासा, पित्तपापडा, प्रियगु, कुटकी का क्वाथ पीने से निमोनिया ज्वर मिटता है ।

२३ पित्तपापडा, कायफल, कूट, खस, रक्तचन्दन, नेत्रबाला, सोठ, नागरमोथा, काकडासिगी और पीपल का क्वाथ देने से निमोनिया ज्वर मिटता है ।

२४. यदि ज्वर मे बद्धकोष्ठ हो तो एलुवा, श्वेत चीनी, साबुन इन तीनो को पीसकर गर्म करके पेट पर लेप कर ऊपर पान बान्ध दे। इससे तत्काल शान्ति मिलेगी और पेट साफ हो जायगा ।

२५ **यदि कफ मे रक्त आता हो तो .**– शृंगभस्म व अभ्रक भस्म २-२ रत्ती की मात्रा अडूसा के स्वरस मे दे ।

२६ अफीम और कपूर मिले हुए तारपीन तेल की मालिश करने मे ज्वर मे कफ से रक्त आने मे फायदा होता है ।

२७ **ज्वर में ज्यादा प्यास हो तो** –बडी इलायची को भूनकर थोडे-थोडे दाने खिलावे ।

२८ **यदि ज्वर मे मलावरोध हो तो** – कुटकी, हरड, अमलतास, निसोत और आवला का क्वाथ पिलावे ।

२९. **यदि ज्वर मे अतिसार हो तो** – सोठ, अतीस, नागरमोथा, चिरायता, कूडा की छाल, इनको जौ कूट करके क्वाथ बनाकर देवे ।

३० १ सेर गौमूत्र मे १ तोला फिटकडी डाल कर खूब औटावे, गाढा पडने पर ५ तोला अजमोद मामूली कूट कर डालदे और बडा बेर बराबर गोलिया बनाकर सेवन करे, इससे निमोनिया ज्वर मिटता है ।

३१. रामेठा की ताजी छाल का रस ६ रत्ती यदि ताजी छाल न मिले तो सूखी छाल का काढा, चावल के माड मे मिलाकर पिलाने से

रोगी के पहले वमन द्वारा, फिर दस्त द्वारा बहुत सा कफ निकल जायेगा और एक बार मे ही निमोनिया रोग मिट जायगा, यदि रोग भयकर हो तो २ बार से अधिक देने की कतई आवश्यकता न रहेगी। वमन और विरेचन के पश्चात् रोगी को शान्ति के लिए मोती भस्म या सितोपलादि चूर्ण आदि औषधिया कुछ दिन सेवन करानी चाहिये। नोट - ध्यान रहे कि रमेठा की छाल का काढा या रस आखो के लगने से अन्धे होने का भय है और चमडी पर लगने से दाह और सूजन होती है। अत औषधि इस तरह पिलावे कि दातो के भी न लगे क्योकि दातों को भी हानि है, इतने पर भी यदि गलत व्यवहार हो जाय तो मक्खन या घी का प्रयोग करने से उसका प्रभाव मिट जाता है।

— भूत ज्वर —

१ हीग, मिर्च, अकौवा, पलाश, सर्प की काचली, सोठ, चाषपत्र, कपास का बीज, सफेद सरसो, मयूर के पख, इन सबका धूप देने से व्यन्तरो (भूत-प्रेत) के उपद्रव से उत्पन्न ग्रह ज्वर का भी उपशम होता है।

२ यदि तीव्र ज्वर हो तो सोठ, कायफल का चूर्ण, समस्त शरीर मे मदन किया जाय तो बुखार पसीना आकर उतर जाता है।

३ नील की जड को कान मे बान्धने से सब प्रकार का ज्वर उतर जाता है।

— अजीर्ण ज्वर तथा दृष्टि ज्वर —

४ इस ज्वर वाले रोगी के बार-बार पतला दस्त होता है, पेट गुड-गुड करे इसे अजीर्ण ज्वर कहते हैं। ऐसे रोगी को अजमोद, हरड की छाल, सचर नमक, कचूर इन सबको बराबर लेकर कूट छान कर तैयार करे। मात्रा ४ माशा प्रात गर्म पानी से लेने से अजीर्ण ज्वर मिटता है।

५ यदि अजीर्ण ज्वर न मिटे तो रोगी को रोग माफिक जुलाब तथा वमन कराना चाहिये।

६. दृष्टि ज्वर वाले रोगी के लक्षण-जम्हाई ज्यादा आना, पेट दुखना हाथ पांव मे फूटनी होना, शरीर शक्ति हीन होना। ऐसे रोगो को भुनी हुई हींग, काली मिर्च, पीपल, सोठ, इनको महीन छान करके ८ माशा गर्म पानी से लेने से दृष्टि ज्वर व अजीर्ण ज्वर मिटता है।

—ज्वर सम्बन्धी विशेष बातें—

ज्वर मे दस उपद्रव होते हैं। प्यास ज्यादा लगना, खांसी होना, श्वास चढ़ना, हिचकी होना, वमन होना, अतिसार होना, अरुचि होना, कब्ज होना, आफरा होना, मूर्च्छा होना। प्रथम तो ज्वर होय पीछे रोग होय सो ज्वर का इलाज करने देते नही। ये ऊपर लिखे हुए ज्वर के परिवार रूपी उपद्रव होवे हैं। जैसे—प्यास तो ज्वर की स्त्री, खासी और श्वास ज्वर का पुत्र, हिचकी और वमन ज्वर की बेटी, अतिसार ज्वर का भाई, अरुचि ज्वर की बहिन, कब्ज ज्वर का भाणजा, आफरा ज्वर का ससुर, मूर्च्छा ज्वर की दासी अत. इनमे जो बलवान होय उसका सर्वप्रथम इलाज करना उचित है।

—सब प्रकार का ज्वर—

१ सत्यानाशी का स्वरस २ रत्ती ४-४ घण्टे के अन्तराल से दिन मे ४ बार देने से सब प्रकार का ज्वर मिटता है। इससे नया पुराना, मलेरिया, मियादि कफ, ज्वर, इन्फ्लूएंजा आदि मिटते हैं। समस्त रक्त विकार भी मिटता है।

२. मूंग के आटे को गौदुग्ध मे गूंदकर उसकी २ रोटी बनाले एक ओर सेकलें। रोटी थोडी कच्ची रहे उस तरफ बादाम का तेल १ तोला या काहू का तेल चोपड कर उस ओर से रोगी के सिर पर बाधदे, जब वह ठण्डी हो जाय तो इसी तरह दूसरी रोटी बान्धते रहें। इस से बुखार के वेग की तीव्रता व बेहोशी कम हो जाती है।

३ कमल या कुमुदनी के फूल १ तोला, गुलबनफसा १ तोला, गेहू की भूसी १ तोला और खाने का नमक १ तोला, लेकर इन सबको ६-७ सेर पानी मे खूब उबालें, जब तीसरा भाग पानी रह जाय तो उससे पोशाया करें । घुटनो के नीचे से पैरो पर पानी डालते जाये और पैरो को ऊपर से नीचे की ओर सूते । पोशाया हवा से सुरक्षित स्थान में करना चाहिये । जब पानी ठण्डा हो जाय तो फिर रोगी के पैरो को कपडे से पोछकर सुखाकर उन पर ऊपर से नीचे तक कपडे की पट्टी लपेट देनी चाहिये, परन्तु तलवे खुले रहने चाहिये और रोगी को कपडा ओढा कर लेटादे तथा ३ घण्टे बाद पैरो को खोल दें । इससे बुखार की बेहोशी, बकवास, आदि जो दिमाग में गर्मी चढ जाने से होती है, वह समस्त मिट जाती है ।

४. ज्वर-अतिसार दोनो एक साथ होने पर-सोठ, अतीस, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, कुडा की छाल, इन सब को बराबर जौ कूट करके ८ माशा काढा ७ दिन लेने से फायदा होता है ।

५ ज्वर-अतिसार दोनो साथ होने पर-पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोठ, बील की गिरी, नागरमोथा, चिरायता, कुडा की छाल, इद्रजौ, इन सबको बराबर लेकर जौ कूट करके ८ माशा का काढा ७ दिन तक लेने से ज्वर-अतिसार व मुख शोष को तथा हिचकी, वमन, खासी, श्वास आदि को मिटावे ।

—ज्वर में प्यास ज्यादा होने पर—

६ धणिया, नागरमोथा, पित्तपापडा, इनको जौ कूट करके ८ माशा का काढा ३ दिन लेने से प्यास, दाह दूर होय ।

७ बड का अकुर, चावलो की खील, कमलगट्टा इन सबको कूट छान कर मिश्री की चासनी मे गोली बनावें, इसे मुख मे रखने से फायदा होता है ।

८ नेत्रवाला, खस, नागरमोथा, पित्तपापडा, सोठ तथा चन्दन लाल इन

सबका काढा पीने से दाह ज्वर मिटता है। अथवा हजार बार धोया घृत मालिश करने से दाह तत्काल मिटती है।

— ज्वर में खास होय तो —

९ पीपल, पीपलामूल, सोठ, भारगी, खेरसार, कटाली, अडूसा, कुलिंजन, बहेडा इन सबको बराबर लेकर जौ कूट करके ५ माशा का काढा ७ दिन लेने से ज्वर का खास मिटे।

—ज्वर में वमन होने पर—

१० गिलोय ५ माशा का काढा बनाकर मिश्री मिला कर देने से वमन दूर होय अथवा चावलो की खील और पीपल को मिश्री की चासनी मे चटाने से वमन मिटे।

—ज्वर में श्वास होने पर—

११ सोठ, मिर्च, पीपल, नागरमोथा, काकडासिंगी, भारगी, पोहकरमूल, इन सबको बराबर लेकर जौ कूट करके ५ माशा का काढा ७ दिन लेने से ज्वर का श्वास मिटे।

—ज्वर में हिचकी होने पर—

१२ जल मे सेंधा नमक डालकर नास देने से फायदा होय।

१३. मोर पाख के चन्दोआ की राख मिश्री की चासनी मे चटावे तो हिचकी-वमन मिटे।

—ज्वर में मूर्छा होने पर—

१४ किरमाला की गिरी, दाख, पित्तपापडा, हरड की छाल, इन सबको बराबर लेकर काढा ८ माशा का देने से ज्वर की मूर्च्छा मिटे।

— ज्वर में कब्ज तथा आफरा—

१५ दाख तथा दाडम के बीजो को उबाल कर कुरला करने से मुख शोष तथा जीभ का विरस पन मिटे।

—ज्वर में नीन्द न आना—

१६ आलुबुखारा १, सेकी हुई भाग १ रत्ती, मिश्री की चासनी में चटाने से नीद आवे तथा अतिसार सग्रहणी दूर होय और भूख लगे।

अथवा–पीपलामूल ४ माशा गुड मे खाने से नीद आती है।

१७ अरण्ड का तेल, अलसी का तेल इन दोनो को कासी की थाली मे मलकर अजन करने से भी नीद आती है।

१८ नीम के कोमल पत्तो का रस निकालकर फिर उसके मथने से जो झाग आवे उन्हे शरीर पर लेप करने से दाह-ज्वर व तृषा का शमन होता है।

—ज्वर उतरने का लक्षण—

१९ शरीर हल्का होना, मस्तक मे खुजाल का आना, होठो पर पापडी आना सभी इन्द्रिया अपना-अपना काम करना, शरीर की व्यथा मिटना, शरीर मे पसीना आना, भूख लगना, छीक आना, नीन्द आना ये सब लक्षण होय तब समझो कि ज्वर चला गया।

२० ७ दिन तक आने वाला ज्वर तरुण, ७ से १४ दिन तक आने वाले ज्वर को मध्य ज्वर कहते हैं और १४ से २१ दिन तक पुराना ज्वर कहलाता है तथा इससे आगे रहने पर जीर्ण ज्वर कहलाता है।

—गर्मी के ज्वर में वमन होना—

२१ कासनी २ तोला, आलुबुखारा ५ तोला, गिलोय ३ माशा और लाल चन्दन ३ माशा को एक कोरे मिट्टी के बर्तन मे २ सेर पानी मे भिगो देना, ६–७ घण्टे बाद प्यास लगने पर रोगी को थोडा-थोडा मिश्री मिलाकर पिलाने से गर्मी का ज्वर, वमन आदि मिटते है।

२२ ढाक के कोमल पत्तो को नीम्बू के रस मे पीसकर शरीर पर लेप करने से दाह-ज्वर मिटता है।

—ज्वरातिसार

२३ नीम की छाल का क्वाथ पीने से पुराना ज्वरातिसार मिट जाता है।

२४. ढाक के रस का सेवन करने से पुराना ज्वरातिसार मिटता है।

२५. बबूल के गोद मे कुनैन मिलाकर देने से ज्वरातिसार मिट जाता है।

—ज्वर की निर्बलता—

२६ काली मिर्च का चूर्ण मिश्री की चासनी मे सेवन करने से ज्वर के पीछे की निर्बलता, मूर्च्छा, भ्रम और आमाशय की पीड़ा मदाग्नि और आफरा मिटता है।

—लू लगकर ज्वर होना—

२७. प्याज के ताजे रस को शरीर पर मलने से लू का असर तत्काल मिट जाता है।

२८ कच्चे आम (कैरी) को आग मे पका कर उसका रस व उसमे बूरा मिलाकर पीने से लू उतर जाती है।

२९ धूप मे पानी रख कर गर्म होने पर स्नान करने से लू उतर जाती है।

३० इमली का पानी शक्कर या गुड मिलाकर लेने से भी लू उतरती है।

—सब प्रकार का ज्वर नाशक—

३१ पित्तपापडा ४ तोला, सोठ २ तोला, पीपल १ तोला, काली मिर्च ।। तोला, अजमोद १ तोला, नीम गिलोय २ तोला, नागरमोथा २ तोला, पोदीना २ तोला, सेधानमक १ तोला इन सबको कूट कर खरल करके शीशी भरले। मात्रा जवान को ५ माशा, बच्चो को २ माशा, १ छटाक पानी मे मिलाकर कासी तप करके प्रात काल ३-४ दिन देने से सब प्रकार का ज्वर मिट जाता है।

—कब्ज से पैदा होने वाला ज्वर—

३२ ६ माशा कुटकी कई दिन सेवन करने से कब्ज मिट जाता है।

—मौसम का ज्वर—

३३ अडूसे के जड के चूर्ण की फक्की लेने से मौसम का बुखार उतरता है।

—गर्दन तोड व कमर तोड बुखार—

३४. गर्दन तोड व कमर तोड बुखार मे काले वमन रोकने के लिए चूने के पानी मे दूध मिलाकर देना चाहिये।

३५ २१ काली मिर्च व २१ तुलसी के पत्तो को दडच कर कपड़े मे पोटली बान्धकर आधा सेर पानी मे औटाकर ४ तोला रहने पर प्रति घण्टा पिलाने से गर्दन-तोड व कमर-तोड बुखार उतरता है।

—साधारण-ज्वर—

३६ तुलसी के ८ पत्तो के रस मे ३ काली मिर्च पीसकर दिन मे ३ बार लेने से साधारण ज्वर मिटता है।

३७ सोठ २ माशा, धणिया १ माशा का क्वाथ पीने से साधारण ज्वर मिटता है।

३८ तुलसी के पत्तो का क्वाथ पीने से पसीना आकर ज्वर उतर जाता है।

३९. अनार के शर्बत से ज्वर के रोगी की प्यास, बेचैनी, वमन, दस्त मिट जाते हैं।

४० अमलतास को दूध मे या मुनक्का के रस मे पीने से ज्वर उतरता है।

४१. निशोथ का चर्ण मुनक्का के रस मे मिलाकर पीने से बुखार उतरता है।

४२ त्रायमाण को दूध मे मिलाकर पीने से दस्त होकर बुखार उतरता है।

४३ काली मिर्च नग ३, सोठ ।। गांठ, मिश्री और धणिया का घासा बनाकर कासी तप करके लेने से ज्वर मिटता है।

४४ आक की जड की छाल का चूर्ण २।। रत्ती सेवन करने से पसीना आकर बुखार उतरता है।

४५ जिस नाक मे स्वर तेज चलता हो उसमे रूई भरदो, थोड़ी देर मे बुखार उतरेगी।

४६ सेर भर पानी मे ५ लोग और नमक डालकर उबाल लो, आधा पानी होने पर पीकर पसीना लेने से ज्वर उतर जाता है।

४७. आधा सेर पानी मे थोडा सोठ और नमक डालकर औटाकर आधा पानी रहने पर पिलाने से पसीना आकर बुखार उतर जाता है।

४८. सफेद फिटकडी के फूले को नागरबेल के पान के साथ दिन मे तीन बार खाने से ज्वर-इन्फ्लूएजा उतर जाता है। पान मद्रासी या बगला उत्तम रहता है।

४९ दाल चीनी सोठ, इलायची, काली मिर्च, धनिया इन सबको समान भाग लेकर क्वाथ बनाकर पीने से सर्दी, खासी, बुखार आदि मिटता है। यह शक्ति दायक भी है।

५० भारगी की जड गिलोय, नागरमोथा, देवदारु, बडी कटेरी, सोठ, पीपल और पोहकरमूल इन आठ वस्तुओ का काढा पीने से ज्वर का नाश होता है, श्वास हरता है।

५१ कायफल, कत्तृणा, नागरमोथा, धनिया, काकडासीगी, बच, हरड छोटी, भारगी, पित्तपापडा, सोठ, देवदारु इन ग्यारह वस्तुओ का काढा बनाकर ऊपर से भुनी हीग और मिश्री मिलाकर पीने से खासी, श्वास, मुखरोग, ज्वर, वात कफ ये सब रोग मिटते है।

५२ घर का धूआ तथा काली मिर्च इन दोनो को बराबर लेकर निम्बू के रस मे खरल करे। फिर २ रत्ती प्रमाण गोली बनाकर १ गोली पानी के साथ लेने से सब प्रकार का ज्वर मिटता है।

५३. धतूरा का पत्ता, नागरबेल का पान और काली मिर्च बराबर नग लेकर पीसकर उडद प्रमाण गोलिया बनाकर दिन मे २ गोली दोनो समय लेने से हर प्रकार का ज्वर उतरता है।

५४ कटेली, गिलोय, सोठ, पोहकरमूल और चिरायता का क्वाथ देने से सब प्रकार का ज्वर मिटता है।

५५ नीम का पचाग (जड, फल, फूल, पत्ती, छाल) ४ तोला, सोठ ३ तोला, काली मिर्च ८ माशा, पीपल १ तोला, त्रिफला ३ तोला, सचर नमक १ तोला, अजवाइन १ तोला, जवाखार १ तोला, इन सबका चूर्ण करके मात्रा ८ माशा प्रमाण गर्म पानी मे लेने से सब प्रकार का ज्वर मिटता है।

५६ जायफल नग १, केशर ३॥ माशा, लोग १ तोला और ५॥ माशा,

दालचीनी १॥ तोला, कोकर का गोद ३ तोला, छोटी इलायची का दाना ३ तोला, सोठ ५।।। तोला, नशास्ता ११।।। तोला, मिश्री ३४ तोला, सभी को कूट छानकर फिर मिश्री की चासनी बनाकर उसमे मिलालें। मात्रा ७ माशा, अनुपान सोफ का अर्क ७ तोला, इस माजुन से समस्त कफ रोग मिटते हैं। विशेषत: आमाशय के कफ और वायु को मिटाता है, दस्तो को रोकता है, और हैजा (कालेरा) मे भी लाभदायी है।

—शीत-ज्वर—

५७ धतूरे के बीजो का भस्म बनाकर जवान को ४ रत्ती तथा बच्चे को १ रत्ती देने से शीत ज्वर मिटे।

५८ लाल मिर्च और सेक कर धोई हुई भाग को पीसकर दुगुने गुड मे १-१ माशा की गोलिया बनालें। फिर शीत ज्वर आने के पहले ३-३ घण्टे के फासले पर ३ गोली देने से ज्वर नही आता है।

५९ २ रत्ती जस्त भस्म लोग तथा अजवाइन के साथ लेने से शीत ज्वर मिट जाता है।

६० तिलो के तेल मे लहसुन का कल्क बनाकर नमक मिलाकर पीने से विषम ज्वर भगता है।

—ज्वर मे पसीना ज्यादा आने पर—

६१ कभी-कभी ज्वर मे अत्यधिक पसीना आकर शरीर की गर्मी को निकालकर रोगी को मार देता है। ऐसे रोगी को भुनी हुई कुलथी के चूर्ण को उसके शरीर पर मर्दन करने से फायदा होता है।

६२ अगर के चूर्ण को शरीर पर मालिश करने से ज्वर का पसीना मिटता है।

६३ जिस मिट्टी के बर्तन मे वर्षों तक नमक रखा हो, उस बर्तन के टुकडे को गाय के पुराने गोबर मे घिसकर शरीर पर मलने से तथा पाउडर की तरह लगाने से पसीना मिटता है।

६४ आवला, गोखरू, चन्दन, गिलोय, शीतल चीनी, इन सब को बराबर

लेकर चूर्ण बनाकर ३ माशा मात्रा मे दिन मे ३ बार ठण्डे पानी से लेने से शरीर का चिपचिपाट मिटता है।

६५ कायफल और सोठ पीसकर शरीर पर मलने से भी पसीना मिटता है।

६६. कोयली के पत्तो के रस मे अदरक का रस मिलाकर सेवन करने से वह ज्वर मिटता है, जिसमे फोडा-फुन्सी और पसीना ज्यादा होता हो।

जुकाम – रोग

जुकाम रोग के लक्षण –नाक से पतला स्राव बहना, नाक आच्छादित होना, गला-तालु-कठ सूख जाना, कनपटियो मे सुई चुभे जैसी वेदना होना, निद्रा न आना, अधिक छीक का आना, गला बैठ जाना, ये सब वातज जुकाम के लक्षण हैं। जिसमे पित्त व उष्ण स्राव एकदम बहता हो, नाक से धूआ व अग्नि जैसा गर्म विश्वास निकालना, एव तृषा-दाह-जलन आदि हो तो पित्तज जुकाम समझना चाहिये। जिससे रोगी की आखो पर सूजन सी आ जाती है, सिर भारी रहता हो, कठ, तालु, ओठ व सिर मे खाज चलती हो, नाक से ठण्डा गाढा व सफेद स्राव बहता हो, उष्ण पदार्थों के खाने की इच्छा रहती हो, इसे कफज जुकाम कहते हैं। इस प्रकार जुकाम रोग की उपेक्षा की जायगी व समय रहते चिकित्सा न की जायगी तो कालान्तर मे वह बहुत दूषित होकर असाध्य-क्षय आदि विषम रोगो मे बदल जाता है।

१ अडूसा के पत्तो का क्वाथ पीने से जुकाम मिटता है अथवा नारंगी के छिलको का क्वाथ पीने से मिटता है।

२ जुकाम के वेग को कम करने के लिए अजवाइन गर्म करके पोटली बनाकर सूंघना चाहिये अथवा काला जीरा (कलोजी) को गर्म करके सूघना चाहिये।

३ नागरपान पर तेल चोपड कर गर्म करके सीने पर बान्धने से जुकाम और सीने का दर्द मिटता है।

४ भुने हुए गर्म चने खाकर ऊपर ३ घण्टे पानी न पीने से जुकाम मिटता है।

५. गर्म दूध मे पिण्ड खजूर नमक डालकर पीने से जुकाम मिटता है।

६ सोठ को पानी मे उबाल कर शक्कर मिलाकर पीने से जुकाम मिटता है।

७ राई के तेल को पंगो पर व पैरो के तलवो पर व नाक के लगाने से जुकाम मिटता है।

८ कायफल को पीसकर सू घने से जुकाम मिटता है।

९ जुकाम मिटाने के लिए सिर पर गर्म पानी का तराडा देना चाहिये ।

१० पुराना जुकाम मिटाने के लिए साफ पानी को ५-६ घण्टे धूप मे रखकर पीना चाहिये।

११ नागरपान व तुलसी का रस आधा तोला मिश्री की चासनी मे लेने से पुराना जुकाम मिटे।

१२. तुलसी के रस मे अदरक और नागरपान का रस तथा काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर मिश्री की चासनी मे कई दिन लेने से सर्दी की पुरानी शिकायत भी मिटती है।

१३. थोडी अफीम खाकर ऊपर गर्म दूध पीने से सर्दी की जुकाम मिट जाती है।

१४ सर्दी की जुकाम मिटाने के लिए ३ माशा सोठ और २ तोला गुड़ औटाकर सोते समय पीना चाहिये।

१५ वच को नाक पर लगाने से जुकाम की खासी और तीव्र ज्वर भी मिटता है।

१६ गर्म दूध मे काली मिर्च व हल्दी का चूर्ण बुरकाकर पीने से जुकाम ज्वर मिटता है।

१७. काली मिर्च व पतासे पानी मे औटाकर गर्म-गर्म पीने से जुकाम खासी व हल्की हरारत और दर्द मिटकर शरीर हल्का हो जाता है।

१८ नागरबेल के पान की जड़ व मुलेठी को पीसकर मिश्री की चासनी में चाटन से सब प्रकार के जुकाम मिटते हैं।

१६. चिरमी और अकलकरा के चूर्ण मे बराबर शक्कर मिलाकर मात्रा २ माशा खाने से कफ शान्त होकर जुकाम मिट जाता है।

२०. चूने का पानी पीने से जुकाम, नजला, पीनस, गला बैठना, गर्मी तथा कफ का बुखार मिटता है।

२१ २ माशा चूने की कली, २ माशा नोसादर, ३ माशा सोठ पीसकर पोटली बनाकर सूघने से सब प्रकार का जुकाम मिट जाता है।

२२ काकडी का बीज ३ माशा, खीरा का बीज ३ माशा, कासनी के बीज ३ माशा, बेदाना ६ माशा, नेत्रवाला ३ माशा, इन सबको घोटकर ३ छटाक गुलाब के अर्क मे छानकर ३ तोला मिश्री मिलाकर पीने से गर्मी का जुकाम मिट जाता है।

२३ सोठ में औटाये हुए पानी को पीने से जुकाम मिटता है।

२४ वातज जुकाम मे घृत मे पच लवण पीना चाहिये। पित्तज जुकाम मे कडुवा अम्ल व मधुर रसयुक्त औषधियों से पकाया हुआ घृत पीना हितकर होता है। कफज जुकाम मे उष्ण, तिक्त, रूक्ष और कषैली औषधियो से पकाये हुए घृत को विधिपूर्वक पिलाने से फायदा होता है।

२५ हल्दी के धूएँ को नाक मे नली द्वारा चढाने से जमा हुआ पानी, तथा भयकर कफादि भी बहकर तुरन्त जुकाम मिटता है। परन्तु याद रहे ऊपर २-४ घण्टे पानी न पीवें।

२६ ७ काली मिर्च साबुत कुछ दिन थोडे पानी के साथ निगलने से जुकाम मिटता है।

२७ गावजवा ३ माशा, बडा गु दा नग ७, गेहू की चापड ३ माशा, और मिश्री २ तोला को डेढ पाव पानी मे औटाकर १ छटाक रहने पर

२-३ दिन दोनो टाइम पीने से जुकाम व मलगम आदि साफ हो जाता है।

२८. गर्मी का जुकाम मिटाने के लिए-पोस्त के डोडे पानी मे औटाकर उसमे शक्कर का पाक बनाकर सेवन करना चाहिये।

२६. बेहदाना ३ माशा, उन्नाव नग ५, लिहसोडा ६ दाना, लेकर सबको अधकुटा करके पानी मे एक उबाल देकर छानलें फिर उसमे २ तोला शर्बत बनफसा मिलाकर पीने से गर्मी से होने वाला नजला, जुकाम और सिर दर्द तथा छाती का दर्द नष्ट हो जाता है।

३०. गावजवा ५ माशा, मुलेठी ५ माशा और मिश्री २ तोला लेकर तीनो को पानी मे उबाल कर छान कर पीने से हर प्रकार का नजला, जुकाम और खासी मे फायदा होता है।

३१ गेहू की भूसी (छिलका) १ तोला, सेधानमक १ माशा को पानी मे औटाकर छानकर पीने से गाढा कफ पतला पडकर निकल जाता है।

३२. छिली हुई मुलेठी, उस्तोखुदूसत, गावजवा का फूल, जुफाखश्क, मेथी, और बाकला सब १४-१४ माशा, गावजवा ७ माशा, सोफ, खीरे,का बीज, सूखा पोदीना, ७-७ माशा, बनफसा का फूल ६ माशा, हँस-राज ६ माशा, अजीर २२।। माशा, खतमी का बीज २२।। माशा, अलसी ४।। माशा, उन्नाव ४८ दाना, लिहसोडा ७० दाना, पोस्त का डोडा १ तोला लेकर सबको अधकुटा करके आधा सेर पानी मे पकावे, आधा पानी रहने पर छानकर उसमे सब औषधियो से तिगुनी मिश्री मिलाकर चासनी बनालें। अन्त मे उसमे ६ माशा बादामगिरी व ६ माशा पोस्त दाना पानी मे पीसकर मिलादे तथा आग से नीचे उतारकर उसमे ३ माशा मुलेठी का सत्, २ माशा शकर तेगाल, और २-२ माशा कतिरा गोद व कुन्दरु गोद व बेदाना पीसकर मिलादें। सुरक्षित रखे, मात्रा ३ से ६ माशा तक। जिनको बार-बार जुकाम रहती है उनके लिए यह माजून अति उत्तम है।

नोट —माजून की चासनी ऐसी होनी चाहिये कि सब दवाईया मिलकर ठण्डी होने पर हलवा जैसी बन जाय।

३३ तिजारे के डोडे बीजो सहित ६ तोला के क्वाथ मे ५ तोला शक्कर डालकर शर्बत बनाकर ३ तोला पानी के साथ लेने से जुकाम और खासी तथा सिर का दर्द व ज्वर मिट जाते हैं।

सिर – रोग

ज्यादा जोर से बोलने से, गरिष्ठ और मिर्च आदि ज्यादा खाने से, अजीर्ण से, बादलो के होने से, रात्रि जागरण करने से, ठण्डी वायु के लगने से, क्रोध आदि के कारणो से प्राय. सिर पीडा होती है।

इसके लिए सामान्यत उपायः-पावो को दबाना, पावो के तलवे मसलाना, पर धोना, हाथ-पाव पर गर्म पानी का तराडा, देना, खाने-पाने मे कमी करना, सिर मे तेल की मालिश करवाना, बफारा देना, नस्य सू घना, छीक लेना, वमन करना, जुलाव लेना, आदि उपाय करने चाहिये।

१ नोसादर और हल्दी मिलाकर सू घने से सिर पीडा मिटती है।

२ अकरकरा को पीसकर के ललाट पर लेप करने से मस्तक पीडा मिटती है।

३ अदरक के रस मे दूध मिलाकर सू घने से सिर पीडा मिटती है।

४ मेहदी को तेल मे पीसकर लेप करने से मस्तक पीडा मिटती है।

५ अरण्ड की जड तथा सोफ को पीसकर लेप करने से मस्तक पीडा मिटती है।

६ खस के पखे से हवा तथा गुलाब के इत्र को सू घने से सिर दर्द मिटता है।

७ छोटी इलायची को खरल करके सू घने से अथवा चिरमी को महीन पीसकर सू घने से तीव्र सिर दर्द मिटता है।

८ दालचीनी को पानी मे घिसकर गर्म करके कनपटियो पर लगाने से मस्तक की तीव्र वेदना मिटती है ।

९ लालचन्दन का ललाट पर लेप करने से अथवा जायफल का लेप करने से सिर पीडा मिटती है ।

१० दूध, शक्कर और पानी मिलाकर मस्तक पर छीटे देने से सिरदर्द मिटता है ।

११ १ भाग गुलाब जल व २ भाग पानी मिलाकर नाक मे टपकाने से सिर हल्का हो जाता है ।

१२ लोकी के बीजो का लेप करने से अथवा पोदीना के ताजे रस का लेप करने से सिरदर्द मिटता है ।

१३ आक की जड को पीसकर नास देने से सिर दर्द मिट जाता है ।

१४ जल भागरे के रस की नास देनें से सिर पीडा मिट जाती है ।

१५ दूध मे सोठ का कल्क मिलाकर सू घने से मस्तक पीडा मिट जाती है ।

१६ १ बादाम की गिरी को सरसो के तेल मे घिसकर मलने से सिर दर्द मिट जाता है ।

१७ कान के पीछे की नाडिया व गर्दन के पीछे की नाडिया और सिर के पिछले भाग पर तेल की मालिश करने से सिर दर्द मिट जाता है ।

१८ चूना और नौसादर रगदार शीशी मे डालकर कुछ पानी मिलाकर काग लगादे और हिलाकर रखदे, इससे गैस बनेगी जिसे सू घने से तीव्र मस्तक पीडा एव बिच्छु का विष भी उतर जाता है ।

१९ ७ लाल मिर्च दूध मे उबाल कर पिलावे और रबडी के मालपुए खाने से सिर दर्द और सूर्यावर्त्त शर्तिया मिटता है ।

२० नीम्बू का रस गुनगुनाकर कान मे टपकाने से सर्दी का सिरदर्द मिटता है ।

२१ आवला या हरड का मुरब्बा खाने से सर्दी का सिरदर्द मिट जाता है ।

२२. सोठ और दोनो मरुआ सिरका मे पीसकर लेप करने से सिरदर्द मिट जाता है।

२३ मोटे कागद को लपेट कर चुरट बनाकर एक ओर से जलाकर दूसरी ओर से नाक से धूआ खीचने से क्षण मात्र मे सिरदर्द सर्दी का मिट जाता है।

२४. सोठ १ तोला और घृत २ तोला का सिर मे मालिश करने से मस्तक शूल मिटता है।

२५. असली चन्दन के तेल को लगाने से गर्मी का सिरदर्द मिट जाता है।

२६ आधा पाव खोवे (मावा) की पट्टी सिर पर बान्धने से सिरदर्द मिट जाता है।

२७. दाल चीनी का तेल लगाने से वायु का सिरदर्द नष्ट होता है।

२८. कायफल, मिर्च, अरण्ड की जड और कूट इन सबको समान भाग मे पानी मे पीसकर तथा गम करके सिर पर लेप करन से सिर पीडा मिटती है।

२९. बकरी के दूध मे सोठ का बारीक चूर्ण मिलाकर या सोठ को घिस कर सिर पर लेप करने से सिर पीडा मिट जाती है।

—आधाशीशी की पीडा—

३०. अरीठा को १-२ काली मिर्च के साथ पानी मे पीसकर नास देने से आधाशीशी मिटे।

३१. घृत मे केशर घोटकर सू घने से आधाशीशी तथा अन्य मस्तक पीडा मिट जाय।

३२. गाजर के पत्तो को घृत से चोपड कर गम करके रस निकालले और उस रस की २-२ बू दे कान तथा नाक मे टपकाने से छीके आकर आन्धाशीशी आदि की सिर पीडा मिट जाती है।

३३ एक कागद पर पानी से भिगोये हुए सिन्दर को लेप करके उसकी बाती बनाले, फिर उसके १ सिरे को जलाकर जिस ओर दर्द हो

उसके दूसरी ओर के नाक मे उसका धूआ अन्दर खीचने से तत्काल आन्धाशीशी का दर्द मिट जाता है।

३४. गाय के घृत की नास देने से अथवा सू घने से आन्धाशीशी मिटती है।

३५ काली मिर्च को घृत मे पीसकर नाक मे टपकाने से आन्धाशीशी की पीडा मिटती है।

३६ हरड की गुठली को पानी मे पीसकर लेप करने से आन्धाशीशी की पीडा मिटती है।

३७. हिंगोडा का ललाट पर लेप करने से आन्धाशीशी की पीडा मिटती है।

३८. राई और कबूतर की बीट पीसकर लेप करने से आन्धाशीशी की पीडा मिटती है।

३९ काली मिर्च और मुरगी की बीट पीसकर पीडा हो उसके दूसरी तरफ मलने से आन्धाशीशी मिटे।

४० मस्तक के जिस तरफ पीडा हो उसी ओर के नाक मे जवार के पत्तो का रस टपकाने से तत्काल लाभ होता है।

४१ स्यावड छालिया सुपारी (जुड़वा सुपारी) को घिसकर सिर पर लगाने से आन्धाशीशी मिटती है।

४२ नारियल के पानी को नाक मे टपकाने से आन्धाशीशी की पीडा मिटती ।

४३ गुड और घृत का मालपुवा खाने से अथवा खीर खाने से आन्धाशीशी मिटती है।

४४. कच्चे नारियल के पानी मे दूध और मिश्री मिलाकर पीने से आन्धाशीशी मिटती है।

—वायु से सिर दर्द—

रात्रि मे या अन्य समय मे अकस्मात् सिर पीडा होती हो तो वाय का सिरदर्द जानना।

४५ कनपटियो पर नागरबेल के पत्ते बान्धने से सिरदर्द मिटता है।

४६ गुड़ और सोठ का नस्य लेने से सिर दर्द मे फायदा होता है।

—पित्त से सिर दर्द—

४७ सिर आग की तरह जलता हो, नाक मे दाह हो, मस्तक शूल हो इसमे शीतल पदार्थों का सेवन करना लाभदायक है।

४८ मिश्री, घृत और मुलेठी की नस्य देने से सिरदर्द मिटता है।

४९. इमली को भिगोकर मल छानकर शक्कर मिलाकर पीने से गर्मी की सिर पोडा मिटती है।

५० नीम्बू की फाक को तवे पर गर्म करके कनपटियो पर १ घण्टा मलने से गर्मी की सिर पीडा मिटती है अथवा ठडे पानी से स्नान करने से भी गर्मी शान्त होती है।

५१ बकरी के मक्खन की मालिश करने से गर्मी की सिर पीडा मिटती है।

५२ सागवान की लकडी को पानी मे घिसकर सिर पर लेप करने से गर्मी की मस्तक पीडा मिटती है।

५३ धनिया और आवला को रात मे भिगोकर सुबह घोट छान कर मिश्री मिलाकर पीने से गर्मी का सिरदर्द मिटता है।

५४ धनिया और काली मिर्च भिगोकर घोट छान कर मिश्री मिलाकर पीने से भी फायदा होता है।

—कफ की मस्तक पीडा—

मस्तक छुने से ठण्डा और बन्धा हुआ सा लगे, आख और मुह पर सूजन हो तो समझलो कि कफ से मस्तक पीडा है।

५५ तुलसी और अडूसा के रस की नस्य देने से मस्तक पीडा मिटती है।

५६ काली मिर्च के चूर्ण का नस्य लने से कफ जनित सिर पीडा मिटती है।

५७ २ रत्ती भाग लेने से कफ की मस्तक पीडा मिटती है।

५८ विक्स को पानी मे उबालकर बफारा लेने से कफ जनित सिरदर्द मिटता है।

५९ आखो मे थोडा विक्स डालने से सिर दर्द मिटता है।

—मस्तक की स्नायु सम्बन्धी पीड़ा—

६० धनिया का लेप करने से आराम मिलता है।

६१. १ माशा नौसादर दिन मे ३ बार देने से मस्तक पीडा मिटती है।

६२. निर्गुंडी के फल के चूर्ण की फक्की लेने से स्नायु और मस्तक सम्बन्धी रोग मिटते हैं।

६३. सिर पर फीका मावा बान्धने से सिर दर्द मिटता है।

—जीर्ण मस्तक पीड़ा—

६४ लालतसतुम्बे के फल का रस व जड की छाल को तिल के तेल मे औटाकर उस तेल को मस्तक पर लगाने से या मर्दन करने से बार-बार मस्तक दर्द होने वाला भी मिट जाता है।

६५ धतूरे के १-२ बीज को साबुत ही रोजाना कुछ दिन निगल जाने से जीर्ण मस्तक पीडा मिट जाती है।

६६ सफेद कनेर की जड को पीसकर चन्दन की तरह लगाने से पुराना से पुराना सिर दर्द मिट जाता है।

६७ चन्द्रशूर (हालो) को पीसकर लेप करने से अति जीर्ण मस्तक पीडा मिट जाती है।

६८ आवला, सीप का चूना और नौसादर को दोनो हथेलियो मे मसलकर सू घने से सब प्रकार का सिरदर्द मिटता है।

—जुकाम से सिर दर्द—

६९ पीपल के चूर्ण की नास लेने से सिरदर्द मिटता है।

७०. बाजरे की पोटली का सेक करने से सिरदर्द मिटता है।

७१ निर्गुंडी के पत्तो का धूम्रपान करने से मस्तक पीडा व जुकाम मिटता है।

७२. अगस्तिया के पत्ते और पुष्पो का रस सू घने से बन्ध जुकाम खुलती है और सिर पीडा मिटती है।

— मस्तक पीड़ा, भवल व चक्कर आना —

७३ धनिया का अवलेह नित्य लेने से मस्तक पीडा भवल आदि मिटते है।

७४ चम्पा के फूलो को तिल के तेल मे पीसकर लेप करने से भवल मिटती है।

७५ हल्दी को पीसकर ललाट पर लेप करने से भवल, चक्कर और सिरदर्द मिटता है।

७६ त्रिफला को घृत और मिश्री मे खाने से सिर के समस्त रोग मिटते है।

७७ हरड़, बहेडा, आवला, घी शक्कर से खाय, तो हाथी दाबे काख मे सो कौस ले जाय।

७८ इलायची दाना २ तोला, बसलोचन २ तोला, पीपल २ तोला, सतावर ४ तोला, चोबचीनी ४ तोला, केशर ६ माशा सबका चूर्ण बनाकर १० पुडिया बनाले। फिर मिश्री की चासनी के साथ रोजाना १ पुडिया लेने से मस्तक की कमजोरी, चक्कर आना, शून्यता, भन भनाट आदि समस्त सिर रोग मिटते हैं।

—मस्तक वेग—

७९ १॥-२ रत्ती अरीठा की गिरी सु घाने से सब प्रकार की मस्तक पीडा मिटती है, जिस पीडा मे रोगी अचेत हो जाता है वह भी मिट जाती है।

८० मिट्टी के बर्तन मे आधा सेर गाय के दूध मे ४ लाल मिर्च डालकर कपड मिट्टी करके मद-मद आच मे उबालो, फिर नीचे उतारकर ढक्कन हटावो फिर रोगी के मुह पर गर्म-गर्म बाफ कुछ देर लगने दो, पश्चात् मिर्च निकालकर दूध पीकर सो जावो इससे वेग का तीव्र सिर दर्द भी मिटता है।

८१. केवलिया कत्था, अफीम और हींग ४-४ माशा लेकर गुड मे मिलाकर छोटे बेर प्रमाण गोलिया बनालो फिर २४ दिन रोजाना लेने से सिर वेग अवश्य मिटता है।

८२ तूम्बी की गिरी को रात को पानी मे भिगोदो प्रातःकाल सूर्य निकलने के पहले, जिस तरफ सिर दुखता हो, उसके विपरीत नथुने मे ३-४ बून्द पानी डाले तो ७-८ दिन मे निश्चित फायदा होता है।

८३ गुलाब जल पिलाने से मस्तक की भडकन मिटती है।

—मस्तक कृमि—

८४ नीम के पत्तो का रस तिल के तेल मे मिलाकर नाक मे टपकाने से मस्तक की कृमि नष्ट होती है।

८५ बायबिडिग, हीग और पीपल की नस्य देने से मस्तक के कीडे नही रहते हैं।

८६ बदाल का डोडा सु घाने से मस्तक के कीडे मर जाते है।

८७ मेन्सिल को सरसो के तेल मे मिलाकर लगाने से सिर मे जुएँ नही रहती।

८८ तूम्बी की गिरी का रस १-२ बून्द नाक मे टपकाने से मस्तक का दूषित मल बाहर निकल जाता है।

८९ चम्पा के पुष्पो को तिल के तेल मे पीसकर नाक पर लेप करने से दुर्गन्ध-युक्त पीप का बहना मिट जाता है।

—सूर्यावर्त्त—

९० दूध मे घृत मिलाकर नस्य लेने से सूर्यावर्त्त मिटता है।

९१ पीपल तथा वच के चूर्ण की फक्की लेने से सूर्यावर्त्त मिटता है।

९२ घृत मे गुड मिलाकर पिलाने से सूर्यावर्त्त मिट जाता है।

९३ बनफसा के फूल, खूबकला, बडी इलायची का छिलका, पोस्त का डोडा ६-६ माशा लेकर पानी मे पीसकर मस्तक पर लेप करने से सूर्यावर्त्त मिटता है।

—नजला—

९४ चने का यूष बनाकर पीने से नजला मिटता है।

९५ मजीठ को सिर पर बान्धने से नजला की मस्तक पीड़ा मिटती है।

९६ पुनर्नवा की जड के महीन चूर्ण की नस्य लेने से नजला का पानी नाक और आख से निकल कर नजला की मस्तक पीडा नष्ट हो जाती है।

९७ बडी इलायची के छिलके ६ माशा को पोस्त के डोडो के पानी मे पीसकर मस्तक पर लेप करने से नजला मिटता है।

—मस्तक में रुधिर का जमाव—

९८ नागरबेल पान का रस सू घने से मस्तक मे रुधिर का जमाव नही रहता है।

९९. आवला घी मे भूनकर काजी मे पीसकर लेप करने से मस्तक का रक्त बहना बन्द होता है।

१०० नक छीकनी की नस्य देने से मस्तक का रक्त ठीक हो जाता है।

१०१ रुधिर से मस्तक भारी हो तो खाड और केशर घृत मे भूनकर नस्य देनी चाहिये।

१०२ समुद्र फल की नस्य देने से रुधिर का मस्तक ठीक हो जाता है।

१०३ चौलाई २ तोला, सोठ १ तोला, काली मिर्च ६ माशा इन सब को पीसकर लेप करने से सिर के समस्त रोग मिटते है।

१०४ अदरक रस, पीपल, सेंधानमक और गुड को घोटकर पानी के साथ नस्य देने से सिर के सभी रोग मिटे।

१०५ सनाय को नमक के साथ लेने से सिर के रोग मिट जात हैं।

—सिर मे खोरा—

१०६ नीम्बू का रस, बेसन और शक्कर मिलाकर लगावे, पीछे १ घण्टा बाद साबुन से धोवे और तेल आदि लगावे तो सिर का खोरा मिट जाता है।

—मस्तक का दर्द दूर करण मत्र—

१०७. ॐ णमो अरहताण, ॐ णमो सिद्धाण, ॐ णमो आइरियाण, ॐ णमो लोए सव्वसाहूण। ॐ णमो णाणाय, ॐ णमो दसणाय ॐ णमो चरित्ताय। ॐ ह्री त्रैलोक्यवश्यकरी ह्री स्वाहा।

एक कटोरी में जल लेकर यह मत्र २१ बार पढकर जिसके मस्तक मे आधाशीशी व दर्द हो उसे पिलादे तो तत्काल ही उसका सिर दर्द रोग मिट जाता है।

१०८. बादाम गिरी नग ७, छुहारा नग १, इलायची नग ४, मिश्री तोला ५, मक्खन ५ तोला की चटनी सेवन करने से सब प्रकार का शिर-शूल मिटता है।

१०९ गोदन्ती भस्म २।। तोला, सतगिलोय २।। तोला, सितोपलादि चूर्ण १५ तोला मिलाकर रखे। मात्रा २ माशा मक्खन या दूध के साथ सेवन करे, इससे समस्त सिर दर्द मिटते हैं।

स्मरण - शक्ति

१ गुलकन्द को दिन मे २-३ दफा खाने से स्मरण शक्ति बढती है।

२. घी और दूध के साथ १ माशा बचका चूर्ण लेने से स्मरण शक्ति तीव्र हो जाती है।

३ ब्राह्मी का बनाया हुआ घृत खाने से स्मरण शक्ति बढती है।

४ गिलोय-सत्व, अपामार्ग की जड, वायविडिग, शखावली का पचाग, कूट, वच, शतावरी और हरड इन सब का चूर्ण बनाकर दोनो समय ३-३ माशा दूध के साथ लेने से स्मरण शक्ति तीव्र हो जाती है।

५ मालकागणी के बीजो का पातालयत्र द्वारा काला तेल निकाल कर १।। माशा प्रतिदिन लेने से स्मरण शक्ति बढती है।

६ कचनार के चूर्ण मे कमल को मिलाकर तैयार किया हुआ घृत मस्तक बौद्धिक शक्ति और स्मरण शक्ति को अत्यन्त तीव्र करता है।

७ ब्राह्मी पत्ती आधा सेर को ४ सेर पानी मे औटाकर आधा पानी बनालो, और छानकर रखलो। फिर १ कली के बर्तन मे शखपुष्पी

२।। तोला, बच २।। तोला, कूट २।। तोला इन सब को कूट पीस कर उस बर्तन मे पानी से भिगोकर नीचे पेंदे पर जमादो फिर १ सेर गाय का घृत डालकर ऊपर ब्राह्मी वाला पानी भरदो। फिर मन्द-मन्द आंच पर पकाओ जब घृत मात्र रह जाय तो छानकर १ तोला रोजाना खावो या दूध मे पीवो इससे स्मरण शक्ति बढती है।

८. मालकागनी का तेल खाने से स्मरण शक्ति बढती है।

९ हल्दी, बच, कूट, पीपल, सोठ, जीरा, अजमोद, मुलेठी, महुवा, सेंधानमक इन सब को बराबर लेकर महीन पीसकर, ६-८ माशा माखन के साथ २१ दिन खाने मे श्रुतधर हो जाय, स्मरण शक्ति तीव्र हो जाय।

— शिर-गंज रोग —

१ १ वर्ष पुराने आम के अचार का तेल लगाने मे गज मिटती है।

२ प्याज का रस सिर पर मलने से सिर गज मिटती है।

३ कनेर की छाल का लेप करने से गज मिटती है।

४ कपीला और कच्चा सुहागा ३-३ माशा लेकर कडवे तेल मे मिलाकर लगाने से गज मिटती है।

५ सीताफल के बीजो का तेल लगाने से गज मिटती है।

६ तम्बाकू के बीज सरसो के तेल मे पीसकर लगाने से गज मिटती है।

७ अनार के पत्ते पानी मे पीसकर दिन मे २ बार लगाने से गज मिट जाती है।

८ कुसुम के बीजो का तेल लगाने से गज मिटती है।

९ हाथी दांत की भस्म और रसोत को बकरी के दूध मे मिलाकर कई दिन लेप करने से गज मिटती है तथा बाल झडने रुक जाते हैं।

१० देशी गोखरू, तिलो के फूल, इन दोनों को बराबर लेकर इनके बराबर घृत तथा मिश्री की चासनी मे पीसकर मिलाकर केशो (बालो) के कलम करने से बाल ज्यादा बढते हैं।

११. मुलेठी, नील कमल की जड, मुनक्का इनको तेल मे घृत मे, दूध मे महीन पीसकर लेप करने से बाल बढ जाते हैं।

१२ चमेली के पत्ते, कणगच की जड, कनीर की जड, चित्रक, इन सब को तेल मे औटावे फिर उस तेल का मर्दन करे तो बाल आने लग जाय।

१३ मक्खी और चहे की बीण्ट को भैंस के दूध मे घिसकर लगाने से बाल झडना बन्द हो जाते हैं।

१४ बकरी की मिंगनी तथा पुराने जूते का तल्ला की जलाई हुई राख को कडवा तेल मे लगाने से सिर गज मिटकर बाल आने लगते है।

१५ कालीमिर्च ६ माशा, कलोजी १ तोला इनको गाय के घृत मे जलावे फिर खूब घोटे जब मल्हम सदृश बन जाय तब पानी मे घोले और नितारकर पहले उसके जल से धोवे फिर उस मल्हम को सिर पर लगावे तो सिर गज मिट जाती है।

१६ भस्मी हाथी दाँत की, मलिए काहू ठौर।
केश तहा उपजत अहै, औषधि नाहिन और ।।

१७ फूल तिली के लायके, घी अरु शहद मिलाय।
केशन सो मर्दन करे, केश पुंज हो जाय ।।

—बाल दूर करना—

१८ शख भस्म हरताल अरु, मनसिल जलसो बीस।
लेप कचन पर कीजिये, उखरे विश्वे तीस ।।

— बाल काले बनाना—

१९ पात भागरे लायके, काले तिलसो खाय।
कच काले हो जात है, पलित रोग मिटि जाय ।।

२० मेनफल, त्रिफला, गिलोय, कमल, क्षीर वृक्षो की छाल, महानील, नीलकमल, रक्त कमल की जड इन सबसे सिद्ध तेल मे लोह चूर्ण को मिलाकर खरल करे व खूब घोटे। फिर उसे बालो पर लगाने से बाल अत्यन्त काले हो जाय।

२१. सफेद बालो पर पहले त्रिफला के कल्प का लेप करे, फिर त्रिफला के काढे से धोवे पश्चात् लोह चूर्ण तथा चम्पा, वायविडिग, कुदरु इनके रस व चावलो के धोवन से अच्छी तरह पीसकर बालो पर लगाने से सफेद बाल काले हो जाते हैं।

२२ आम की गुठली की मिजी का चूर्ण व लोहे का चूर्ण बराबर लेकर फिर इन दोनो के बराबर त्रिफला का चूर्ण नीलाजन (तूतिया या सुरमा) का चूर्ण लेवें इन चारो चूर्णो को एकत्र करके इसमे छह गुणा त्रिफला का काढा और दुगुना तिल का तेल मिलाकर अच्छी तरह घोटकर लोहे के पात्र मे भरदे। उसे धान्य की राशि मे ४ महीने तक गाडदे। पश्चात् उसे निकालकर पच परमेष्ठि का जाप करके बालो पर लेप करे एव बाद मे त्रिफला के काढे मे धो डाले। जिसस चन्द्रमा के समान सफेद बाल भी भ्रमर के समान काले हो जायेगे।

२३ कच्चे आम (कैरी) के फल, लोह चूर्ण, बेर इनको सम भाग लेकर चूर्ण करे। इस प्रकार तैयार किए हुए ४०० तोला चूर्ण को १ आढक (१६ सेर) तिल के तेल व १ द्रोण (६४ सेर) त्रिफला के काढे मे अच्छी तरह मे मिलाकर घी व तेल मे सस्कृत एक मिट्टी के घडे मे भरे और उस घडे को ६ महीने तक धान्य राशि मे गाडदे फिर उसे निकालकर भगवान् का नाम स्मरण करके बालो पर लप करे एव बाद मे त्रिफला के काढे स धो डाले तो सफेद बाल काले हो जाय।

२४ भागरा, लोह चूर्ण तथा त्रिफला इनको समभाग लेकर चूर्ण करे और इसमे तिगुने त्रिफला के काढे मे घोलकर घडे मे भरकर

धान्य राशि में रखें। इस प्रकार साधित औषधि का प्रात काल नस्य ले, पीवें तथा बालो पर मर्दन करें व लेप करें तो सफेद बाल तत्काल काले बन जाय।

—शिर गज—

२५ काली मिर्च ६ माशा, कवेला हरा ६ माशा, मेहदी के पत्ते हरे ६ माशा, सूखा आंवला ६ माशा, नीम के पत्ते ६ माशा, नीला थोथा ६ माशा, सरसो का तेल ५ तोला। पहले तेल को कढ़ाई मे गर्म करे फिर इन दवाइयो को डाले, जब जल जाय तो घोट कर ठण्डा करले। इसके लगाने मे शिर गज रोग मिट जाता है।

२६ हालम २ तोला को जलावे जब जलकर कोयला हो जाय तब पीसकर कडवे तेल मे मिलाले, इसको खूब घोटें तथा धूप मे रखे। इसको लगाने से शिरगज रोग निश्चित मिट जाता है।

— कफ — रोग —

१ पीपलामूल, हींग, त्रिकूट, धनिया, कमरख, भारगी, हल्दी इन सब का कल्क बनाकर पतले वस्त्र पर लेप करे, फिर उस कपडे पर बीच मे एक एरण्ड की डठल रखकर उस पर लपेट लें। फिर उस बत्ती मे आग लगाकर उसका धूम्रपान करने से कफ प्रकोप का शमन हो जाता है।

२ सफेद सरसो और सरसो, कालो मिर्च, पीपल, सोठ, सहजना की जड इनका लेप करने से तथा कुरला व सेक करने से कफ का शमन हो जाता है।

३. इलायची १ भाग, दालचीनी २ भाग, नाग केशर ३ भाग, पीपल ४ भाग, काली मिर्च ५ भाग, और सोठ ६ भाग इनको लेकर चूर्ण बनाकर फिर सबके बराबर शक्कर मिलाकर सेवन करने से कफ रोग नही रहता है तथा पाडु रोग, क्षय, अजीर्ण, खासी, हृदय रोग मिटाता है, अतएव यह श्रेष्ठ है।

४. **तालोसादि मोदक :-१** भाग तालीस, २ भाग मिर्च, ३ भाग सोठ, ४ भाग पीपल, ५ भाग मे इलायची तथा दालचीनी दोनो आधी-आधी, फिर इन सबका चूर्ण बनाकर गुड मिलाकर आँवला प्रमाण गोलिया बनाकर इस मोदक को सेवन करने से खासी, ऊर्ध्वश्वास, हिचकी, ज्वर, वमन व कफ रोग को मिटाता है।

५ हीग, इलायची, जीरा, चव्य, त्रिकूट (सोठ, पीपल, मिर्च), यवक्षार, काला नमक, इनका चूर्ण बनाकर गर्म पानी या घृत मिलाकर पीने से कफ का शमन करता है।

६. नागरमोथा, त्रिकूट, अजवाइन, आँवला, सेधानमक, पाठा, हरड, चित्रक इन सब का चूर्ण करके गर्म पानी से या घत मिलाकर पीने से कफ रोग मिटता है।

७ सेजना, पीपलामूल, बहेडा, हरड, मिर्च, पीपल, सोठ, इलायची, वायविडिंग, इन सबका चूर्ण बनाकर गर्म पानी से या घत मिलाकर लेने से कफ रोग नष्ट हो जाता है।

८ त्रिकूट से युक्त नीम के क्वाथ को थोडा गम पिलाकर वमन कराना चाहिये। तदनतर खैर, कुटज, पाठा, पटोलपत्र, हल्दी, त्रिकूट इनके समाश चूर्ण को गम पानी के साथ रोजाना पिलाने से कुष्ठ, बवासीर, कीटग रोग, कच्छु रोग एव कफ आदि सब रोगो की उपशान्ति होती है।

पित्त – रोग

(गर्मी शान्त होना)

१ त्रिकूट, त्रिजातक (दालचीनी, इलायची, पत्रज), नागरमोथा, आमलक, इन सबको सम भाग लेकर कपड छान करके शक्कर के साथ ठण्डे पानी से लेने से अत्यधिक पित्तोद्रेक भी शान्त हो जाता है।

२. नीम्बू, आम, नागरमोथा, पटोलपत्र, चन्दन, इन सबके कषाय मे गुड मिलाकर फिर चान्दनी मे रखकर ठण्डा करें। पश्चात् उस कषाय को पीने से पित्तोद्रेक से उत्पन्न फफोले, शोष, मसूरिका आदि रोगो मे यदि दाह, तृषा आदि पीडा हो जाय तो समस्त शमन हो जाता है।

३ इलायची, लोग, नागरमोथा, चन्दन, नागकेशर, लजा (खोल), जीरा, आँवला इन सबका चूर्ण गुड के पानी के साथ मिलाकर पीने से पित्तोशमन हो जाता है।

४. द्राक्षा (दाख), मुलेटी, ईख, नेत्रवाला, नागरमोथा, इनके क्वाथ या शीत कषाय मे लोग, कमल, नीलकमल, पद्मकेशर इनको अच्छी तरह पीसकर इनमे मिलावे तथा इनमे गुड का पानी मिलाकर अच्छी तरह घोल ले तथा छानकर रखें। पित्तामय प्रशमन करने के लिए सुखार्थी जनो को पीना चाहिये।

५ काम, ईख, चन्दन, अनन्तमूल का शीत कषाय बनाकर शक्कर मिलाकर फिर उसमे ककोल, जायफल, नागकेशर और लोग का कल्क मिलाकर पीने से पित्तोद्रेक से उत्पन्न सताप आदि मिटते हैं।

६ 'ठण्डे पानी मे मेनफल, पीपल, वच व चन्दन को मिलाकर उसमे गुड भिगोवे। यदि रोगी के अधिक पित्तप्रकोप है तो उक्त पानी से उसे वमन करावे एव पीछे ठण्डा घृत व दूध मिली हुई यवागु उसे पीने को दे। इससे वमन होकर पित्तोपशमन हो जाता है।

७ **पित्तोपशम कारक अन्य उपाय :**—पुष्प माला धारण, चन्दन लेपन, पानी मे भिगोया पतला वस्त्र धारण, कमल नाडी का हार पहनना, केले के पत्ते व कमल पत्ते बिछाकर ऊपर सोना, ठण्डे पानी का सूक्ष्म कणो से प्रक्षेपण, शीतल हवा, खस-खस का टाटा बान्धकर उस कमरे मे सोना, मूगा की माला पहनना इत्यादि ठण्डे पदार्थों के प्रयोगो से पित्तोपशमन होता है। पित्तोपशमन के लिए दोनो हाथो मे नीम्ब भी रखना चाहिये।

८ **पित्तोपशमन के लिए** –मुख्यतया शीत क्रिया करनी चाहिये, अत प्रयत्न पूर्वक शीत अन्नपानादि का सेवन करना चाहिये, ठण्डे पानी मे स्नान करना ठण्डे मकान मे रहना, आदि से भी पित्त का प्रबल जलन दूर हो जाता है।

९ कासी की थाली मे गाय का घृत व कपूर मिलाकर पावो की पगथलियो को कई देर तक रगडने से गर्मी शान्त हो जाती है।

१० गाय के दूध का जमा हुआ मठ्ठा (घोलिया) बिना घृत निकाला हुआ भर पेट पीने से सब प्रकार की गर्मी शान्त हो जाती है। इससे सग्रहणी रोग भी मिटता है।

११ रात्रि मे पानी ज्यादा पीने से भी गर्मी शान्त होती है, इससे मुह के छाले भी मिटते हैं।

१२ सुबह ७ पतासो मे गाय का घृत भरकर खाने से गर्मी शान्त होती है तथा इससे जो पेशाब मे धातु जाता है, वह भी रुकता है।

१३. बिना दूध की चाय बनाकर काच या चान्दी के बर्तन मे ठण्डी करके उसमे १ नीम्बू का रस निचौड कर पीने से अत्यधिक गर्मी भी शान्त हो जाती है।

१४ धनिया, मिशमिश (दाख), काकडी का बीज, इलायची दाना, ६-६ माशा इन सबको पीसकर ठण्डाई मिश्री मिलाकर बनाले। फिर इसबगोल की भूसी की फक्की लेकर ऊपर उस ठण्डाई को पीने से विषम पित्त तथा गर्मी शान्त होती है।

१५ शाम को ५-६ लोग पानी मे एक हाडी मे भिगोदे, सुबह उन लोगो को निकाल ले तथा उनकी फूली तोडकर फेंकदें फिर घोट कर मिश्री मिलाकर रोजाना ठडाई के रूप ने पीने से गर्मी शान्त होती है तथा वायु आदि के चक्कर नही आते है इससे ब्लडप्रेसर भी लेबल पर रहता है।

१६. गुलाब के फूल, तेज पात, बडी इलायची के दाने, मस्तगी, तीसजा, बसलोचन, चन्दन चूरा सफेद, मुन्डी, केहरवा सब ६-६ माशा तथा

सोफ २ तोला, धनिया ३ तोला, तथा लाजवाद ३ माशा, जहर-मोहरा ३ माशा, शक्कर ७ तोला, इन सबको कूट छानकर मिलालो। मात्रा ६ माशा को ठण्डे पानी के साथ लेने से भयंकर गर्मी भी शान्त हो जाती है।

१७. बादाम की गिरी ५ दाना,कद्दू के बीज, खरबूजा के बीज, और काहू के छिलके रहित बीज ३-३ माशा लेकर सबको पानी मे पीसकर छानले फिर २ तोला शर्बत बनफसा मिलाकर पीने से गर्मी से होने वाला नजला और सिर दर्द मिटता है और मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है।

१८. सफेद चन्दन का चूरा १ तोला, धनिया १॥ तोला, सिर्का खालिस ३ तोला, अर्क वेदमुश्क ३७ तोला, अर्क गुलाब ३७ तोला, बस-लोचन ३ तोला, मोती यश्व सब्ज और केशर ३॥-३॥ माशा, कपूर २। माशा, सोने और चादी का वर्क १।॥-१।॥ माशा तथा मिश्री १ सेर लेकर, धनिया तक की चीजो को कूटकर अर्कों मे मिलादो। फिर २४ घण्टे बाद पकाकर आधा पानी जलने पर छानकर उसमे सिर्का और मिश्री मिलाकर पकाकर चासनी बनाले, एव अन्त मे शेष रही हुई औषधियो को खरल करके मिलादे, मात्रा ७ माशा। यह चित्तभ्रम, दिल की कमजोरी, धड़कन, गर्मी और पित्तज उन्माद को नाश करता है। तथा पित्तज बुखार व गर्मी के दस्त-वमन और उबकाई के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

१९ बादाम की गिरी ५ दाना, कद्दू के बीज ३ माशा, तरबूज के बीज ३ माशा, कीकर का गोद ३ माशा, नशास्ता ३ माशा, और मिश्री २ तोला लेकर सबको पानी मे पीसकर धीमी-धीमी आच पर पकावे और गाढा होने पर उतार कर पीवे। इससे मस्तिष्क को बल मिलता है, दिमाग की खुश्की, नजला व सूखी खासी मे लाभदायक है। यदि नाक से पतला पानी टपकता हो तो ३ माशा पोस्तदाना और पोस्त डोडा बढा देना चाहिये। यदि अधिक तरी

पहुचाने की जरूरत हो तो बकरी या गाय का दूध १० तोला बढा देना चाहिये । यदि आमाशय निर्बल हो, पाचन ठीक तरह न होता हो तो कीकर का गोद और नशास्ता निकाल देना चाहिये । कभी-कभी इसमे दाख, पिस्ता, चिलगोजा और छोटी इलायची का दाना भी बढ़ा दिया जाता है ।

२० ७।। तोला सफेद चन्दन के चूरे को आधा सेर गुलाब के अर्क मे भिगोवें और २४ घण्टे बाद उसे पका कर छानले, तथा उसमे १ सेर देशी शक्कर मिलाकर पुन पकावे और हलवे जैसा होने पर नीचे उतारले फिर खूब घोटें कि जिससे सफेद हो जाय । मात्रा ७ माशा, १२ तोला अर्क गावजवा या पानी के साथ प्रात काल खावे । इससे हृदय को ताकत मिलती है, दिल की गर्मी, धडकन, और घबराहट को मिटाता है । इससे प्यास बुझती है, खास करके गर्मी के दिनो मे सेवन करने लायक है ।

—गर्मी से बहम-रोग—

२१ रोग के आरम्भ मे सूखा धनिया, और सफेद चन्दन का चूर्ण ३-३ माशा लेकर दोनो को अर्क गावजवा ६ तोला, और अर्क केवडा ३ तोला, अर्क वेदमुश्क ३ तोला मे अर्थात् सभी अर्कों मे औषधिया कूट छानकर पिलादे तथा २ तोला सेव का शर्बत मिलाले, फिर उसके साथ १ आँवला मुरब्बा को धोकर चादी का वर्क लगाकर खावे । यदि रोगी को कब्ज रहता है तो आँवला की जगह हरड का मुरब्बा काम मे लेना चाहिये । इससे बहम रोग मिटता है ।

२२ सूखा आँवला, सूखा धनिया और सफेद चन्दन का चूरा ३-३ माशा लेकर रात को गर्म पानी मे भिगोद और प्रात काल नितार कर २ तोला मिश्री मिलाकर उसमे ७ माशा बनतुलसी के बीज बिना पीसे डालकर पीवे । इससे उस रोगी को भी फायदा हो जाता है जो कि निकम्मे विचारो से भरा रहता है, जिसकी बुद्धि भ्रष्ट सी रहती है, स्वभाव बहमी सा रहता है, भय और शोक अधिक रहता

है। परन्तु उन्मादी की तरह विपरीत चेष्टा नही करता है। इन रोगो का मुख्य कारण मस्तिष्क तथा हृदय की निर्बलता ही है।

२३ **भ्रमनाशक चूर्ण** :–पोस्त का दाना और काहू का बीज ३-३ माशा तथा मिश्री २ माशा लेकर पीसकर खावे यह मात्रा है। अनुपान बकरी का दूध ८ तोला तथा शर्बत निलोफर मिलाकर पीवें।

२४ जिस व्यक्ति के ज्यादा वहम रहता हो उसे निरन्तर स्वाध्याय व णमोकार मंत्र का जाप जपते रहना चाहिये। इससे मन का उपयोग सुन्दर रहता है क्योकि खाली बैठना रोग का घर है तथा खाली दिमाग शैतान का घर होता है।

—तृषा-रोग—

निरन्तर पानी पीने से भी तृप्ति न होना तथा पानी पीने मे चित्त लगा रहना ये सब तृषा रोग के लक्षण है।

२५ नीम का शर्बत पीने से तृषा रोग मिटता है। दाडम के शर्बत मे मिश्री मिलाकर पीने से तृषा मिटती है।

२६ अत्यन्त तृषा रोग के निवारण हेतु, नीम के पत्तो को मिट्टी मे मिलाकर उसका गोला बनालो, फिर उस गोले को आग मे लाल करके पानी मे बुझाकर उस पानी को पीलो। तत्काल फायदा होगा।

२७ गरिष्ठ और स्निग्ध भोजन से जो तृषा अधिक लगती हो उसे गुड का शर्बत पिलाने से फायदा हो जाता है।

२८ सोना, चान्दी तथा ईट को लाल गर्म करके उनसे औटाया हुआ पानी पिलाने से बादी की तृषा मिटती है।

२९ गुलकन्द खाने से या पानी के साथ पीने से अधिक तृषा मिट जाती है तथा दिमाग ठण्डा रहता है। गुलकन्द बनाने की विधि–दो भाग बूरे मे एक भाग गुलाब की पखुडियो को मलकर ४० दिन धूप मे रखने से गुलकन्द तैयार हो जाता है।

३० धनिया को रात्रि मे भिगोकर सुबह मिश्री मिलाकर घोटकर पीने

से सब गर्मी शान्त होती है।

३१ शीतल स्थान मे रहने से, जल क्रीडा करने से पित्त की प्यास बुझ जाती है।

३२. लोंग का काढा पीने से कफ की प्यास मिटती है। अथवा आलु बुखार चूसने से प्यास मिटे।

३३. जीरा, सोठ, संचर नमक का काढा से कफ की प्यास मिटती है।

३४. गन्ने के रस मे नीम्बू का रस मिलाकर व अदरक का रस डालकर पीने से प्यास मिटती है।

३५. बड का अकुर, मुलेठी, खील, कमलगट्टा इन्हे पीसकर गोली बनाकर मुँह मे रखने से प्यास मिटती है।

३६ खट्टे फलो को पीसकर जिह्वा पर लेप करने से तृषा रोग मिटता है।

३७ लोह, बालू, चादी, सोना आदि को गर्म करके बुझाया हुआ पानी पीने से तृषा रोग मिट जाता है।

३८ वातज तृषा मे गर्म पानी से, पित्तज मे ठण्डे पानी से कफज मे कटु-तिक्त कषाय रस युक्त औषधियो से वमन कराना चाहिये, जिससे भयकर तृषा भी मिट जाती है।

३९ दालचीनी के कषाय मे शक्कर मिलाकर, क्षीर वृक्ष के रस को तृषा से पीडित रोगी को पिलाना चाहिये।

४० नीलकमल, कमल, कसेरु, सिगाडा इनकी जड से सिद्ध किया हुआ काढा मे चन्दन, खस, कपूर, नेत्रवाला को मिलाकर रात्रि मे चाँदनी मे रखे। इस सुगन्धित जल को दाख या शक्कर के साथ पिलाने से अत्यधिक तृषा भी मिट जाती है।

४१ सारिवा, केश, कसेरु, कासतृण, खस, नागरमोथा, महुवा इनको पीसकर काढा करे फिर ठण्डा होने पर उसमे शक्कर मिलाकर पीने से भयकर तृषा रोग भी शमन हो जाता है।

४२ गिलोय और एरण्ड के बीजो का लेप करने से दाह रोग मिटता है।

४३ गेहूँ के आटे का लेप करने से भी दाह रोग मिटता है ।

४४. तुलसी के रस का मर्दन करने से दाह रोग शमन होता है ।

४५ प्याज के रस का लेप करने से भी दाह कम होती है ।

४६. पेट या शरीर की गर्मी शान्त करने के लिए अजीर को शक्कर के साथ खाना चाहिये ।

४७ पुनर्नवा को शक्कर के साथ खाने से पित्त गल जाता है ।

४८ पगथलियो मे दाह हो तो मसूर की दाल को महीन पीसकर पानी मे अच्छी तरह औटालो फिर ठण्डा करके उस आटे का ५-७ बार पतला-पतला लेप करने से पाद दाह रोग मिट जाता है ।

४९. मक्खन को पगथलियो के मले या तपावे तो पाद दाह रोग मिटता है ।

५० अरण्ड की इण्डोलियो की गिरी को महीन पीसकर गाय के दूध मे मिलाले, फिर हथेलियो और पगथलियो के लेप करने से दाह रोग मिटता है ।

५१ जौ के सत्तू मे मिश्री मिलाकर खाने से अथवा हजार बार धोये घृत की मालिश करने से दाह रोग मिटे ।

५२ आँवला के पानी मे कपडा भिगोकर ओढने से दाह रोग मिट जाता है ।

५३ चन्दन, पित्तपापडा, खस, कमलगट्टा की गिरी, धणिया, सोफ, आवला इन सब को कूट छानकर मात्रा १-१।। तोला का क्वाथ पीने से भयकर दाह रोग मिट जाता है ।

- खांसी रोग -

बीडी-सिगरेट, जर्दा, तम्बाकू, भाग, गाजा, सुलफा आदि मादक पदार्थों के सेवन करने से तथा मल-मूत्र आदि के रोकने से या चिकनी वस्तु खाकर या मूली आदि ठण्डी वस्तुएँ खाकर ऊपर पानी पीने से खासी रोग हो जाता है ।

१ अमलतास का गुलकन्द खाने से भी खांसी मिटती है।

२ अजमोद को पान मे चबाकर पीक निगलने से खासी मिटती है।

३ काकडासिगी को औटाकर पिलाने से खासी मिटती है।

४. गेहू १ तोला पाव भर पानी मे औटाकर १-२ माशा सेधानमक डालकर १ छटाक रहने पर पीने से खासी मिटती है।

५ १ तोला गुड और एक तोला सरसो का तेल मिलाकर चाटने से सूखी खाँसी मिटती है।

६ गिलोय पचाग को कूट पीसकर बेर के अनुमान गोलिया बनाकर मिश्री की चासनी के साथ २१ दिन तक लेने से खासी रोग मिट जाता है।

७ केले के कोमल पत्तो को सुखाकर जलाकर राख करले। फिर उस राख को १-२ माशा की मात्रा में मिश्री की चासनी के साथ दिन मे ३ बार चाटने से खासी मिट जाती है।

८ सोठ, पीपल, काली मिर्च का चूर्ण लेने से खासी मिटती है।

९ बहेड़ा का छिलका चूसने से खासी मिटती है।

— सूखी खांसी —

१० अडूसा के पत्तो के स्वरस मे मिश्री मिलाकर पिलाने से सूखी खासी मिटती है।

११ अडूसा, मुनक्का और मिश्री मिलाकर पीने से सूखी खासी मिटती है।

१२ कौडी भस्म को पान मे खाने से सूखो खासी मिटती है।

१३ तुलसी के पत्तो से भी सूखी खासी मिटती है।

१४. शतावरी, अडूसा का पत्ता तथा मिश्री औटाकर पीने से सूखी खासी मिटती है।

१५ तिल और मिश्री औटाकर पीने से सूखी खाँसी मिटती है।

१६. केर की लकड़ी की भस्म १ रत्ती खाने से सूखी खासी मिटती है।

१७ काकडासिगी और काली मिर्च समभाग लेकर पीस छानकर

गोलिया बनाकर मुंह मे रखने से खासी कफ मिटता है ।

१८ तर खांसी मिटाने हेतु –आक की जड, अडूसा का पत्ता दोनो बराबर लेकर पानी मे पीसकर चने प्रमाण गोलिया बनालो, चूसने से तर खासी मिट जाती है ।

१९ लगातार ३ दिन तक मात्र आम ही आम खाने से तथा पेट भर खाने से कफ खासी मिटती है, याद रहे ३ दिन मात्र आम के अलावा कुछ भी न खाना चाहिये ।

२० अरीठा की छाल खाने से छाती मे जमा हुआ कफ पतला होकर निकल जाता है ।

२१ अमलतास के गूदे मे गुड मिलाकर सुपारी बराबर गोली बनाकर गर्म पानी से देने से कफ रोग मिटता है ।

२२ छोटी इलायची और पीपलामूल के चूर्ण को घृत के साथ चाटने से कफ निकल जाता है ।

२३. बिना खासी कफ ज्यादा निकलता हो तो अदरक, नागरबेल का पान और तुलसी के पत्तो का रस निकालकर मिश्री मिलाकर देने से फायदा होता है । भोजन के बाद लवरण भास्कर चूर्ण ३ माशा लेना चाहिये ।

--पुरानी–खांसी—

२४ पीपल चिलम मे भरकर पीने से पुरानी खांसी मिट जाती है ।

२५ खासी की उग्रावस्था मे तुलसी के रस मे अदरक तथा पान का रस और काली मिर्च तथा काला नमक मिलाकर मिश्री से चाटना चाहिये ।

—श्वास–खांसी—

२६ अडूसा की सूखी छाल को चिलम मे पीने से श्वास–खासी मिटती है ।

२७. पुनर्नवा की जड के ३ माशा चूर्ण मे ४ रत्ती हल्दी देने से श्वास-खासी मिटती है ।

२८. काली मिर्च के चूर्ण की मिश्री को चासनी मे लेने से श्वास-खांसी मिटती है।

२९ कुत्ता खासी और जुकाम की खासी मिटाने के लिए मक्की को तवे पर जलाकर कोयला सा बनाओ, फिर २-२ रत्ती दिन मे कई बार चबाने से फायदा होता है। दवा लेने के बाद आधे घण्टे तक पानी न पीवें।

३० भारगी और धनिया को पानी मे औटाकर पिलाने से खाली होबड और खासी मिटती है।

३१. पीपल १ भाग और बहेडा का २ भाग का चूर्ण मिश्री की चासनी मे लेने से निःसन्देह सब तरह की खासी मिटती है।

३२ पीपल १ भाग, पीपलामूल १ भाग, सोठ १ भाग, तथा बहेडा २ भाग का चूर्ण मिश्री की चासनी मे चाटने से त्रिदोषजन्य खासी भी मिट जाती है।

३३. गुड ८ तोला, जवाखार ६ माशा, काली मिर्च १ तोला, पीपल १ तोला, और अनार का छिलका २ तोला, सोठ १ तोला इन सबका चूर्ण बनाकर फिर उसे गुड मे मिलाकर छोटे बेर प्रमाण गोलिया बनाकर चूसते रहने से सब प्रकार की खासी मिटती है।

३४ **सितोपलादि चूर्ण** – मिश्री ८ तोला, बसलोचन ४ तोला, पीपल २ तोला, छोटी इलायची १ तोला और दालचीनी आधा तोला इन सबका चूर्ण बनाकर मिश्री की चासनी मे ३-४ माशा लेने से श्वास, खासी, और हाथ पैर को दाह, मदाग्नि, अरुचि, ज्वर, पित्तादि सब रोग मिटते हैं।

३५ बहेडा और नमक बराबर लेकर एक हाडी मे डालकर ऊपर गोमूत्र चार अगुल ऊपर तक भरदें, फिर गोमूत्र सूख जाने पर रखले। खासी चलने पर टुकडा चूसते रहे तो सब तरह की खासी मिटती है।

३६. सत्यानासी की जड की छाल का चूर्ण सेवन करने से सूखी या तर सभी खासी मिटती है, छाती का दर्द भी मिटता है।

३७. अडूसा, कटेरी, कालानमक और बहेडा को बकरी के दूध मे औटाकर लेने से तर व सूखी खासी मिटती है।

३८ अनार के पत्ते छाया मे सुखाकर चूर्ण तैयार करके उसमे गुड मिलाकर बेर बराबर गोलियाँ बनाकर छाया मे सुखाकर चूसने से खासी, जुकाम आदि मिटते है।

३९. अडूसा के पत्ते और जड को सोठ के साथ औटाकर पीने से खाँसी मिटती है।

४० अडूसा पंचाग को, काढो पीवे जोय।
सात दिन मे जात है, खासी कैसियहू होय ।।

४१ हल्दी, फिटकडी का फूला, सेंधानमक और शक्कर समभाग लेकर पीसकर फक्की लेने से श्वास, खासी तथा कफ मिटता है।

४२ गौदती हडताल, सफेद फिटकडी इन दोनो का फूला बनाकर समभाग मे खरल करें। फिर पान मे कत्था-चूना-सुपारी लगाकर १ रत्ती प्रमाण दिन मे दो बार लेने से खासी रोग मिटता है। दवा लेने के बाद २ घण्टे तक पानी न पीवे।

४३ **लवगादि चूर्ण** - लोग १० माशा, पीपल १० माशा, जायफल १० माशा, काली मिर्च २० माशा, सोठ १० तोला फिर इन सबको बराबर मिश्री मिलाकर कूट छानकर रोजाना ८-१० माशा मात्रा मे ताजे जल के साथ लेने से खासी, ज्वर, श्वास तथा मदाग्नि रोगो को मिटा देता है।

४४ **कर्पूरादि गुटिका** - भीमसेनी कपूर ४ माशा, कस्तूरी ४ माशा, लोग ४ माशा, काली मिर्च ४ माशा, पीपल ८ माशा, बहेडा की छाल १० माशा, कुलिजन ८ माशा, दाडम का छोडा ४ माशा, इन सबके बराबर खैरसार लेकर सबको महीन खरल करके पानी मे चना प्रमाण गोलिया बनाले। इनकी १ गोली रोजाना खाय तो खासी, श्वास तत्काल मिटे।

४५ आक के फूलो के बीचली मिंजी तथा उनके बराबर काली मिर्च इनमे अदरक का रस देकर घोटले, फिर चिरमी बराबर गोलिया बनालें। २ गोली रोजाना लेने से खासी मिट जाती है।

४६ आक के फूलो की बीच की मिंजी तथा लोग बराबर लेकर थोडी काली मिर्च तथा तुलसी के पत्ते डालकर अदरक के रस मे घोटलो। फिर १ रत्ती प्रमाण गोलिया बनालो। २ गोली रोजाना लेने से खासी मिटती है।

४७ पसरकटाली का पचाग ४ सेर मे पानी डालकर काढा करे फिर उसको ठण्डा करे, उस काढा मे हरड बडी नग १०० पकावे जब हरड पक जाय तब काढा मे से निकालकर उनकी गुठली निकालले और पीसले। फिर पुराना गुड २ सेर की चासनी बनावे पश्चात् वह हरडे पीसी हुई चासनी मे मिलादे। फिर उस चासनी मे सोठ २ तोला, काली मिर्च २ तोला, पीपल २ तोला, तज २ तोला, पत्रज २ तोला, नाग केशर २ तोला, इलायची २ तोला, इन सबको कूट छानकर उस चासनी मे मिलालें फिर मिश्री की चासनी ।। सेर उसमे और मिलाले अर्थात् समस्त वस्तुओ को मिलाकर २ तोला मात्रा रोजाना खाने से सब प्रकार की खासी मिट जाती है।

४८ कटाली का अवलेह -कटाली ४ सेर का काढा करो, उस काढा मे ४ सेर मिश्री की चासनी डालो। फिर उसमे गिलोय २ तोला, चव्य २ तोला, चित्रक २ तोला, नागरमोथा २ तोला, सोठ, तोला, काकडासिंगी २ तोला, काली मिर्च २ तोला, पीपल २ तोला धमासो २ तोला, भारगी २ तोला, कचूर २ तोला इन सबको महीन पीसकर उस चासनी मे मिलाले फिर १ सेर मिश्री मिलाकर तैयार करले। मात्रा २ तोला रोजाना खाने से सब प्रकार की खाँसी मिट जाती है।

४९ काकडासिंगी, पीपलामूल, साभरानमक इनको बराबर कूट छान-

कर गोलियाँ बनाकर, चूसने से सर्दी की खाँसी मिट जाती है।

५०. गर्मी की सूखी खाँसी मे मक्खन और मिश्री चाटने से खाँसी तर होकर मिटती है।

५१ कतीरा, गोंदबबूल का, बिहोदाना, मुनक्का का बीज व अलसी इन सबको कूट छानकर गोली बनाकर मुह मे चूसने से खासी तर हो जाती है।

५२ कफ निकालने के लिए :-मुलेठी, कतीरा, गोदबबूल को कूट छानकर मिश्री की चासनी में गोली बनाकर, मुह मे रखने से सब प्रकार की खासी मिटती है।

५३. बबूल की कोपल, अनार की पत्ती, आँवला ४-४ माशा, धनिया २ माशा इन सबको रात्रि मे भिगोकर सवेरे छानकर मिश्री मिलाकर पीने से गर्मी की खासी या थूक मे खून आना मिटता है।

५४ बकरी का मूत्र १०० पल (४ तोला को पल कहते है,) बहेडा १०० पल इनको पकाकर मिश्री मिलाकर रखले, फिर इनके सेवन से खाँसी, श्वास और बलवान् कफ भी दूर होते हैं।

५५ बहेडा को आग पर भूनकर गुठली निकालकर चूसने से खासी मिटती है।

५६ लोग, कालीमिर्च, बहेडा की छाल इन सबको बराबर लेकर सबके बराबर खेरसार लेकर फिर इनको बबूल की छाल के क्वाथ मे भावना देकर गोलिया बनालो। इस गोली को चूसने से सब प्रकार की खाँसी ८ घन्टे मे मिट जाती है।

५७ भूना हुआ कुचेला १ तोला, हरड १ तोला, कालीमिर्च १ तोला, इनको पीसकर अदरक के रस मे मूग प्रमाण गोलिया बनाले। १ गोली रोजाना लेने से खाँसी मिटती है।

५८ एक भाग तिल के तेल मे, बीस भाग भागरे का रस और हरड का कल्क डालकर सिद्ध किया हुआ तेल सेवन करने से श्वास तथा कास को तत्काल दूर करता है।

५९ वातज खास मे-सेंधा नमक, त्रिकूट, हींग, वायविडग, इन सबका चूर्ण बनाकर उसमे घृत मिलाकर इससे धूम्रपान करे। इस स्नैहिक धूम्रपान से वातज कास शीघ्र नाश होता है।

६० वातज खास से पीड़ित रोगी को-सेंधानमक व मिर्च के चूर्ण से मिश्रित कुछ गर्म घृत पीना चाहिये। अथवा पीपल, गज पीपल, बन पीपल, इनको डालकर बनाई हुई यवागु पीना चाहिये। इससे वातज खास मे लाभ होता है।

६१. **पित्तज खाँस में** –पीपल, घृत व गुड इनको भेंस के दूध के साथ सेवन करने से तत्काल फायदा होता है।

६२ **कफज खांस में** ·–खस, मोथा, सोठ इनके चूर्ण को गुड के साथ खाने से कफ से आने वाली खासी मिट जाती है।

६३ आँवला, गोखरू, खजूर, चिरोजी, मुलेठी, नील कमल, भारगी, पीपल, इन सबको समान भाग मे लेकर चूर्ण बनाले। इस चूर्ण को १ तोला लेकर घृत और शक्कर मिलाकर खावे, और दूध के साथ भोजन करते रहे तो समस्त क्षत व क्षय से उत्पन्न कास को नाश करता है, जैसे-दिगम्बर साधु अपने ज्ञान-ध्यान से कर्मों को नाश करते है।

६४ चावल, उडद, जौ, साटीधान्य, गेहू इनको अच्छी तरह भूनकर पीसले फिर इनमे घी और गुड मिलाकर भेंस के दूध के साथ पीने से क्षयज कास भी मिट जाता है।

६५. दालचीनी, सोठ, मिर्चा, पीपल, हरड, बहेडा, आँवला व भारगी, नृत्यकाडक का फल इन सबका चर्ण करके घृत और शक्कर के साथ चाटने से अति पुराना श्वास-खास भी मिटता है।

६६ पीपल, लवण, तेल या घृत मे युक्त तल पोटक के मूल को सेवन करने से प्राणहर श्वास भी क्षण भर मे दूर होता है।

६७. ८ वर्ष पुराना गुड सत्यानाशी के रस मे ८ बार भिगोकर चने

प्रमाण गोलिया बनाकर लेने से खाँसी रोग जड से मिट जाता है। "नमक मिर्च वर्जित है।"

६८. अडूसा के छोटे पेड के पचाग को छाया मे सुखाकर चूर्ण बनाकर १ तोला भर प्रतिदिन फक्की लेने से श्वास और कफ रोग मिट जाता है।

६९ बच और मिश्री चूसने से खाँसी मिटती है।

७० कालीमिर्च १ तोला, पीपल १ तोला, जवाखार ।। तोला, अनार के फल के छिलके २ तोला, इन सबका चूर्ण करके ८ तोला गुड मे मिलाकर ३-३ माशा की गोलियाँ बनाले। मुख मे चूसने से सब प्रकार की खाँसी मिटती है।

७१ हरड, पीपल, सोठ और कालीमिर्च इन सबका चूर्ण गुड मे मिलाकर खाने से कफ खाँसी नष्ट होकर अग्नि अति दीप्त हो जाती है।

७२ कालीमिर्च १ तोला, पीपल २ तोला, अनार का छिलका ४ तोला, जवाखार ।। तोला और गुड ८ तोला इन सबको मिलाकर सेवन करने से भयकर खाँसी भी मिटती है, जिस खासी मे रुधिर की वमन होती हो उसके लिए भी यह दवा परमोत्तम है।

७३ रात्रि मे सोते समय मक्खन मे ५ माशा मिश्री मिलाकर चाटने से शुष्क खाँसी मिट जाती है।

७४ मीठे अनार के ३ माशा दानो को मिट्टी के कोरे शरावे मे रखकर अधभुना करे, फिर उन्हे मुह मे रखकर चूसें। यह प्रयोग उस खाँसी मे भी उपयोगी है जो चेचक, मोतीझरा या खसरा के पीछे हुई खाँसी है।

७५ पुरानी खांसी और कफ के लिए -सोठ, धाय के फूल, और पोस्त का डोडा ३-३ माशा लेकर २० तोला पानी मे पकावे जब आधा पानी रह जाय तो छानकर २ तोला मिश्री डालकर पीवे।

७६ जवाखार १ तोला, काली मिर्च २ तोला पीपल, ४ तोला और अनारदाना ८ तोला लेकर सबको कूट छानकर चूर्ण बनाले फिर

उसमे १६ तोला गुड मिलाकर चने प्रमाण गोलिया बनालें । फिर आवश्यकतानुसार १-१ गोली मु ह् मे चूसे । इससे खासी मे तत्काल आराम होगा तथा काली खासी भी मिटेगी है ।

७७ काकडासिगी, सोठ और पीपलामूल समभाग लेकर बारीक चूर्ण बनाले । मात्रा ३ माशा मिश्री की चासनी मे मिलाकर जरा-जरा सी चाटने से पुरानी से पुरानी खासी मिट जाती है ।

७८ पिस्ते का फूल और बहेडा बराबर लेकर कूट छानकर अदरक के रस मे घोटले फिर मू ग प्रमाण गोलिया बनाले । फिर जरूरत माफिक १-१ गोली मु ह् मे चूसे । इससे कफज खासी मे भी फायदा होता है और छाती से कफ को निकाल देता है ।

७९ बेहदाना की गिरी, कद्दू के बीज, खीरे के बीज २-२ माशा, केशर १ माशा, कीकर का गोद, नशास्ता और कतीरा ३-३ माशा, बादामगिरी, सतमुलेठी, निर्बीज मुनक्का और पोस्त दाना ४-४ माशा तथा मिश्री ७ माशा लेकर सबको कूट छानकर जरूरत माफिक बेहदाने के रस मे मिलाकर चने प्रमाण गोलिया बनाले । १-१गोली मु ह् मे चूसे । इससे खासी मिट जाती है, तथा क्षय की खासी भी मिटती है ।

८० गुदा पर तेल लगाने से खासी मिटती है । अथवा केले के पत्ते की राख मे नमक मिलाकर खाने से खासी मिटती है ।

८१ खसखस को भूनकर, थोडा नमक और काली मिर्च मिलाले मात्रा १ माशा दिन मे २-३ बार खाने से खासी मिटती है ।

८२ केरू दा के पत्ते के रस मे मिश्री मिलाकर चाटने से सूखी खासी मिटती है ।

८३ पान मे अजवाइन रखकर चबा-चबाकर पीक निगलने से सूखी खासी मिट जाती है ।

८४ १ माशा बसलोचन मे २।। माशा मिश्री की चासनी मिलाकर चाटने से सूखी खासी मिटती है ।

८५. **सूखी खांसी को तर करने के लिए** :-मुलैठी की मिश्री की चासनी के साथ चाटना चाहिये।

८६ खोपरे का दूध आधा पाव से १ पाव तक दिन मे २-३ बार पीने से कफ और क्षय के रोगी प्राय अच्छे हो जाते है और शरीर पुष्ट होता है, फेफडे के रोगो मे और खासी मे यह प्रयोग अति उत्तम है। इस दूध के पीने के अलावा खोपरा खिला सकते हो। खोपरे का दूध निकालने की विधि - खोपरे को महीन कूट कर थोडे पानी मे पीसकर निचोड से एक प्रकार का दूध सा निकलता है, उसका स्वाद भी दूध से मिलता जुलता होता है और गाय के दूध की जगह भी काम आता है। इसकी अधिक मात्रा सारकपन का काम करती है जिससे दस्ते भी लग जाया करती है।

८७ **तर खासी को मिटाने के लिए** - ६ माशा तुलसी के पत्तो के रस मे ४ दाने बडी इलायची के पीसकर मिश्री मिलाकर चटाने से तत्काल ही सारा कफ निकल कर खासी मिटती है।

८८ अडूसा का अवलेह चाटने से पुरानी खाँसी मिट जाती है।

— दमा (श्वास) रोग —

प्राणियो के दमा रोग ५ प्रकार के होते हैं, (१) महाश्वास (२) ऊर्ध्व-श्वास (३ छिन्नश्वास, (४) तमक श्वास (५) क्षुद्र श्वास इस तरह जानना चाहिये। महाश्वास वाले रोगी की प्राण वायु शब्द करती हुई तकलीफ से साथ ऊर्ध्वगति को प्राप्त होती है। ऊर्ध्वश्वास वाले के प्राणवायु कष्ट देती हुई सब श्वासो से ऊपर चलती है। छिन्नश्वास वाला रोगी कष्ट से रह रह कर अपने सम्पूर्ण श्वास को त्यागता है। तमक श्वास वाला रोगी बोलते समय कष्ट का अनुभव करता है, और सोते समय लेटने पर उसकी पसलियो मे पीडा होती है, उसे उठकर बैठने मे आराम मिलता है तथा गर्म पदाथ खाना चाहता है। क्षुद्र श्वास वाले का प्राण वायु बढता है, उसे ज्यादा

दुःख नही देता है । उपरोक्त पाचो श्वासो मे क्षुद्र श्वास सुसाध्य है, तमक श्वास कष्ट साध्य है, और बाकी के तीनो श्वास असाध्य जानना चाहिये । ससार मे ज्वरादि रोग प्राणो को हरने वाले हैं परन्तु श्वास और हिचकी के समान तत्काल प्राणो को हरने वाला और कोई रोग नही है ।

१ आधाझाडा के पत्ते चिलम मे रखकर पीने से श्वास रोग मिटता है ।

२. आक का एक पत्ता और काली मिर्च नग २५ पीसकर मिर्च प्रमाण गोलिया बनाकर जवान को ७ गोली तथा बच्चे को २ गोली देने से श्वास रोग मिटता है ।

३. आम की गुठली की गिरी खाने से भी श्वास रोग मिटता है ।

४ पीपल वृक्ष के सूखे फल पीसकर १४ दिन जल के साथ फक्की लेने से श्वास रोग मिटता है ।

५. २ रत्ती कपूर और २ रत्ती हीग मिलाकर गोली बनाले, श्वास के वेग मे दूसरे-तीसरे घण्टे देना चाहिये और साथ मे रोगी के छाती पर तारपिन का तेल लगाना चाहिये, इससे तीव्र और कठिन श्वास रोग मिट जाता है ।

६ पान मे छुहारा तथा सोठ रखकर खाने से श्वास रोग मिटता है ।

७ जमाल घोटे को दीपक की लौ से जलाकर उसके धूये को नाक द्वारा पीने से श्वास रोग मिटता है ।

८ अजपाल को दीपक की लौ से जलाकर उसका चौथा भाग पान मे खाने से असाध्य श्वास रोग मिटता है ।

९ अदरक के रस मे कस्तूरी देने से श्वास रोग मिटता है ।

१० सनाय को लौग के साथ लेने से ऊर्ध्व श्वास मिटता है ।

११ हरड को कूट कर चिलम मे पीने से श्वास के वेग मे शान्ति मिलती है ।

१२ श्वास और पुराने हृदय रोग मे धतूरे का छाती पर लेप करना चाहिये ।

१३ २ गाठ हल्दी को गीले कपडे मे लपेटकर गोबर मे दबादो जब पक

जावे तो निकाल कर और ५ तोला भूने और छिले हुए चूने इन दोनो को बारीक पीसकर बिना पानी के फक्की लेने से श्वास की बीमारी मिटे।

१४. मोर पख की भस्म ६ रत्ती मिश्री की चासनी के साथ चाटने से श्वास का रोग मिटता है।

१५ खेरसार की लकडी का चूर्ण १॥ माशा खाने से श्वास रोग मिटता है।

१६ सूखी मूली को औटाकर पीने से श्वास और हिचकी रोग दोनो मिटते है।

१७ नोसादर को पान मे खाने से श्वास नली का रोग मिट जाता है।

१८ भुने हुए चने खाकर ऊपर दूध पीकर सो जाने से श्वास की नली का कफ साफ होता है।

१९ एक रत्ती भाँग को सेक कर कालीमिर्च और मिश्री मिलाकर देने से श्वास तथा धनुस्तम्भ मिटता है।

२० थूहर के दूध मे गुड मिलाकर खाने से दमा और खाँसी मिटती है।

२१ धतूरे के सूखे पत्तो का धूम्रपान करने से ऐसा तेज श्वास रोग मिटता है जिसमे बाइटे आते हो उसमे भी फायदा हो जाता है।

२२ काली मिर्च और मिश्री का चूर्ण २-३ माशा मिश्री की चासनी के साथ चाटने से खाँसी और दमा नि सन्देह मिटता है।

२३ आक के सौ पत्ते और १ पाव काले नमक को कूट छानकर एक हाडी मे रखकर फूकदें, भस्म होने पर १-२ रत्ती अदरक के रस के साथ लेने से खाँसी-श्वास मिटते है।

२४ थूहर का डडा पोला करके उसमे फिटकडी भरदो और कपड मिट्टी करके छाणो की आँच मे जलादो ठण्डा होने पर फिटकडी निकाल लो। मात्रा २ रत्ती पान मे लेने से श्वास और खाँसी रोग मिट जाता है।

२५ भुनी हुई फिटकड़ी मे बराबर मिश्री मिलाकर ६ माशा तक को फक्की लेने से खाँसी और दमा रोग मिटता है।

२६ धतूरे के बीज १ से लेकर ५ तक महीना भर खाय तो श्वास रोग मिट जाता है।

२७ पीपल, पोहकर मूल, हरड की छाल, सोठ, कचूर, कमलगट्टा इन सबको बराबर लेकर चूर्ण बनाकर गुड के साथ चना प्रमाण गोलिया बनाले। फिर १-२-३ गोली रोजाना लेने से श्वास मिटे।

—काली गोली—

२८ अजापालिया गिरी निकाला हुआ ४ माशा, सिगोमोरा शुद्ध किया हुआ ४ माशा, पीपल छोटी १। तोला, पारा माशा २, आँवलासार ३ माशा, सोमल (सख्या) ३ माशा कच्चा। बनाने की विधि - अजापालिया और पीपल को खरल, करलो, फिर शुद्ध सिंगीमोरा डालदो, पश्चात् पारा और आवलासार की कज्जली करके डालदो, घोटते जावो फिर सोमल्ल डालदो इन सबको नीम्बू के रस मे खूब घोटते रहो और रस देते रहो जब अच्छी घुटजाय तो काली मिर्च प्रमाण गोलिया बनालो। अनुपान (१) श्वास खासी ताप तेजरा वाले रोगी को १ गोली गर्म पानी या दूध से देकर ऊपर पतासा या चीनी खिलावो। (२) गुजराती रोग होने पर अफीम के साथ १ गोली देदो। (३) सन्निपात या शीत होने पर पीपलामूल या सोठ के पानी के साथ १ गोली देदो। (४) वायु का चक्कर या भवल आने पर धमासा की जड ।। सेर पानी मे औटाकर १ छटाक पानी रहने पर उसमे १ माशा घृत डालकर उसके साथ १ गोली देदो। ५) पेट दूखने पर १ गोली गर्म पानी से देदो (६) सग्रहणी रोग होने पर अटपोरी सोठ के पानी मे एक गोली देदो। (७) दस्त ज्यादा लगने पर जायफल के पानी के साथ एक गोली देदो। (८) कफ ज्यादा होने पर एक गोली मुनक्का की चटनी मे देदो। (९) स्त्री के पेट मे बच्चा न फिरने पर एक गोली

गर्म पानी से देदो । (१०) छोटे बच्चो को निमोनिया होने पर आधा गाली घिसकर देने से फायदा हो जाता है ।

२९ पारा, गन्धक, सोहागा, रास्ना, वायबिडग, त्रिफला, देवदारु, सोठ, मिर्च, पीपल, गिलोय, कमलगट्टा, शुद्ध सिगीमोरा इन सबको बराबर लेकर फिर पारा-गन्धक की कजली करके सब वस्तुओ को कूट छानकर मिश्री की चासनी मे १ रत्ती प्रमाण गोलोलिया बनाले । १४ रोज रोजाना १–१ गोली का सेवन करने से श्वास, खासी, हिचकी, शूल, उदर रोगो के लिए यह रामबाण दवा है । इसे 'अमृतार्णवरस' कहते हैं ।

३०. त्रिकूट के चूर्ण मे गुड़ और घृत मिलाकर सेवन करने से श्वास रोग मिटता है ।

३१ सरसो के तेल मे सेधानमक मिलाकर छाती पर मसलने से श्वास रोग दब जाता है और कफ भी गाँठे बन्धकर निकल जाता है ।

३२ बडी हरडे की छाल ४ छटाक लेकर पीसकर भेस के ४ सेर दूध मे डालकर औटाबो जब ३ सेर दूध रह जाय तो जामन देकर जमादो, फिर प्रात काल घी निकालकर उस छाछ को हाडी सहित खामकर खेत मे गाढ देवे, ७ दिन पीछे निकालकर पावभर छाछ प्रतिदिन खावो तो श्वास (दमा) की कुकडी दस्त द्वारा निकल जाय या वमन द्वारा निकल जाय फिर २ तोला प्रमाण उस घृत को खावो तो दमा रोग मिट जायेगा ।

३३. त्रिफला के क्वाथ मे घृत डालकर सेवन करने से श्वास रोग मिटता है ।

३४ पीपल व नमक वर्ग से सिद्ध किया हुआ घृत अत्यन्त पुराने श्वास को भी शमन करता है ।

३५ जड करील की बारिके, इक माशा नित खाय ।
वछुक दिन सेवन करे, तो श्वास रोग मिट जाय ।।

३६ अदरक रस गीलो करे, भस्मी सीप मिलाय ।

चना बराबर खाय नित, श्वास रोग दबि जाय ।।

३७ तम्बाकू के हरे पत्तो का रस निकालकर बराबर गुड़ मे शर्बत बनाकर १।।-२ तोला देने से श्वास रोग मिटता है, ७ दिन मे रोग निर्मूल हो जाता है। नोट—निर्बल व्यक्ति को देने से वमन तथा दस्त भी हो सकते है।

३८. आक के पके हुए दो पत्ते, कालीमिर्च नग ३०, पीपल नग ५ तथा लाहोरी नमक २ तोला इन सबको कूट छानकर मूग प्रमाण गोलिया बनाले। मात्रा बड़े को ८ गोली तथा बच्चे को ३ गोली काफी है। इससे श्वास रोग मिटता है।

३९ मटर का आटा, मेथी का आटा, ५-५ तोला, कलोंजी और मुलेठी २-२ तोला, अकरकरा १।। तोला और मोम १ तोला लेकर पहले मोम को रोगनषोसन मे पिघलावे फिर उसमे अन्य दवाएँ कूट छानकर डालदे। थोड़ा गर्म करके सीने तथा पसली पर मालिश व लेप करे। जिससे पसली का दर्द और श्वास मे फायदा होता है तथा छाती से बलगम निकालकर फेंकता है।

४० गावजवा, गुलगावजवा ३-३ माशा, उन्नाव ५ दाना, मिश्री २ तोला लेकर पानी मे औटावे और छानकर पीवे। इस योग से छाती मे गाढा चिपचिपा मवाद भी निकल जाता है ।

४१ चेचक व निकाला के बाद होने वाले श्वास के लिए -खुबकला असली ५ माशा, अजीर पीले रग का नग ५ और कतरा हुआ आबरेशम (रेशम का कोया) ५ माशा तथा मिश्री ४ तोला पानी मे पकाकर छानकर पीने से फायदा होता है।

४२ नौसादर ५ तोला, नमक १० तोला, आक दूध ५ तोला, पहले नमक को आक के दूध मे गूदले फिर किसी मिट्टी के बर्तन मे उसमे से आधा नमक रखकर उस पर नौसादर का चूर्ण रखे फिर नमक रख और चल्हे पर चढादे तथा बेर की लकडी की आँच देवें, २ घण्टा पश्चात् उतारकर चूर्ण को घोटकर रखले। मात्रा आधी

से १ रत्ती तक दिन मे ४ बार पतासे के साथ देवें। इससे श्वास रोग मिटता है।

४३ धतूरे के पूरे पौधे के पचांग को पीसकर लुगदी बनाले, उसमें देशी अजवाइन और काला नमक २-२ तोला मिलाकर हाँडी के अन्दर रखकर ऊपर से कपरोटी करके १० सेर कन्डो की आच मे फूकदे, ठण्डा हो जाने पर भस्म निकाल कर रखले। मात्रा १ रत्ती पान के साथ ले। इससे श्वास रोग मिटता है।

४४ यदि कफ सूख गया हो तो :-मुलैठी १ तोला को २० तोला पानी मे उबाल छानलो और उसमे १ तोला घृत और मिश्री १ तोला तथा सेंधानमक १ माशा मिलाकर पीने से कफ हरा होकर निकलता है।

४५ पुराना गुड़ २ से ४ तोला और सरसो का तेल २ तोला मिलाकर सवेरे ही २१ दिन तक चाटने से दमा रोग मिटता है।

— क्षय (तपेदिक) रोग —

मल-मूत्रादि के वेगो को रोकने से, तथा पौष्टिक भोजन के अभाव से, चाय, अचार व तली हुई चीजो के अधिक खाने से, अधिक चिन्ता या अन्तरग क्लेश रहने से, खासी-जुकाम के बिगडने से, दुष्पाच्य भोजन के ज्यादा करने से, अधिक मैथुन सेवन, इत्यादि कारणो से वायु कुपित होकर मज्जा को सुखाकर हड्डी आदि का क्षय करता है, तब व्यक्ति दिन प्रतिदिन क्षीण होकर सूखता जाता है, इसे क्षय (तपेदिक) थाईसेस आदि नामो से पुकारा जाता है।

१. बकरी के शरीर के मलमूत्र से जो गन्ध आती है उस जगह रहने से इस रोग के कीटाणु नष्ट होते हैं, अत जिस जगह बकरिया रहती हैं, बैठती हैं वहा की हवा क्षय रोग वाले को उपयुक्त रहती है।

२ दूध मे चूने का पानी मिलाकर पीने से क्षय रोग शमन हो जाता है।

३ सज्जी असली और नमक औटाकर उस पानी मे ढोकले बनाना चाहिये (गेहू के आटे के ढोकले जो दाल मे उबाल कर बनाये जाते हैं। ७ दिन तक रोगी को सिर्फ ढोकले, ही खिलाना चाहिये तब दस्तें लगकर रोग मिट जायेगा। आठवे दिन रोगी को नीम्बू का रस या शक्कर मिलाकर ही पिलावे पानी भी न देवे।

४ मृत साप को एक गमले मे डालकर उसमे जौ बो दे, ७ दिन बाद जँवारा काट कर छाया मे सुखा दे, फिर उनका पाउडर बनाकर फक्की लेने से क्षय रोग मिट जाता है।

५ कौडी की भस्म को मक्खन के साथ चाटने से क्षय रोग मिट जाता है।

६. **कौडी को शुद्ध और भस्म बनाने की विधि**.-कौडी को १ पहर काजी मे औटाने से वह शुद्ध हो जाती है। फिर शुद्ध कौडी को कोयलो की आग पर रखकर फूँकणी से फूक देते रहो जब वह फूल जाय, बिखरने लगे तो निकाल कर ठण्डो होने पर पीस लेना चाहिये। जरूरत पर काम लेनी चाहिये, इसे कौडी भस्म कहते है।

७ गाय की छाछ ताजी १०-१५ सेर (किलो) एक मिट्टी की मटकी मे डाल कर उसमे १ पाव सफेद फिटकडी व १ पाव हल्दी पीस कपड छान करके उस छाछ मे मिला देनी चाहिये, फिर मुलतानी मिट्टी (मेट) को गोली करके बहुत अच्छी तरह कपड मिट्टी कर देनी चाहिये तथा मटकी के मु ह पर थाडा ५-१० सेर वजन का पत्थर भी रख देना चाहिये जिससे गैस न निकलने पावे, पश्चात् उस मटकी को मदी-मदी आच पर रखें। जब समस्त छाछ जल जावे तो उतार कर दवा निकाल कर सुखा लेनी चाहिये तथा पीस छान कर रखले। मात्रा २-३ माशा हमेशा दूध या पानी के साथ लेने से क्षय रोग मिट जाता है।

नोट—यह ४-६ महीना लगातार लेने से क्षय रोग जड से निकल कर आराम हो जाता है।

८ चावलो मे घृत डालकर प्रतिदिन खाने से मूत्र भी लगे तथा राज रोग (क्षय) मिटे।

९. बकरी के दूध मे बराबर पानी मिलाकर उसमे ३ पीपल डालकर औटावे, पानी जल जाने पर पहले पीपल खाकर ऊपर दूध पीवें, इस तरह प्रतिदिन १ पीपल बढाते जाय ३० दिन तक, फिर १-१ पीपल घटाते जाय इस तरह लेने से राजरोग (क्षय) मिट जाय तथा शरीर पुष्ट हो जाय।

१० नीम के २१ पत्ते तथा काली मिर्च नग २१ दोनो १ पोटली मे बाधकर आधा सेर पानी मे औटावे जब ७ तोला पानी रह जाय तो छानकर दोनो समय ७ दिन पीने से क्षय रोग मिट जाय।

११ कपूर ३ माशा, केशर ३ माशा, छिली हुई मुलैठी ६ माशा, बिहि-दाना (बेदाना) ६ माशा, पोस्त दाना ६ माशा, कुलफा के बीज ९ माशा, खीरा के बीज ९ माशा, ककड़ी के बीज ९ माशा, काहू के बीज ९ माशा तथा सफेद चन्दन गुलाब मे घिसा हुआ ९ माशा, बबूल का गोद १।। माशा, कतीरा १।। माशा, इन सबको कूट छान-कर टिकिया बनालो। मात्रा ४ माशा लेने से क्षय रोग मिटता है। इसे कुर्स काफूर भी कहते है।

१२. क्षय रोग के लक्षरण –आदि मे ज्वर कभी गुप्त कभी प्रगट रूप से रहता है, जिसकी पहचान कठिन सी होती है। ज्यादातर यह बीमारी शोक या अन्तरग चिन्ता से होती है, तथा ज्वर के ज्यादा दिन रहने से भो हो जाती है, इसमे भोजन के पश्चात् गर्मी अधिक बनती है। अत इस रोग मे शान्ति से रहना, रुचिकर भोजन करना तथा अशान्ति के कारणो से दूर रहना चाहिये तथा शफाई के स्थान मे रहना चाहिये। इस रोग मे स्त्री का, घोडी का, गधी का दूध उत्तम रहता है।

१३ अडूसा के पत्तो का क्वाथ नित्य सेवन करने से क्षय रोग मिट जाता है।

१४ शुद्ध पारा १ भाग तथा गन्धक २ भाग की कजली बनावे फिर इस कजली के बराबर लोहसार मिलावे, बाद मे गुवारपाठा के रस मे खरल करे तथा गोला बनाकर ताम्बे के पात्र मे रखकर ऊपर अरण्ड के पत्तो से ढकदे, ६ घण्टे तक धूप मे रखे, फिर ८ रात्रि तक अन्न के कोठा मे रखकर निकाले। फिर उसमे सोठ ३ माशा, पीपल ३ माशा, लोग ३ माशा इन सब औषधियो को महीन करके उसमे मिलाले और तीन घण्टे तक अच्छी तरह घोटले, खरल करन। मात्रा तीन माशा प्रमाण इस रस को मिश्री की चासनी मे दोनो समय चाटे तो श्वास सहित क्षय रोग निश्चय मिट जाय।

१५ तिल का चूर्ण व उडद का चूर्ण इन दोनो के बराबर असगध का चूर्ण मिलाकर, घृत और गुड से मिश्रित दूध के साथ पीना चाहिये। एव असगध के कल्क को प्रतिदिन शरीर पर लेपन करना चाहिये। इससे क्षय रोग पीडित मानव निरोग हो जाता है। तथा शरीर मे भी स्थूल हो जाता है।

१६ अडूसा के फूल व जड से पकाये हुए घृत को पीने से क्षय रोग मिटता है। इसे वासा घृत कहते है।

१७ तिल, गुड, उडद, शाली इनके आटे से बनाया हुआ पुआ खाने से क्षय रोग मिटता है।

१८. बकरी, घोडा, गाय इनका मलरस, गिलोय, खैर की छाल, मूर्वा, चव्य, दूध, घृत इन ६ द्रव्यो को १–१ भाग लेकर पकावे, फिर इसमे रास्ना, सोठ, मिर्च, पीपल मुलैठी इनका कल्क बनाकर डाले। इस प्रकार विधि से सिद्ध किए हुए घृत को चाटने से राजयक्ष्मा (क्षय) रोग शान्त हो जाता है।

१६ समान भाग घृत व गुड के साथ भिलावे के तेल को मन्दाग्नि पर अच्छी तरह पकाकर, एक द्रोण प्रमाण (६४ तोले का १६ सेर) सेवन करे तो राजयक्ष्मा रोग दूर हो जाता है और वह व्यक्ति

उत्कृष्ट निरोगी हो जाता है ।

२० सफेद लोध, असगध, अस्थिसहारी (हाडसकरी) विदारीकन्द, गोखरू, कौच के बीज, जायफल, कूष्माड (सफेद कद्दू) इनसे पकाए हुए घृत या तेल को प्रतिदिन मालिश वगैरह करे तो क्षय रोग मिटकर व्यक्ति का शरीर पुष्ट बन जाता है ।

२१ पकाए हुए दूध मे शक्कर, पुननवा के जड का चूर्ण, कालोमिर्च, हीग और थोडी छाछ देकर रखे, दूसरे दिन दही बनने पर सुगन्धित दही के साथ मिलाकर क्षय रोगी को भोजन मे देने से फायदा होता है ।

२२ एक कलईदार पतीली मे १० तोला गाय का दूध भरकर जहा तक आवे वहा तक निशान बनाले फिर उसमे १० तोला पानी मिलादे तथा आग पर चढादे । जब दूध मे उबाल आने लगे, तो उसमे गावजवा, गावजवा के फूल, छिली हुई मुलैठी और सोफ ३-३ माशा तथा मिश्री २ तोला अलग-अलग पोटली मे बान्धकर डाले । जब पानी जल जाय और दूध निशान तक आ जाय तो उतार के पीवे । ३ दिन इसी तरह पीवे फिर चौथे दिन से हर रोज १ तोला दूध बढाकर ४१ तोला तक ले जाय फिर १-१ तोला कम करे । जब १० तोला आजाय तो ३ दिन पीकर बन्द करदे । इससे क्षय, खासी, सूखी खासी और फेफडे के घावो मे सेवन करना चाहिये । नोट-दूध बढाने के साथ-साथ मिश्री भी स्वाद के लिए बढाते जाना चाहिये ।

२३ गाय का ताजा मक्खन ३ माशा, मिश्री ६ माशा तथा १ सोना का वर्क लगाकर खाने से राजरोग मिटता है ।

२४ आवले की छाल ५ सेर, सेधा नमक २ सेर और कूट को हाण्डी मे भरकर ऊपर आक के पत्तो का तह देकर हाण्डी के कपड मिट्टी करके गजपुट मे फूकदे । मात्रा १ तोला से २॥ तोला तक सेवन करने स क्षय रोग मिटता है ।

२५ सफेद गाय का धारोष्ण दूध या गर्म किया हुआ दूध २५ तोला, १।। तोला गोघृत, मिश्री ५ तोला और पीपल ६ माशा को बारीक पीसकर सबको मिलाकर कलईदार या मिट्टी के बर्तन मे खूब मिलाले जब एक जीव हो जाय तब रोगी को दिन के ६ बजे और शाम को ५ बजे पिलाने से तपेदिक की बीमारी मिट जाती है।

— बालकों के ज्वर तथा अन्य रोग —

छोटे बच्चो की माता को भी पथ्य रखना चाहिये, हल्का भोजन करना चाहिये, यदि माता के दूध न आता हो तो बच्चो को बकरी का दूध पिलाना चाहिये।

१ नागरमोथा, हरड की छाल, पटोल, मुलैठी, इन सबको कूटकर १ माशा का काढा करके ७ दिन देने से बच्चो का ज्वर मिट जाता है।

२ खील, मुलैठी, छड, महुवो, इन सबको कूट कर १ माशा मात्रा मे मिश्री की चासनी मे देने से बच्चो का ज्वर उतरता है।

३ अतीस, बील की गिरी, इन्द्रजौ, धावडया का फूल, लोद, धणिया, नेत्रवाला इन सबका २ माशा का क्वाथ देने से बालक का अतिसार तथा ज्वर मिटता है।

४ बालक की सूण्डो पकी हो तो घृत से सेकनी चाहिये।

५ बालक का पेट दुखे तो –उसकी माता से पेट चटाना चाहिये, अथवा माता को अपनी काचली या कब्जा से गर्म करके सेक करना चाहिये जिससे तत्काल फायदा हो जाता है।

६ बालक के रतानडी निकल जाय तो रतानडो के पत्तो को पानी मे उबाल कर या शीत से ही नहाना चाहिये।

७ बालक को लू लगने पर उसे प्याज की माला गले मे पहनानी चाहिये।

८ **बालक यदि सूखने पड़ जाय तो** :- शनिबार के दिन जगल मे जिस हरी पत्ती या पौधा पर सोनचिडी बैठकर उडे, उसे तोड कर बालक के गले मे बान्धने से बालक वापिस तैयार हो जाता है।

९ बालक के दृष्टि दोष हो जाय तो अग्नि मे हल्दी का चूर्ण व तेल डालकर धूप देना चाहिये। जिससे दृष्टि दोष मिटे।

१० बालक के दृष्टि दोष होने पर उसकी आखो के भवरो को थोडा काट कर जलाना चाहिये।

११. दृष्टि दोष वाले पर उतार कर तेल से भरी रुई की बत्ती शाम के समय मकान के मुख्य द्वार पर जलाना चाहिये।

१२ दृष्टि दोष वाले पर सुबह या शाम, मिच लाल २।।, राई, नमक, चौराहे की रेत इन सबको उतार कर जलाना चाहिये, जिससे तत्काल मालूम हो जायगा कि दृष्टि दोष है या नही यदि मिर्चों की खाँस आवे तो।

१३ यदि छोटे बच्चे को निमोनिया हो तो १ मक्खी की बीन्ट उसकी माता के दूध के साथ देने से तत्काल फायदा होय।

१४ **बच्चे के दात आते समय परेशानी होती हो तो** -धावड़ी के फूल, पीपल इनको आवला के रस मे पीसकर बालक के मसूडो पर लगाने से दात आसानी से आते है।

१५ **बालक के मु ह मे छाला होने पर** -पीपल के छोडे तथा पत्ते को पीसकर मिश्री को चासनी मे मिलाकर मु ह मे लेप करने से बालक के छाले मिट जाते है।

१६ **बालक की नाभि पकने पर** - हल्दी, लोद, प्रियन्गुके फूल, इनको जल मे पीसकर मिश्री मिलाकर नाभि पर लेप करने से आराम हो जाता है।

१७. **बालक की गुदा पकने पर** - रसोत को पानी मे घिसकर गुदा के लेप करने से आराम मिलता है।

१८. **बालक के वमन होने पर** -आम की गुठली,चावल की खील,सेंधानमक

इनको महीन पीसकर मिश्री की चासनी मे चटाने से वमन रुक जाता है ।

१६ **बालक के अतिसार होने पर** -सोठ, अतीस, नेत्रवाला, नागरमोथा, इन्द्र जो, इनका क्वाथ देने से मिटता है ।

२० **बालक के आमातिसार होने पर** - वायविडग, अजमोद, पीपल, इनको खरल करके चावल के पानी से देना चाहिये ।

२१. **बालक के रक्त अतिसार होने पर** - मोचरस, मजीठ, धवड्या फूल, कमल की केशर इन सबको महीन छानकर चावलो के माड से देना चाहिये ।

२२ **बालक की नाभि के सूजन होने पर** - पीली माटी को अग्नि से लाल करके फिर दूध मे लेप करने से नाभि की सूजन तत्काल मिटती है ।

२३ **बालक के ज्वर होने पर** –नागरमोथा, हरड, नाम की छाल, पटोल इनका काढा करके मिश्री डालकर पिलाने से सब प्रकार का ज्वर मिटता है ।

२४ **बालक के श्वास, डब्बा रोग होने पर**-बारासिगा और एलवा पीसकर गम करके पसली पर लेप करने से तत्काल फायदा हो जाता है ।

२५ सोफ और छोटी इलायची के दाने १–१ माशा को पानी मे पीसकर छानलो और उसमे ६ माशा मिश्री डालकर पिलावे । इससे बच्चो के दात निकलते समय होने वाले दस्तो मे अत्यन्त फायदा होता है ।

२६ रात्रि मे पीपल के २ पत्तो की राख को पानी मे भिगोदे फिर प्रात काल नितारकर पिलाने से बच्चो के डब्बे का रोग व पसली पर पोडा होने मे अत्यन्त गुणकारी होता है ।

२७ सोफ, कालीहरड, सूखा पोदीना, कालीमिर्च, सांभरनमक, नरकचूर, सोहागा की खील ३-३ माशा लेकर कूट छानकर चूर्ण बनालो । मात्रा ।। माशा से ३ माशा तक, यह बच्चो की बदहजमी तथा

मेदा के विकारो मे अत्यन्त उपयोगी है।

२८ अच्छी खूबकला को बारह गुने बकरी के दूध मे पकावें फिर दूध से अलग करके छाया मे सुखाले इसी तरह ३-४ बार दूध मे पकावे और सुखावे फिर बारीक पीसले। माशा १ मासा सुबह माता के दूध के साथ देवे, इस योग से बच्चो का सूखा रोग मिटता है जैसे बच्चा दिन पर दिन सूखता जाता हो अन्त मे मरणोन्मुख हो जाता है।

२९. **किपुरुष ग्रह गृहीत की पहचान तथा औषधि**–जो बालक नाना प्रकार की वेदनाओ से बेहोश हो जाता है, कभी होश मे भी आता है, हाथ-पैर आदि हिलाता है जैसे, नाचता हो, झुकने पर या जम्हाई लेते वक्त मल-मूत्र का त्याग करता है, वमन मे झाग (फेन) आता है, तो समझना चाहिये कि वह भयकर किपुरुष अपस्मार ग्रह से पीडित है। ऐसा होने पर उसे शिरीष, तुलसी व बेल से पकाये हुए पानी से स्नान कराना चाहिये।

३० मुलैठी को छीलकर डोरे मे बान्धकर गले मे लटकादो और उसे चूसने दो, इससे बच्चो के दॉत आसानी से निकलते है।

३१ जस्त और ताम्बे के टुकडे एक साथ ही कपडे मे बाधकर गले मे लटकाने से दन्त आसानी से निकलते है।

३२ **बच्चो के लार गिरती हो तो**–मस्तगी, बडी इलायची का चूर्ण २ रत्ती प्रमाण चासनी मे चटावे।

३३ **बच्चे को गले में काग लटकने पर**–चूल्हे की लाल मिट्टी के साथ कालीमिर्च पीसकर अगुली पर लगाकर उसी अगुली से पूरी सावधानी के साथ लटकते हुए काग को ऊपर उठाले।

३४ **गज और सिर पर फुन्सियां होने पर**–पक्की ईट के टुकडे को पीसकर सरसो के तेल मे मिलाकर लगावे।

३५ नीलाथोथा, मुर्दासिगी और कपीला को समभाग लेकर धोये हुए गाय के घृत मे मिलाकर लगाने से बच्चो के सिरगज व फुन्सियां मिट जाती हैं।

३६ **बच्चो के ज्वर होने पर**–गोदन्ती भस्म २ रत्ती को तुलसी के पत्तों के रस मे या माता के दूध मे देवे ।

३७ **बच्चों के मुंह में छाले होने पर**–बसलोचन, कत्था, इलायची का चूर्ण बुरके इससे फायदा होगा ।

३८. **बच्चों की कांच निकलने पर**–कडवा तेल लगाकर ऊपर लेसवे का चूर्ण लगादे । अथवा आम या जामुन की छाल को पानी मे औटाकर शौच कराना चाहिये ।

३६ **यदि बच्चे का मूत्र चूने सदृश हो तो**—लवण भास्कर चूर्ण बुरके ।

४०. **बच्चे के खांसी और ज्वर होने पर**–बादाम की गुली को पानी मे घिसकर चटाना चाहिये ।

४१. **बच्चों के डब्बा रोग नाशक गुटिका**-सत्यानाशी के बीज, उसारेरेवन्द दोनो को सभभाग मिलाकर सत्यानाशी के रस मे घोटले और उडद प्रमाण गोलियाँ बनाले । मात्रा १ से २ गोली दिन मे २ बार पानी या माता के दूध के साथ देवे । इससे डब्बा रोग तत्काल मिट जाता है ।

४२ **माणिक्य रसादि गुटिका**-माणिक्य रस, शुद्ध हिंगलु, एलुवा, पीपल, सेंधानमक, कालानमक, इन्द्रजौ, कोयल के बीज २–२ तोला, शुद्ध मेनसिल, सुहागे का फूला, जवाखार, लालबोल, सोठ, मिर्च, अजवाइन, अकरकरा, वायविडग १–१ तोला, केशर, जायफल, जावित्री, इलायची, तेजपात, उसारेरेवन्द ६–६ माशा को पान के रस मे ३ दिन खरल करे और मूंग प्रमाण गोलियाँ बनाले । मात्रा १ गोली दिन मे २ बार पान के रस मे देवे । इससे बच्चे का श्वास, हृदयावरोध, आफरा, ज्वर, शूल तथा डब्बा रोग मिटते है ।

४३ **बालक को सोते समय पेशाब होता हो तो**-अजवाइन मे नमक मिलाकर गर्म पानी से देना चाहिये ।

४४ **बच्चो के सूखा रोग होने पर**-पीपल, प्रवालपिष्टि, गोदन्ती भस्म,

भुनासुहागा, समभाग मिलाकर २ रत्ती की मात्रा दूध के साथ देने से फायदा होता है ।

४५. **बालकों के सब रोग हर**—जायफल, आम की गुठली, सोठ, हल्दी, बीलगर समभाग मिलाकर चूर्ण बनाले, मात्रा ३ माशा पानी मे औटाकर पिलावे ।

—— दन्त-रोग ——

यथार्थ मे दातो के रोग से स्वास्थ्य के अलावा सौन्दर्य पर भी बुरा असर पडता है, उजले और सफेद दातो से मुख की शोभा मे चार चांद लग जाते हैं, जब कि मैले, गन्दे तथा रोगी दातो से मुख घृणितसा दिखाई देता है, दन्त विहीन व्यक्ति का भी मुख खोखला और कुरूप दिखाई देता है । इतना ही नही दातो मे खराबी होने से भोजन आदि दूषित होकर रक्त आदि भी बिगड जाते हैं, जिसका दुष्प्रभाव सारे शरीर पर पडता है ।

दांतों की खराबी के मुख्य कारण-बाजारू होटलो और खोमचो मे बिकने वाली गन्दी चाटो आदि का खाना, गर्म चाय आदि पीकर ठण्डा शर्बत आदि पीना, ज्यादा पान, सुपारी, तम्बाकू, ताम्बूल, जर्दा आदि का सेवन करना, गन्दे टूथपेस्ट और ब्रुशो का प्रयोग करना, तथा दातो को पिन या लोहे की चीजो से खरोचना, इत्यादि इन बुरी बातो से प्राय दातो मे रोग पैदा होते हैं । कहां तक कहें, आज कल सुनने मे आता है कि लोग सवेरे उठते ही सर्व प्रथम बिना शौच आदि क्रिया के किये तथा मजन आदि के किए बिना ही चाय पीते हैं जिसको 'बेड टी" कहते हैं । देखो ! लोगो का विवेक न जाने कहा चला गया कि उन्हे इतना ही ज्ञान नही है कि रात भर सोने से जो मुह मे जहर आदि उत्पन्न होता है जो कि मुख शुद्धि तथा मजन क्रिया करने

से साफ होता है, वह जहर (मल) चाय के साथ पेट मे जाता है जिससे अनेक प्रकार की बीमारिया व दातो के रोग सहज मे हो जाते हैं ।

सच तो यह है कि दातो के रोग से सिर्फ दात और मसूडो मे ही पीडा नही होती है परन्तु इससे अनेक शारीरिक और मानसिक रोग भी हो जाते हैं । अत दन्त रोगो से बचने के लिए प्रतिदिन सुबह नीम या बबूल की ताजी दन्तौन से दात मलना चाहिये, भोजन के बाद अपने मुंह को भली प्रकार साफ करना चाहिये, इसके अतिरिक्त भोजन मे दूध, मक्खन, हरी सब्जिया और फलो का अधिक सेवन करना चाहिये, भोजन को अच्छी तरह चबाकर खाना चाहिये, जिससे भोजन आसानी से पच भी जाय, व दान्त भी मजबूत बने रहे क्योकि भोजन अच्छा चबाने से दान्तो का अच्छा व्यायाम होता है ।

दांतों मे कीडे लगने का अक्सर कारण -मीठे पदार्थ ज्यादा खाने से तथा खाने के बाद मु ह साफ किए बिना ही रात मे सो जाना, जिससे दातो मे अटके हुए भोजन कण सडकर कीडे पैदा हो जाते हैं, फिर वे धीरे-धीरे दातो को खा जाते है, साराश यह है कि ज्यादातर असावधानी के कारण बच्चो के यह रोग अधिक होता है । दातो मे अनेक प्रकार के रोग पाये जाते है जैसे मसूडो का फूलना, दातो का हिलना, दातो मे मवाद आना, स्थान च्युत हो जाना, पायरिया आदि हो जाना इत्यादि ।

१. अकरकरा और कपूर बराबर पीसकर मजन करने से सब प्रकार की दन्त पीडा मिटती है ।
२ कैर की कोपल मुख मे चबाने से दन्त पीडा मिट जाती है ।
३ अजमोद की धूमी देने से दन्त पीडा मिट जाती है ।
४. फिटकडी का मजन करने से सडे दातो की पीडा मिट जाती है ।
५ पीपल और बड की छाल का पानी औटाकर कुल्ला करने से दन्त पीडा मिटती है ।
६. हीग का पानी गुन-गुना कर फूआ भर कर दातो मे दबाने से

आराम होता है ।

७ आक के दूध मे फूआ भर कर फिर घृत मे तलकर डाढ मे दबाने से दन्त पीडा मिटती है ।

८ नक छिकनो पीसकर गर्म करके गालो पर लेप करने से दात और डाढ की पीडा मिटती है ।

६ गर्म पानी के कुल्ले करने से दात और डाढ की पीडा मिटती है ।

१० बड के दूध के लगाने से डाढ की पीडा मिट जाती है ।

११. मोम मे सोहागा मिलाकर गोली बनाकर दात की खोखल मे दबाने से कीडो के खाये हुए दातो की पीडा भी मिट जाती है ।

१२ कालीमिर्च १ भाग और तम्बाकू २ भाग पीसकर मंजन करने से दन्त पीडा मिटती है ।

१३ बडी इलायची के क्वाथ से कुल्ले करने से दन्त और मसूडो की पीडा मिटती है ।

१४. खाने के कडक जर्दे की पत्ती और नमक पीसकर मंजन करने से दात और मसूडो की पीडा मिट जाती है ।

१५ कडवे तेल मे नमक मिलाकर मजन करने से दन्त मजबूत होते हैं ।

१६ जाल की लकडी का दातुन करने से दात साफ और मजबूत होते है तथा पाचन शक्ति भी बढती है ।

१७ फुलाये हुए सोहागा मे मिश्री मिलाकर मजन करने से दांत मजबूत होते हैं ।

१८ रात को सोते समय यदि दात किट किटाते हो तो १ माशा अजवाइन मे थोडा नमक मिलाकर लेने से आराम हो जाता है ।

१६ हरड के चूर्ण से मजन करने से दांत साफ होते है । अथवा माजुफल के चूर्ण का मजन करने से दन्त रोग मिटता है ।

२० नीम की लकडी को जलाकर उसके कोयले के साथ कपूर, इलायची, काली मिर्च, काला नमक, माजु फल, दाल चीनी और मौलसरी की छाल मिलाकर पीसकर मंजन करने से दात साफ

ग्रौर मजबूत होते हैं ।

२१. पीपल, मोचरस, जीरा, हरड, सेधानमक इन सबको पीसकर मंजन करने से दातो की पीडा मिटती है तथा दातो का हिलना मिटता है ।

२२ नागरमोथा, सोठ, कालो मिर्च, पीपल, वायविडग, नीम का पत्ता, इन सबको महीन कूट छानकर गाय के घृत की ३ पुट देकर छाया मे सुखाले ग्रौर गोली बनाकर सोते वक्त १ गोली मुह मे रख कर सोजाय फिर प्रभात गोली थूकदें तथा कुरल्ला करने से दातो के समस्त रोग मिटते हैं ।

२३ ग्राक की जड को दाढ मे दबाने से दातो का दर्द कम हो जाता है ।

२४ यदि दातो मे कीडे पडकर छिद्र हो गये हो तो उस छिद्र मे कपूर भरने से ग्राराम हो जाता है ।

२५. तम्बाकू २ भाग ग्रौर काली मिर्च १ भाग को खरल करके दातो पर मजन करने से दात पीडा मिटती है ।

२६ कीडो के खाने से दातो मे छिद्र हो तो नोसादर ग्रौर ग्रफीम सुराख मे भरने से ग्राराम होता है ।

२७ प्याज का बीज जलाकर उसका धुग्रा धीरे-धीरे नरकुल से दातो मे खीचे तो दातो के कीडे तत्काल निकल पडे ।

२८ गदना के बीज, खुरासानी ग्रजवाइन ग्रौर प्याज के बीज इनको महीन पीसकर मोम मे मिलावे, फिर इनको ग्राग पर रखकर इसके धूये को नली द्वारा दातो पर पहुंचावे, इससे कीड़े गिर पडेंगे, ग्रौर दर्द मिट जायगा, ग्रर्थात् दातो मे कीडे नही रह सकते हैं ।

२९ दांतों की चमक का उपाय –गुल रोगन मे कपूर ग्रौर चन्दन मिलाकर दातो पर मलने से दातो की चमक ग्रा जाती है ।

३० यदि दांतों का रग पीला पड गया हो तो- हरीमकोय का पानी, ग्रौर

सिरका मिलाकर कुल्ला करना चाहिये ।

३१ **बच्चों के दांत निकालने का उपाय** -जिस बच्चे का दांत निकालना हो तो उसके मसूडो पर कुत्तिया का दूध मलने से दात आसानी से जल्दी निकल जाते हैं। यदि दात निकालते समय दर्द ज्यादा हो तो हरीमकोय का पानी और गुल रोगन गर्म करके अगुली पर लगाकर बालक के मसूडो पर मलना चाहिये, जब दात निकलने लगे तो गर्दन व कानो की जड और नीचे के जवाडो पर चिकनाई लगा देनी चाहिये, तथा तेल गुनगुना कर उसकी २-३ बून्द कान मे भी डालें इससे बडे आराम से बच्चो के दात निकलते हैं ।

३२ **मसूडों के सूजन आने पर**.-मसूर, सूखा धनिया, अधिश, लालचन्दन, सुपारी और सिमाक को पानी मे औटाकर कुरल्ला करे फिर सूजन के कम हो जाने पर सूजन का असर रहे तो बादाम का तेल, गुल रोगन, गर्म पानी मे मिलाकर उसके कुल्ला करे ।

३३ त्रिफला १।। तोला, त्रिकूटा १।। तोला, कत्था ६ माशा, पठानी लोद ६ माशा, माजू ६ माशा और नीला थोथा (आग पर खिलाया हुआ) ४ माशा लेकर सबको कूट छानकर बारीक चूर्ण बनाले फिर इसे दातो पर मलने से दातो का दद मिट जाता है और दात मजबूत हो जाते हैं ।

३४, तम्बाकू, अकरकरा, काली मिर्च और सेंधानमक समभाग लेकर कूट छानकर मजन बनाले इससे दातो की कमजोरी तथा दर्द और बदबू मिट जाती है, और मसूडो का खराब पानी निकालता है ।

३५ कत्था और अफीम समान भाग लेकर उनमें गुल रोगन मिलाकर दातो पर मलने से दन्त पीडा मिट जाती है ।

३६. यदि सारे जबाड़े मे दर्द होता हो तो चम्बेली और सिरस की छाल २-२ तोला तथा वायविडग ३ माशा लेकर पानी मे उबालकर

कुल्ला कर।

३७. अकरकरा और कालीमिर्च ३-३ माशा लेकर बारीक करके ६ माशा मिश्री की चासनी मे मिलाकर लेप करने से दातो की पीडा मिट जाती है।

३८ गेरु और सोठ ६-६ माशा लेकर पानी मे पीसकर जबाडे पर लेप करने से जबाडे का दर्द मिट जाता है।

३९ अकरकरा, कनेर की जड की छाल, गुलनार फारसी, नागरमोथा, फिटकडी, गुलाब के फूल, और बालछड सम भाग लेकर मजन बनाकर सुबह और शाम मजन करने से हिलते हुए दात जम जाते हैं।

—पाइरिया—

पाइरिया रोग दातो मे कष्टकारी और असाध्य माना जाता है, यथार्थ मे इस रोग का मुख्य कारण कब्ज और अजीर्ण है। मसूडो का दुर्बल होना, दात हिलना, मवाद आना, मु ह से दुर्गन्ध आना आदि इस रोग के प्रायः लक्षण होते हैं।

४०. नोम की पत्तिया जलाकर, वायविडग, सेंधानमक, कपूर और समुद्र फल को पीसकर मजन करने से पाइरिया रोग मिटता है।

४१, आंवला जलाकर सेधानमक मिलाकर सरसो के तेल के साथ मजन करने से पाइरिया मिटता है।

४२. कोमल नीम की पत्तिया ताजी, काली मिर्च और काला नमक मिलाकर पीसकर प्रतिदिन सेवन करने से रक्त शुद्ध होकर पाइरिया रोग मिटता है, तथा मु ह की दुर्गन्ध भी मिट जाती है।

४३ खस, इलायची और लोग का तेल मिलाकर लगाने से पाइरिया मिटती है तथा मु ह की दुर्गन्ध मिटती है।

४४ पाचो नमक ३ तोला, पोटेशियम परमेगनेट १ माशा और माजूफल २ तोले का चूर्ण बनाकर प्रतिदिन मजन करने से पाइरिया और दात रोग मिटता है।

४५. जीरा, सेंधानमक, हरड़, सेमल के काण्टे, दालचीनी, शुद्ध कुचेला, शुद्ध भिलावा, दक्षिणी सुपारी, मोलसरी की छाल, माजूफल और अकरकरा को समभाग लेकर बन्द बर्तन मे जलाकर पीसकर मजन करने से पाइरिया के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

४६ पाइरिया वाले रोगी को हमेशा अपना पेट साफ रखना जरूरी है, उसे भोजन मे हरी सब्जियां तथा फलो का सेवन करना चाहिये।

४७. फिटकडी ८ माशा, नमक ४ माशा पीसकर खरल करके दातो पर मलने से दात मजबूत होते हैं।

४८ सफेद कत्था १ तोला, फिटकडी सफेद ६ माशा, माजूफल ६ माशा इनको जौ कूट करके १ सेर पानी मे औटावे आधा पानी रहने पर कुल्ला करें, इससे दातो मे फायदा होगा।

४९. कूट, दारु हल्दी, लज्जवती, पाठा, कुटकी, मजीठ, हल्दी, नागरमोथा, लोध इन सबका चूर्ण बनाकर प्रतिसारण करे अर्थात् अगुली के अग्रभाग मे चूर्ण लगाकर जीभ तथा समस्त मुख मे रगडे इसे प्रतिसारण कहते है। अर्थात् मजन। इससे दातो के मसूडो मे से रक्त का निकलना, दन्त पीडा होना, इनका नाश होता है इसे प्रतिसारण चूर्ण कहते हैं।

—दातों के मसूडो तथा मुंह का रोग—

५० अडूसा के पत्ते औटाकर कुल्ला करने से मसूडो का दर्द मिटता है।

५१ खैर चूसने से कष्ट साध्य मसूडो का दर्द मिट जाता है।

५२. जामुन की लकडी के कोयलो का मजन करने से मसूडो का खून आना बन्द होता है।

५३. मेहदी के पत्तो के क्वाथ से कुल्ला करने से मसूडो का असाध्य रोग मिटता है।

५४. बड़ की छाल के क्वाथ से कुल्ला करने से दात व मसूडो का रोग मिट जाता है।

५५. नीम की छाल के क्वाथ से कुल्ले करने से तथा नीम का तेल लगाने

से मसूडो का असाध्य रोग मिटता है।

५६. अजवाइन को तवे पर जलाकर कपड छान करके मजन करने से मसूडो का रोग मिटता है, व दन्त उज्ज्वल होते हैं।

५७ अकरकरा के कुल्ले करने से दात, तालु, मुख और गले के रोग मिटते हैं।

५८ बबूल की छाल के कुल्ले करने से मुख पाक, मसूडो से रक्त बहना और गले की पीडा मिटती है।

५९ मुराद के पत्तो के पानी से मुख साफ करने से मुखी की लार भी मिटती है।

६० फूले हुए मसूडो पर तम्बाकू के पत्तो का चूर्ण मलने से फायदा होता है।

६१ सुपारी के चूर्ण का मजन करने से तथा सुपारी के छोटे-छोटे टुकडे मुह मे रखने से मसूडो से खून निकलना बन्द हो जाता है।

६२. शक्कर के बूरे को बारीक करके मजन करने से दातो का दर्द मिटता है।

६३ सेंधानमक, खेरसार, कूट, धणिया, काली मिर्च, सोठ, भुना हुआ जीरा, भुना हुआ थूथा इन सबको महीन पीसकर दातो के मर्दन करने स दातो का खून निकलना बन्द हो जाता है।

६४ गुग्गल, राल, अदरक, सारिवा, इन सबको घृत मे पीसकर कल्क बनाले, फिर उसको कपडा के लपेट कर उसका गोल वेष्टन करे। तथा सुखाले, फिर उसे जलाकर ठीक धूये के ऊपर मुख रखकर धूप देने से समस्त प्रकार का मुख रोग मिटता है।

६५ दन्त दोषहर मजन -नीला थोथा का फूला १ तोला, कपूर १ तोला, लोग २ तोला, दालचीनी २ तोला, फिटकडी का फूला ४ तोला, समुद्र भाग ८ तोला, सोनागेरू ६ तोला, शुद्ध चाक मिट्टी १६ तोला, को कूट छानकर मजन करने से दन्त शूल व पायरिया आदि दन्त रोग मिटते हैं।

६६ कपूर और एरण्ड का तेल मिलाकर अगुली से मसूडो पर मलने से

पायरिया रोग भी मिटता है ।

६७ १ कच्चा और १ जला हुआ माजूफल तथा १ जली हुई सुपारी को पीसकर मजन करने से दात और मसूड़े मजबूत होते है और खून आना बन्द हो जाता है ।

— मुख के छाले —

१ पीपल को बारीक पीसकर मिश्री की चासनी मे मिलाकर जीभ पर लगाने से लार आकर छाले मिटते हैं ।

२ मुलेठी को मुँह मे रखने से भी मुह के छाले मिटते हैं ।

३ बेर के पत्ते औटाकर कुल्ले करने से मुँह के छाले मिटते हैं ऊपर इलायची तथा मिश्री लगाना चाहिये ।

४ फोग का शबत पीने से असाध्य छाले मिट जाते है ।

५ शहतूत का रस पिलाने से गले के छाले मिटते हैं ।

६ हरापोदीना, सूखा धनिया और मिश्री बराबर मिलाकर मुह मे चबाकर थूकने से मुह के छाले मिटते हैं ।

७ सत्यानाशी की टहनी तोडकर, मुह के छालो पर लगाने से छाले मिटते हैं ।

८ रात्रि मे ठण्डे पानी के ज्यादा पीने से भी मुह के छाले मिटते हैं ।

९ बबूल की पत्तियाँ, अनार की पत्तिया और आवला ४–४माशा तथा धनिया २ माशा इन सबको शाम को भिगोकर पीस छानकर मिश्री मिलाकर पीने से थूक मे रक्त आना बन्द हो जाता है ।

१० चमेली के पत्तो को चबाने से मुह के छाले मिटते हैं । अथवा गुँदी के वृक्ष की छाल मुख मे रखने से छाला मिटता है ।

११ तेजबल, पाठ, रसोत, दारुहल्दी, पीपल इन सबको महीन पीसकर मिश्री की चासनी मे गोलिया बनाले फिर मुह मे रखने से सब प्रकार का मुख रोग मिटता है ।

१२ अधिक बोलने से या गर्मी से गला बैठ जाने पर धनिया व मिश्री को महीन करके चाटना चाहिये।

१३. गुलाब और अनार के फूल ६-६ माशा लेकर पानी में औटाकर कुल्ले करना चाहिये इससे अधिक थूक आना रुकता है।

—होठों का रोग तथा मुख पाक—

१४ गाय के घृत को १०० बार धोकर कपूर मिलाकर लेप करने से होठो का रोग मिटता है।

१५ होठो के मकडी रोग मे तरबूज के छिलको को जलाकर लगाना चाहिये।

१६ आलके बीजो की मीजी को पीसकर लेप करने से होठो और जीभ के चिठे मिटते हैं।

१७ मिश्री और कपूर पीसकर बुरकाने से मुख पाक मिट जाता है।

१८ खैर को पाच गुने पानी मे औटाकर अष्टमाश रहने पर जायफल, कपूर और सुपारी पीसकर उसमे गोलिया बनाकर मुह मे रखने से मुख पाक आदि रोग मिट जाते है।

१९ चमेली के पत्तो का क्वाथ पीने से मुख पाक, चर्म रोग और कान को पीडा मिटती है।

२०. सोहागा को जल मे औटाकर कुल्ले करने से मुख पाक मिटता है।

२१ गुलाब के पत्ते व शहतूत के पत्ते चबाने से मुख पाक रोग मिटता है।

२२ बेर या बबूल की छाल का क्वाथ या हिमफाट पीने से मुख पाक मिटता है।

२३ लाल मिर्च का क्वाथ या हिमफांट पिलाने से मुख पाक रोग मिटता है।

२४ तूर की दाल को भिगोकर उस पानी से कुल्ले करने से मुख पाक मिटता है।

२५ कलोजी को सिरके मे पीसकर रात्रि के समय मुख पर लेप करने

से मुंह की जवानी की फुंसिया मिटती हैं इस लेप से त्वचा के सफेद दाग भी मिटते हैं।

२६ मसूर को नीम्बू के रस मे पीसकर लेप करने से या मलने से मुख की झाई मिट जाती है।

२७ हल्दी और तिला को पीसकर मुख पर मलने से मुख की झाई मिट जाती है।

२८ घृत मे शुद्ध मोम डालकर होठो को सेकें तो होठ रोग मिट जाता है।

२६. कडू तेल अरू मोम गुड, लीजे गर्म मिलाय या मरहम को लेपिये, होठ रोग मिट जाय।

३०. इसब गोल और बेहदाना दोनो को बराबर पानी मे भिगोकर छानले, और उस रस को कपडे पर लगाकर होठ पर रखें, इससे होठ और जबान का फटना मिट जाता है।

३१ आवलो के पत्ते पानी मे औटाकर कुल्ले करने से मुंह के छाले मिटते है।

३२ कत्था २ माशा, कपूर १ माशा और ग्लेसरिन ५ तोला को मिलाकर रखे, इसे लगाकर लार टपकाने से मुंह के छाले मिटे।

३३. माजूफल, कत्था, चिकनी सुपारी, फिटकडी का फूला और बादाम की गुली सम भाग मे पीसकर फिर मक्खन मे मिलाकर लगाने से मुंह के छाले मिट जाते है।

३४. गुंदी के वृक्ष की छाल को मुंह मे चबाने से भी मुंह के छाले मिटते है।

३५. २-३ लोग प्रतिदिन चबाने से वायु के छाले मिट जाते हैं।

३६ जामुन के नरम और ताजे पत्ते पानी मे पीसकर कुल्ले करने से भयकर छाले भी मिटते हैं।

३७ उबलते हुए ३ पाव पानी मे १।। तोला लाल मिर्च डालकर ठण्डा होने से छानले और उससे कुल्ला करने से तीव्र मुख पाक भी मिट जाता है।

— गले के रोग —

बात-पित्त और कफ से गले के स्थान दूषित होकर गले के दोनो ओर स्थित होकर दृढ गाठे उत्पन्न हो जाती है इन्हे कठमाला व गडमाला कहते है ।

१ बड के दूध से लेप करने से कठमाला मिटती है ।

२. मूली के बीजो को बकरी के दूध मे पीसकर लेप करने से कठमाला मिटती है ।

३ ढाक की जड को घिसकर कानो के नीचे लेप करने से गडमाला मिटती है ।

४ बच और पीपल के चूर्ण को नीम के तेल के साथ सू घने से कठ-माला मिटती है ।

५ जाल के पत्तो को गौमूत्र मे पीसकर लेप करने से कठमाला मिटती है । साथ-साथ इसके पत्ते भी बान्धना चाहिये ।

६ नीम के पत्तो के रस मे वच पीसकर लगाने से गाठे बैठ जाती है ।

७. नागरमोथा, तुलसी के पत्ते और नागर बेल के पान पानी मे पीसकर पिलाने से कठमाला बैठ जाती है और बोलने की शक्ति बढती है ।

८ अनार के पत्तो का रस १ सेर, सत्यानाशी का रस १ सेर, गौमूत्र १ सेर, तथा काले तिलो का तेल २ सेर, अनार के पत्तो की लुगदी ।। सेर सब मिलाकर आग पर चढादे सब जलकर तेल मात्र रह जाने पर छानले । इस तेल को लगाने से कठमाला, भगन्दर, कोढ के जरक, दाद और चेहरे के काले धब्बे आदि मिट जाते है ।

९ देवदारु और इन्द्रायण पीसकर लेप करने से कफ से पैदा हुई गाठे भी मिट जाती है ।

१० अरोठो का लेप करने से कठमाला की सूजन मिट जाती है ।

११ शहतूत का शर्बत पीने से कटमाला और जीभ की सूजन मिट जाती है ।

१२. चूने का १। तोला पानी दूध मे मिलाकर दिन मे कई बार पीने से कठमाला के पीपदार फोडे भी मिटकर घाव भर जाते हैं।

१३ चूने के पानी को लगाने से भी गले के फोडे मिटते हैं।

१४. खैर को मुख मे रखने से लटका हुआ कागल्या सिमट कर पुन ऊपर उठ जाता है और खासी मिट जाती है।

१५ शहतूत या करतूत की जड के क्वाथ के कुल्ले करने से कागल्या ठीक हो जाता है।

१६ कागल्या या तलुवा लटक गया हो तो लाल मिर्च को थोडी देर मुह मे रखकर मुह का पानी झार देना चाहिये, जिससे तत्काल आराम हो जाता है।

१७ राई और कलोजी पीसकर सूघने से कठ मे चिपकी हुई जोक निकल जाती है।

१८ नागरमोथा मुंह मे रखने से गले मे चिपकी हुई जोक निकल जाती है।

१९ ५ रत्ती वच को खरल करके गर्म दूध मे डालकर पीने से कफ ढीला पड जाता है और गले का दर्द मिटता है।

२० कली का चूना बबूल के रस मे मिलाकर चना प्रमाण गोलियां बनाकर १ गोली चूसने से बैठा हुआ गला खुल जाता है।

२१ पोस्त का डोडा और अजवाइन को पानी मे औटाकर छानकर कुल्ले करने से बैठा हुआ गला ठीक होता है।

२२ कायफल को पान मे रखकर चबाकर पीक निकलने से गले के कफ सम्बन्धी सभी रोग मिटते हैं।

२३. इमली के पानी से कुल्ला करने से गले की पीडा मिटती है।

२४ आम के सूखे पत्ते चिलम मे पीने से गले के सभी रोग मिटते है।

२५ ढाक का रस लगाने से गले के घाव मिटते हैं।

२६ अनार की जड की छाल को पीसकर लेप करने से गले मे छाले व गाठे पड जाने से जो गला पड जाता है उसमे आराम हो

जाता है ।

२७ कठ सूखने पर छुहारे की गुट्ठी मुंह में रखने से फायदा हो जाता है ।

२८. आलु बुखारा चूसने से गले की खुश्की मिट जाती है ।

२९ छुहारे की गुठली, इमली के पत्ते, इमली का चीया, मेहदी के पत्ते, इन सबको बराबर लेकर महीन पीसकर गुनगुना करके पतला पतला लेप करने से कण्ठ की गाठें बैठ जाती हैं ।

३० चाय के अथवा नमक के औटाये हुए पानी का कुल्ला करने से गले मे आराम आता है ।

३१ पान की जड को चूसने से बैठा हुआ गला खुल जाता है ।

३२ ग्लेसरिन का फुआ भर कर गले मे फेरने से गले मे आराम आ जाता है ।

३३ सर्दी मे पडा हुआ गला, आधे मूंग बराबर अफीम खाने से ठीक हो जाता है ।

३४ अजवाइन और शक्कर औटाकर पीने से गला खुल जाता है ।

३५. नमक का या पुरानी रूई का सेक करने से गला ठीक होता है ।

३६ किरमाला की जड चावलो के पानी मे पीसकर लेप करने से कण्ठमाला मिट जाती है ।

३७ सरसो, सहजना का बीज, सण का बीज, अलसी, जौ, मूली का बीज, इन सबको समान भाग लेकर खट्टी छाछ मे महीन पीसकर लेप करने से गाठिया रोग तथा कण्ठमाला मिटती है ।

३८. कुटकी को पीसकर पक्का घीया के फल मे रात्रि मे भिगोकर रखे सुबह उस पानी मे पीस छानकर पीने से ७ दिन तक गलगण्ड रोग मिटता है ।

३९ सरसो तथा जलकुम्भी की राख इन दोनो को तेल मे पीसकर लेप करने से गलगण्ड रोग मिटता है ।

४० मुख मे पुष्कर मूल को, धरि चूसे जो कोय । शब्द उच्च निकरन लगे, गल बैठो सो होय ।

४१ सीसे की गोली को हरीमकोय के पानी मे घिसकर लेप करने से गले की सूजन मिटती है।

४२. ३ माशा जौ का आटा लेकर, दही के पानी मे मिलाकर फिर उसमे ३ माशा बारीक पिसी हुई रेवेन्द चीनी मिलाकर कपडे पर लगावे और गले पर बान्धे। इससे गले की सूजन उतर जाती है।

४३ उन्नाव ६ दाना, साबुत मसूर ६ माशा, और मकोय ६ माशा लेकर पानी मे पकाकर उससे कुल्ले करे। यह प्रयोग गले के सूजन के प्रारम्भ मे फायदा करता है।

४४ पोस्त का डोडा १ तोला, साबुत मसूर १ तोला को ३ पाव पानी मे औटावे, जब १ पाव पानी रह जाये तो छानकर, उससे कुल्ला करे। जिससे गले की सूजन मिटती है।

४५ मुलेठी, कत्था सफेद, सूखा आवला ६-६ माशा लेकर १० तोला पानी मे पकाकर कुल्ला करे। इससे गर्मी से होने वाले गले का दर्द, सूजन और छालो मे गुणकारी है।

—मुख से खून आने का रोग—

४६ मुलतानी मिट्टी (मेट) १ माशा मे शक्कर खाने से मुख से खून आना बन्द हो जाता है।

४७ केर के बीजो को जलाकर उनकी राख ३ माशा तथा शक्कर २ माशा मिलाकर फाकने से मुंह से खून आना बन्द हो जाता है।

४८ मेहदी के पत्ते ६ माशा शाम को भिगोकर सुबह उसका पानी नितार कर शक्कर मिलाकर पीने से मुह से खून आना तथा गुदा या योनी से भी खून आना रुकता है।

४९ प्रतिदिन सुबह और शाम १ तोला कुकरोंदे का रस पीने से मुख से खून आना तथा बवासीर से खून आना व गुदा तथा योनी से खून आना बन्द हो जाता है।

५०. ३ माशा पतासो का शर्बत बनाकर उसमे १ माशा फिटकडी का फूल्या मिलाकर लेने से मुख से आने वाला रक्त बन्द हो जाता है।

५१ ढाक के ताजे रस में मिश्री मिलाकर पीने से मुख आदि का रुधिर बन्द होता है।

५२ हल्दी ४ माशा, फिटकडी ४ माशा मिलाकर पीसकर ३ पुडिया बनाकर ३ दिन लेने से मुख मे से आनेवाला रक्त बन्द हो जाता है।

५३ सोठ कालीमिर्च, पीपल, अजमोद, सेधानमक इन सबको महीन कूट छानकर गर्म पानी से लेने से जम्हाई आनी मिटती है। अथवा कडवे तेल की मालिश से भी मिटती है।

—स्वर-भग—

५४. अजमाद, हल्दी, चित्रक, जवाखार, और आवला इनको समान भाग लेकर महीन छान करके ६ माशा घृत या मिश्री की चासनी के साथ चाटने से भयकर स्वर भग रोग मिट जाता है।

५५ हरड की छाल, बच, पीपल इन सबको खरल करके गर्म जल से लेने से स्वर भग मिटता है।

५६ बेहडा की छाल, पीपल, सेधानमक, आवला इन सबको महीन कूट छानकर गाय की छाछ से या गौमूत्र से लेने से स्वर भग रोग मिटता है।

५७ जायफल, खील, बिजोरा की केशर इन सबको खरल करके मिश्री की चासनी से चाटे तो स्वर भग रोग मिट जाता है।

५८ यह स्वर भग रोग प्राय जोर से बोलने से, अति शोक के करने से, गले मे लकडी आदि से चोट लगने इत्यादि कारणो से प्राणियो के स्वर भग रोग हो जाता है।

५९ वातज स्वर भेद से पोडित रोगी को -भोजनान्तर प्रतिदिन घृत का पान करना चाहिये। पित्तज स्वरोपघात मे घृत और गुड से मिला हुआ दूध पीना चाहिये। कफ से उत्पन्न स्वर भग रोग मे क्षार जल मे त्रिकुटा, व त्रिफला मिश्रित पानी पीना चाहिये। इससे आराम होता है।

६० मुलेठी के कषाय मे मिश्रित दूध से सिद्ध मू ग की (पायस) खीर मे

घृत मिलाकर खाने से सम्पूर्ण प्रकार के स्वर विकार मिट जाते हैं अर्थात् उनका स्वर सुन्दर किन्नर के समान हो जाता है ।

६१ **स्वर भेद से सयुक्त रोगी को** -भागरे के पत्तो के साथ काले तिलो का सेवन करना चाहिये, अथवा मिच लाल के साथ चने की डाली को खाकर ऊपर से गौघृत व शक्कर मिश्रित दूध गर्म-गर्म पीना चाहिये ।

६२ स्वर भेद वाले रोगी को पान की जड (कुलिजन) म ह मे चबाना और चूसना चाहिये ।

६३ मीठे बादाम की गिरी, भुनी हुई अलसी, चिलगोजा की गिरी, और सूसन की जड ८-८ माशा अर्थात् प्रत्येक ८ माशा, कतीरा गोद ४ माशा, कीकर का गोद ४ माशा, मुलेठी और मुलेठी का सत् २-२ माशा, तथा मिश्री १५ माशा लेकर सबको कूट छानकर, मात्रा ८ माशा शक्कर की चासनी मे मिलाकर चने प्रमाण गोलिया बनाले । फिर १-१ गोली मु ह मे रखकर चूसे । इससे आवाज खुलती है, कफ को निकालती है, तथा खासी और श्वास के लिए लाभदायक है ।

६४ वात-स्वर भेद वाले रोगी का स्वर निकलते समय टूटा सा होता है व गधे के सदृश कर्कश होता है । पित्तज रोग से पीडित को बोलते समय गला सूखता है तथा गले मे जलन सी होती है और प्यास अधिक लगती है । कफज स्वर भेद मे गला कफ से रुक जाता है तथा स्वर भी कफ से युक्त होकर निकलता है । इस प्रकार उपर्युक्त सब लक्षण एक साथ प्रकट हो जाय तो उसे त्रिदोष स्वर भेद कहते है, यह असाध्य रोग है । रक्त के प्रकोप से उत्पन्न स्वर भेद मे मुख काला हो जाता है और अधिक गर्मी के साथ स्वर निकलता है, इसे भी ऋषिगण असाध्य रोग कहते हैं । इसके अलावा मेद दूषित होकर गला व तालु प्रदेश मे होता है, तो उसे मेदज स्वर भेद जानना चाहिये, इससे युक्त व्यक्ति बहुत कष्ट से धीरे-धीरे गद-गद कठ से कठिनता से बोलता है, वह वर्ण का भी स्पष्ट

उच्चारण नही कर सकता है। अतः सर्व प्रथम वैद्यराज को मेदी-विकार दूर करना चाहिये।

६५ वच, कुलजन बावची, चौथा नागर पान। इनका जो सेवन करे, कण्ठ कोकिला जान।

६६ तज, कालीमिर्च, कुलाजन, बच, अकरकरा इन्हे बराबर लेकर कूट छानले फिर प्रतिदिन १।। माशा खाने से कण्ठ साफ हो जाते है।

६७ **कठ सुधारक बटी** -सतमुलेठी ७ तोला, पीपरमेट के फूल, कपूर, इलायची, लोग, १-१ तोला, जावित्री २ तोला, सबको पानी के साथ १ घण्टा खरल करले व १-१ रत्ती की गोलिया बनाले। मात्रा दिन मे १०-१५ गोली चूसे, इससे अरुचि, मदाग्नि, गला बैठना, उबाक, बेचैनी, और उदर वात मे फायदा होता है।

६८ कठ मे एक ऐसा घाव हो जाता है जिसमे दुर्गन्ध आया करती है उसे थुक थुकी भी कहते है जिसका इलाज -

समुद्रफेन १ पाव को पीस छानकर फिर १ तोला रोजाना औटावे और उसमे जामुन के पत्ते पानी मे पीसकर पिलावे फिर उस घाव के लगाने की दवा यह है कि-मनुष्य के सिर की हड्डी वासी पानी मे पीसकर लगावे, अथवा सूअर की विष्ठा को कन्या के मूत्र मे पीसकर लगावें। इससे यह असाध्य रोग भी मिटता है।

६९ **यदि गले मे बाल अटक जाय तो** - शक्कर, मक्खन, द्राक्षा और शीतलमिर्च का चूर्ण बनाकर लेने से तुरन्त लाभ हो जाता है।

७० **स्वर भंग के लिए** -कुलिजन, इलायची, मुलेठी, सफेद मिर्च के चूर्ण को पान के रस मे १२ घण्टे घोटकर १-१ रत्ती की गोलिया बनाले, मुह मे चूसने से फायदा होता है।

७१ घी और गुड मिश्रित भात (चावल) का भोजन करके गर्म पानी पीने से स्वर भंग मिटता है।

७२ मुलेठी का सत मुह मे रखकर रस चूसने से स्वर भंग रोग मिटता है।

७३ कुलिंजन अकरकरा, ब्राह्मी, बच, कूट और सफेद मिर्च का चूर्ण बनाले। मात्रा २ माशा दिन मे ३ दफा घृत से चाटे। इससे स्वर भग मिट जाता है।

७४. तूम्बा को ७ दिन तक पानी से भरकर रखे, फिर उस पानी को पीने से कठमाला मिटती है।

७५ सर्प की हड्डी को पीसकर लेप करने से गलगड माला मिटती है।

७६ बबूल के पत्ते और छाल तथा बड की छाल के हिम से कुल्ले करने से गले के रोग मिटते है।

७७ शहतूत का शर्बत पीने से गले की खुश्की मिटती है, अथवा कठ की सूजन मिटाने के लिए शहतूत के पत्ते, जड और कोमल डाडियो का औटाकर गरारे करे।

७८ दाख और फालसा को मुख मे दबाने से समस्त कठ रोग मिटते हैं।

७९ फिटकडी का फूला आधा माशा, मिश्री २ माशा मिलाकर दिन मे २–३ बार बिना पानी के लेने से मुह से आने वाला खून बन्द हो जाता है।

८० अच्छे और पके हुए केले खाने से मुह से आने वाला खून बन्द हो जाता है।

—हिचकी-रोग—

बासी-ठण्डी वस्तुओ के खाने से तथा मुख और नाक मे बारीक मिट्टी के घुसने मे या अधिक परिश्रम तथा अधिक मार्ग गमन से व मल-मूत्र आदि के वेग को रोकने से हिचकी रोग उत्पन्न हो जाता है।

१ तूर की भूसी का धूम्रपान करने से व जौ का धूम्रपान करने से हिचकी मिट जाती है।

२ उडदो का धूम्रपान करने मे व हिंगोडा और उडद के चूर्ण का धूंआ पिलाने से सर्व प्रकार की हिचकी मिटती है।

३ पुराने छप्पर की रस्सी का धूम्रपान करने से हिचकी रोग

मिटता है।

४ मूंज को हथेली मे मसलकर उसमे थोडा पानी देकर फिर उसका धूम्रपान करने से हिचकी मिटती है।

५ कालीमिर्च मे सूई घुसेडकर उठाकर उसे माचिस से जलावो, अधजली होने पर उसके धूंये को नाक मे जोर से खीचकर हलक मे उतारने से हिचकी रोग मिट जाता है।

६ पीपल की छाल को जलाकर उसके कोयलो को पानी मे बुझाकर पानी को पिलाने से हिचकी मिटती है।

७ नारियल की जटा की भस्म पानी मे घोलकर नितारे हुए पानी को पीने से हिचकी मिटती है।

८ गर्म दूध मे घी पीने से अथवा गर्म-गर्म घृत पीने से हिचकी मिटती है।

९. सोठ के चूर्ण को फक्की लेकर ऊपर बकरी या गर्म दूध पीने से हिचकी मिटती है।

१०. मोर पख का चन्दवा, उडद, हल्दी, मूंज का टुकड़ा, कुस्टे का पुराना टुकडा, सभी को चिलम मे भरकर धूम्रपान करने से हिचकी मिट जाती है।

११ सोडा वाटर पीने से भयकर हिचकी मिटती है।

१२ दालचीनी के सेवन से हिचकी, खॉसी और गुर्दा की बीमारी मिटती है।

१३ नमक से पसली पर सेक करने से भी हिचकी मिटती है।

१४ स्त्री के दूध मे मक्खी की बीट घिसकर नस्य देने से हिचकी मिटती है।

१५ २ रत्ती सेधानमक ८ बूंद ताजे पानी मे मिलाकर नाक मे लगाने से १ मिनिट मे हिचकी मिट जाती है।

१६ यदि भोजन के पीछे हिचकी आती हो तो अजमोद चूस-चूस कर पीक निगल लो फायदा होगा।

१७ सिरण के तापडिया की राख मिश्री की चासनी मे थोडी थोडी चाटने से असाध्य हिचकी मिटती है ।

१८ बकरी के दूध मे सोठ पकाकर पीने से हिचकी मिट जाती है ।

१९ मोर पख की राख मिश्री की चासनी मे चाटने से हिचकी रोग मिटता है ।

२० हल्दी और उडद को पीसकर निर्धूम अगारा पर डालकर धूआ लेने से आराम होता है ।

२१ ४ माशा मुलेठी को मिश्री की चासनी मे चाटे तो हिचकी मिटती है ।

२२ २–३ माशा पीपल का चूर्ण मिश्री की चासनी मे चाटने से हिचकी मिटती है ।

२३ पोहकरमूल, जवाखार, कालीमिर्च इन सबको समभाग पीसकर ६ माशा गर्म पानी मे लेने से हिचकी मिट जाती है ।

२४ गवारपाठा के रस मे सोठ मिलाकर खाने से हिचकी रोग मिटता है ।

२५ प्राणायाम करने से किसी प्रकार की भयकर बात कहने से या डर से हिचकी मिटती है ।

२६ असालिया का काढा पीने से हिचकी मिटती है ।

२७ शक्कर, मुलेठी और पीपल के चूर्ण को सेवन करने से वेग सहित हिचकी मिटती है ।

२८ गर्म पानी मे नमक मिलाकर पीने से वमन होकर हिचकी मिट जाती है ।

२९ ६ माशा सोठ और ५ नग कालीमिर्च को पानी मे औटाकर पीने से भयकर हिचकी, जिसमे भोजन न पचता हो वह हिचकी भी मिट जाती है ।

— बल पुरुषार्थ और मगज पुष्ट —

१ ४।। माशा मेहन्दी के बीजो को बारीक पीसकर मिश्री की चासनी के साथ चाटने से मस्तक पीडा मिटकर मगज पुष्ट होता है ।

२ अभ्रक भस्म को वायविडग तथा त्रिकुटा चूर्ण के साथ देने से मस्तिष्क शक्ति बढती है ।

३ तेल के साथ वच का चूर्ण एक महीना तक लगातार खाने से बुद्धि और स्मरण शक्ति बढती है ।

४ सेब का मुरब्बा खाने से मगज पुष्ट होता है ।

५ बादाम की गिरी १५ तोला, पिस्ता १० तोला, पेठे का मगज ५ तोला, पोस्तदाना ५ तोला, धनिया की मिजी ५ तोला सबको पीसकर एक पाव घृत मे पकाकर आधासेर शक्कर डालकर पाक बनाले, छोटी इलायची भी २ तोला डालदे, फिर प्रतिदिन सवन करने से मगज पुष्ट होता है ।

६ बादाम की गिरी, कच्चा खोपरा, धनिया की मिजी और खीरा की मिजी १-१ तोला शामिल पीसकर गोला बनाकर दूध मे मिलाले फिर कढाई मे घी डालकर इलायची का बगार देकर वह दूध छोककर रबडी सदृश बनाले, उसमे शक्कर मिलाकर खाने पीने से मगज तर व पुष्ट हो जाता है ।

७. अतीस १। माशा से २ माशा तक, छोटी इलायची, और बसलोचन मिलाकर खाने से बल बढता है ।

८ दूध के साथ असगन्ध की फक्की लेने से बल बढता है ।

९ चिलगोजा खाने से शरीर मे फुर्ती आती है ।

१० चिलगोजा और मुनक्का को २४ घण्टे पानी मे भिगोकर थोडा बूरा मिलाकर खाने से शरीर की निर्बलता मिटती है ।

११ एक पाव कच्ची गाजर खाकर ऊपर १ सेर पानी पीने से खून बढता है ।

१२. कपास की मिंजी १ तोला की खीर खाने से शरीर की कमजोरी मिटती है।

१३ बादाम की गिरी और भुने हुए चने छीलकर प्रतिदिन सुबह खाने से बल बढता है।

१४. तिल और अलसी का क्वाथ पीने से बल बढता है।

१५ १-१ सेर शहतूत के पत्ते सुबह शाम गाय को खिलाने से दूध बढ जाता है और फिर उस दूध को पीने से बल बढता है।

१६ भेड के दूध के साथ सनाय लेने से पुरुषार्थ बढता है।

१७ गन्ने का रस पीने से खून बढता है, अथवा पके हुए आम खाकर ऊपर दूध पीने से खून बढता है।

१८ पान खाने का चूना १-१ रत्ती सुबह शाम चासनी मे चाटने से तथा केशर और इलायची डाला हुआ दूध पीने से पाचन शक्ति भूख, वीर्य और पुरुषार्थ को बढाता है।

१९ बबूल का गोंद घृत मे तलकर उसका पाक बनाकर खाने से पुरुषार्थ बढता है।

२० इमली के बीजो को ३ दिन भिगोकर उन्हे छीलकर बराबर गुड मिलाकर ६-६ माशा की गोली बनाकर सुबह शाम लेने से वीर्य की कमजोरी मिटकर पुरुषार्थ बढता है।

२१. सूखा आवला २ सेर रात को भिगोदे और सवेरे पीसकर ६ सेर शक्कर की चासनी मे डाल तथा बसलोचन ३ तोला, इलायची १ तोला, पीपल १ तोला, दालचीनी १ तोला, सालम १ तोला, सोठ २ तोला, महीन करके उस चासनी मे मिलादे इसके सेवन से पुरुषार्थ बढता है।

२२ गोरखमुण्डी के सारे पौधे को छाया मे सुखाकर पीसकर हलवा बनाकर खाने से यौवन स्थिर रहता है।

२३. खसखस और भुने हुए चने २-२ तोला, शक्कर ४ तोला, नारियल की गिरी ८ तोला सब मिलाकर ५-५ तोला के लड्डू बनाकर प्रात काल ७ दिन तक खाने से बल और वीर्य बढता है।

२४. सूखे हुए शहतूत पीसकर उनकी रोटी बनाकर खाने से शरीर पुष्ट और मोटा बनता है।

२५ पुनर्नवा को दूध के साथ पीने से शरीर मोटा हो जाता है। अथवा रात्रि मे किशमिश भिगोकर सुबह खाकर ऊपर दूध पीने से शरीर दृढ हो जाता है।

२६ गेहूँ का आटा, शक्कर और दूध के साथ पकाकर अत्यन्त ठण्डा करके इस मनोहर पाक को घृत के साथ खाने से विशेष ताकत आती है।

२७ ब्राह्मी, मजीठ और वच इनके चूर्ण को प्रतिदिन शुद्ध चित्त होकर घी, दूध, शक्कर के साथ सेवन करने से व्यक्ति निरोग बन जाता है, उसकी शक्ति बढती है तथा सौन्दर्य से युक्त होकर एव शास्त्रो को जानने वाला विद्वान् बन जाता है।

२८. जस्ता भस्म को जायफल, जावित्री, इलायची, मिश्री और गाय के दूध के साथ सेवन करने से पुरुषार्थ बढता है।

२९ सालम, सफेद मूसली, स्याह मूसली, कौंच के बीज, गोखरू, चोप-चीनी, मिश्री इन सबको समान भाग लेकर कपड छान करके ३-३ माशा दोनो समय दूध के साथ लेने से पुरुषार्थ व शक्ति बढती हैं।

३० इसबगोल की भूसी २ भाग, छोटी इलायची के दाने १ भाग और मिश्री ३ भाग इनका चूर्ण १-१।। तोला तक लेकर ऊपर से गौदूध १० तोला तक पीने से शक्ति व्यक्त होती है।

३१ **असगन्ध के चूर्ण का प्रयोग** -असगन्ध को १५ दिन तक दूध या घृत या केवल उष्ण जल के साथ सेवन किया जाय तो जिस प्रकार जल वृष्टि से छोटे धान्यो की पुष्टि होती है, उसी प्रकार शरीर की पुष्टि होती है।

३२ मुनक्का १ पाव, छोटी इलायची, बसलोचन, सफेद चन्दन का चूरा, गुलाब की कली, जटा मासी, बडी इलायची, गाजवान, मुलेठी और प्रवाल पिष्टि ६-६ माशा सब पीसकर आधा सेर

मिश्री की चासनी मे मिलाकर चादी के वर्क नग ५ मिलाकर जमादे, फिर प्रतिदिन सुबह ।। से १ तोला सेवन करने से बल, बुद्धि बढती है ।

३३ गोरख मु डी की जड को दूध के साथ १—२ साल तक लगातार खाने से शारीरिक शक्ति अत्यधिक बढती है और उसके बाल भी सफेद नही होते ।

३४ जब तक गोरख मु डी मे फल नही आता है तब तक उन पौधो को इकट्ठा करके सुखाकर चूर्ण बनाकर मिश्री की चासनी व घी से खाने से ४० दिन मे बूढा भी जवान हो जाता है ।

३५ गोरख मु डी को सोठ के साथ २२ दिन तक खाने से शरीर पुष्ट होता है ।

३६ एक पत्थर या चीनी मिट्टी के बर्तन मे अच्छे आमो का रस १५-२० तोला और ५ तोला मिश्री डालकर सुबह-शाम सेवन करे । दिन मे पानी के बजाय गाय या बकरी का धारोष्ण या गर्म दूध २-३ बार पीवे, भूख लगे तो केवल आम या सूखा मेवा खावें, यदि न रह सके तो थोडा सा पानी अदरक रस मिलाकर पीले जिससे खून की वृद्धि होकर शरीर लाल टमाटर की तरह हो जाता है ।

३७ खिरेटी की जड की छाल को दूध और घृत के साथ देने से अत्यन्त बल बढता है और बुढापे की कमजोरी भी मिटती है ।

३८ अधिक दुर्बलता और आलस्य मिटाने के लिए लोहासव और द्राक्षासव १—१ भाग मिलाकर भोजन के पीछे सेवन करना चाहिये ।

३९. असगध के चूर्ण मे बग मिलाकर दूध के साथ फक्की लेने से वृद्धावस्था की कमजोरी मिटती है ।

४० प्याज के ताजे रस को नाक की नथनो मे बार-बार लगाना चाहिये जिससे कमजोरी से अचेत होने की अवस्था मे भी फायदा होता है ।

४१ पीपल, सोठ, कालीमिर्च के चूर्ण की फक्की लेने से हाथ-पैरो का ठण्डापन और निर्बलता मिटती है।

४२. छिलका और गुठली रहित गाजर १ सेर, गावजवा २ तोला, गावजवा के फूल १॥ तोला, सफेद चन्दन चूरा १॥ तोला, बहमन सफेद और तोदरीलाल १।-१। तोला लेकर अधकुटा करके ६ सेर पानी मे भिगोदें, १ रोज बाद उनमे से ३ सेर अर्क खीचले। मात्रा ६-१२ तोला तक। इससे गर्मी शान्त होती है, चित्त मे प्रफुल्लता रहती है, दिल और दिमाग को ताजगी देता है तथा कमजोरी मिटाता है।

—— नेत्र-रोग ——

सूक्ष्म वस्तुओ को अधिक देर तक देखने से जैसे सिनेमा, टेलिविजन आदि ज्यादा देखने से तथा रात्रि मे ज्यादा जागने से, शोक व क्रोध करने से, ऋतु विरुद्ध आहार करने से, अति मैथुन व अति रुदन करने से नेत्रो मे अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते है। तम्बाकू, बीडी, सिगरेट आदि का अधिक सेवन करना, तथा पौष्टिक पदार्थों का अभाव रहना, इत्यादि नेत्र रोग मे कारण है।

१. त्रिफला को भिगोकर प्रतिदिन आँखे धोने से आखो के रोग प्राय: मिटते है।

२ आँखो की शक्ति बढाने हेतु हरे शाक, दूध, मक्खन आदि पदार्थों का सेवन ज्यादा से ज्यादा करना चाहिये।

३ सवेरे उठते ही अपने वासी थूक से अजन करने से नेत्र रोग मिटता है।

४ ६ माशा फिटकड़ी को गुवारपाठा के रस मे घोटकर कासी की थाली मे बीच मे रखकर ऊपर कासी की कटोरी से ढकदे, फिर थाली को ऊपर उठाकर नीचे बीच में एक दीपक जलादे, दीपक

की आंच से ऊपर फिटकडी के फूल उड़कर ढकी हुई कटोरी मे लग जायेगे। फिर उन फूलो मे शुद्ध शोरा मिलाकर आंजने से फूला, जाला आदि नेत्र रोग मिटते हैं।

५ रुई के फोहो को ठण्डे जल के मटके पर पिचकादे फिर रात्रि में सोते वक्त उन फोहो का पानी निचोड कर गाय का घृत लगाकर आखो पर बान्धने से आखो की पीडा मिटती है। यदि मोठ की दाल की पोटली को ऊपर बान्धली जाय तो और भी विशेष आराम मिलेगा।

६. तिल्ली के तेल का कज्जल उपाड कर उसमे छोटी इलायची के दाने खूब खरल करके अन्त मे पिपरमेंट के फूलो को मिलाकर खरल करके रखले। प्रतिदिन अजन करने से आखो का गर्मवाय का पानी निकलकर आखो की ललाई, बरोडा और परमाल आदि मिटकर नजर तेज हो जायेगी।

७ गवारपाठे की गिरी पर हल्दी का चूर्ण बुरका कर गर्म कर आखो पर बान्धने से नेत्र पीडा मिटती है।

८ गवारपाठे के रस की ३–४ बून्द सोते समय कानो मे टपकाने से नेत्र पीडा मिटती है।

९ गर्मी मे आखो की खराबी मे गुलाबजल का फोहा बान्धने से आराम मिलता है।

१० नेत्र पीड़ा मिटाने के लिए -अनार के पत्ते पीसकर टिकिया बनाकर आखो पर बान्धने से लाभ होता है।

११ नेत्र पीडा और मस्तक पीडा मे जमालगोटे को पीसकर कनपटियो पर लगाना चाहिये।

१२ कालीमिर्च को थूक मे घिसकर आखो मे आजने से नेत्र पीडा मिटती है।

१३. बबूल के कोमल पत्ते घी में तलकर आखो पर बान्धने से आखो की पुरानी पीड़ा भी मिटती है।

१४ बबूल के कोमल पत्तों का रस निकालकर आखो मे टपकाने से या स्त्री के दूध मे पीसकर बान्धने से नेत्र पीडा और सूजन मिट जाती है।

१५ सोठ को पानी मे घिसकर उसकी २-३ बूंद आखो मे टपकाने से आराम मिलता है।

१६ स्त्री के दूध को आखो मे टपकाने से नेत्र पीडा मिट जाती है।

१७ रसोत और अफीम को नीम्बू के रस मे घिसकर लेप करने से आखो की पीडा मिटती है।

१८ थूहर के रस मे दीपक के कज्जल को खरल करके आजने से आख दुखना तथा गीड आना मिटता है।

१९ भोजन के पश्चात् प्रतिदिन कानो मे सरसो का तेल की २–४ बून्द डालकर आराम करने से नेत्र ज्योति बढती है और पीडा मिटती है।

२० अरीठा के बीजो की मिंजी निम्बू के रस मे खूब खरल करके गोलिया बनाकर फिर थूक से घिसकर आखो मे आजने से आँखो की ज्योति बढती है।

२१. आखो की ज्योति बढाने के लिए कनपटी और आखो के पपोठो पर लाल चन्दन का लेप करना चाहिये।

२२ जायफल को पानी मे घिसकर लेप करने से आखो की ज्योति बढती है।

२३ मालकागनी के तेल को पगथलियो पर मसलने से नेत्र ज्योति बढती है।

२४ मुलेठी के क्वाथ से आखो को धोने से नेत्र ज्योति बढती है।

२५. नीम के फूल छाया मे सुखाकर उनके बराबर कलमीसोरा मिलाकर पीसकर अँजन करने से आखो की धुध और फूली कट जाती है तथा नेत्र ज्योति बढ जाती है।

२६. आवलो को कूटकर २ घन्टे पानी मे भिगोकर औटाकर छानकर दिन मे तीन बार आखो मे डालने से जाला आदि नेत्र रोग

मिटते हैं ।

२७ हरे रग की काच की चूडी को नीम्बू मे घिसकर अजन करने से आखो की फूली और जाला कट जाता है ।

२८. तिमिर रोग को मिटाने के लिए मुह मे पानी भरलो फिर उस पानी से नेत्र छाटे परन्तु ध्यान रहे मुह मे पानी गर्म न होने पावे यदि गर्म हो जाय तो थूक कर दूसरा पानी लेकर छाटे ।

२९ बड का दूध आख मे भरने से आख का जाला कट जाता है ।

३०. बेगन की जड को पानी मे घिसकर अजन करने से आखो का जाला कटता है ।

३१ सेधानमक की सलाई बनाकर आखो मे फेरने से जाला कटता है ।

३२ गधे की डाढ को घिसकर चेचक की आख मे पडी हुई फूली मे आजने से फूली कट जाती है ।

३३ अजवाइन जलाकर खरल करके जस्ते की सलाई से आजने से फूली कट जाती है ।

३४ पुनर्नवा की जड को साँभरा के सीग के साथ घिसकर आजने से जाला (मोतिया बिन्द) कटता है ।

३५ पठानी लोद, फिटकडी, मुरदासिगी, सफेद जीरा, हल्दी इन सबको ३–३ माशा लेकर चूर्ण बनाले और चने बराबर अफीम तथा उदड बराबर नीलाथूथा व कालीमिर्च नग ४ उनमे मिलाकर फिर सफेद बारीक कपडे मे पोटली बान्धकर पोस्त के ४ डोडो को आधासेर पानी मे औटाकर फिर उस पोटली को उस पानी मे भिगोकर आखो मे लगाते रहे तो निश्चय से भयकर लाल व सूजी हुई आखे एक दिन मे ठीक हो सकती हैं । बच्चो की आखो मे अति उत्तम है ।

३६. घृत ३ तोला, मिश्री ३ तोला व कालीमिर्च १ माशा मिलाकर प्रतिदिन खाने से आखो का धुंधलापन भी मिट जाता है ।

३७. जलभगारे और धतूरा के पत्तो के रस मे रुई भिगोकर उसकी

बत्ती बनाकर छाया मे सुखादें फिर उसको तिल्ली के तेल मे जला-कर काजल बनाले फिर बासी पानी के साथ अजन करने से नेत्रो की पलको का रोग मिट जाता है।

३८. समुद्र फल को घृत के साथ घिसकर अजन करने से आंखो मे आने वाले परवाल मिटते हैं।

३९ समुद्रफल को जलभगारे के रस मे अजन करने से परवाल मिटते हैं।

४०. जहरी नारियल तथा कोडी को मक्खन मे घिसकर आजने से परवाल मिटते हैं।

४१ नेत्रो मे रोहे होने पर सत्यानाशी का दूध सलाई से लगाने से आराम हो जाता है।

४२ केर के पत्तो के रस का लेप करने से रतोधी मिट जाती है।

४३ पान के रस का अजन करने से रतोधी तथा आख के सफेद दाग मिट जाते हैं।

४४ गवार के पत्तो का साग खाने से रतोधी मिट जाती है।

४५ गाय के गोबर मे पीपल घिसकर आजने से रतोधी मिटती है।

४६ टमाटर ज्यादा खाने से रतोधी मिटती है।

४७ तुलसी के पत्तो का स्वरस कई बार आखो मे डालने से रतोधी मिट जाती है।

४८ समुद्रफल को बकरी के मूत्र मे घिसकर आजने से नेत्रो का झरना पानी आना व रतोधी मिटती है।

४९. हल्दी के लेप करने से आखो की ललाई फटकर पीप आना बन्द हो जाता है।

५० मजीठ ५ तोला की ७ पुडिया बनाले और मिश्री ५ तोला, घृत ४ तोला तथा आटा ३ तोला जिसमे १ पुडिया मिलाकर हलवा बना कर खाने से आखो का वेग मिट जाता है।

५१ सिर्गीमोरा ३ माशा शुद्ध किया हुआ तथा कालीमिर्च ८–१० नग को खूब खरल करके सूघने से पुराना से पुराना धोबा मिट जाता है।

तथा जमा हुआ पानी नाक द्वारा निकल जाता है।

५२ यदि आख पर फुन्सी (गुराजडी) हो जाय तो अपनी हथेली पर अगुलो रगड कर सेक करें या लकडी के चाटु आदि को राख मे गर्म करके आख पर सेक करने से फायदा हो जाता है।

५३ चन्दन और केशर मे लाग घिसकर लगाने से आखो की गुमडो मिटती है।

५४ २ रत्ती फिटकडी को २॥ तोला गुलाब जल मे पीसकर कुछ बुन्दे आख मे डालने से ललाई व आखा मे गीड आना बन्द हो जाता है।

५५ मीठे अनार का रस निकालकर बोतल मे भर कर धूप मे रख देने से जब वह चासनी जैसा हो जाय फिर उसका अजन करने से आँखो की सभी प्रकार की खुजली मिटती है और ज्योति बढती है।

५६ पुनर्नवा की जड को दूध मे घिसकर आजने से आखो की खुजली मिटती है।

५७ सुपारी का लेप करने से आखो की सूजन मिट जाती है।

५८ जल भगुरे के रस को १-२ बून्द आख मे टपकाने से सूजन और दर्द मिटता है तथा जाला आना मिटता है।

५९ नौसादर को महीन खरल करके अजन करने से मोतियाबिन्द मिटता है।

६० सत्यानाशी का दूध आजने से मोतियाबिन्द मिटता है।

६१. बहुत पुरानी ईंट का चूर्ण १ तोला आक के दूध मे तर करके सुखाले फिर नग ६ लोग को साथ मे खूब खरल करके थोडी मात्रा मे नाक मे सूघने से मोतियाबिंद मे फायदा हो जाता है।

६२. पत्थर या कोयला या लोहे का टुकडा आख मे गिरजाने पर उस टुकडे को निकाल ले फिर नीम की पत्तियो का रस टपकाने से घाव भर जाता है।

६३ शख की नाभि, बहेडा की मिंजी, हरडे की मिंजी, मेनशिल, पीपल, कालीमिर्च, कुट, बच इन सबको बराबर लेकर बकरी के दूध मे

महीन पीसकर आजने से फूला, तिमिर, मास की वृद्धि, नेत्रो मे काच रातौन्धा को मिटा देता है ।

६४ रस सहजना के पात को, तामे शहद मिलाय ।
उठी आँख मे आजिये, दु ख ललाई जाय ।

६५ बन तुलसी की लाय जड, पानी मे घिसि लेय ।
तनिक लगावे आँख मे, लाली सब हर लेय ।

६६ कणगच के बीजो को महीन पीसकर केसूला के रस मे कई बार पुट देकर गोली बनाले फिर उस गोली को पानी मे घिसकर अजन करने से आँखो का फूला तथा अनेक रोगो को मिटाता है ।

६७ सीसा को गला-गला कर त्रिफला के रस मे १०० बार बुझावे तथा जल भगारा के रस मे ५० बार, सोठ के रस मे २५ बार, घृत मे ५० बार, गौमूत्र मे २५ बार, मिश्री के पानी मे २५ बार, और बकरी के दूध मे २५ बार बुझाकर फिर उस सीसे की सलाई बना कर आँख मे फेरने से सब प्रकार का नेत्र रोग मिटता है ।

६८ सोठ, हरड की छाल, कुलथ, खपरिया, फिटकडी खेरसार, माजूफल, इन सबको बराबर लेकर फिर भीमसेनी कपूर, कस्तूरी, अविध-मोती इन तीनो को ऊपर वाली प्रत्येक दवा से आधा-आधा लेकर फिर समस्त वस्तुओ को महीन घोटे, नीम्बू के रस मे ३ दिन घोटकर खरल करे फिर गोली बनाकर जल मे घिसकर लगाने से तिमिर रोग मिटे, तथा स्त्री के दूध मे घिसकर अजन करने से फूला पटल मिटे तथा पानी पडता हो तो रहे, गौमूत्र में घिसकर अजन करने से रातोधा मिटे ।

६९ भगोरे के रस में वस्त्र भिगोकर, सुखाकर उसमे सेधानमक, काली मिर्च पीसकर बत्ती बनावें, फिर गोघृत म कज्जल उपाडे । नेत्रो में आजने से फायदा होगा ।

७० कान का मैल आँख में ३ दिन डालने से फायदा होता है, अथवा सरसो का तेल गुनगुनाकर आँख में डालने से आखो की सूजन

मिटती है ।

७१ चमेली की कली १००, तिल के फूल १००, कालीमिर्च नग २० पीसकर सुखाकर गोली बनाले फिर घिसकर लगाने से आँख का जाला, फूली मिटती है यह अति उत्तम दवा है ।

७२ २ अच्छे नीम्बू का रस, ४ तोला गाय के मक्खन मे मिलाकर थोडा पानी डालकर रखदे, २ दिन रात के पश्चात् उस पानी को धोकर निकालदो और उसी प्रकार उस मक्खन का २-२ दिन रात के पश्चात् २-२ नीम्बू का रस और पानी मे रखते जाओ इस तरह काँच के बर्तन मे २५ बार करो । फिर आधा चावल प्रमाण अजन करने से मोतियाबिद बढना बन्द हो जायेगा ।

७३. भीमसेनी कपूर को पुत्रवती स्त्री के दूध मे घिसकर लगाने से मोतियाबिद मे फायदा होता है ।

७४ स्तन दूध, घृत व तेल, सधानमक, बिजौरा, नीम्बू के रस मे सोठ का चूर्ण भी अच्छी तरह पीसकर आजने से आखो मे अत्यन्त फायदा होता है । अथवा घृत तेल से आँखो को तर्पण करना भी हितकर होता है ।

७५ सधानमक को अल्पउष्ण तेल मे सेवन करने स नेत्रो का वात रोग मिटता है ।

७६ त्रिफला के क्वाथ मे घृत मिलाकर पीने से नेत्र रोग मिटते है ।

७७. मोती, स्फटिकमणि, शख, सीप, सुवर्ण, चादी, चन्दन और शर्करा इन सबको बकरी के दूध मे अच्छी तरह घोटकर अजन बनाकर आँखो मे आजने से शक्ति रोग का नाश होता है ।

७८ सेधानमक, सफेद मिर्च (कालीमिर्च का छिलका निकाल लो), मेनसिल, चमेली की कोपल तथा फूल, इन सबको अम्लफलो के रस मे पीसकर बत्ती बनाकर उसको सुखालें । फिर इससे प्रतिदिन अजन करने से आँखो की खुजली और कफ से उत्पन्न समस्त विकारो को नाश करता है ।

७९ आवला का पका हुआ फल, शतावरी की जड की अच्छी खीर बनाकर उसमे गाय का घत मिलाकर प्रतिदिन खाने से दोनो आखे गरुड पक्षी की आखो के समान तीव्र हो जाती है।

८० त्रिफला का रस व ठण्डा पानी भी आखो को स्वस्थ बनाता है।

८१. अक्षिपाक शोफ (सूजन) सहित के लिए "महाजन" हितकारी है – घृत, सेधानमक तथा अम्लफलो का रस इन सबको ताम्बे के पात्र मे डालकर रगडे फिर १० दिन उसी मे रहने दे पश्चात् उसमे जाई के फूल, वायविडग का सार, सोठ, सेधानमक, पीपल मिलाकर तेल से मर्दन करे तो वह उत्तम अजन बनता है। इसी अजन का नाम महाजन है।

८२. मेढासिगी, हाडजोड कुमारी इनके स्वरस से भावित पुरानी दुष्टक (एरण्ड वृक्ष वा इण्ठ) का पिठा को मलिन कासे के दो बर्तनो मे डालकर खूब घिसे और उसमे तेल। घृत, कज्जल मिलाले। इसे आजने से सब प्रकार का नेत्र रोग मिटता है।

८३ **कफगत आँखो के लिए** – बार-बार उष्णोतर सधानमक से सेक करना चाहिये अथवा सोठ के रस को सेधानमक के साथ मिला-कर उससे कफगत आँखो को सेचन करना चाहिये।

८४ त्रिफला यानी तीनो चीजो को समान लेकर रात्रि मे भिगोकर गर्म पानी मे रखे। प्रात काल उसका पानी नितारकर पीवे और उसीसे आखे धोवे। इससे मोतियाबिंद व आखो का गदलापन और ललाई मिट जाती है।

८५ कपूर चन्दन, लता, कस्तूरी, हरपार रेवडी, लोग, ककोल, जायफल, केशर व मुलेठी इन सबका चूर्ण करके फिर बत्ती बना ले। उस बत्ती को गाय के घृत से जलाकर अजन तैयार करले। इसका नाम हिमशीतल अजन है, यह नेत्रो के लिए हितकारक है और शीतगुण युक्त है।

८६ शख का अच्छी तरह चूर्ण करके फिर उसको स्तन दूध के साथ लोहे के दो बतनो मे डालकर खूब रगडे (लोहे के बर्तन मे डालकर

लोहे की मूसली से) रगडे। फिर उसे बार-बार शक्कर से धूप देकर पित्तजन्य रोग से पीडित आखो मे हमेशा अजन करना चाहिये।

८७ आखो दाह से पीडित होने पर मुलेठी के कल्क मे भैस का दूध मिलाकर गालन करे। फिर उसमे कपूर मिलाकर सेवन करे। अथवा इसी कल्क को घृत या गन्ने के रस मे सेवन करे।

८८ प्रात काल शौचादि क्रियाओ से निवृत्त होकर मु ह मे पानी भरकर मु ह को फुलाकर फिर ठण्डे पानी से आखो के छीटे मारना चाहिये इससे आखो की बीमारी मिटती है और शान्ति मिलती है। यह आखो का व्यायाम है।

८९ हरड, बहेडा, आवला, कमलगट्टा और मुलेठी इन सबका चूर्ण करके बराबर की लोहभस्म मिलाकर मात्रानुसार सेवन करने से यह तिमिहर लोह जैसे चन्द्र अधकार को दूर करता है वैसे तिमिर रोग नष्ट हो जाता है।

९० वृद्धो के लिए नेत्र ज्योति –असगन्ध के महीन चूर्ण को आवला के रस मे, मात्रा क्रमवृद्धि से १ तोले तक प्रतिदिन सेवम करना चाहिये।

९१ सोना मक्खी शहद मे, घिसके आजे जोय। या अजन को आजिके, छर और फूली खोय।

९२ नेत्रो की बाफनी के रोग के लिए –बादाम की गिरी को स्त्री के दूध मे घिसकर लगाने से फायदा होता है।

९३ आँख के नासूर का इलाज –अलसी और मेथी का अर्क निकाल कर आखो मे टपकाने से फायदा होता है।

९४ पलको पर सूजन आजाने पर मोम को गर्म करके लगावे। अथवा बडी कौडी को पानी मे घिसकर पलका पर लगाने से फायदा होता है।

९५. गेरू ४ तोला, अफीम १४ माशा, सोठ ३॥ माशा, कतीरा गोद ३॥ माशा इन सबको कूट छान कर और हरे धनिया के रस या पोस्त

के डोडे के पानी मे घोटकर गोलिया बनावे और छाया मे सुखाले फिर आवश्यकतानुसार पानी मे घिसकर आंख के पपोटो पर लेप करें। यदि सर्दी हो तो जरा गुनगुना करले। इससे आँखो मे सब प्रकार का फायदा होता है।

९६. भुनी हुई फिटकडी ३॥ तोला, हल्दी ७ माशा, अफीम ५ माशा, इनको पके हुए नीम्बू के रस मे घोट कर लोहे के पात्र मे डालकर मंद-मद आच पर पकावे। गाढा होने पर गोलिया बनाले। फिर इस गोली को पानी मे घिसकर नेत्रो पर पतला लेप करे और पलको के किनारो पर लगावे। इससे नेत्रो का शूल मिट जाता है।

९७ **आँखो पर बांधने की दवा** –गेहूँ का मैदा, लोद और घृत प्रत्येक १४-१४ माशा सबको सानकर गोली बनाले। फिर १ गोली ठीकरा पर रखकर आग पर गर्म करके आँखो पर बान्धने से विशेष फायदा होता है तथा सूजन शूल आदि भी मिटते हैं।

९८. हरड की छाल, सेंधानमक, गेरू, और रसोत इन चारो को समान भाग लेकर पानी मे पीसकर आँखो पर लेप करने से नेत्र रोग मिटता है।

९९ नीम्बू के रस को लोहे के पात्र मे डालकर घिसते रहे जब कुछ गाढा हो जाय तो आँखो पर लगाने से दर्द कम हो जाता है।

१०० अफीम, फिटकडी का फूला और लोध १-१ माशा लेकर महीन पीसकर लोहे की कढाई मे गर्म करके फिर नेत्रो पर लेप करने से आँखो का दुखना मिटता है।

१०१. जिस दिन आँख दुखनी आवे उस दिन धतूरे के पत्तो का रस गुनगुना कर कान मे टपकाना चाहिये। यदि बाई आँख दु खे तो दाहिने कान मे और दाहिनी दु खे तो बाये कान मे टपकाना चाहिये। इससे आँखो का दर्द वेग मिट जाता है।

– नेत्र रोग पर पोटली –

१०२. पठानी लोध, फूली हुई फिटकडी, रसोत और मुलेठी १-१ माशा

लेकर महीन करले इसमे से १ माशा लेकर अच्छे सफेद कपड़े में पोटली बनाले, फिर इस पोटली को गुवार पाठा के रस मे या पोस्त के डोडो के पानी मे भिगोकर आंखो पर फेरने से दर्द मिटता है।

१०३. हवा लगने से आंखो मे सुई चुभने सी वेदना होती हो तो पठानी लोध को सेक कर कपड छान कर फिर घी मे भूनें और कपड़े मे बान्धकर गर्म करके आख पर सेक करे तो नेत्र शूल मिट जाता है।

१०४ १ डोडा पोस्त का, अफीम १ रत्ती, लोग नग १, बीलगिरी भुनी हुई ४ माशा, चने के बरावर हल्दी, इमली की पत्ती २ माशा, सबको कूट छानकर पोटली बनाकर पानी मे भिगो-भिगो कर आखो पर फेरे। इससे आखो का शूल आदि मिटता है।

१०५ जीरा सफेद, लोद, भुनी हुई फिटकडी इन सबको सम भाग महीन पीसकर गुवार पाठे के रस मे घोटे तथा कपडे की पोटली मे बाधले और पानी मे भिगोकर आखो पर फेरने से अत्यन्त लाभ होता है।

१०६ अलसी २ माशा, फिटकडो का फूल्या १ माशा इनको पीसकर कपडे की पोटली बनाले फिर पानी मे भिगो-भिगो कर बार-बार आखो पर फेरने से नेत्र पीडा मिटती है।

१०७ गवारपाठे के रस को सोते समय कान मे टपकाने से बालको की आखे अच्छी होती है।

१०८. गोदिया की पत्तियो का रस निकालकर कानो मे डालने से गर्मी से आई हुई आखो की भी पीडा मिटती है।

१०९. लोहे के पात्र मे नीम्बू का रस डालकर दस्ते से इतना घोटे कि उसका रग काला हो जाय फिर आखो के पास पतला-पतला लेप करने से बड़ा फायदा होता है।

– दिवान्ध की दवा –

११०. लडकी की माता का दूध, बनफसा का तेल, कद्दू का तेल, नाक मे डाले इससे दिवान्ध रोग मिटे।

१११ ठण्डे पानी मे डुबकी लगाकर पानी के भीतर आँखे खोले। इससे दिन मे दिखने लगेगा।

– आँख की सफेदी –

११२. चमगादड की बीट और मिश्री की चासनी मिलाकर आख मे लगाने से आखो की सफेदी मिटती है।

– आँखो के पलक के बाल गिरने पर –

११३. पुराने ढोल की खाल को कोयलो के अगारे पर जलाकर राख बनाले फिर उस राख को रुई मे लपेट कर बाती बनाले पश्चात् सरसो के तेल मे उस बाती को जलाकर कज्जल उपाड ले तथा आँखो मे आजने से फायदा होगा।

– आँखो की खुजली और परमाल –

११४ २ तोला जस्त को लोहे के पात्र मे घिमकर उस पर थोडा-थोडा बथुए का रस टपकाते जाये, नीचे आग जलती रहे, ऐसा करने से वह सफेद हो जायेगा। फिर उसको आँखो मे आजने से आसू बहना, खुजली आना, ललाई, बाफनी का गलना, परभाल का आना आदि रोग मिटते हैं।

११५ बबूल की १ सेर पत्ती को २ सेर पानी मे औटाकर चौथाश रहने पर छानले फिर उस पानी को दोनो समय पलको पर लगाये। इससे बाफनी का गलना, पलको का गिरना और आँखो के कोयो की ललाई भी मिट जाती है।

११६. पुराना कपडा या रुई को तीन बार हल्दी से रगले और सुखाले फिर बिनौलो के गूदे में ३ बार भिगोकर सुखाले फिर उसकी बत्ती बनाकर सरसो के तेल में कज्जल उपाडे। आँखो मे अजन करे, नेत्र रोग मिटेंगे।

– दृष्टि बर्द्धक उपाय –

११६ अरीठे की गुठली के गुदे को नीम्बू के रस मे घोटकर गोलिया बनाले फिर प्रात काल उस गोली को थूक से घिसकर आँखो मे आजने से दृष्टि बढती है ।

११८ कालीमिर्च नग १६, पीपल ६०, चमेली की कली ५०, तिल के फूल ८० इन सबको खरल करके सुरमा बनाले । इसे आजने से दृष्टि बढ जाती है ।

११९ कालीमिच १ माशा, हरड की छाल १ माशा, हल्दी छिली हुई ३ माशा, इन सबको गुलाब जल मे घोटकर सुरमा बनाकर आजने से दृष्टि बढती है ।

१२० चमेली के फूलो की डडी मे समान भाग मिश्री मिलाकर खरल करे । फिर आँखो मे आजने से दृष्टि बढती है ।

१२१ नीम के फूलो की छाया मे सुखाकर समान भाग कलमी सोरा मिलाकर महीन पीसकर आजे तो नेत्रो की ललाई मिटती है ।

१२२ छोटी हरड और मिश्री दोनो को समान भाग पीसकर गोली बनाले फिर पानी मे घिसकर आँखो मे आजने से ललाई मिट जाती है ।

१२३ जावित्री, काली तुलसी, सफेद सुरमा, सफेदा कासगरी और कतीरा गोद समान भाग लेकर सुरमा बनावे । इसे आजने से पुराना आँखो का दर्द, आँखो की ललाई और पानी बहना आदि मिटता है ।

१२४ कत्था सफेद, रसोत, अफीम ३-३ माशा और फिटकडी की खील १ तोला इन सबको पीसकर नीम्बू का रस २ तोला के साथ पकाले और गोलिया बनाले, फिर जरूरत पर पानी मे पीसकर आँख के चारो ओर लेप करे । इससे आँखो की लाली और सूजन मिटती है । यदि कोई भी दूसरी दवा काम न करे तो इसे लगाना चाहिये ।

१२५. नशास्ता २॥ माशा, सफेद कास्कारी, कीकर गोंद, कतीरा १०॥-१०॥ माशा लेकर पीस छानकर अस्पगोल के लुग्राब मे बत्ती बनावे और आवश्यकतानुसार अर्क गुलाब मे घिसकर सलाई से आँख मे लगावे, इससे आँखो का दर्द और गर्मी से उत्पन्न आँख रोगो मे लाभदायक है तथा आँखा की जलन को भी मिटाता है।

१२६ अफीम १ तोला, रसौत ४ तोला, फिटकडी ६ माशा, मिश्री १॥ तोला लेकर सबको वर्षा या नदी के पानी मे पीसकर सुखाले फिर कासी की थाली मे घोटकर गोलियाँ बनावे, जरूरत पर पानी मे घिसकर आँखो पर लेप करे। इससे आँखो की लाली मिट जाती है।

१२७ पठानी लोद और सूखा आवला ३-३ माशा लेकर थोडे से गाय के घृत मे मदाग्नि पर सेकले फिर ठण्डे पानी मे बारीक पीसकर आँखो के बाहर चारो ओर लेप करे। ध्यान रहे कि दवा आँख से अन्दर न जाने पावे। इससे गर्मी से दु खता हुई आखो को आराम मिलता है तथा पीडा और लाली मिटती है।

१२८ रसौत और पीली हरड की छाल ३-३ माशा लेकर पानी के साथ पीसकर मन्दोष्ण करके आँखो के चारो ओर बाहर लेप करे इससे आँखो का रोग मिटता है।

१२९ १० तोला पानी मे १॥ माशा नमक मिलाकर उसमे रुई भिगोकर बार-बार आँखो पर रखे। इससे दु खती हुई आँखो को लाभ होता है।

१३० नहाने का अच्छा साबुन ५॥। तोला, तूतिया और राल ३॥ ३॥ माशा लेकर साबुन को चाकू से बारीक करके लोहे के बर्तन मे डाले और उसे आग पर पिघलावे। पिघलने पर उसमे तूतिया का चूर्ण डालकर लोहे की मूसली से अच्छी तरह चलावें, जब दोनो वस्तु पानी जैसी हो जाय तो उसमे राल का चूर्ण मिलाकर आग तेज करदे और लोहे की मूसली से चलाते रहे, जब दवा का रग

काला हो जाय तो उतारले और ठण्डा होने पर सुरक्षित रखें। इसमे से १ राई बराबर दवा लेकर सोपी आदि मे पानी मिलाकर सलाई से आँखो मे लगावे। इससे जाले-फूले कटते हैं तथा मोतियाबिन्द की शुरुआत मे अत्यन्त उपयोगी है तथा धुध के लिए भी गुणकारी है। नोट – यह आँख मे ज्यादा लगती है तो बच्चो की आँखो मे न डाले।

१३१ अफीम १ माशा, फिटकडी २ माशा, इमली की कोपल १ तोला, हल्दी ३ माशा, लोग नग १०, सफेद इलायची के दाने २ माशा, काली हरड १ माशा, सेधानमक २ माशा लेकर सबको नीम्बू के रस मे घोटकर बत्तिया बनाले नीम्बू का रस जितना ज्यादा डाला जाय उतना ही अच्छा है। इसे आँखो मे लगाने से पानी बहना, धुन्ध और जाला नष्ट होता है (पानी मे घिसकर लगावे)

१३२ सफेद माटी का पचाग लेकर शिला पर पीसकर ५ तोला स्वरस निकालले उसमे १ तोला भीमसेनी कपूर, ३ माशा पीपरमेट के फूल मिलाकर शीशी मे डाट बन्द करके ४० दिन तक रहने दे पश्चात् छानकर इस द्रव को सोते समय सलाई से आँख मे डाले। इससे मोतियाबिन्द, कुकेर तथा धुधजाला मिटता है।

१३३ तिल के पुष्पो पर पडने वाली ओसकणो को पिचकारी से शीशी मे इकट्ठा करले। इसे नेत्रो मे डालने से नेत्र सम्बन्धी सब रोग मिटते है।

१३४ हरी दूब के रस का लेप करने से आँख का दुखना और गीड आना मिटता है।

१३५ पुनर्नवा की जड को छाया मे सुखाकर चूर्ण करें और घी मे मकोरकर बासी पानी में गोली बनाले फिर पानी के साथ घिस कर अजन करने से आँखो मे परलो का आना बन्द होता है।

१३६ जर्दे के पत्तो की बीच की डन्डी को चाकू से सलाई बनाले और प्रतिदिन २-३ बार आँख मे फेरने से आँखो का बहता पानी

बन्द हो जाता है ।

१३७ सेधानमक १ तोला और मिश्री २ तोला को पीसकर काजल बनाले और अजन करने से आँखो का मोतियाबिन्द और जाला आदि कट जाते हैं ।

१३८ पुनर्नवा की जड के बारीक चूर्ण को साभरसीग के साथ आँखो मे आजने से काला मोतियाबिन्द भी मिट जाता है ।

१३९. बडी हरड १ तोला, बहेडा २ तोला, आँवला ३ तोला, मुलेठी, बसलोचन और पीपल ४-४ माशा तथा मिश्री १४ तोला का चूर्ण बनाले और घी के साथ अवलेह बनाले मिश्री की चासनी मे । मात्रा १ तोला साते समय खाने से तिमिर, फूला, ट्रकोमा, आदि नेत्रो के सभी रोग मिटकर ज्योति बढ जाती है ।

— कान-रोग —

कानो को पानी से बचाना चाहिये अन्यथा अनेक रोग उत्पन्न होने की सभावना रहती है । तेज आवाज या तेज चोट लगने से कान फटने का डर रहता है, तेज चीज से कान को खुरचना भी हानि कारक है ।

१. अलसी के तेल को गर्म करके कान मे डालने से कान पीडा मिटती है ।

२ आम के पत्तो के रस को गुनगुना करके कान मे डालने से कान पीडा मिटती है ।

३ प्याज के बीज के भाग को गर्म करके कान मे रखने से कान की पीडा मिटती है ।

४ गुवार पाठे का रस गुनगुनाकर कान मे डालने से कान पीडा मिटती है ।

५ बकरी के दूध को कान मे डालने से कान पीडा मिटती है ।

६ भाग के पत्तो के रस मे बत्ती भिगोकर कान मे रखने से भी कर्ण पीड़ा मिटती है ।

७. गुगल और जीरा पीसकर कान मे धूणी देने से कान का दर्द अवश्य मिट जाता है।

८. समुद्र फल और केशर को बकरी के दूध मे घिसकर कान मे डालने से पोडा मिट जाती है।

९ नीम के पत्तो का बफारा देने से कान का मेलु निकलाकर पीडा मिटती है।

१० ऊट का मूत्र कान मे डालने से कान पीडा मिटती है।

११ कान की असह्य वेदना मे .– गाय की बछिया का गोबर एक मिट्टी के पात्र मे रखकर पानी भरकर आंच पर चढादे, फिर उसमे से निकलने वाली बाफ से सेक करने से तत्काल आराम होता है, कोडे तथा वातादि तकलीफे दूर हो जाती हैं।

१२ कत्था पीसकर कान मे बुरकाने से कान बहना मिटता है।

१३ सहजना का गोद पीसकर कान मे बुरकाने से कान बहना मिटता है।

१४ मेथीदाना दूध मे पीसकर छानले फिर गुनगुनाकर कान मे टपकाने से कान बहना मिटता है।

१५ कोडो भस्म कान मे डालकर ऊपर नीम्बू का रस डालने से कान बहना बन्द हो जाता है।

१६ सूरज मुखी के पत्तो के रस मे तेल मिलाकर डालने से कान का पीप बन्द हो जाता हे।

१७ कान या नाक का बहना मिटाने के लिये चूने के पानी मे बराबर दूध मिलाकर पिचनकारी देने से फायदा हो जाता है।

१८ फिटकडी और उसका बीसवा भाग हल्दी लेकर पीसकर कान मे बुरकाने से कान बहना बन्द हो जाता है।

१९. आधा रत्ती कली का चूना गौमूत्र मे मिलाकर कान मे भरकर रोगी को एक घण्टा सुलाये ताकि दवा बाहर न निकले, इस प्रकार हर तीसरे दिन करने से कान बहना बन्द हो जाता है।

२०. सफेद दूब का रस ८ तोला, मूली का रस ५ तोला, सेंधानमक १ तोला और तिल्ली का तेल १ पाव भर इन सबको पकाकर कान मे डालने से पीप और कम सुनना मिटता है।

२१ बिना छेद का आक का पत्ता पीला आग पर तपाकर रस निकालकर १५ दिन कान मे डालने से बहिरापन मिट जाता है।

२२ तसतुम्बे के पके हुए फल को या उसके चिलके को तेल मे औटाकर कान मे डालने से बहिरापन मिटता है।

२३. ऊँटनी का मूत्र कान मे डालने से बहिरापन मिटता है।

२४ जीरा को दूध के साथ लेने से बहिरापन मिटता है।

२५ लहसुन की २ गोली को १। तोला तेल मे तलकर १-२ बून्द टपकाने से बहिरापन मिटता है।

२६ कटेरी की धूनी देने से कान के कीडे साफ हो जाते है।

२७ ताजे प्याज का रस निकालकर गर्म करके कान मे डालने से कीडे और पीडा नही रहती है।

२८ भाग के स्वरस को कान मे डालने से कान मे कीडे नही रहते तथा पीडा भी मिटती है।

२९. आक के पीले पत्ते पोछकर घी लगाकर आग पर तपाकर जब सिमटने लगे तो हथेली में मसलकर कान मे निचोडने से कर्ण शूल मिट जाती है।

३० अर्जुन के पत्तो का स्वरस डालने से कर्ण शूल मिट जाती है।

३१. गिलोय को पानी मे घिसकर गुनगुनाकर कान मे डालने से कान का मल या चोटो आदि निकल जाते है।

३२ नीम्बू का रस और सोडाबाई कार्ब मिलाकर थोडा-थोडा डालने से कान साफ हो जाता है।

३३ मूसाकर्णी का स्वरस कान मे डालने से कान का घाव मिट जाता है।

३४ चमेली के तेल मे पीसा हुआ हलुवा गर्म करके कान मे डालने से

कान की खुजली मिट जाती है ।

३५ अलसी को प्याज के रस मे पकाकर कान मे डालने से कान के भीतर की सूजन मिटती है ।

३६ जायफल को पीसकर लेप करने से कर्ण शूल की गाठ और दूसरी पेशियो की सूजन मिटती है ।

३७ तुलसी के पत्ते और एरण्ड की कोपले बराबर पीसकर नमक मिलाकर गुनगुना लेप करने से कान के पीछे की सूजन मिटती है ।

३८ असली हीना का अत्तर (इत्र) कान मे डालने से पीडा मिट जाती है ।

३९ मूली की जड का रस, कडवा तेल और मधु (चासनी) इनको गर्म करके कान मे डालने से बहरापन मिटता है ।

४०. मोटी सोप के चूर्ण को कडवा तेल मे पकाकर कान मे डालने से कान का फोडा भी मिटता हे ।

४१. बादाम का तेल डालने से कान मे शब्द होना मिट जाता है ।

४२ सरसो का तेल डालने से सर्दी से होने वाली कान की गुनगुनाट मिटती है ।

४३ आक के नये पत्ते का रस गुनगुना कर कान मे निचोडने से सुनाई देता है ।

४४. पोदीना का अर्क और तिल का तेल बराबर गर्म करके कान मे डालने से बहिरापन मिटता है ।

४५ सोहागा पीसकर कान मे डालें तथा ऊपर नीम्बू का रस डाले जिससे थोडी तकलीफ तो जरूर होगी परन्तु इससे कान का नासूर तथा पुराने घाव मिट जाते हैं ।

४६. मेथी के चूर्ण को स्त्री के दूध मे घोलकर टपकाने से कान का पीप बन्द हो जाता है ।

४७. सुदर्शन के पत्ते निचोड़कर कान मे डालने से कान की गुमडी भी मिटती है ।

४८. माँजू फल को तेल में पकाकर कान मे डालने से कान की पीडा मिटती है।

४६. बकरी के दूध मे थोडी अफीम मिलाकर कान मे डालने से कर्ण शूल मिटती है।

५०. सेंधानमक, हींग, अदरक के रस को बकरे के मूत्र मे या लहसुन के रस मे मिलाकर कान मे भरने से कर्ण शूल मिटती है। इस दवा को कान मे भरकर लेटे रहना चाहिये।

५१. पीली कौडी बारिके, निम्बू के रस से पीस। डोर करके गुनगुनो, जाय कान को ठीस।

५२ मोटी सीपहिं पीस के, कडवे तेल मिलाय। तेल छान के डारिये, ब्रण कान का जाय।

५३ मिट्टी पीस के बुरकिये, सूखे पात कनेर। पीव परे हूँ घाव को, सूखत लगे न वेर।

५४. सराव का फोहा भरकर कान मे डाले पोछ कान के फोहा का डाट लगादे थोडी ही देर मे कान को भडकादे तो समस्त कान के कीडे नष्ट होकर बाहर निकल जायेंगे और यदि नाक के रास्ते मगज मे कीडा पड जाम तो मुनीय नाम की दवा को पीसकर पुग्ली डालकर दूसरे आदमी से फूक मरवादे यानी इस दवा को नाक मे ऊपर चढादे और गोमा बून्टी का बफारा देवे तथा गोमा बूटी सिर पर बान्धे इस प्रकार ३ दिन करने से सिर के कीडे नाक द्वारा निकल पडेगे फिर रोगी को अलोना दलिया खाने को देवे इस दवा को मलीन भी कहते है।

५५ सेजना के मूल का रस, अदरक का रस, इसमे सेधानमक मिलाकर गर्म करले और उसे कान मे डाले। इससे कफ के विकार से उद्रिक्त कर्ण रोग उपशाम हो जाता हे।

५६ बकरी के मूत्र मे लहसुन, अकौवारस व सेधानमक मिलाकर गर्म करके कान मे भरे। इससे भी कफ से उत्पन्न कर्ण रोग मिट जाता हैं।

५७ निम्ब तेल, सेंधानमक इन दोनो से कान को भरने से अधिक कृमि-युक्त कर्ण रोग मिटता है।

५८ निसोथ, हल्दी, अमलतास, कुडा की छाल इनके पकाये हुए कषाय से कान को धोना चाहिये अथवा दीपिका तेल को भी कान मे भरने से कान के कृमि व भयंकर शूल मिटता है।

५६ अत्यधिक कर्ण रोग वाले को कुछ गर्म घी के साथ दूध मिलाकर पिलाना चाहिये अथवा बला हुआ तेल शिर मे लगावे अथवा तेल के फोहे को शिर पर रखे। इससे कर्ण रोग मिटता है।

६० केमुक (पेचुका) अकोल का फल, अदरक का रस, जटामासी, सेजन का रस, देवदारु, बास की त्वचा, लहसुन, हीग, सेधानमक, सोठ, मिर्च, पीपल इन सबके क्वाथ मे आठ प्रकार का मूत्र इन सबको घृत या तेल मे सिद्ध करे। इस तेल को थोडा गर्म करके कान मे भरे तो कर्णगत समस्त रोग मिटते है।

६१ कान बहता हो तो –समुद्र फेन को पीसकर कान मे डालना ऊपर से छना हुआ नीम्बू का रस डालना चाहिये, जब कान पर झाग आजावे तो रुई से झाग पोछना, पीछे फिटकडी के पानी से कान साफ करना चाहिये, अन्त मे कान को पोछकर सरसो का तेल डालकर ऊपर रुई लगा देनी चाहिये।

६२ कान मे फोडा होने पर –फिटकडी सफेद, समुद्रफेन पीसकर कान मे डालकर ऊपर से नीम्बू का रस डाले, जब मवाद आना बन्द हो जाय और पीडा शान्त हो जाय तो मूली के पत्ते मीठे तेल मे जलाकर छानले और उस तेल को कान मे डालने से आराम होता है।

६३ खट्टे अनार के दानो को निचोड कर १० तोला रस निकालले और उसके छिलके को पानी मे उबाल देकर मल-छानले, फिर उसमे ६ माशा सिरका, ५ तोला रोगन गुल और ३ माशा कन्दरु गोद मिलाकर पुन पकावे जब रस जल जाय तो तेल को छानलो उसे गनगुनाकर कान मे डालने से कर्ण पीडा, कम सुनना, या न

सुनना, आदि रोग नष्ट हो जाते हैं। अनेक बार ज्वर या अन्य रोग से कम सुनाई देता हो या कानों मे हर समय बाजे बजते हो ऐसी दशा मे यह तेल अत्यन्त उपयोगी है।

६४ नीम के पत्तो का बफारा देने से कान का मैल निकल जाता है।

६५ तसतुम्बे के पके हुए फल को नारियल की गिरी के साथ गर्म करके लगाने से कान मे यदि भयकर घाव हो तो वह साफ होकर भर जाता है।

— नाक-रोग —

१ नकसीर बन्द करने के लिए नीम के पत्ते और अजवाइन को बारीक पीसकर कनपटियो पर लेप करना चाहिये।

२ आवलो को पानी मे भिगोकर नरम होने पर उनकी टिकडी बना-कर तालु पर बाधने से नकसीर मिटती है।

३ आम की गुठली की गिरी को चूर्ण करके नस्य लेने से नकसीर बन्द हो जाती है।

४. ठण्डे पानी को शिर पर गिराने से नकसीर बन्द होती है अथवा बर्फ को शिर पर रखने से भी फायदा होता है।

५ चौलाई और नीम के पत्ते पीसकर कनपटियो पर लेप करने से नकसीर बन्द होती है।

६. स्त्री के दूध मे भौंरा माटो मिलाकर सू घने से नकसीर मिटती है।

७. ऊँट के बालो को जलाकर उस राख को सू घने से नकसीर मिटती है।

८ गाय का कच्चा दूध १ पाव और मिश्री मिलाकर दिन मे दो बार पीने से नकसीर मिटती है।

९. जीरे का चूर्ण, घृत और शक्कर के साथ नाक मे टपकाने से पीनस मिटती है।

१० आधा सेर पानी को औटाकर आधा करके सोते समय कई दिन पीने से पीनस मिटती है।

११ तुलसी के पत्तो के चूर्ण की नस्य लेने से नाक से आनी वाली बुरी गन्ध मिटती है।

१२ तुम्बे की गिरी के रस की १-२ बून्द नाक मे टपकाने से नाक की गन्ध मिटती है।

१३ नाक के मल की गन्ध मिटाने के लिए बालछड सूघना चाहिये।

१४ कलिजन की पोटली कर सूघने से अधिक छीक आनी मिट जाती है।

१५ मोम का धूवा सूघने से नाक बन्द रोग मिटता है तथा छीके आती है।

१६. दोब, आवला को पीसकर शिर पर लेप करने से नकसीर तत्काल बन्द होती है।

१७ दोब के रस की या दाडम के रस की नास देने से नकसीर मिटती है।

१८. १०० बार धोये घृत को मस्तक पर मलने से नकसीर मिटती है।

१९ घृत, गुग्गल और मोम इनकी नाक मे धूनी देने से छीक मिटती है।

२० आवला को घृत मे भूनकर मस्तक पर लेप करने से नकसीर मिटती है।

२१. प्याज के रस की नस्य देने से नाक का बहने वाला खून बन्द हो जाता है।

२२. ऊँट के बालो को जलाकर उस राख को लगाने से नाक का फोडा-फुन्सी मिटती है।

२३. छीक बन्द नही होय जो, सेधा जल धुलाय। नस्य लेय जल तास का, छीक बन्द हो जाय।

२४ **नकसीर का इलाज**—बबूल की फली १ तोला, बबूल का पत्ता १ तोला, हरी मेहदी १ तोला, सूखा आवला १ तोला सफेद चन्दन

१ तोला इन सबको पीसकर लगाने से निश्चित फायदा होगा।

२५. नाज का बीज १ तोला, सफेद चन्दन १ तोला, कपूर ६ माशा इन को पीसकर हरे धनिया के रस मे मिलाकर लेप करने से असाध्य नकसीर मिट जाती है।

२६ **नाक के अन्दर घाव होने पर** –मोम पीला १ तोला, गुल रोगन ३ तोला मे मोम को पिघलावे फिर उसमे मुरदासग २ माशा, बग ४ माशा इन सबको मिलाकर नाक मे भरने से नाक के भीतर का घाव तत्काल मिटे।

२७. बनशन के फूल ६ माशा, बिहीदाना ५ माशा इन दोनो को थोडे पानी मे औटावे और मसलकर छानले फिर इसको २ तोला गुल रोगन मे मिलावे और १ तोला सफेद मोम मिलाकर मलहम बनाकर घाव पर लगाने से नाक का घाव मिटता है।

२८ मकडी का जाला जलाकर नाक मे फूकने से नकसीर बन्द हो जाती है।

२९ गधे की लीद का रस नाक मे टपकाने से नकसीर बन्द हो जाती है।

३०. कबूतर की बीट सूघने से नकसीर बन्द हो जाती है।

३१ नीम और चौलाई के पत्तो को पीसकर बान्धने से नकसीर मिटती है।

३२ केर ६ माशा और मिश्री १॥ तोला के २ भाग करके ठण्डे पानी से लेने से नकसीर और पाखाना मे आने वाला खून तत्काल बन्द हो जाता है।

३३ **नाक तथा मूत्र मे रुधिर आवे तो** –दूब को मिश्री के साथ पीसकर पिलाना चाहिये।

– वमन–रोग –

बासी और गन्दी वस्तुओ के खाने से, अतिशीघ्र भोजन करने से, पेट मे कीडे होने से स्त्रियो के गर्भ धारण से, वात-पित्त और कफ के

कुपित होने से खाए गये पदार्थ मुख द्वारा निकलते हैं, इसी रोग को वमन, उल्टी, छर्दि, क्षय आदि नाम से कहते है। कई बार खाली पेट भो उबकाई आती है, और पानी सा निकलता रहता है तथा कभी-कभी थोडासा पानी भी न पचकर निकल जाता है। बेचैनी, घबराहट, जी मचलना, मुह फीका होना, मुह कडवा रहना, छाती भारी होना तथा आंखो के आगे अन्धेरा छा जाना आदि इसी रोग के लक्षण हैं। अक्सर बिना देखे वस्तुओ के खाने से पेट मे मक्खी चले जाने से भी होता है।

१ अगर को पानी मे घिसकर पिलाने से वमन रुकता है।

२ अजवाइन और लोग की टोपी को मिश्री की चासनी मे चाटने से वमन मिटता है।

३ अतीस और नाग केशर के चूर्ण की फाकी लेने से वमन मिटता है।

४ नारगी के छिलके का चूर्ण दूनी शक्कर मिलाकर फाकने से वमन मिटता है।

५ लोग और दालचीनी का क्वाथ पीने से वमन बन्द हो जाता है।

६ चनो को भिगोकर उस पानी को पिलाने से वमन रुकता है।

७ ईंट को गर्म करके पानी मे बुझाकर उस पानी को ठण्डा करके पीने से वमन मिटता है।

८ सुपारी और हल्दी के चूर्ण मे शक्कर मिलाकर फक्की लेने से वमन मिटता है।

९ अदरक और प्याज के रस को मिलाकर पीने से वमन मिटता है।

१०. कपूर काचरो बारीक पीसकर पानी के साथ मूग प्रमाण गोलिया बनाले। फिर २-३ गोली लेने से वमन बन्द हो जाता है।

११. पोदीना, पीपल, छोटी इलायची २-२ माशा मिलाकर लेने से वमन मिटता है।

१२ नमक का गर्म पानी पीने से भी वमन मिटता है।

१३ बड़ की जटा की राख देने से वमन रुकता है।

१४. धनिया और मिश्री पुराने चावलो के माण्ड मे लेने से वमन मिट जाती है ।

१५ लोग को आच पर फुलाकर मु ह मे चूसने से वमन मिट जाती है ।

१६ सोफ को पीसकर पानी मे भिगोकर उस पानी को पीने से वमन मिटता है ।

१७. ५ लोग का चूर्ण मिश्री की चासनी के साथ लेने से वमन मिटता है ।

१८. जहरी नारियल व पपीता के बीज को घिसकर देने से भयानक वमन मिटती है ।

१९ **यदि वमन न रुके तो** - रोगी को सीधा सुलाकर उसके मु ह मे १-१ बून्द नीम्बू के रस की देते रहे तो भयकर वमन रुक सकता है ।

२० कोमल केला खाने से भी वमन मिटती है ।

२१. २ तोला अनार के पत्ते १० तोला पानी मे रगड छानकर सुबह-शाम पीने से खून का वमन, खून के दस्त, और पैशाब मे आने वाला खून भी मिट जाता है ।

२२ सफेद चन्दन को घिसकर गोली बनाकर दिन मे २-३ बार लेने से खून का वमन मिट जाता है ।

२३ मिश्री की चासनी मे बेर की मिंगी और लोग मिलाकर देने से खाली होबड और जी मचलना मिट जाता है ।

२४. भारगी और धनिया को पानी मे औटाकर पीने से खाली होबड मिट जाती है ।

२५ पिस्ते खाने से जी मचलना और वमन मिटता है ।

२६. पोदीना, इमली और सेंधानमक पीसकर चाटने से खट्टी डकारे व वमन मिटता है ।

२७ पित्त की वमन वाले रोगी को इमली का पानी फायदा करता है ।

२८ तुलसी के पत्तो के रस मे इलायची का चूर्ण मिलाकर चटाने से वात और पित्त की वमन मिटती है ।

२९. यदि किसी दवा से वमन नही मिटता है तो चूने का पानी दूध मे मिलाकर पीने से ज्वर की वमन भी मिटती है।

३० करजवा के बीजो को सेक कर खाने से असाध्य वमन भी मिटता है।

३१ राई का पलासटर घी लगाकर पेट पर और कलेजे पर लगाने से भयानक वमन मिटता है इसको ३ मिनिट बाद हटा देना चाहिये।

३२ बोलगिरी को पीसकर चावलो के पानी मे देने से गर्भवती स्त्री का भी वमन रुकता है।

३३ धनिया का कल्क और मिश्री चावलो के पानी मे मिलाकर पीने से गर्भवती की वमन मिटती है।

३४ गिलोय के क्वाथ मे शक्कर मिलाकर पीने से वमन रोग अवश्य ही मिटता है।

३५ पुरानी माटी का दीपक जलाकर गर्म करके फिर १ पाव पानी मे बुझाकर पीने से वमन रुकता है।

३६ लघन करने से आम से उपजी वमन मिटती है।

३७. घृत मे २ पतासे डालकर खाने से १ घण्टा मे वमन मिट जाता है।

३८ बोलगिरी और आम की गुठली का काढा बनाकर मिश्री मिलाकर पीने से वमन मिटती है।

३९ मूंग और आवला को औटाकर उसमे घृत तथा सेंधानमक डालकर पीने से बादी का वमन मिटता है।

४०. उडद, मूंग, मसूर और जौ इन सबके चून से राबडी बनाकर उसमे थोडी मिश्री मिलाकर पीने से पित्त का वमन मिटता है।

४१ धणिया, सोठ, दशमूल इनका काढा लेने से बादी की वमन मिट जाती है।

४२ पीपल के छोडा को जलाकर पानी मे बुझाकर उस पानी को पीने से वमन रुक जाता है।

४३. बेर की मिंगी, आवला की मिंगी, पीपल, मक्खी की बीट और

मिश्री इन सबको बराबर लेकर महीन पीसकर ४ माशा मात्रा मे मिश्री की चासनी से चाटने से वमन मिट जाता है।

४४ शक्कर, बडी इलायची, नाग केशर, लोग इनसे सम्कृत व पीपल के चूर्ण से युक्त लाजा के (खील) तर्पण को वमन मे तथा तृषा के रोगी को खिलाने से अत्यन्त हितकारी होता है।

नोट - खील के चूर्ण को पानी मे भिगो देना इसे तर्पण कहते है।

– वमन कराने का उपाय –

४५ अगूर के सिरके मे नमक मिलाकर पीने से वमन होता है।

४६ वच का चूर्ण २ माशा से ५ माशा तक देने से वमन होता है।

४७ तालू मे अगुली फेरने से वमन होता है।

४८ राई के चूर्ण को पानी मे घोलकर देने से शीघ्र वमन होता है।

४९ कडवी तुरई के बीजो को सेवन करने से वमन होता है।

५० आक की छाल का चूर्ण १ माशा देने से वमन होता है।

५१ तसतुम्बे की जड का जुलाब देने से जमा हुआ आम और कफ वमन द्वारा निकल जाता है।

५२ मेनफल का चूर्ण २ माशा दूध मे डालकर लेने से २-३ वमन होकर आमाशय साफ हो जाता है।

५३ पीपल, मेनफल, सेधानमक इनको सम भाग लेकर ६ माशा प्रमाण गर्म जल से लेने से वमन होती है और आमाशय मे भरा हुआ कफ तथा मल निकल जाता है ४-५ वमन हो जाते है।

५४ फिटकडी पीसकर पानी मे पीने से वमन हो जाता है।

५५ गर्म पानी मे नमक अथवा तिल का तेल मिलाकर पीने से वमन होता है।

५६ मूली की जड तथा पत्ते और सोए का बीज औटाकर मिश्री तथा नमक मिलाकर पीने से वमन होता है।

५७ दूध मे रोगन गुल डालकर पीने से वमन तथा शौच दोनो होते है।

५८ मर्ग की बिष्टा पानी मे डालकर पीने से उसी क्षण वमन हो

जाता है।

५९ छोटी इलायची का दाना, बसलोचन, सतगिलोय, गुलाब के फूल और चन्दन का चूरा १-१ माशा लेकर सबको पीसकर २ तोला अनार के स्वरस मे या शर्बत मे मिलाकर थोडा-थोडा चटाने से वमन मिटता है।

६० हरा धनिया और पोदीना की चटनी दिन में कई बार खाने से वमन बन्द हो जाता है।

६१ बड वृक्ष की नरम डालियो का फाट पिलाने से रक्तयुक्त वमन मिट जाता है।

६२ रुधिर की वमन रोकने के लिए पेठे का स्वरस पिलाना चाहिए।

६३ पोदीना, पीपल, इलायची और कमलगट्टा की गिरी २।।-२।। माशा मिलाकर सेवन करने से वमन मिटता है।

६४ घृत मे सेधानमक पीने से वायु से पैदा होने वाली वमन रुकती है।

६५ कफ की वमन मिटाने के लिए ३।। माशा बालछड को पीसकर पीना चाहिए।

६६ जीरा को रेशमी कपडे मे लपेटकर बत्ती बनाकर उसका धुवा नाक मे सूघने से पुराना वमन रोग भी मिट जाता है।

६७ पित्त जन्य वमन मिटाने के लिए नीम्बू की सिकजी पीनी चाहिए।

६८ काले और मीठे फालसा के रस मे गुलाबजल तथा दूनी शक्कर मिलाकर शर्बत बनाकर पीने से वायु की वमन तथा रुधिर विकार और पेट की कमजोरी मिट जाती है।

६९ नीम गिलोय के हिम मे मिश्री मिलाकर पिलाने से त्रिषोद से होने वाली वमन भी मिट जाती है।

७०. सफेद दूब के रस को चावल की धोवन के साथ पीने से वमन मिटती है।

७१. तुलसी का रस, पोदीना और सोफ के अर्क मे मिलाकर पीने से वमन तुरन्त बन्द हो जाती है।

७२ करेलो की पत्तियो का रस ६ माशा और ७ कालीमिर्च को पीसकर पीने से सर्वप्रकार की वमन मिटती है।

७३ भोजन के बाद जहरी नारियल की कच्ची गिरी खाने से खट्टी डकारें आनी बन्द हो जाती हैं।

७४ २ तोला मेहन्दी का रस, १ तोला हल्दी और आधा तोला गुड मिलाकर चाटने से कफ पतला होकर सब बाहर निकल जाता है।

७५ नीला थोथा को आग पर फुला बनाकर आधी या पाव रत्ती को गर्म पानी मे लेकर ऊपर पेट भर पानी पीने से उल्टी होकर आमाशय मे कोई विष हो तो वमन द्वारा बाहर निकल जाता है और ओजरी साफ हो जाती है।

—हैजा-रोग—

हैजा रोग अतिशीघ्र फैलता है अत इस रोग का तत्काल उपचार करना आवश्यक होता है, क्योंकि तनिक भी लापरवाही (प्रमाद) और देरीसे रोगी की मृत्यु भी हो सकती है। रोगी के कमरे मे रखी हुई वस्तुओ का सेवन न करना चाहिए, क्योंकि हेजे के कीटाणु खाने-पीने के पदार्थों से ही फैलते है। वास्तव मे यह रोग ज्यादा-तर गदगी से फैलता है तथा इसका प्रकोप वर्षा ऋतु मे ज्यादा होता है।

हैजे के लक्षण — चावल की धोवन जैसा बार-बार वमन व शौच होना, नब्ज कमजोर होना, अजीर्ण, फूटन, दाह, कम्पन, सिर दद, उदरशूल आदि प्राय इस रोग के लक्षण होते है।

सूर्यास्त के पहले भोजन कर लेना चाहिए, भोजन हल्का सुपाच्य हो, गरिष्ठ पदार्थों का ज्यादा सेवन नही करना चाहिए, शाम के समय अल्प भोजन या फलाहार करना चाहिए, रात्रि का बासी भोजन नही करना चाहिए, बाजारू होटल तथा खोमचो की चाट आदि नही खाना चाहिए, इसमे इस रोग का बचाव होता है।

१ मकान को स्वच्छ रखना चाहिए, सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए, पाखाना व पेशाब घर की पूर्णतया सफाई रखे अथवा इस रोग से बचने के लिए नीम्बू, प्याज, मूली और अदरक का सेवन लाभदायी है।

२ हेजे से बचने के लिए प्याज पास मे रखना चाहिए तथा मकान के दरवाजो पर प्याज लटकाने चाहिए।

३ लालमिर्च, हीग और वच की गोलियाँ बनाकर देने से हेजा रोग मिटता है।

४ हेजे वाले रोगी के तम्बाखू की धूनी देनी चाहिए इससे कीडे नष्ट हो जाते हैं।

५ ४ माशा लोग, अफीम १ माशा, जायफल १० माशा का चूर्ण बना कर ३–४ माशा रोजाना गर्म जल से देने से तत्काल विषूचिका मिटती है।

६ ज्वार के भुट्टे का फूस ६ माशा पीसकर देने से हेजा रोग मिट जाता है।

७ बाजरे की ५–६ जडो को चिगदकर ३ पाव पानी मे औटाकर एक पाव रह जाने पर पिलाने से हेजा रोग मिट जाता है।

८ आक की जड को अदरक के रस मे घोटकर चने प्रमाण गोलियाँ बनाकर देने से असाध्य हेजा रोग मिट जाता है।

९. १–१ बूँद अमृतधारा को १ चम्मच पानी मे डालकर आधा-आधा घटा से देने से हेजा रोग मे फायदा होता है।

१० नीम्बू मे काली मिर्च और नमक भरकर चूसने से हेजा मे फायदा होता है।

११ हेजा रोग मे वमन और दस्त होने के पश्चात् रोगी को थोडा पानी पिलाना भी हानिकारक है।

१२ भुनी हुई हीग १ माशा, काली मिर्च १ माशा, कपूर २ माशा लेकर पहले कपूर और हीग मिलाले फिर काली मिर्च मिलाकर १६

गोली बनालें, फिर आधे-आधे घटे से १-१ गोली देने से हेजा मिटता है।

१३ जावित्री सेक कर देने से हेजे का दस्त बन्द हो जाता है।

१४ नारियल की जटा की भस्म ३ माशा तथा मिश्री ६ माशा को गर्म पानी से देने से उल्टी बन्द हो जाती है।

१५ जायफल को ठण्डे पानी मे घिसकर मर्दन करने से हेजे मे लगने वाली प्यास बुझती है।

१६ हेजे की प्यास मिटाने को बर्फ चुसाना चाहिए अथवा नारियल का पानी पिलाना चाहिए।

१७ जायफल को तेल मे घिसकर मर्दन करने से हेजे मे आने वाले बाइटे मिटते है।

१८ नीम के तेल को मर्दन करने से विषूचिका मे तथा बुखार मे आने वाले बाइटे मिटते हैं।

१९ कडवे तेल को गर्म करके मर्दन करने से हेजा मे कुक्षि की पीडा मिटती है।

२० जौ का आटा ५ तोला, जवाखार २ माशा इन दोनो को अग्नि पर गर्म करके पेट पर लेप करने से हेजे से या अतिसार से उत्पन्न पेट शूल मिट जाती है।

२१ छोटी इलायची ४ माशा, लोग ४ माशा, अफीम १ माशा, जायफल १० माशा इन सबको पीसकर ३ माशा की फक्की गर्म पानी से लेने से हेजा से उत्पन्न उल्टी दस्त बन्द हो जाते हैं।

२२ कमलगट्टा की गिरी, तगर, मुलेठी, सफेद चन्दन, इन सबको सम-भाग लेकर काढा करके पिलाने से वमन मिटता है।

२३. ताम्बे का चौकोर पत्र गले मे बाधने से हेजा रोग नही होता है।

२४ मुलैठी, चन्दन, खस, नेत्रवाला, नागरमोथा, कमल और नीम की पत्तियाँ तथा उसकी जड को चावलो के धोवन मे मथकर पीने से विषूचिका तथा तषा रोग मिटता है।

२५. इकपोथ्या लहसुन की गुली, जीरा, शुद्ध गन्धक, सेंधानमक, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, सेकीहींग इन सबको बराबर लेकर खरल करे फिर नीम्बू के रस की पुट ५० देवे और छोटे बेर के बराबर गोलियाँ बनालें। १ गोली के लेने से विषूचिका (हेजा) तत्काल मिटता है तथा अजीर्ण मिटे, भूख लगे। इसका नाम लशुनादि है।

२६ शुद्ध सोहागा १० माशा, पीपल १० माशा, शुद्ध सिंगीमोरा १० माशा, हिंगुल १० माशा इन सबको महीन खरल करके १० दिन नीम्बू के रस में खरल करे। मटर प्रमाण गोलियाँ बनालें और १-२ गोली पानी से लेने से तत्काल अजीर्ण और विषूचिका रोग मिटता है।

२७ आधा नीम्बू के रस मे ५ तोला पानी मिलाकर १ माशा जीरा व १ माशा इलायची का चूर्ण डालकर पीने से हेजे का प्रकोप मिट जाता है अथवा पोदीने के पत्तो का रस पीने से फायदा होता है।

२८. तुलसी के पत्तो के रस मे इलायची का चूर्ण मिलाकर पीने से हेजा रोग मिटता है।

— पत्थरी रोग —

१ बादी को पत्थरी के लिए—पाषाणभेद, सोरा, खारी नमक, अश्मातक, शितावर, ब्राह्मी, अतिबला, श्योनाक, खस, कंतक, लालचदन, अमरबेल, शाकफल, कटेरी, गुण्ठतृण, गोखरू, जौ, कुलथी, बेर, बेरनो और निर्मली इन सबका काढा करके इसमे क्षारमृतिका, सेंधानमक, शिलाजीत, दोनो तरह का कसीस, हींग और तूतिया, इन सबका चूर्ण मिलाकर पीने से बादी की पत्थरी मिट जाती है।

२. अरन्ड दोनो कटेरी, गोखरू, काले ईख की जड को पीसकर मीठे दही के साथ पीने से पत्थरी के टुकडे-टुकडे होकर निकल जाते हैं।

३. **कफ की पत्थरी के लिए**—जवाखार ३ माशा, नारियल के फूल ३ माशा इन दोनो को जलाकर पीसकर सेवन करने से उत्कट पत्थरी रोग मिटता है ।

४. बरना की छाल, गोखरू के बीज और सोंठ इन तीनो को समभाग मिलाकर २ तोला लेकर आधासेर पानी मे औटावे, चौथाई पानी रहने पर छानकर ठण्डा होने से २ माशा जवाखार और २ माशा पुराना गुड डालकर पीने से बादी की पत्थरी मे विशेष फायदा होता है।

५ गोखरू के बीज २ आने भर लेकर पीसले फिर बकरी के दूध मे मिलाकर पीने से पत्थरी रोग मिटता है ।

६ सहजने की जड की छाल ६ माशा आधा सेर पानी मे औटावे चौथाई शेष रहने पर छान ले फिर ठण्डा होने पर पीने से पत्थरी रोग मे फायदा होता है ।

७. **पित्त की पत्थरी के लिए**-कुश, काश, खार, गुण्ठतृण, इत्कट, मोरट, पाषाणभेद, दाभ, बिदारीकद, बाराहीकद, चौलाई की जड, गोखरू, श्योनाक, पाठा, रक्तचदन, सोठ और कुरटक इन सबके काढा मे खीराककडी, कसूम, नीलकमल, इन सबके बीज तथा मुलैठी, शिलाजीत का कल्क डालकर घी पकाले, इस घृत के सेवन से पित्त की पत्थरी खड-खड होकर निकल जाती है ।

८ **कफ की पत्थरी के लक्षण**--कफ की पत्थरी मे बस्तिस्थान ठण्डा और भारी होता है, तथा सुई चुभने जैसी वेदना रहती है ।

९ **पित्त की पत्थरी के लक्षण**—इसमे बस्तिस्थान मे जलन होती है, पेशाब करते समय मालूम होता है जैसे कोई क्षार से जलता है तथा हाथ लगाने से गर्म मालूम होता है ।

१० **बादी की पत्थरी के लक्षण**—इसमे अत्यन्त दर्द के कारण रोगी दांतो को पीसता हुआ कापने लग जाता है, दद के मारे भारी बेचैनी रहती है, अधोवायु के साथ मूत्र निकल जाता है और बूँद-

बूंद करके टपकता है।

११ अगूर की लकडी की राख ६ माशा गोखरू के रस या क्वाथ मे चाटने से पत्थरी रोग मिट जाता है।

१२ अगूर के पत्तो का शर्बत पीने से पत्थरी रोग मिटता है।

—लीवर (यकृत) रोग—

इस रोग को यकृत्, जिगर या लीवर कहते हैं, यह हृदय के दायी (जीवणी) पसली मे स्थित रहता है, और प्लीहा बायी पसली मे स्थित रहता है, ये दोनो थेलियो की तरह होते है जिससे पाचन रस बनता है इन्ही की क्रिया से भोजन पचता है, इनके दूषित होने से तथा वढ जाने से कई प्रकार के रोग उत्पन्न होते है।

१ छाछ मे हींग का बघार देकर जीरा, कालीमिर्च और नमक मिला कर पीने से लीवर रोग मे फायदा होता है।

२ लीवर की कठोरता मिटाने के लिए अमरबेल के तेल का लेप करना चाहिए।

३ लीवर मे ताकत लाने के लिए अमरबेल का क्वाथ पीना चाहिए।

४ बडी इलायची का चूर्ण ५ रत्ती प्रमाण खाने से यकृत् के घाव मिट जाते है।

५ गोमूत्र को गर्म करके कपडे से सेकने से लीवर रोग मिट जाता है।

६ नौसादर ५–६ रत्ती दिन मे ३–४ बार पानी मे घोलकर लेने से लीवर सम्बन्धी समस्त रोग मिटते है तथा इससे सूजन भी मिटती है।

७ बडी इलायची और राई का चूर्ण मिलाकर देने से यकृत् मे खून का जमाव बिखर जाता है।

८ अरबी का रस पिलाने से यकृत के खून का जमाव मिटता है।

९ करेला के रस मे तसतुम्बे की जड का चूर्ण १ माशा डालकर

पिलाने से यकृत् वृद्धि मिटती है ।

१० करेला के रस मे केशर बुरकाकर देने से भी यकृत् वृद्धि मिटती है ।

११ बथुवे के बीज ७ माशा को २१ दिन तक प्रतिदिन लेने से यकृत की गाँठ बिखर जाती है यदि उसमे पीलिया हो गया हो तो वह भी मिटता है ।

१२. कचनार की जड की अन्तर छाल के क्वाथ से यकृत की पित्त को सूजन भी मिटनी है ।

१३. काचरो के सेधानमक लगाकर खाने से लीवर मे फायदा होता है ।

१४. गुवारपाठे की गिरी के सेधानमक लगाकर सुबह खाने से लीवर की बीमारी मिटती है ।

१५. काला जामुन का सिरका बनाकर सेवन करने से लीवर सम्बन्धी बीमारी मिटती है ।

१६ लीवर रोग वाले व्यक्ति को घृत और तैल खाने का पूरा परहेज रखना चाहिए ।

१७ ४ माशा पाख भस्म अजीर के रस मे या नारगी के रस मे खाने से प्लीहा रोग मिट जाता है ।

१८ आक के पत्तो की भस्म और नमक डालकर पीने से प्लीहा मिट जाता है ।

१९ ३–४ माशा पीपल दूध मे डालकर पीने से प्लीहा मिटता है ।

२० अच्छे पके आम के रस मे मिश्री मिलाकर खाने से प्लीहा मिटता है ।

२१ ऊँटनी के दूध मे जवाखार डालकर पीने से प्लीहा रोग मिट जाता है ।

२२. सीप की भस्म मे दही मिलाकर खाने से प्लीहा रोग मिट जाता है ।

२३. आक के १०० पत्ते और १ पाव काला नमक मिलाकर हाडी मे

भरकर फूंक दो फिर भस्म होने पर अदरक के रस के साथ १–२ रत्ती खाने से प्लीहा मिटता है।

२४ सेकी हुई जावित्री और कालीमिर्च मिलाकर सेवन करने से प्लीहा और लीवर दोनो मिटते है ।

२५ यकृत् और प्लीहा का बल बढाने के लिए हरे जल भङ्गारे के पत्तो का रस पिलाना चाहिए ।

२६ आक के पत्तो की राख बनाकर नमक मिलाकर प्रतिदिन मट्ठे के साथ लेने से प्लीहा और लीवर दोनो ठीक हो जाते है ।

२७ सोरस के पेड की छाल सुखाकर जलालो जब सफेद राख बन जावे तो उसको मिट्टी के बर्तन मे भिगोदो और रात भर रखो फिर उसका पानी नितारकर उस पानी को आच पर चढा दो, जलकर क्षार रहेगी उसे शीशी मे रख दो फिर प्रतिदिन दोनो समय १–१ रत्ती ठण्डे पानी के साथ लेने से पेट का लीवर मिटकर फायदा होता है ।

२८ बाये हाथ से शिर झुकाने से प्लीहा मिटता है तथा दाहिने हाथ से शिर झुकाने से लीवर रोग मिटता है। यह एक प्रकार का व्यायाम है ।

२९ सेधानमक १–१।। तोला प्रतिदिन पानी मे औटाकर पीने से प्लीहा मिटता है ।

३० जवाखार, वायविडग, पीपल, कणगच की जड, अमरबेल इन सबको समान भाग लेकर महीन कूट छानकर ६–६ माशा गर्म पानी से लेने से प्लीहा मिटता है ।

३१ नमक साभरा, हल्दी, राई, १।।–१।। तोला को दो सेर छाछ मे चिकने बर्तन मे डालकर १५ दिन रखे, फिर ७ तोला प्रमाण प्रतिदिन २१ दिन तक पीने से प्लीहा रोग मिटता है ।

३२ सहजना की जड, सेधानमक, चित्रक, पीपल इन सबका काढा करके पीने से प्लीहा (फियो) रोग मिटता है ।

३३ बहेडा के वृक्ष की छाल का चूर्ण ६-८ माशा प्रतिदिन दूध के साथ या घृत के साथ या गुड के पानी के साथ पीने से सर्व प्रकार का उदर रोग व जीर्ण ज्वर को मिटाता है।

३४ यदि लीवर मे कब्ज हो तो आलुबुखारा नग ५ इमली ४ तोला के पानी मे औटाकर २ तोला मिश्री मिलाकर पीवे।

३५ नौसादर, साभरनमक, कालानमक (सचल), सेन्धानमक, सोहागा की खील, कचूर, काली हरड, पीली हरड, वायविडग, कालीमिर्च और सोठ १-१ तोला लेकर सबको पीस छानले फिर गुलाब के अर्क मे घोटलें चने बराबर गोलियाँ बनाले और दो-दो गोली भोजन के पश्चात् दोनो समय खावे। इससे जिगर की सूजन और सख्ती मे अत्यन्त फायदा होता है तथा भोजन पचाती है और पेट के भारीपन को भी मिटाती है।

३६ यकृत् वृद्धि मिटाने के लिए -मकोए के पौधे का स्वरस १६ तोला निकालकर पिलाना चाहिए। मकोय के पौधे का स्वरस निकालने की विधि—मिट्टी के बर्तन मे इसको इतना गर्म करे कि उसका रग हरा से बदलकर गुलाबी हो जाय, तब ठण्डा करके छानकर प्रातःकाल पिलावे।

३७ मकोय का अर्क १॥ तोला, गुलाब के फूल २ तोला, अमलतास २ तोला को पानी मे पीसकर गर्म करके लेप करने से यकृत का रोग मिट जाता है।

३८ ब्राह्मी के क्वाथ मे केशर बुरकाकर देने से यकृत् और प्लीहा के रोग मे पैदा हुई उसासी मिटती है।

— तिल्ली (लिप) रोग —

पेट के भीतर १ छोटा अवयव जो मास की पोली गुठली के आकार का होता है और पसलियो के नीचे पेट के बाये ओर रहता है, ज्वर

के ज्यादा दिन रहने से तिल्ली बढ जाती है, और कभी-कभी उसे दबाने से पीडा भी होती है, इस रोग का व्यक्ति दिनानुदिन दुबला होता जाता है उसका मु ह सूखा रहता है तथा पेट निकल आता है।

१ मूली के रस मे १।। माशा नौसादर मिलाकर सेवन करने से तिल्ली रोग मिटता है ।

२ मूली और तिल्ली बराबर पीसकर पेट के बाधने से तिल्ली रोग मिटता है ।

३. मूली के रस मे चित्रक घोटकर बेर बराबर गोलियाँ बनाकर पके हुए केले मे कुछ दिन लेने से तिल्ली रोग मिट जाता है ।

४ फिटकरी का फूल्या और सोहागा का फूल्या २-२ तोला खरल करके रखले फिर २ रत्ती मात्रा को बगला पान मे रखकर खाने से थोडे दिनो मे तिल्ली रोग मिट जाता है ।

५ करेला के फल के रस मे राई और नमक मिलाकर पीने से बढी हुई तिल्ली मिटती है ।

६ तोरई के बीजो को पीसकर गर्म करके लेप करने से तिल्ली की सूजन मिट जाती है ।

७ गाजर का आचार लम्बे समय तक खाने से तिल्ली मिट जाती है ।

८ गुवार पाठे की गिरी पर सोहागा या चित्रक बुरकाकर खाने से तिल्ली मिटती है ।

९ चूना और मिश्री की चासनी का लेप करने से तिल्ली रोग मिटता है ।

१० लोहे को लाल करके छमका हुआ पानी पीने से तिल्ली मिटती है ।

११ अजवाइन को दोनो समय ज्यादा से ज्यादा खाने से तिल्ली रोग मिटता है ।

१२ नीम के पत्ते, मूली और तिल समभाग पीसकर लेप करने से तिल्ली मिटती है ।

१३ सोहागा, सोठ, सेंधानमक और हीग इन सबको पीस कर सहजना

के रस मे घोटकर छोटे बेर बराबर गोलियाँ बनाकर लेने मे निस्सन्देह ही तिल्ली मिट जाती है।

१४ सीप की भस्म दही के साथ खाने से ताप तिल्ली मिट जाती है।

१५ सिर्फ चन्दलाई का साग तेज नमक डालकर ६ महीने तक रोटी के साथ खाने से तिल्ली कट जाती है याद रहे दूसरा साग न खावे।

१६ तिल्ली रोग वाला व्यक्ति अपना या बालक का मूत्र ३ चुल्लू पीवे तो रोग मिटे।

१७ फिटकरी, काला नमक, जवाखार, तेलिया सोहागा, नौसादर, बीड-नमक, कचेरी नमक, आक के पत्तो की राख, सोठ, कालीमिर्च, वायविडग और अजमोद इन सबको आधा-आधा पाव लेकर महीन पीसकर १ चिकनी हाडी मे भरे फिर उसमे नीम्बू का रस अच्छा भरदे तथा हाडी का मुँह बन्द करके जमीन मे गाड दे १५ दिन पीछे निकाल ले और ६ माशा मात्रा उस रस की पीवे ऊपर से काले बैल का मूत्र अथवा गर्म पानी पीवे इस तरह करने से लीवर तथा तिल्ली, गोला, कलेजे की वायु व समस्त प्रकार के उदर रोग मिट जाते है।

१८ अदरक का रस ३ तोला, गवार पाठा का रस ३ तोला, दालचीनी ६ माशा पीसकर सबको एक बोतल मे भरदे १०-१५ दिन तक दिन मे धूप मे रखे और रात मे आग के पास रखे, इस प्रकार दवा मे उत्तम खमीरा पैदा होगा। मात्रा १ से ३ तोला तक प्रति-दिन पीने से तिल्ली गलकर वह जाएगी। इस दवा को काफी दिनो तक लेना चाहिए।

१९ गवार पाठा का रस ५ सेर, अदरक का रस ३ सेर, सोठ ५ तोला, पीपल ५ तोला, कालीमिर्च ५ तोला, बडी हरड की छाल ५ तोला, बहेडा ५ तोला, आवला ५ तोला, वायविडग २० तोला इन सबको पीसकर उस रस मे मिलाकर १ हाडी मे भरकर उसका मुँह बन्द करके खेत की जमीन मे १ महीने तक गाड़ दे, फिर निकाल कर

४ तोला प्रतिदिन पीने से ताप तिल्ली तथा उदर रोग मिट जाते हैं।

२० भुना सोहागा, सज्जी, सेंधानमक और नोसादर इन सबको सम भाग लेकर महीन पीसले। मात्रा ६ माशा गुवार पाठे की गिरी पर बुरकाकर खाने से लिप व तिल्ली मिटती है।

२१ १ भाग भुना हुआ सोहागा, ३ भाग राई दोनो को महीन पीसकर सुबह-शाम १ माशा लेने से तिल्ली रोग मिट जाता है। इससे तिल्ली की सूजन और वृद्धि भी मिट जाती है।

२२ कैर की सूखी कोपलो का चूर्ण १ तोला और ६ माशा कालीमिर्च मिलाकर प्रातःकाल पानी के साथ लेने से तिल्ली मिटती है।

२३ पपीता के सूखे फल के चूर्ण मे या फल के टुकडे पर नमक लगाकर खाने से बढी हुई तिल्ली मिटती है।

२४ बकरी की मिगणी की राख ३ भाग और करील भस्म १ भाग सिरके मे मिलाकर लेप करने से तिल्ली मिट जाती है।

२५ आक के पत्तो के बराबर सेंधानमक लेकर पीसकर हाँडी मे भरकर कपड मिट्टी से मुँह बांधकर जला (भस्म) करके उसकी फाकी लेकर ऊपर मट्ठा पिलाने से तिल्ली रोग मिटता है।

२६ इन्द्रायण की गिरी बीज निकाल कर १ तोला और बडी इलायची १ पाव भर पीसकर छोटे बेर के प्रमाण गोलियाँ बनाले। दोनो समय लेने से तिल्ली रोग मिटता है।

२७ इन्द्रायण पञ्चाग का चूर्ण ३ रत्ती पानी के साथ कई दिन लेने से तिल्ली रोग का शमन होता है।

२८ ३ माशा पीपलामूल और ३ माशा भाग मिश्री के साथ कई दिन लेने से लिप मिटती है।

२९ २ माशा से ६ माशा तक सज्जी के चूर्ण मे गुड मिलाकर २१ दिन खाने से तिल्ली मिटती है।

३० बथुआ का स्वरस ३ तोला मे साभर नमक ३ माशा मिलाकर प्रातः

काल निराहार मुँह पीने से १५ दिन मे तिल्ली नियम से गलकर निकल जाती है।

३१ **तिल्ली रोग का रामबाण इलाज**—मगनेसिया साल्ट २० तोला, हराकसीस १ तोला, कुनैन ३ माशा, तीनो को बोतल मे डालकर पौन बोतल पानी भरकर कॉर्क लगाकर रखदे। दूसरे दिन से जवान आदमी को २ दिन में, बूढे को ३ दिन मे पूरी बोतल सुबह सुबह पी जानी चाहिए और बच्चे को १० तोला प्रतिदिन सुबह देने से काली दस्तें लगकर निश्चय ही तिल्ली रोग से मुक्ति मिल जाती है। दवा से मुँह कडवा होने पर छिले'हुए चने खाने चाहिए।

३२. हरड की छाल ६ माशा और रोहीडा की छाल ६ माशा का क्वाथ करके उसमे ५ माशा पीपल का चूर्ण तथा २ माशा जवाखार मिलाकर पिलाने से तिल्ली और गुल्म रोग मिटता है।

३३ तसतुम्बे को टाकी लगाकर उसमे देशी शक्कर भरदे फिर कारो लगाकर ३ दिन पानी की मटकी मे रखदे। फिर रोगी को २ तोला प्रतिदिन पिलाने से तिल्ली मिट जाती है।

३४ भागरे का रस प्रतिदिन आधा या १ तोला नियमित रूप से लेने से तिल्ली मिटती है।

३५ जामुन का स्वरस १ तोला और १॥ माशा सेधानमक मिलाकर दिन मे २ बार पीने से तिल्ली मिटती है।

३६ नीम्बू का रस १ बोतल, पीली कोडी नग ७ की खील, सज्जी फूल १ तोला, राई ६ माशा को पीसकर शीशी मे भरकर ७ दिन रखे। मात्रा ६ से ६ माशा को गर्म पानी से लेने से तिल्ली रोग मिट जाता है।

— हृदय रोग —

शरीर का मुख्य अग हृदय है, यह फेफडों के बीच मे कुछ बायी तथा बाये स्तन के नीचे रहता है। इसमे से होकर ही रक्त सारे शरीर का दौरा करता है तथा शरीर व मस्तिष्क का पोषण करता है, यही एक मात्र ऐसा अग है जो जन्म से मृत्यु पर्यन्त थोडा भी विश्राम किये बिना काम करता ही रहता है, इसका काम बन्द होते ही व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। शरीर मे सुख-दु ख, हर्ष, शोक आदि का अनुभव भी यह हृदय करता है। विशेष चिंता करने से या अकस्मात् चोट (दुख) पडने पर यह हृदय अपना स्थान छोड देता है, कब्ज के कारण उदर मे मल सड कर गैस उत्पन्न करता है फिर दूषित गैस दूषित अन्नपान आदि से तथा फोडा आदि के पीप से या अन्य कोई विष आदि रक्त मे मिलकर उसे दूषित कर देते है तब वह दूषित रक्त बार-बार हृदय मे आकर विष फैलाता है और हृदय का रोग बन जाता है।

शराब, सुलफा, गाजा, भाग, मदिरा, चरस, तम्बाकू, बीडी, सिगरेट आदि के सेवन से तथा अति मैथुन और अति परिश्रम व मानसिक चिंता आदि के होने से तथा भय आदि से भी हृदय रोग बन जाता है व हृदय कमजोर हो जाता है। इसके अतिरिक्त मल-मूत्र आदि के वेगो को रोकने से भी हृदय रोग बन जाता है इस तरह यह रोग धीरे-धीरे बढते-बढते हृदय को क्षीण करता हुआ भयानक बनकर हृदय का काम करना बन्द कर देता है इसी का नाम हृदयावरोध (हार्टफेल) है अत हृदय रोग की बिना प्रमाद चिकित्सा करानी अतिआवश्यक होती है।

—हृदय रोग के लक्षण—

एकाएक काम करते या चलते चलते छाती मे दर्द सा उठ जाना तथा तबियत बेचैन हो जाना, श्वास फूल जाना, बायें हाथ की ओर दर्द

का फैल जाना, कुछ देर दर्द कम हो जाना, फिर जोर से हो जाना आदि हृदय रोग के लक्षण हैं। हृदय रोग की उग्रावस्था मे ठण्डा पसीना आकर शरीर का ठण्डा पड़ना, हाथ-पैर मुँह तथा आँखो के नीचे सूजन व टौटलिज (फूल) जाना यह सब हृदय रोग के लक्षण हैं। ऐसी हालत मे हृदय गति के रुकने का भय रहता है।

इस रोग का सही इलाज तो यह है कि निरन्तर आत्मचिंतन करना, स्वाध्याय मे उपयोग लगाना तथा पच परमेष्ठी का करते रहना, परोपकार तथा दान कार्यों मे तत्पर रहना, ईमानदारी से व्यवहार करना तथा थोडा आमोद-प्रमोद मे भाग लेकर चिंता रहित रहना, विश्राम करना, हल्का व्यायाम करना, शरीर के मालिश और प्राणायाम आदि करने से हृदय रोग का शमन होता है।

—निषेध—

चिंता, मैथुन, अतिपरिश्रम, ऊपर चढना, जोर से बोलना तथा थकावट आने पर काम करना इस रोग म सर्वथा वर्जनीय है।

—पथ्य—

भोजन मे दूध, सेव या सेव का मुरब्बा सेवन करना चाहिए इसके अतिरिक्त हरे साग सब्जी तथा फल आदि का विशेष सेवन करना चाहिए।

१ अर्जुन और गगेरण की जड की छाल का चूर्ण बनाकर ऊपर दूध पीना चाहिए इससे हृदय के बादी का रोग मिटता है।

२. असगन्ध और बहेडे के चूर्ण की गुड मे गोलियाँ बनाकर गर्म पानी के साथ देने से हृदय की वायु पीडा मिट जाती है।

३. पारस पीपली की छाल के मध्य भाग को घिसकर लेप करने से पित्तजन्य हृदय रोग और पीडा मिटती है।

४ छोटी इलायची और पीपलामूल के चूर्ण को घी के साथ चाटने से उपद्रव सहित कफ का हृदय रोग मिटता है।

५. बालछड का लेप करने से हृदय की अधिक तीव्र वेदना तथा धडकन

कम होकर व्यवस्थित होती है।

६ गाजर को भूनकर छीलकर रातभर खुली हवा मे रखकर प्रात काल शक्कर और गुलाब के अर्क के साथ खाने से हृदय की धडकन मिटकर शाति मिलती है।

७ अनार के पत्ते ताजे लेकर आधापाव, पानी मे पीसकर छानकर सुबह शाम पिलाने से दिल की धडकन मिटती है।

८ अलसी के पत्ते और धनिया का क्वाथ पीने से हृदय की निर्बलता मिट जाती है।

६ नागरबेल के पान का शर्बत पीने से हृदय को बल मिलता है।

१० हरसिंगार के सफेद फूलो की डण्डी अलग करके उसमे दूना बूरा मिलाकर शीशी मे भरकर ४० दिन तक रखे फिर उस गुलकन्द को २ तोला प्रतिदिन प्रात काल खाने से हृदय को बल मिलता है और गर्मी का होल दिल मिटता है।

११ सेव का मुरब्बा खाने से हृदय रोग मिटता है अथवा सेव को कस-कर पानी मे औटाकर छानकर नमक कालीमिर्च आदि डालकर पीने से हृदय रोग मे फायदा होता है।

१२ खस और पीपलामूल ६-६ माशा का चूर्ण घृत मिलाकर चाटने से तीव्र हृदय शूल मिटती है।

१३ हृदय रोग वाले को मुँह मे स्वर्ण की डली या दातो मे स्वर्ण लगवाना चाहिये इससे फायदा होता है।

१४ हृदय रोग वाले को हफ्ते मे एक स्वर्ण का वर्क कोई मिष्ठान्न आदि के लगाकर खाना चाहिये इससे हार्ट मे मजबूती रहती है।

१५ ५-६ लोग को भिगोकर दूसरे दिन सवेरे उस पानी को निकालकर लोगो की टोपो हटाकर पीसना चाहिए तथा चीनी को गालकर उसमे उन पीसे हुए लोगो को मिलाकर पीने से अनेक बीमारियाँ मिटती हैं तथा हृदय रोग वाले को बहुत फायदा होता है यदि इस ठण्डाई को प्रतिदिन सेवन किया जाय तो दिमाग तर रहता है।

१६ हृदय रोग वाले को मुक्तापिष्टि व प्रवालपिष्टि दूध की मलाई या हलुवा के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

१७. दो–चार अखरोट की गिरी प्रतिदिन खाने से हृदय रोग वाले के फायदा होता है।

१८. मुरब्बे के आवलो के लगाकर सितोपलादि चूर्ण व मुक्तापिष्टी खाने से फायदा होता है।

१६ कली का चूना ३ रत्ती व गुड ५ तोला मिलाकर खाने से हृदय का वेग तथा पीडा मिटती है तथा हृदय मजबूत होता है।

२० करेले के रस मे जवाखार और मिश्री मिलाकर पीने से छाती की पीडा, कमरदर्द और कूल्हे के जोड का दर्द मिटता है।

२१. पुनर्नवा, कुटकी, चिरायता और सोठ का काढा लेने से समस्त हृदय रोग मिटता है।

२२. मेथीदाने के क्वाथ मे मिश्री मिलाकर पीने से छाती के पुराने रोग भी मिटते हैं।

२३. एक माशा फिटकडी का फूला और ३ माशा शक्कर मिलाकर ४ पुडिया बनालें फिर २–२ घण्टे के अन्तर से १–१ पुडिया देने से छाती का रुधिर आना बन्द हो जाता है।

२४. हृदय रोग वाले व्यक्ति को हर समय अपने पेट को साफ रखने का खयाल रखना चाहिये क्योंकि कब्ज आदि के होने से गैस बनकर हृदय मे गैस आने का खतरा बना रहता है।

२५. कपूर की डली को शीशी में रखकर सूघने से भी कभी-कभी हृदय रोग का दौरा निकल जाता है।

२६ लोग नग ५ व ब्राह्मी बटी गोली १ का घासा देने से दौरा निकल जाता है।

२७ हृदय रोग के दौरे में गर्म चाय या दूध देना चाहिये परन्तु ठण्डी वस्तु का प्रयोग नही करना चाहिये।

२८ छाती के दर्द मे विक्स व आयोडेक्स को आहिस्ता-आहिस्ता मलना चाहिये ।

२९ छाती के दर्द मे गर्म पानी की थैली लगाना चाहिये व पूर्ण विश्राम करना चाहिये ।

३० छाती के दर्द मे सू घने की तम्बाखू सु घाना फायदेमंद होती है ।

३१ हिरण के सींग का पुट पाक करके भस्म बनालें फिर गाय के घृत के साथ चाटने से हृदय रोग तथा शूल मिटती है ।

३२ **वातज हृदय रोग नाशक योग**—लवणवर्ग, जवाखर से मिला हुआ घृत पिलाने से फायदा होता है ।

३३. त्रिकुटा, हीग, अजवाइन व सेंधानमक को खट्टे फलो के रस के साथ लेने से वातज हृदय रोग मे फायदा होता है ।

३४ **पित्तज हृदय रोग मे**—घृत, गुड व दूध से युक्त पित्त नाशक औषधियो से वमन कराना अच्छा रहता हैं या विरेचन कराना चाहिये । यह पित्तज रोग मे ही करना चाहिये ।

३५ **कफज हृदय रोग मे**—त्रिकुटा से युक्त गर्म जल से वमन कराना चाहिये या विरेचन करवाना चाहिये ।

३६ मीठे अनार का रस, मीठे सेव का रस, बीही का रस, नाशपत्ती का रस आधा-आधा सेर तथा मीठे नीम्बू का रस १। सेर, तरबूज का पानी और गन्ने का रस १-१ सेर तथा गावजुवा, गुलनिलोफर (नीलोत्पल) बादरजवोया, भूसी रहित जो, सफेद चन्दन २०-२० तोला, बसलोचन सफेद ६ तोला, और धनिया की गुली १० तोला लेकर सबको कूट-छानकर एकत्र मिलाकर रख दे और २४ घण्टा बाद १० सेर बकरी का दूध मिलाकर अर्क खीखले। मात्रा ५ तोला २ तोला अनार का शर्बत मिलाकर पीवे । इससे हृदय को बल मिलता है, गर्मी शात होती है, दिल की धडकन और घबराहट मिटती है ।

३७. बहेडा के वृक्ष की छाल का चूर्ण हमेशा १ तोला दूध तथा घृत के

साथ सेवन करने से हृदय रोग मिटता है।

३८ अर्जुन की छाल का क्वाथ पीने से हृदय मे बल मिलता है।

३६ अभ्रक भस्म २ रत्ती को द्राक्षा के रस मे लेने से हृदय रोग मे फायदा हो जाता है।

४०. हृदय रोग वाले को स्वर्ण की मोहर या डली के बघार का दाल साग खिलाने से बहुत फायदा होता है।

४१. हृदय रोग वाले को शृङ्ग भस्म २ रत्ती घृत मे चाटना चाहिये।

४२ नागफनी और थूहर के पचाग का रस देने से हृदय गति सुव्यवस्थित होती है।

४३ नागफनी और थूहर के पचाग का राख देने से पैशाब तथा दस्त होकर हृदय की क्रिया सुधरती है।

४४ बील की जड की छाल का क्वाथ पिलाने से हृदय का धडकना बन्द हो जाता है।

४५ हिरण के सीग को रेती से रेतकर उसके चूरे को हाडी मे रखकर ३–४ कपड मिट्टी लगाकर सुखा ले और कन्डो मे फूक दे। मात्रा १ से ३ माशा तक घी से चाटने पर हृदय की भयकर पीडा मिट जाती है।

— रक्त चाप (ब्लड प्रेशर) —

१ दानामेथी और सोवा की फक्की सुबह शाम कई दिन तक पानी के साथ लेने से रक्तचाप मिटता है।

२ प्रतिदिन सवेरे सात गुली लहसुन की कच्ची छीलकर खाने से रक्त चाप मिटता है।

३ पुराना ताम्बे का बडा पैसा व नेपाली ताम्बे का टुकडा लालगर्म करके पानी मे बुझाकर ऐसा पानी कई दिन पीने से रक्तचाप

बीमारी मे शान्ति मिलती है। लेकिन लो ब्लड प्रेसर होना चाहिए ।

४. रक्तचाप के रोगी को हमेशा ही ताम्बे के बर्तन का पानी पीना चाहिये ।

५ सर्पगन्धा, आवला, गिलोय, अर्जुन छाल, पुनर्नवा और असगन्ध, को समभाग लेकर चूर्ण बनाकर मिश्री की चासनी के साथ दिन मे दो बार चाटने से रक्तचाप मिटता है ।

६ सर्पगन्धा, गिलोय और आवला का चूर्ण ३ माशा की २ पुडिया बनाले, सुबह शाम पानी से लेने से रक्तचाप मिट जाता है। याद रहे गर्म वस्तुएँ वर्जित हैं ।

७ तुथ्य (मोर थोया) से ठण्डे तरीके से बनाये हुए ताम्बे को गर्म करके बुझावा दिया हुआ जल कई दिनो तक पीने से रक्तचाप बीमारी मिट जाती है ।

८ भूनाग से निकाला हुआ ताबा को गर्मलाल करके बुझावा दिया हुआ पानी पीने से रक्तचाप बीमारी मिट जाती है ।

९. मोरपख से निकला हुआ स्वर्णयुक्त ताम्बे का बुझावा देकर पानी पीने से रक्तचाप बीमारी मिटकर अत्यधिक लाभ हो जाता है ।

१० दही मे ग्लुकोज डालकर खाने से रक्तचाप मिटता है आराम न होने तक और कुछ न खावे, यदि मात्र दही से शरीर मे आलस्य प्रतीत हो तो चाय पीने से दही का उत्पन्न विकार मिट जाता है ।

११ अर्क बहार—नारगी के फूल ५ सेर, गुलाब के फूल एक सेर, सोफ, निर्बीज मुनक्का और किशमिश १५-१५ तोला, तालीसपत्र, बहमन लाल, बहमन सफेद और सकाकुलमिश्री एक-एक तोला तथा अम्बर १॥। माशा लेकर अम्बर के अलावा सबको अधकुटा करके पन्द्रह सेर पानी मे भिगोदे और २४ घण्टे बाद अम्बर को पोटली बाधकर भबके के मुंह मे (जहाँ से अर्क निकलता हो उस जगह) लगाकर ५ सेर अर्क खीच ले। मात्रा ४ से ८ तोला तक।

इससे हृदय की धडकन और घबराहट मिट जाती है ।

—चक्कर आना और सिर घूमना—

१२. पोस्त का दाना और काहू के बीज ३-३ माशा तथा मिश्री २ माशा पीसकर खावे यह मात्रा है, अनुपान बकरी के ८ तोला दूध मे २ तोला शर्बत निलोफर मिलाकर पीवे। इससे चक्कर और भूंवल (चक्कर) आना मिट जाता है।

१३. सूखे धनिया के चूर्ण ३ माशा को एक मुरब्बा के आंवला पर छिडके और उसे चांदी के वर्क मे लपेटकर खावे, फिर ३ माशा कद्दू के बीज पानी मे पीसकर उसमे दो तोला शर्बत निलोफर मिलाकर पीवे। इससे यदि दिमागी कमजोरी के कारण चक्कर आते हैं या आँखो के आगे अन्धेरा आता हो तो यह योग अति उत्तम है।

१४. गेहूँ की भूसी (चोकोर) और नमक बराबर लेकर एकत्र मिलावे और पोटली मे बाधकर उससे सिर पर सेक करें। इससे मूर्छित होकर काष्ठवत् पडा हुआ रोगी भी होश मे आ जाता है, याद रहे यदि शीघ्र होश मे न लाया जाय तो रोगी के मरने का डर रहता है।

—जलोदर-रोग—

लाल या हरी मिर्च अधिक खाने से, ज्यादा जुलाब लेने से वमन होने के पश्चात् शीघ्र ही ठडा पानी आदि पीने से, इत्यादि कारणो से नसें दूषित होकर क्रम-क्रम से बढकर जलोदर की उत्पत्ति हो जाती है।

लक्षण :— जलोदर रोग मे नाभि के पास गोल व चिकना होकर पानी भरी मशक के समान बढता जाय तब रोगी अति दुःखी होता है और उसका शरीर कापता है तथा पेट मे गड़-गड शब्द होता रहता है, तो जान लो जलोदर रोग है।

१. पाव भर काले नमक को पीसकर मिट्टी के बर्तन में आक के १०० पत्तो के साथ तह देकर कपड मिट्टी करके गजपुट मे फूंक दें फिर ३–४ माशा उस भस्म को छाछ (मट्ठा) के साथ सुबह-शाम फक्की देने से जलन्दर रोग मिटता है और तिल्ली आदि यन्त्र जो पेट में बढ़ जाते हैं वे सब अपने स्थान पर आ जाते हैं।

२ आक के हरे पत्ते २० तोला और १। तोला हल्दी इन दोनो क पीसकर उडद के बराबर गोलिया बनाकर एक-एक गोली से बढा-कर ७ गोली तक देने से जलन्दर रोग मिटता है।

३ अकलकरा की सुबह शाम फक्की लेने से जलोदर रोग मिटता है।

४ जलन्दर के रोगी के पेट पर कौंच की जड का लेप करना चाहिये या उसका टुकडा रखना तथा हाथ की कलाई पर बाधने से रोग मिटता है।

५. केरूंदा के पत्तो का रस एक तोला से प्रतिदिन बढाते-बढाते दस तोला पिलाना चाहिये, इस तरह २०–३० दिन देने से जलोदर रोग मिट जाता है।

६ ४ तोला चना एक पाव पानी मे औटाकर आधा पानी रहने पर उस पानी को गुनगुना कर पिलाने से जलोदर रोग मिट जाता है।

७. एक तोला बाल छड को लाल बकरी के मूत्र मे पीसकर पिलाने से जलोदर मिटता है।

८. बालछड और नमक को सिरके में पीसकर पेट के पेडू पर लेप करने से जलन्दर मिटता है।

६ ताड़ के फूलो के गुच्छे को चिगदने से जो ताजा रस निकलता है। उसको पिलाने से मूत्र वृद्धि होकर जलोदर रोग मिटता है।

१०. पुनर्नवा के पचाग को पीसकर पेट पर लेप करने से जलोदर रोग मिट जाता है।

११. लालमिर्च को आक के दूध मे पीसकर गोलियां बनाकर देने से जलोदर मिटता है।

१२. मूली के पत्तों का रस पिलाने से जलोदर रोग मिटता है।

१३. गाय का गोबर और सेधानमक मिलाकर पेट पर लेप करने से जलोदर मिटता है।

१४ सनायपत्ती को आवले के रस मे लेने से जलोदर रोग मिटता है।

१५ पानी छोडकर गाय के बछडे का मूत्र १५ दिन पिलाने से जलोदर रोग मिट जाता है।

१६. केर की जड का चूर्ण ६ माशा प्रमाण खाने से या उसका लेप करने से १०–१५ रोज मे ही जलोदर रोग मिट जाता है।

१७ अजवाइन और सोफ को औटाकर उस पानी को पीने से जलोदर मिटता है।

१८ ऊँटनी का दूध जलोदर रोग मे अमृतमय औषधि होती है।

१९ जलोदर रोग मे भूख प्यास को रोकना चाहिये, नमक के पानी मे स्नान करना चाहिये, गर्म बालू रेत में बैठना चाहिये, धूप मे पीठ सेकना चाहिये तथा परिश्रम करना चाहिये जिससे पसीना निकले। रोगी को जौ की रोटी देना चाहिये।

२० गाय का गोबर और कलीचूना मिलाकर मथकर पेट पर लेप करके धूप मे बैठकर सुखावे इससे जलोदर रोग मिटता है।

२१ पीपल, सेधानमक, चित्रक और जवाखार समभाग लेकर चूर्ण करके सहजना के रस मे चाटने से जलोदर मिटता है।

२२. केर की जड १ तोला ७ दिन खिलाने से जलोदर मिटता है। याद रहे भुनी हुई और कब्जकारी तथा चिकनी वस्तुओ का परहेज रखना चाहिये।

—उदर (पेट) रोग—

अजीर्ण, मन्दाग्नि, विरुद्ध भोजन, अभक्ष्य भोजन भक्षण करने से तथा बद्धकोष्ठ आदि कारणो से वात, पित्त और कफ कुपित होकर पसीना और रस बहने वाली नसो को रोककर प्राण अपान वायु को बिगाड-कर व्यक्ति के शरीर मे अनेक प्रकार के उदर रोग उत्पन्न करते हैं।

—लक्षण—

पेट भारी, आफरा, शूल, अग्निमन्द, हृडफूटन, तन्द्रा, कब्ज, अधोवायु का न सरना आदि लक्षण होते हैं। अत उदर रोग वाले रोगी को बेसन की चीजो का तथा तली हुई वस्तुओ का व गरिष्ठ पदार्थों का परहेज रखना चाहिये।

१ एक माशा लवण भास्कर चूर्ण को छाछ के साथ सुबह शाम लेने से पेट रोग मिटता है।

२ अगर को पीसकर गर्म करके पेट पर लेप करने से पेट का शूल मिटता है।

३ काला नमक और अजमोद का फक्की लेने से पेट की पीड़ा मिटती है।

४ पीपल के २।। पत्तो को पीसकर गुड मिलाकर गोली बनाकर लेने से पेट की पीडा मिट जाती है।

५ तुलसी के पत्तो का रस और अदरक का रस आधा-आधा तोला मिलाकर पिलाने से पेट की पीडा मिटती है।

६ हल्दी के गाठियो को गीले कपड़े मे लपेटकर भोभरा मे दबाओ फिर पीसकर शक्कर के साथ लेने से पेट का दर्द मिट जाता है।

७ चावलो की पोटली बाधकर सब्जी के पानी मे पकावें, पकजाने पर घृत, खाड मिलाकर खाने से पेट दर्द मिट जाता है।

८ खुरासानी अजवाइन और गुड मिलाकर लेने से पेट की वायु की पीडा मिटती है।

९. सूखे आक के फूलो को पीसकर ३ दिन तक आक के पत्तो के रस मे घोट लें फिर चने बराबर गोलिया बनाकर २ गोली गर्म पानी से लेने से कठिन से कठिन पेट दर्द मिट जाता है।

१० एक चम्मच सोडा को एक गिलास चूने के पानी मे लेने से पेट के भीतरी छालो के कारण हुआ पेट दर्द मिट जाता है।

११. सोठ का बारीक चूर्ण तथा नमक १-१ माशा दिन मे २-३ बार गर्म पानी से लेने से पेट शूल मिटती है।

१२. दो महीने के बछडे का मूत्र पिलाने से पेट पीडा मिट जाती है।

१३ बडी इलायची के चूर्ण को नमक के साथ देने से पेट शूल मिटती है।

१४. गवारपाठे की जड को औटाकर छान ले और उसमे भूनी हीग बुरकाकर पीने से पेट की शूल मिट जाती है।

१५. चौलाई की जड का क्वाथ पीने मे पेट का दर्द मिट जाता है।

१६. अनारदाना का रस पीने से पेट शूल मिटती है।

१७ पीपल के चूर्ण मे कालानमक मिलाकर लेने से पेट दर्द मिटता है।

१८ तसतुम्बे मे पचाई हुई मेथी या अजवाइन की फाकी लेने से पेट-दर्द मिटता है।

१९. मरवे के बीजो की फाकी लेने से पेट दर्द मिटता है।

२० आमातिसार की शूल मिटाने के लिये मरवे के बीजो का क्वाथ बनाकर पेट के बफारा देना चाहिये।

२१ छाछ के साथ समुद्रफल सेवन करने से पेट दर्द मिटता है।

२२ हीग और संधानमक को गौमूत्र मे औटाकर नाभि पर लेप करने से पीडा युक्त शूल मिट जाती है।

२३ यदि पेट मे चीस चले तो एक तोला गुड मे १॥ माशा सोठ मिलाकर दिन मे ३-४ बार लेना चाहिये।

२४ तिलो को पीसकर गोला बनालो फिर पेट पर फिराने से भयकर उदर शूल मिटती है।

२५ मेनफल को काजी मे पीसकर नाभि पर लेप करने से पेट शूल जड

से मिट जाती है।

२६ कौडी भस्म और कालीमिर्च को पीसकर नीम्बू की फाक मे भरकर आग पर गर्म करके चूसने से पेट की शूल मिट जाती है।

—वात-उदर रोग—

२७ दशमूल के काढे मे अरड का तेल डालकर पीने से वातोदर रोग मिटे।

२८ त्रिफला के काढे मे गौमूत्र डालकर पीने से वातोदर रोग मिटता है।

२९ इकपोथ्या लहसुन १५० तोला को पीसकर १६ सेर पानी मे औटावो, फिर उसमे निम्न वस्तुएँ डालो–सोठ १॥ तोला, काली मिर्च, पीपल, साटी की जड, सचरनमक, बीटनमक १॥-१॥ तोला, त्रिफला ४॥ तोला, दातुणी १॥ तोला, सहजणा की छाल १॥ तोला, अजवाइन १॥ तोला, गजपीपल १॥ तोला, निसोत ६ तोला इन सबको महीन कूट छानकर उस काढा से मिलाकर उसमे दो सेर तेल तिल्ली का डालकर मदी-मदी आच पर पकावे, जब तेल मात्र रह जाय तब उतारकर छान ले और बर्तन मे भर ले। मात्रा १-१॥ तोला प्रतिदिन सुबह अपनी रुचि अनुसार सेवन करने से वायु की पेट मे बीमारी मात्र नही रहती है।

३०. गर्म दूध मे अरण्ड का तेल या गौमूत्र डालकर पीने से वातोदर रोग मिटता है।

३१ छाछ मे सचरनमक तथा पीपल डालकर पीने से वातोदर रोग मिटता है।

३२ **वातजमहोदर होने पर** —रोगी के पेट पर तेल का लेपन करके दूध, दही से पकाये सहेजना की जड या दोनो करज (करज पूती करज) के पुल्टिस व एरण्ड आदि वातनाशक पत्तो के साथ पेट पर बाधना चाहिये।

३३ अजवाइन २१ तोला, सोहागा भुना हुआ ३ तोला, इनका चूर्ण बनाकर गर्म पानी से लेने से समस्त उदर रोग मिटता है। मात्रा

६-८ माशा प्रमाण ।

—कफोदर-रोग—

३४. निसोत का चूर्ण ८ माशा को ऊँटनी के दूध मे डालकर फिर अरण्ड का तेल २-२॥ तोला डालकर उसमे पीपल, पीपलामूल और चित्रक ६-६ माशा का चूर्ण मिलाकर गर्म करके एक महीने तक सेवन करने से कफोदर रोक मिटता है ।

३५ मिश्री, कालीमिर्च और पीपल के चूर्ण को पानी से पीने से पित्तोदर रोग मिटता है ।

३६ सोठ, कालीमिर्च, पीपल जवाखार और सेंधानमक इन सबका चूर्ण गर्म पानी से लेने से सन्निपात का उदर रोग मिटता है ।

३७ पीपल ८ तोला को थोहर के दूध मे ७ दिन प्रतिदिन भिगोवें और छाया मे सुखाये फिर इनका चूर्ण बनाकर इकातरा से ४ माशा मात्रा मे सेवन करे । पथ्य मट्ठा और चावल खावे तो उदर रोग मिट जाता है ।

३८ पीपल नग एक हजार को थोहर के दूध की ७ पुट देकर मात्रा ३ माशा गौमूत्र के साथ सेवन करने से सर्व प्रकार के उदर रोग मिटते है ।

३९. सोठ, गुड अथवा हरड, गुड अथवा पीपल, गुड को आठ माशा मात्रा से प्रतिदिन खावें तो उदर रोग मिट जाय । इससे सूजन, खास, अरुचि और जीर्ण ज्वर भी मिट जाते हैं ।

४०. अरण्ड के तेल मे सेंधानमक और सोठ के चूर्ण को मिलाकर चाटने से तथा ऊपर मन्दोष्ण गाय का दूध पोने से समस्त उदर रोगो से छुटकारा मिलता है ।

४१. जवाखार, हींग और सोठयुक्त मन्दोष्ण दूध पीने से उदर महारोग मिटता है ।

४२ थोहर के दूध से भावित हजार पीपल के सेवन से उदर महारोग का नाश हो जाता है ।

४३ हरड के चूर्ण को चतुर्गुण तक्र मे डालकर गर्म करके जमीन मे

गाड दें, फिर १५ दिन या ३० दिन के बाद निकालकर सेवन करने से समस्त उदर रोगो का नाश हो जाता है।

४४. **नारायण चूर्ण**—अजवाइन, अनार के गाछ की छाल, धणिया, त्रिफला, पीपल, कालाजोरा, अजमोद, पीपलामूल, वायविडंग इन सबको २–२ तोला लेकर तथा दातूणी ६ तोला, निसोत ४ तोला, इन्द्रायण ४ तोला इन सबको महीन कूट छानकर फिर सबसे चौगुना थोहर के दूध की पुट देवे, पीछे सुखाकर महीन पीसकर छानकर रख ले। अनुपान-गर्म पानी से लेने पर उदर रोगो को दूर करता है, बेर की बकल के काढे से लेने पर गोला का विकार मिटता है, मट्ठा के साथ लेने से कब्ज मिटता है, दाडम के रस मे लेने से बवासीर (मस्सा) मिटता है, गर्म पानी से लेने से अजीर्ण मिटाता है तथा भगदर आदि रोगो को मिटाता है।

४५ **नाराच घृत**—थोहर के दूध के साथ चौगुना गाय का दूध मिलाकर तपाकर छाछ का जामन देवे, जमने पर मथन करके लोणी निकाल ले, पश्चात् उस लोणी मे पुन थोहर का दूध मिलाकर पकालें। इसे नाराच घृत कहते है, यह अति उत्तम घृत होता है। फिर इसे २०–३० दिन पीने से विरेचन होकर उदर सम्बन्धी रोग मिट जाते हैं। कुष्ठ, उदर आदि महारोगो के नाशार्थ यही एक उत्तम साधन है।

४६ पेट आदि मे शूल चले तो कासा, पीतल या ताबे के बर्तन मे पानी भरकर फेरने से फायदा होता है।

४७ राई व त्रिफला का चूर्ण घृत तथा मिश्री की चासनी मे लेने से सर्व प्रकार की पेट शूल मिटती है।

४८. हरड़ की छाल, वच, रास्ना, पीपर, सोठ, कचूर और पोकरमूल इन सबको बराबर लेकर महीन कूट छानकर प्रतिदिन ८ माशा प्रमाण लेने से समस्त उदर रोग मिटते हैं। इसका नाम हरित-क्यादि चूर्ण है।

४६ हिरण के सींग का पुट पाक बनाकर गाय के घृत के साथ खाने से उदर और शूल रोग मिटता है।

५०. कूट, वायविडग को महीन करके ८ माशा गोमूत्र के साथ लेने से हिया की कृमि और उदर रोग मिटे।

५१ सेकीहीग, वच, वायविडंग, सोठ, पीपल, हरड की छाल, चित्रक, जवाखार, सचरनमक इन सबको बराबर लेकर महीन कूट छानकर ६ माशा गज र्म लसेलेने से समस्त उदर रोग मिटते हैं।

– पेट की गैस (वायु) –

जब व्यक्ति के पेट मे वायु बनती है तो टट्टी और पेशाब मे भी रुकावट आ जाती है व पेट मे वायु का गोलासा बन जाता है, जिससे पेट फूल जाता है, वह गोला कभी-कभी पेट मे घूमने लग जाता है, जिससे दर्द और बेचैनी बढ जाती है फिर यदि पेट की वायु दूषित हो जाती है तो तकलीफ महसूस होने लगती है और गदी अपान वायु निकलती है यदि वह वायु न निकले तो उसका असर हृदय और श्वास सस्थान पर भी पडता है, जिससे श्वास लेने मे रुकावट और हृदय की धडकन बढ जाती है तथा घबराहट आदि हो जाती है।

१ हर एक साग-सब्जी मे हीग भूनकर डालकर खाने से पेट की गैस कम हो जाती है।

२ गैस बढने पर आधी कटोरी पानी मे नमक, कालीमिर्च नग ४, लोग नग ४ उबालकर पीने से आराम मिलता है।

३ अलसी के पत्तो का साग बनाकर खाने से पेट की वायु शमन होती है।

४ नारगी की छाल का क्वाथ पीने से पेट की वायु की पीडा मिटती है।

५. वच के साथ सोनामुखी खाने से वायु का गोला मिट जाता है ।

६. इन्द्रायन पञ्चाङ्ग का चूर्ण ३ रत्ती जल के साथ लेने से वायु का गोला मिट,जाता है ।

७ इन्द्रायन की गिरी बिना बीजो के तथा बडी इलायची एक पाव पीसकर छोटे बेर बराबर गोलिया बनाकर सुबह-शाम लेने से वायु का गोला मिट जाता है ।

८ कली का चूना, शक्कर तथा नमक १।।–१।। माशा को पाव भर पानी मे रख ले, फिर २-२ तोला सुबह-शाम लेने से वायु का गोला व श्राफरा मिट जाता है ।

६ सोठ, कच्चा सोहागा, भुनी हीग, सेंधानमक को सहेजना की छाल के रस मे बडे बेर प्रमाण गोलिया बनाकर एक गोली गर्म पानी मे लेने से सर्व प्रकार के वात-विकार श्रौर पेट शूल मिटती है ।

१०. सोडा श्रौर नोसादर एक-एक माशा को २ तोला गर्म पानी मे मिलाकर पिलाने से सर्व प्रकार का वात विकार श्रौर पेट शूल मिटती है ।

११ सोठ, हीग तथा सेंधानमक की फाकी गर्म जल से लेने से अजीर्ण मिटती है ।

१२ बर्फ का २५ तोला पानी, मिश्री २ तोला, नीम्बू का रस २ तोला मिलाकर पोने से श्रजीर्ण मिटता है ।

१३ कालीमिर्च, पोपल, सेंधानमक, शुद्ध गन्धक समभाग लेकर नीम्बू के रस मे घोटकर चने के बराबर गोलिया बनाल । एक गोली लेने से बदहजमी मिटती है ।

१४ लोग श्रोर हरड का क्वाथ बनाकर थोडा-सा सेंधानमक डालकर पीने से श्रजीर्ण मिटता है तथा दस्त श्राती है ।

१५ अजमोद को गुड मे गोनो बनाकर देने से पेट का श्राफरा मिटता है ।

१६ तसतुम्बे की गिरी श्रौर एलुवे को पोसकर गर्म करके पेट पर लेप

करने से आफरा मिटता है।

१७ एलुवे को पीसकर नाभि पर लेप करने से पेट का आफरा तथा दस्त आकर आराम होता है।

१८ आम्बाहल्दी ४ से ६ माशा तक चूर्ण की फाकी लेने से पेट का आफरा मिटता है।

१९ कुटक या मेनफल को पीसकर पेट पर लेप करने से आफरा उतर जाता है।

२०. नारगी की छाल के क्वाथ पर सोठ और कालानमक बुरकाकर पीने से मन्दाग्नि और आफरा मिटता है।

२१. बच को अदरक रस के साथ लेने से अजीर्ण रोग मिटता है।

२२. अरणी के पत्तो को उबाल छानकर पीने से पेट शूल और आफरा मिटता है।

२३ दानामेथी को गुड के साथ औटाकर पीने से पेट शूल और आफरा मिटता है।

२४ ढाक के पत्ते औटाकर पीने से पेट शूल और आफरा मिटता है।

२५ सोठ को जीरे के साथ खाने से पेट की दाह मिटती है।

२६ हीग, कपूर और कालीमिर्च की गोली बनाकर लेने से मन्दाग्नि और आफरा मिटता है।

२७ सनाय को बकरी के मूत्र मे देने से पेट की सूजन मिटती है।

२८. ज्वार के आटे की राबडी रात मे बनाकर रख दे सवेरे उसमे थोडा सफेदजीरा और मठ्ठा मिलाकर पीने से अन्तर्दाह मिट जाती है।

२९ पित्तपापडा के रस मे दूध और शक्कर मिलाकर पीने से पाकस्थली की दाह मिट जाती है।

३० पीपल के एक पत्ते को ५–१० घटे पानी में भिगोकर नाका तोड-कर थोडा नमक उस पर रख कर चबावो रस को निगल जावो और शेष बाकस को थूक दो इस प्रकार ५–७ दिन लेने से पेट की गैस की बीमारी मिट जाती है।

३१. बाजरे की रोटी को गर्म-गर्म उतारकर दही में चूरकर खाने से पेट की आव की बीमारी मिटे।

३२. गाय के दूध को जमाकर दही बनालो फिर सुबह उस दही को कपडे मे पोटली बाधकर टाग दो, जब पानी निकल जाय तो उस दही मे एक चिकनी सुपारी बारीक पीसकर मिलाकर खाम्रो। इस तरह ५–७ दिन खाने से आव का पेचिश आदि का रोग मिट जाता है।

३३ पानी मे तारपीन तेल डालकर उबाल लो और पेट पर बफारा देवो जिससे पेट का आफरा उतरता है।

३४ पेट पर सू घने की तम्बाखू मलने से दस्त लगकर आफरा उतरता है।

३५. भोजन करते समय बीच-बीच मे थोडा-थोडा सोडा खानेवाला लेने से गैस मिटता है।

३६ बेल का मुरब्बा खाने से आव के दस्त मिटते हैं।

३७ अठपहरी सोठ भिगोकर घोटकर थोडा सेधानमक के साथ लेने से आव की बीमारी मिटती है।

३८ गवारपाठे की ४० फाक का रस व गिरी निकालकर कल्ली के बर्तन मे रखो और उसमे एक सेर ओहरड तथा आधा सेर सेधानमक व आधा सेर काला नमक डाल दो फिर प्रतिदिन सुखाले जब तैयार हो जाय तो कूट-पीसकर रख लो। प्रतिदिन शाम को ३ माशा की फाकी लेकर गर्म पानो के साथ पीने से पेट की गैस आदि बीमारियाँ मिटती हैं इससे शरीर की चर्बी भी कम हो जाती है।

३९. गलेक्सोना की २ गोली (टेबलेट) लेकर ऊपर दूध या गर्म पानी लेने से कब्ज रोग मिटे।

४० मेथीदाना, असालिया, कालाजीरी, मालकागनी इन सबको सम-भाग मे साबुत लेकर फिर पिसा हुआ सेधानमक मिलाकर फाकी लेने से कब्ज रोग मिट जाता है।

४१ इसबगोल की भूसी एक पाव (२०० ग्राम), सोफ ५ तोला, छोटी

इलायची ३ तोला, बंसलोचन ३ तोला और मिश्री ५ तोला को कूट छानकर इसबगोल मे मिला लो प्रतिदिन दूध के साथ लेने से पेट की आव की बीमारी व कब्ज आदि मिटती है।

४२. भोजन के पश्चात् गर्म पानी मे नीम्बू का रस डालकर पीने से गैस मिटती है।

४३. जामुन के बीजो के चूर्ण मे बराबर शक्कर मिलाकर लेने से पेट से खून आना बन्द हो जाता है।

४४. पेट की आतो के रक्त के बहाव की रुकावट के लिये बथुए के स्वरस मे कालीमिर्च और नमक मिलाकर पीना चाहिये।

—अम्ल पित्त—

४५ सोनागेरू को खरल करके ३-३ माशा दोनो समय लेने से अम्लपित्त मिटती है।

४६ ३ माशा अजवाइन को नीम्बू या अदरक के रस मे लेने से अम्ल-पित्त मिटती है।

४७ कालीमिर्च और सेधानमक के सेवन से अम्लपित्त मिट जाती है।

४८ सोठ तथा जवाखार की फाकी गर्म जल से लेने से देश-देशान्तरो के पानी का विकार मिट जाता है।

४९ जीरा और घनिया का चूर्ण ३-३ माशा की मात्रा मे मिश्री के साथ लेने से अम्लपित्त मे बहुत फायदा होता है।

५० एक तोला राई और ४ लाल मिर्च को पीसकर गाय की छाछ १ पाव मे मिलाकर पीने से हील का पेट दुखना भी मिट जाता है।

५१ यदि पेट मे दूषित रुधिर आदि एकत्र हो गया हो तो उसको बिखे-रने के लिये सम्भालु के पत्ते औटाकर बाधने मे बहुत फायदा होता है।

५२. हरा आवला, अगूर, अनार के दाने व मशाला आदि मिलाकर चटनी बनाकर खाने से अम्लपित्त मिटता है।

५३ जौ, अडूसा, आवला, तज, पत्रज और इलायची इन सबका काढा

बनाकर मिश्री डालकर पीने से अम्लपित्त तत्काल मिट जाता है।

५४. गिलोय, नीम की छाल, त्रिफला, पटोल इनका काढा करके मिश्री मिलाकर लेने से तत्काल भयकर अम्लपित्त मिटता है।

५५ भोजन के बाद आवला का रस पीने से अम्लपित्त, वमन, अरुचि, और मूत्र दोषो को मिटाता है।

५६ मुनक्का निर्बीज को धोकर उसके बराबर हरड की छाल फिर इन दोनो के बराबर मिश्री मिलाकर ६ माशा प्रमाण गोली बनाकर प्रतिदिन एक गोली खाने से अम्लपित्त मिटता है।

५७. सोठ, कालीमिर्च, पीपल, त्रिफला, इलायची, नागरमोथा व वाय विडग, पत्रज इन सबको समभाग लेकर फिर इनसे दूनी निसोत लेकर और सबके बराबर मिश्री लेकर चूर्ण बनाले। मात्रा ६ माशा ठण्डे पानी से लेने से अम्लपित्त मिट जाता है।

५८ पके हुए पेठे की गिरी का रस २ सेर, गाय का घृत ३ तोला, गाय का दूध तथा आवला १२ तोला, मिश्री १२ तोला इन सबको मन्द मन्द आच पर पकावे फिर इसके अवलेह की चासनी करे फिर एक तोला प्रतिदिन खाने से अम्लपित्त रोग मिटता है।

५९. गुलाब का फूल ८ माशा, बनफसा ८ माशा, कासनी ८ माशा लहेसुवा नग ३०, आलुबुखारा नग ५, इन सबका काढा बनाकर २ तोला गुलाब का गुलकद मिलाकर पीने से अम्लपित्त मिटता है

—धरण (पेचूटी) नाभि रोग—

६०. धरण को ठिकाने लाने के लिये आधा सेर दही मे हल्दी का चूर्ण मिलाकर खाने से फिर धरण नही टलती है, लेकिन २४ घण्टे मे और कुछ न खाये।

६१ दही के साथ समुद्रफल खाने से टली हुई धरण अपने ठिकाने आ जाती है।

६२. एक नीम्बू की फाड के बीज निकालकर १ माशा शुद्ध सोहाग भरकर गर्म करके चूसने से टली हुई धरण अपनी जगह आ

जाती है ।

६३. यदि धरण दाहिनी ओर टली हो तो बायी पिण्डी की नाडी दबाने से और यदि बायी ओर टली हो तो दाहिनी पिंडी की नाडी दबाने से धरण सही जगह पर आ जाती है । फिर एक तोला गुड तथा नमक खाना चाहिये ।

६४. कच्चे नीम्बू का छिलका खाने से पेट शूल मिट जाता है ।

६५. पके हुए „जामुन का सिरका ४ से ८ माशा तक पीने से पेट शूल, अजीर्ण और दाह मिटती है ।

६६. ४ से ८ रत्ती तक जायफल सेवन करने से पेट शूल, आफरा, मदाग्नि और अतिसार मिटता है ।

६७ ४ माशा सोठ का क्वाथ पोने मे मन्दाग्नि, उदर के रोग व जल के दोष मिट जाते हैं ।

६८. पाचन शक्ति के लिए—गीले अकुआ के फूलो के अदर की मिगी आधी छटाक, सेधानमक १। तोला, कालीमिर्च १। तोला इन तीनो को घोटकर २-२ माशा की गोलियाँ बनालो, इनके प्रयोग से पाचन शक्ति बढ जाती है ।

६९. खट्टे अनार के दाने ८ तोला, शक्कर १२ तोला, त्रिसुगन्धी (दालचीनी, इलायची, तेजपात) एक तोला । इनका चूर्ण सेवन करने मे अरुचि रोग मिटता है ।

७० इलायची, नागकेशर, दालचोनी, कालीमिर्च, पीपल और सोठ इन छहो को क्रमश. दूना-दूना लेकर चूर्ण बनाकर बराबर शक्कर मिला ले । इसके सेवन से जठराग्नि प्रदीप्त होती है । इसे सम शर्कर चूर्ण कहते हैं ।

७१ अजवाइन ६ माशा और कालानमक १।। तोला का चूर्ण बनाकर सुबह-शाम भोजन के पश्चात् गर्म पानी से लेने से पेट का आफरा और वायु का गोला मिट जाता है ।

७२. मुनक्का १० छटाक, अनारदाना, पीपल, कालीमिर्च, अकरकरा,

सफेदजीरा, स्याहजीरा, नोसादर प्रत्येक ४-४ तोला और सेंधा-नमक ६ तोला। इन सबका चूर्ण बनाकर लेने से पेट विकारो में उपयोगी होता है यह चूर्ण स्वादिष्ट भी होता है।

७३. बबूल के गोंद का पानी पीने से आमाशय और आंतो की पीड़ा मिट जाती है।

७४. भुनी हुई आम की गुठी की गिरी को खाने से आंतो का ढीलापन मिट जाता है।

७५. तेजपात के सेवन से आंतो के उपद्रव से उत्पन्न आफरा, अजीर्ण, खाली होवड, शूल, अतिसार और पेट के अन्य विकार नष्ट हो जाते है।

७६ सत्यानासी की जड की छाल का चूर्ण ४ रत्ती से एक माशा तक लेने से आंत रोग का मल निकलकर वायु नष्ट हो जाती है।

७७ सतगिलोय, बन्शलोचन, छोटी इलायची का दाना एक-एक भाग तथा मिश्री १२ भाग लेकर कूट छानकर चूर्ण बनाले। मात्रा ३ माशा २ तोला शर्बत बनफसा के साथ खावे। इससे पाचन विकार के कारण छाती मे धुंआ सा उठता हो उसके लिए यह प्रयोग अति उत्तम है।

७८ पोदीना सूखा ३ तोला, तिनडोक और कालानमक १।-१।। तोला तथा कालीमिर्च ७ माशा को कूट छानकर चूर्ण बनावे। मात्रा ३ माशा भोजन के पहले या पीछे गर्म पानी से लें, इससे आमाशय की शक्ति बढ़ती है, अपान वायु को निकालता है और पेट फूलने तथा अन्य उदर विकारो को नष्ट करता है।

७९. सचानमक ३ माशा, तितडीक ३ माशा, सोफ, जरिश्क, अनारदाना धनिया ६-६ माशा का चूर्ण बनावें। मात्रा ३ से ६ माशा गर्म पानी से सेवन करे, इससे पाचन शक्ति बढती है।

८०. अजवाइन, अनीसून, सोफ, मस्तगी, कुन्दरू और कालाजीरी समभाग लेकर कूट छानकर चूर्ण बनाले। इससे पेट का दर्द,

अफरा और बादी के लिए लाभदायक होता है तथा अधोवायु निकालता है।

८१ पपीता (अरण्ड काकड़ी) सूखे हुए की गिरी ५ तोला, सोंठ, नोसादर, सेंधानमक और कालीमिर्च १-१ तोला लेकर कूट-छानकर पानी से चने बराबर गोलिया बनाले। फिर जरूरत के अनुसार २-२ गोली पानी से लेवे। इससे पाचन ठीक होता है और अपानवायु को निकालती है, मलावरोध (कब्ज) को दूर करती है और पेटदर्द को भी मिटाती है।

८२. शोराकलमी और नोसादर ७-७ तोला, काला नमक, सेंधानमक, साभरनमक, सोंठ, पीपल, काली मिर्च, समदरभाग और जवाखार १०-१० तोला तथा जायफल, जावित्री १०-१० माशा लेकर कूट छानकर नीम्बू और अदरक के रस मे घोटकर चने बराबर गोलिया बनालो और भोजन के पश्चात् २-२ गोली खावें। इसे पाचक वटी कहते है।

८३ भाग का खार, नकछिकनी का खार, मूली का खार, पोदीना का खार, छोटी कटेली के पत्तो का खार २-२ तोला, सत् अजवाइन १० तोला लेकर कूट छानकर चूर्ण बनालें। मात्रा ४ रत्ती पानी के साथ लेवे। इसमे भूख लगती है, भोजन पचता है, वायु निकलती है, कब्ज मिटती है। याद रहे इस चूर्ण को काच की शीशी मे डाट लगाकर अच्छी तरह रखना चाहिए।

८४ अजवाइन को साफ करके कली के बर्तन मे गुवारपाठे के रस मे प्रतिदिन ७ दिन तक रस देकर छाया मे सुखा ले फिर सूखने से कूट छानकर उसमे कालानमक छठा भाग मिलाकर महीन कूट छानकर रख लें। मात्रा ३ माशा प्रतिदिन भोजन के पश्चात् लेने से पेट की गैस मिटती है।

८५ नारगी के छिलके सुखाकर महीन पीसकर उसमे छठा भाग काला नमक मिलाकर भोजन के पश्चात् ३ माशा की फकी लेने से

पेट का गेस रोग मिट जाता है।

८६ कीकर (बबूल) की छाल ५ सेर, किशमिश २।। सेर, गुड २।। सेर, इकपोथ्या लहसुन और लोग ६-६ माशा, अगर १ तोला, सफेद चन्दन चूरा ११ माशा, बनफसा की जड ६ माशा, नागर मोथा ६ माशा, बिजोरा, नीम्बू का छिलका २ तोला, बहमन लाल और सफेद, सकाकल मिश्री, सालम मिश्री, तेजपात, दालचीनी और गावजुवा के फूल एक-एक तोला, खस २ तोला, बडी इलायची का दाना २।। ताला, जायफल और जावित्री एक-एक तोला, केशर ६ माशा, अम्बर ३ माशा लेकर केशर और अम्बर को छोडकर सब दवाओ को अधकुटा करके अठगुने पानी मे भिगोदें और एक मटके मे बन्द करदे फिर उसे जमीन मे गाड दे। ७ दिन पश्चात् निकालकर अर्क खीचले। अर्क खीचते समय केशर और अम्बर की पोटलो बाधकर भबके के मुँह मे जिस जगह अर्क टपकता हो उस जगह लगादे। मात्रा २ से ५ तोला तक। इससे आमाशय और तिल्ली के बल को बल मिलता है, यह अत्यन्त पावक है, शरीर मे शुद्ध रक्त बढाता है और दुबलेपन को मिटाता है तथा इससे उत्साह और फुर्ती आती है।

८७ पाचक चूर्ण-सेधानमक ३ माशा, सोफ ६ माशा, जरिश्क ६ माशा, तितडीक ३ माशा, अनारदाना ६ माशा, धनिया ६ माशा लेकर सबका चूर्ण बनावे। मात्रा ३ से ६ माशा गर्म पानी से लेवे।

८८ बालछड, छोटी इलायची, तज, दालचीनी, कुलिजन (पान की जड) लोग, नागरमोथा, सोठ, कालीमिर्च, पीपल, कूठ (मीठा), बालसान की लकडी (जिसको अग्रेजी मे बालसम कहते हैं), तगर, हब्बुलास, चिरायता (मीठा) और असली केशर २-२ तोला, रुमीमस्तगी ५ तोला, मिश्री ३ पाव की चासनी बनाकर सभी दवाओ को कूट छानकर उसमे मिलाकर रखदे। मात्रा ७ माशा से एक तोला तक। प्रात काल या भोजन के पश्चात् दोनो समय

१२ तोला सोफ के अर्क या ताजे पानी के साथ सेवन करें। इससे आमाशय के विकार विशेष रूप से मिटते हैं, इसके सेवन से प्रत्येक अङ्ग मे शक्ति और स्फूर्ति उत्पन्न होती है, बदहजमी, बादी, मुँह से दुर्गन्ध आना, आमाशय विकार से होने वाला शिर शूल, बहुमूत्र कफज खासी और बवासीर को भी ठीक करती है, भूख को बढाती है, कमर का दर्द और मूत्राशय की निर्बलता और पत्थरी चाहे मूत्राशय मे हो या गुर्दे मे उसे थोड़े ही दिनो के सेवन करने से नष्ट करती है।

८९ नोसादर, पीपल, कालानमक और छोटी इलायची छिलके सहित लेकर कूट छानकर चूर्ण बनालें। मात्रा एक माशा पानी के साथ सेवन करे, इससे आमाशय को बल मिलता है और खाया हुआ भोजन जल्दी हजम हो जाता है।

९०. छोटी इलायची के दाने, तज, तेजपात, नागकेशर, लोग, जायफल, जीरा सफेद, जीरास्याह, कालाजीरी, बेलगिरी, चीता, धाय के फूल, सोहागा, मोथा, छोटीमाई, पाषानभेद, नेत्रवाला, शुद्ध पारा, शुद्ध गधक, अजवाइन, तगर, बन्शलोचन, सज्जी, जवाखार, अजमोद, हीग, धनिया, सोठ, सोफ, अनार की कली, कुडे की छाल, मीठा इन्द्रजौ, राल, लोध, काली हरड (भुनी हुई) मोचरस और बच हर एक १-१ तोला लेकर, प्रथम पारा और गधक की कजली करें फिर उसमे सभी औषधियो का महीन चूर्ण करके मिलाले और अच्छी तरह खरल करले। मात्रा ३ माशा प्रात काल दूध या पानी के साथ सेवन करें। इससे पाचन शक्ति बढती है तथा वायु को निकालता है, चित्त को प्रफुल्लित रखता है तथा ताकत प्रदान करता है।

९१ नमक सुलेमानी खास-साभर नमक १२ तोला, सेंधानमक लाल १८ तोला, सेंधानमक सफेद १८ तोला, अजमोद ५ तोला, नोसादर १८ तोला, मिर्चें या गध ४ तोला, सफेद मिर्च २१ तोला, बिलायती-

आकाश बेल ७॥ तोला, बालछड ७॥ तोला, हींग १।॥ तोला, जीरास्याह १।॥ तोला, दालचीनी १। तोला, सोठ १। तोला, अनीसून १। तोला, कालीमिर्च ५ तोला, इन सबको कूट-छानकर चूर्ण बनावें। इससे सर्व प्रकार का पाचन विकार नष्ट हो जाता है, अति स्वादिष्ट होता है।

६२ कालीमिर्च १॥ माशा, आंवला एक तोला, मिश्री एक तोला इनको कपडछान करें फिर ७–८ दिन फाकी लेने से चक्कर आना आदि मिट जाता है।

६३ गन्धक बटी—शुद्ध गन्धक २ तोला, चित्रकमूल, पीपल, कालीमिर्च एक-एक तोला, सोठ २ तोला, जवाखार, सेंधानमक, कालानमक, साभरनमक, आधा-आधा तोला को कूट-छानकर नीम्बू के रस की भावना देकर २–२ रत्ती प्रमाण गोलियां बनालें। मात्रा एक से चार गोली दिन में ३ बार पानी से लेवें भोजन के २ घण्टे बाद ले। इससे मन्दाग्नि, गुल्म, उदावर्त्त, अजीर्ण, शूल, ग्रहणी आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

६४ सरसो को पीसकर उसमे कालानमक या सधानमक छठा भाग मिलाकर मात्रा ३ माशा लेने से पेट की गैस मिटती है।

— कब्ज–रोग —

कब्ज के कारण शरीर में फोडा, फुन्सी, खाज, खांसी, दमा, गठिया, अजीर्ण, संग्रहणी, बवासीर, पेचिश, भगन्दर, रक्तचाप, जलोदर, दौर्बल्यता, स्वप्नदोष, स्त्रियो मे प्रदर रोग, मन्दाग्नि, पायरिया, नासूर, बाल झडना, आखो की ज्योति मन्द होना आदि नाना प्रकार के रोग हो जाते है।

कारण :—मल के वेग को रोकना, भोजन की अनियमितता, गरिष्ठ

भोजन करना, शौच मे जल्दबाजी, पानी की कमी, मानसिक चिंता, नशा, भूख से ज्यादा खाना, बिना भूख खाना, कम खाना, बिना चबाये खाना, आदि से कब्ज रोग हो जाता है ।

१ कब्ज रोग वाले व्यक्ति को फल तथा हरी तरकारिया खानी चाहिये, खासकर अमरूद, करेला, अनार, अगूर, पपीता, टमाटर, पालक, बथुआ, भिंडी, काचरा आदि पेट साफ करने वाले पदार्थ सेवन करना चाहिये ।

२ कब्ज रोग वाले व्यक्ति को नियमित हल्का व्यायाम करना जरूरी है ।

३ बद्धकोष्ठ वाले रोगी के पेट पर आक के पत्ते बाधने से शौच साफ आता है । अथवा आक की जड पानी मे पीसकर गोली बनाकर गुदा मे रखने से खुलकर शौच आता है ।

४ किरमाला और इमली के गूदे को मल छानकर रात को सोते समय पीने से प्रात काल दस्त साफ आता है ।

५ अमलतास के गुलकन्द को एक तोला सोते समय खाकर ऊपर गर्म दूध पीने से प्रात काल दस्त साफ आता है ।

६ अरण्ड का तेल तथा अरण्ड की २-३ इण्डोली खाने से दस्त लगता है ।

७ छोटी हरड, गुलाब के फूल, कालीदाख, बादाम की गिरी और सोफ इन सबको बराबर लेकर कूट-छानकर आधा-आधा तोला की गोलिया बनाकर एक या दो गोली रात को सोते समय लेने से दस्त साफ आता है ।

८ हरड़ की छाल एक तोला, बहेडा दो तोला, आवला तीन तोला, सोनामुखी एक तोला, मजीठ एक तोला, मिश्री आठ तोला इन सबको कूट पीस छानकर एक तोला सोते समय लेने से सुबह दस्त साफ आकर पेट हल्का हो जाता है ।

९ धनिया एक तोला, सोफ एक तोला, घी मे भुनी हुई शुद्ध जमाल-

घोटे की मिंगी ३ माशा सबको बारीक पीसकर मिश्री की चासनी मे चने बराबर गोलिया बनालें । मात्रा १० वर्ष तक की आयु तक एक गोली, २० वर्ष तक २ गोली इससे बडे को ३–४ गोलिया देने से दस्त साफ आती है, सख्त कोठे वाले को ही ज्यादा गोलिया देवे परन्तु नरम कोठे वाले को ज्यादा न देवे ।

१०. कब्ज वाले रोगी को प्रात काल एरण्ड ककडी (पपीता) कई दिनो तक खाने से फायदा होता है यह फल रक्त-शोधक भी होता है ।

११ केर के वृक्ष की छाल का चूर्ण खाने से बद्धकोष्ठ मिटता है ।

१२ आधा पाव गोमूत्र को जितनी बार छानकर पीवे उतनी ही बार दस्त लगे जिससे पेट हल्का होता है ।

१३ बडी हरड २ माशा, मिश्री ४ माशा पीसकर सेवन करने से शौच लगता है ।

१४ कालादाना ६ माशा घी मे भूनकर चूर्ण बनाकर ६ रत्ती और सोठ मिलाकर सेवन करने से ५–६ दस्ते लगती हैं ।

१५ भयकर कब्ज मे १०–१५ मुनक्का दूध मे औटाकर मुनक्का खाकर दूध मे कई दिन पीने से फायदा होता है ।

१६ दस-बीस वर्ष पुरानी इमली का शर्बत बनाकर पीने से पुरानी कब्ज मिट जाती है ।

१७ ज्वार की खिचडी (थूली) दूध के साथ १ मास तक लगातार खाने से पुरानी कब्ज मिटती है ।

१८ बथुए के पत्तो को पानी मे उबालकर शक्कर मिलाकर पीने से दस्त साफ आता है ।

१९. गाय के मठ्ठे मे अजवाइन और काला नमक मिलाकर खाने से पुरानी कब्ज मिटती है ।

२०. यदि किसी भी औषधि से कब्ज न मिटे तो १ चिमटी बालू रेत फाकने से फायदा होता है ।

२१ जमालघोटे को भैंस के गोबर में ६ घण्टे पडा रहने दें फिर उसकी

मिंजी निकालकर नीम्बू के रस में २ दिन खरल करे तो शुद्ध होता है, फिर उसके सेवन से कब्ज रोग मिटता है। इससे उदर रोग, और सर्प तथा बिच्छू का विष भी नष्ट हो जाता है।

२२. **अभयादि मोदक (जुलाब का नुस्खा)**—हरड़ की छाल, कालीमिर्च, सोंठ, वायविडंग, आवला, पीपल, पीपलामूल, तज, पत्रज, नागरमोथा, इन सबको बराबर लेकर इनसे तिगुनी दातुणी और फिर सबसे अठगुणी निसोत लेकर और गुलाब का फूल, सोफ, जीरा लेकर फिर सबसे ६ गुणी मिश्री की चासनी करके सभी दवाओं का महीन चूर्ण बनाकर चासनी मे मिलाकर ६ से ८ माशा की गोलियाँ बनाले, पश्चात् एक गोली सुबह ठण्डे पानी से लेने से अच्छा जुलाब लगता है। इससे शरीर के सभी रोग मिटते हैं।

२३ **६ ऋतुओं मे हरड खाने का विधान**—(१) गर्मी ऋतु मे हरड की छाल के बराबर गुड मिलाकर ६० दिन तक खाना चाहिये। (२) वर्षा ऋतु मे सेंधानमक के साथ खाना चाहिये। (३) शरद ऋतु मे मिश्री के साथ हरड का चूर्ण खाना चाहिये। (४) हिम ऋतु मे सोठ के साथ हरड का चूर्ण खाना चाहिये। (५) शिशिर ऋतु मे पीपल के साथ हरड का चूर्ण खाना चाहिये। (६) बसन्त ऋतु मे मिश्री की चासनी के साथ खाना चाहिये। इस प्रकार छहो ऋतुओं मे हरड खाने से कब्ज रोग मिटकर शरीर स्वस्थ बन जाता है।

—मौसमी तथा ऋतु जुलाब—

२४. (१) **पावस (सावन-भादवा)** मे—निसोत, इन्द्र, जौ, पीपल, सोंठ, मुनक्का का काढा मिश्री मिलाकर पीवे।

(२) **हिम (आसोज-कार्तिक)** मे—निसोत, जवासा, मोथा, सुगन्धबाला, मिश्री, सफेद चन्दन, मुलेठी का काढ़ा देवे। अथवा—निसोत, अमाशा, नागरमोथा, छोहारा, नेत्रबाला, मुलेठी, लालचन्दन, सोनामुखी व मिश्री का जुलाब देवें।

(३) हेमन्त (मंगसर-पौष) में:-पीपल, सोठ, सेंधानमक, बिधारा, निसोत का चूर्ण मिश्री को मिलाकर खावें।
अथवा :-निसोत, चित्रक, पाठ, सोनामुखी, बच का जुलाब गर्म जल से देवें।

(४) शिशिर (माघ-फागुन) में :- पीपल, निसोत, सोंठ, सोनामुखी का जुलाब देवे।

(५) बसन्त (चेत-बसाख) में - सोनामुखी, निसोत, गुलाब का फूल, सोफ, जीरा, मिश्री मे मिलाकर जुलाब देवे।

(६) ग्रीष्म (जेठ-आषाढ़) मे - निसोत तथा मिश्री को बराबर लेकर मात्रा १ से २ तोला का जुलाब देवें।

२५. चित्रक, इन्द्रजो, पाठ, कुटकी, अतीस और हरड का चूर्ण कुछ गर्म जल से लेने से आमाशय की वायु नाश होती है।

२६ गेहू की भूसी १ तोला, सोठ, मालकागनो, साभर नमक, बाजरा ये सब ६-६ माशा कूट छान कर पोटली बान्धकर फिर पेट पर सेक करने से पेट की गैस निकल कर कब्ज मिटती है।

२७. चने का आटा और नमक बराबर मिलाकर पेट पर मलने से पेट की वायु निकलती है।

२८. पीली हरड, आंवला, बहेडा, काली हरड़, और छिला हुआ तथा अन्दर की कडी लकड़ी निकाला हुआ निसोत २-२ तोला, सोफ, मस्तगी, उस्तोखुदूस, सिकमेनिया और रेवद चीनी ५-५ तोला लेकर कूट छानकर बादाम तेल मे चिकना करें फिर इन सबसे तिगुनी शक्कर या मिश्री की चासनी मे अवहेल के समान बनावे। मात्रा ७ माशा से १ तोला तक रात को सोते समय या प्रात काल अर्क सोंफ या पानी के साथ सेवन करें। इससे पुराना शिरशूल तथा मस्तिष्क सम्बन्धी रोगो के लिए गुणकारी है, कर्णशूल तथा आमाशय और आन्तो के दर्द व मलावरोध (कब्ज) को दूर करता है।

२९ दो सेर बनफशा की पत्तियो को चुनकर ३ सेर शक्कर मे मिलाकर अच्छी तरह कूट छानले और उसमे थोडा सा गुलाब का अर्क मिलाकर दोनो हाथो से अच्छी तरह मलले, जब दोनो का एक जीव हो जाय तो धूप मे रखदे और ३ दिन पीछे उसे फिर ३ दिन तक मले। तदनतर काच आदि के बर्तन मे रखले। मात्रा दो से चार तोला तक अर्क गावजु वा के साथ खावे। इससे मस्तिष्क की खुश्की मिटकर तरी पहुचती है, कब्ज मिटती है, पित्त को निकालती है, छाती और पसली जन्य रोगो मे भी लाभदायक है।

३० बनफशा के फूल १५ तोला को रात्रि मे ३ सेर पानी मे भिगोदे, फिर प्रात काल उसको औटाकर एक सेर पानी बनाले फिर उसे मल छानले और उसमे १॥ सेर मिश्री मिलाकर चासनी बनालें। इस खमीरे की चासनी ऐसी बनानी चाहिये कि ठण्डी होकर हलवा सदृश हो जावे। इसको सेवन करने से कब्ज मिटती है, पित्त गलकर निकल जाते हैं।

३१ गुलकन्द २० तोला, सोनामुखी ५ तोला और सोफ ५ तोला को पीसकर ९ गोलिया बनाले फिर ३ दिन तक ३–३ गोली प्रतिदिन सुबह लेने से कब्ज रोग मिटता है।

३२ बडो हरड नग ४, सुपारी नग ४ दोनो को अलग-अलग आठ पहर तक भिगोकर फिर उसमे हरे बबूल की पत्ती एक तोला और एक माशा सेंधा नमक मिलाकर एक गिलास पानी मे जितनी बार छानकर पीया जायेगा उतनी ही दस्ते लगेगी।

३३ नीम के वृक्ष के सूखे फल का चूर्ण रात को गर्म पानी के साथ लेने से सुबह दस्त साफ लगेगी।

३४ बडी हरड, सनाय और रेवतचीनी को बराबर लेकर बारीक पीसकर बेर के बराबर गोलिया बनाले, रात को सोते समय गर्म दूध या पानी से एक-दो गोली लेने से सुबह दस्त साफ आता है।

३५. दाख, हरड और शक्कर या सेंधानमक की गोली बनाकर एक

तोला खाने से कब्ज मिटकर दस्त आता है ।

३६ एक या दो औंस ताजा मुनक्का का रस निकालकर उसमें शक्कर या सेंधा नमक मिलाकर पीने से कब्ज मिटता है ।

३७ सोंठ, सनाय, हरड, सेंधानमक, निसोत, संचरनमक और सौंफ समभाग लेकर बारीक पीसकर रखें । मात्रा ४ माशा रात्रि मे सोते समय लेने से दस्त साफ आती है ।

३८. गुलाब के फूल, मजीठ, निसोत की छाल, हरड, सोनामुखी एक एक तोला को बारीक पीसकर ८ तोला शक्कर मिलाले । मात्रा ३। माशा ठण्डा पानी के साथ लेने से अच्छा जुलाब होता है ।

३९ विधायरा चूर्ण को ६ माशा प्रमाण २-३ महीने तक नियमित रूप से सोते वक्त लेने से पुराना व रोजाना का कब्ज रोग मिटता है ।

४० धनिया दो तोला, सनाय २ तोला को पावभर पानी मे रात्रि मे भिगोकर सुबह पानी निकालकर मिश्री मिलाकर पीने से कब्ज मिटती है ।

४१ किरमाला (अमलतास) के गूदा को बादाम के तेल से चुपड पीस छानकर पिलाने से बच्चो और गर्भवती स्त्रियो को निरुपद्रव जुलाब लगता है ।

४२ हरड, सनाय तथा गुलाब के गुलकन्द की गोली बनाकर खाने से बद्धकोष्ठ मिटता है ।

— मन्दाग्नि-रोग —

यह रोग प्राय भोजन के समय पानी कम पीने से या ज्यादा पीने से तथा भोजन के बाद तत्काल पानी ज्यादा पीने इत्यादि कारणो से मन्दाग्नि रोग हो जाता है, अधिक मात्रा मे भोजन करने से या भूख निकालने से, कुसमय भोजनादि करने से, बिना भूख भोजन करने से, नशीली वस्तुओ के प्रयोग करने से, कब्ज रहने से, खट्टे चटपटे या

चिकने पदार्थों का ज्यादा सेवन करने से, व्यायाम न करने से, ज्यादातर एक जगह बैठने से, यह मन्दाग्नि रोग हो जाता है। ज्यादा शोक, क्रोध, द्वेष आदि के करने से, चिन्ता, ईर्ष्या, दु:ख पीडा से भी पाचन शक्ति पर बुरा प्रभाव पड़ता है, कफ अधिक होने से भी मन्दाग्नि रोग होता है।

लक्षण :- मस्तक और पेट पर बोझा सा बना रहना, थोडा सा भी भोजन न पचना, हड़फुटन रहना, उबकाई होना, भूख न लगना, अरुचि रहना, हृदय पर भारीपन आदि लक्षण मन्दाग्नि रोग के होते हैं।

१. भोजन के बाद हींगादि की बघार दी हुई वस्तु का सेवन करना अत्युत्तम है तथा चोकोर आटे की रोटी खाना लाभदायक होता है, बारीक आटा और मैदा की वस्तुए खाने से प्राय. कब्ज होता है।
२. नारंगी के छिलके से मन्दाग्नि मिटती है अथवा भोजन के पश्चात् गन्ना चूसने से भोजन शीघ्र पचता है।
३ भोजन के एक घण्टा बाद ५-६ रत्ती सोहागा को जल के साथ लेने से मन्दाग्नि रोग मिटता है।
४ पोखरमूल का मुरब्बा खाने से शरीर निरोग रहता है तथा पाचन शक्ति बढ जाती है।
५. ६ रत्ती भुनी हींग तथा ६ रत्ती सेंधा नमक मिलाकर प्रतिदिन भोजन के समय पहले ग्रास में मिलाकर खाने से मन्दाग्नि रोग का उपशम होता है।
६. राई की फाकी लेने से कब्ज से हुई मन्दाग्नि मिटती है अथवा टमाटर खाने से जठराग्नि मिटती है।
७ इन्द्रजौ का चूर्ण २ माशा प्रतिदिन दिन से ३ बार सेवन करने से मन्दाग्नि और पेट का मरोड़ा मिटता है।
८ कालीमिर्च, सोठ, पीपर, जीरा और सेंधा नमक समभाग का चूर्ण १।।-२ माशा भोजन के बाद लेने से पाचन शक्ति बढती है।

९ छुहारे की गुठली और ऊँट कटारे की जड की छाल को समभाग लेकर फाकी लेने से मन्दाग्नि मिटती है।

१० पीपल वृक्ष की कोपलो को चिगदकर मिट्टी के बर्तन मे बन्द करके जलाकर भस्म को खाने से मन्दाग्नि और अजीर्ण रोग मिट जाता है।

११. अकरकरा और सोठ के चूर्ण की फाकी लेने से अजीर्ण और मदाग्नि रोग मिटता है।

१२ शहतूत के शर्बत मे पीपल का चूर्ण डालकर पीने से मन्दाग्नि रोग मिटता है।

१३ इमली के पचाग के खार मे मिश्री मिलाकर पीने से मन्दाग्नि रोग मिटता है।

१४ सोठ, पीपल, कालीमिर्च और सेधानमक समभाग का चूर्ण बनाकर भोजन के बाद लेने से विषमाग्नि मिटती है।

विषमाग्नि के लक्षण:—पेट दर्द, आफरा, दस्त साफ न आना, वायु रुकना, शरीर फडकना और चक्कर आना आदि है।

१५ अदरक के रस मे नीम्बू का रस मिलाकर लेने से तीक्ष्णाग्नि मिट जाती है, जो कि पित्त की अधिकता से होती है।

१६ हरा आवला एक सेर को उबालकर गुठली निकालकर पीसकर फिर उसमे सफेदजीरा ५ तोला, कालीमिर्च ५ तोला, सेधानमक १० तोला, अकरकरा एक तोला, पीपल २ तोला, काला नमक २ तोला साथ मे पीसकर फिर बडी (मगोडी) बनालें और सुखाले। इनके सेवन से मन्दाग्नि मिटती है, हाजमा होता है और वायु मिटती है।

१७ अदरक रस सग खाण्ड को, चाटत है जो कोय।
अरुचि नष्ट हो जात है, भोजन वर रुचि होय ।।

१८. जवाखार, सेधानमक, हरड, सोठ, पीपल, आवला इनके चूर्ण को बिजोरा या नीम्बू के रस मे डालकर पीना चाहिये एव इन्हीं

चीजो से दात साफ करना चाहिये ।

१६ जो व्यक्ति अरोचक रोग से पीडित है उन्हे खट्टा, कडवा, कटुक (चरपरा) तथा मनोहर साग भाजियो से युक्त स्वादिष्ट रुक्ष व अल्प भोजन कराना हितकर होता है, भोजन रोगी के मन के अनुकूल होना चाहिये ।

२० ४ माशा सोठ का क्वाथ पीने से मन्दाग्नि तथा उदर रोग मिटते हैं ।

— भूख न लगना —

२१ पीपर, अजमोद और नमक का चूर्ण सेवन करने से भूख लगती है ।

२२ आन्धाझाडे के बीज खाने से भूख बढती है ।

२३ नारगी की फाक पर सोठ बुरकाकर खाने से भूख बढती है ।

२४ पीपल को दूध मे औटाकर पीने से भूख बढती है । अथवा लवण-भास्कर चूर्ण के सेवन से भूख लगती है ।

२५. गुड के साथ कालीमिर्च खाने से भूख लगती है । इन्द्रायण की जड और पीपल के सेवन करने से भूख बढती है ।

— अरुचि रोग —

२६ नीम्बू के रस मे दूना पानी तथा लोग व कालीमिर्च का चूर्ण मिलाकर पीने से अरुचि मिटती है ।

२७ सचरनमक को गुड मे मिलाकर गोली बनाकर देने से अरुचि मिट-कर भूख लगती है ।

२८ अनार के रस मे जीरा और शक्कर मिलाकर पीने से अरुचि मिटती है ।

२६. इमली के पानी के पीने से भूख बढती है और आतो के घाव मिट जाते हैं ।

३०. ५ रत्ती आक के फूलो की कलियाँ और कालीमिर्च तथा नमक मिलाकर लेने से मन्दाग्नि, दिल धडकना, वमन, विसूचिका आदि रोग मिट जाते हैं ।

३१ जिस रोगी को खट्टी डकारें आती हो, हृदय में दाह और अम्लपित्त से अजीर्ण रहता हो तथा वमन होता हो उसको एक चम्मच भर चूने का पानी प्रतिदिन सुबह और शाम पीना चाहिये।

३२ जिस व्यक्ति के अजीर्ण से मूत्र थोडा-थोडा उतरता हो व पीला हो तथा खट्टी डकारें ज्यादा आती हो व वमन होता हो उसे चूने के पानी मे दूध मिलाकर पीना चाहिये।

३३ अजवाइन को तवे पर सेककर बारीक चूर्ण करके उसमे सेधानमक मिलाकर भोजन के पश्चात् प्रतिदिन एक-एक माशा खाने से अग्नि प्रदीप्त होती है।

३४ धतुरे के बीजो को १२ घण्टे तक गोमूत्र मे भिगोकर घिसकर तुष निकालकर लेने से मन्दाग्नि, व्रण, वात, ज्वर, कुष्ठ, कफ, कृमि आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

३५ अमृतप्रभा चूर्ण–अकरकरा, सेधानमक, चित्रक, आवला, अजवाइन और हरड समभाग लेकर और सोठ २ भाग लेकर बिजोरे के रस मे भावना देकर सेवन करने से मन्दाग्नि, अरुचि, खासी, दमा, गले के रोग, सिर के रोग, मृगी, उन्माद और सन्निपात मिटते हैं।

३६ अदरक को छीलकर उसके छोटे छोटे टुकडे करके उनमे नीम्बू का रस और नमक मिलाकर प्रतिदिन भोजन के समय सेवन करने से मन्दाग्नि रोग मिट जाता है।

३७. गेहूँ का आटा एक छटाक को रात्रि मे भिगोदे, सुबह २ तोला अणिया की गुली तथा २ तोला खसखस इन सबको महीन पीसकर पकाकर खीर बनाकर खाने से मन्दाग्नि और कमर का दर्द मिटकर ताकत आती है।

३८ दाड़िमादि चूर्ण –अनारदाना ४ तोला, मिश्री १६ तोला, सोठ २ तोला, कालीमिर्च २ तोला, पीपल २ तोला, तज १० माशा, पत्रज ८ माशा, नागकेशर १० माशा इन सबको महीन कूटकर ८ माशा मात्रा से जल के साथ लेने से अरुचि रोग मिटता है।

३९ **अग्निकुमार रस** –जवाखार, साजी, सोहागा, पाचो नमक, सोंठ, मिर्च, पीपल, त्रिफलासार, भीमसेनी कपूर, लोग, चव्य, चित्रक, अनारदाना, डान्सरिया, आदो (अदरक) इन सबको समान भाग लेकर महीन कूट छानले, फिर ३ पुट अजवाइन के अर्क की देवे तथा नीम्बू के रस की ५ पुट देवे फिर चना प्रमाण गोलिया बनाकर प्रतिदिन १ गोली खाने से अरुचि रोग मिटता है।

४०. **भोजन की रुचि के लिये** – राई, जीरा, सेकी हीग, सोठ, सेंधानमक, इन सबको महीन पीसकर रखले, फिर अनुमान माफिक गाय की छाछ या दही मे मिलाकर खाने से अरुचि रोग का नाश होता है।

४१. सेंधानमक १७॥ तोला, काला नमक २॥ तोला, जीरा सफेद ५ तोला, नीम्बू का सत २॥ तोला, काली मिर्च २॥ तोला, हीग भुनी हुई ३ माशा, पीपरमेन्ट का फूल ३ माशा, अकरकरा ३ माशा, पीपल १ तोला इन सबको कूट छान कर सुबह-शाम लेने से अजीर्ण रोग मिटता है।

४२. हरड की छाल, सोठ, ८-८ माशा तथा गुड २ तोला मिलाकर जल से लेने से आमाजीर्ण मिटे व भूख लगे।

४३. हरड की छाल व सेंधानमक प्रतिदिन सेवन करने से अजीर्ण सम्बन्धी रोग मिट जाय।

४४ नमक साम्भर ५ तोला, सचर नमक २॥ तोला, वायविडग १॥ तोला, सधानमक १॥ तोला, पीपल १॥ तोला, पीपलामूल १॥ तोला, पत्रज १॥ तोला, स्याहजीरा १॥ तोला, नागकेशर १॥ तोला, अमलबेत १॥ तोला, काली मिच १ तोला, जीरा १ तोला, सोठ १ तोला, अनारदाना ३॥ तोला, तज ५ माशा, इलायची ५ माशा, इन सबको कूट छान कर चूर्ण बनाले फिर ४ माशा प्रमाण गाय की छाछ के साथ या काजी के साथ लेने से उदर सम्बन्धी रोग मिटते है। इसका नाम लवण भास्कर चूर्ण है।

४५ **बड़वानल चूर्ण** - सेंधानमक ४ माशा, पीपलामूल ८ माशा, चव्य १ तोला, चित्रक १। तोला, सोठ १॥ तोला, हरड की छाल २ तोला

इन सबके बराबर मिश्री लेकर कूट छानकर चूर्ण बनालें। मात्रा ८ माशा प्रमाण प्रतिदिन लेने से अजीर्ण रोग मिट जाता है।

४६ सोठ १ तोला, कालो मिर्च २ तोला, पीपल ३ तोला, सेंधानमक ४ तोला, सोधी गन्धक ५ तोला, इन सबको महीन कूट छानकर फिर नीम्बू के रस मे १० दिन घोटे। मात्रा १ रत्ती प्रमाण गोलिया बनाकर प्रतिदिन खाने से भूख बढे। इसका नाम क्षुद बोध रस है।

४७ बीट नमक, सचर नमक, अजवाइन दोनो, जीरा, हरड़ की छाल, सोठ, काली मिर्च, पीपल, चित्रक, अमलबेत, अजमोद, धणिया, डान्सरिया, इन सबको बराबर लेकर महीन चूर्ण बनाले। ८ माशा प्रतिदिन लेने से हाजमा शक्ति बढती है अर्थात् पत्थर भी हजम हो जाता है, भोजन की तो क्या बात है।

४८ हरड की छाल ६ तोला, पीपल ४ तोला, चित्रक २ तोला, सेंधानमक २ तोला, इन सबका चूर्ण बनाकर ८ माशा प्रमाण पानी से लेने से अजीर्ण रोग मिट जाता है।

४९. दाल चीनी ४ तोला, इलायची ४ तोला, लोग ६ तोला, सोहागा भुना हुआ ४ तोला, चित्रक ४ तोला, काला मिर्च २ तोला, सेंधानमक ४ तोला, इन सबको कूट छानकर ५ माशा प्रमाण गर्म पानी से लेने से तत्काल अजीर्ण रोग मिटता है। इसका नाम त्र्यादि चूर्ण है।

५०. सोठ, मिर्च, पीपल, जीरा, सचर नमक, सेंधानमक, अजमोद, भुनी हीग, हरड की छाल, ६-६ माशा और निसोत ८ माशा इन सबको कूट छान कर चूर्ण बनाले। मात्रा ८ माशा गर्म पानी से लेने से तत्काल अजीर्ण मिटता है और भूख बढती है। इसका नाम जीरकादि चूर्ण है।

५१ **अजमोदादि चूर्ण** :—अजमोद, हरड़ की छाल, चित्रक, लोग, दालचीनी, सेंधानमक, इन सबको बराबर लेकर महीन कूट छानकर

८ माशा प्रमाण पानी से लेने से अजीर्ण रोग मिटता है।

५२. शुद्ध गन्धक, कालीमिर्च, पीपल, सोठ, सेघानमक, जवाखार, लोग इन सबको बराबर लेकर महीन कूट छानले और नीम्बू के रस मे १० दिन तक घोटे और एक रत्ती प्रमाण गोलिया बनाले। एक गोली प्रतिदिन खाने से भूख बढे।

५३. हरड बडी नग १०० को गाय की छाछ मे औटाकर फिर उनकी गुठलियाँ निकाल ले और उन हरड मे निम्न प्रकार वस्तुएँ भरना चाहिये। सोठ, मिर्च, पीपल, चव्य, चित्रक, दालचीनी, पाचो नमक, सेकीहीग, जवाखार, साजी, दोनो जीरा, अजमोद, निसोत इन सबको बराबर लेकर कूट छानकर नीम्बू के रस मे १० पुट देकर, फिर उन हरड मे भरकर धूप मे सुखाले। प्रतिदिन एक हरड खाने से अजीर्ण रोग मिटता है, भूख अधिक लगती है, मन्दाग्नि और उदर जनित रोगो को नाश करती है इससे बद्धकोष्ठ व आफरा भी मिटता है।

५४ निसोत २ तोला, पीपल ४ तोला, बडी हरड ५ तोला इन सबको महीन कूट छानकर इन सबके बराबर गुड मिलाकर ४ माशा प्रमाण गोलियाँ बनाले। एक गोली प्रतिदिन जल के साथ १५ दिन लेने से पेट का आफरा रोग मिट जाता है।

५५ सज्जीखार, जवाखार, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोठ, कालीमिर्च, सेघानमक, कालानमक, खारीनमक, साँभरनमक, काच का नमक, हीग और अजवाइन इन सबको पीसकर चूर्ण बनालें, और इसके अमलबेत, बिजोरा का पानी व आवले के रस की भावना देवे। यह चूर्ण कफ, वात और सग्रहणी आदि रोगो को दूर करने मे एक ही है। भोजन को पचाने मे अतिउत्तम है।

५६ सोठ ५ तोला, पीपल ४ तोला, अजमोद ३ तोला, अजवाइन २ तोला, सेंधानमक १ तोला और हरड १५ तोला इन सबका चूर्ण पेट की गडगडाहट, शूल तथा आम रोग को मिटाता है।

५७. अदरक, सेंधानमक, नीम्बू का रस सेवन करने से अजीर्ण मिटता है तथा मुख साफ रहता है।

५८. अजीर्ण रोग में लन्घन करना अत्यावश्यक है, प्यास लगने पर गर्म पानी पीना चाहिये क्योंकि अजीर्ण रोगी के जठराग्नि अतिक्षीण होने से वह भोजनादि को पचाने मे असमर्थ होता।

५९. अजीर्ण के रोगी को सेंधानमक डालकर गर्म पानी पीना चाहिये। अथवा त्रिकुटा, सेंधानमक, हीग, इनके चूर्ण को खट्टे फलो के रस को गर्म करके मिलाकर पिलाना चाहिये।

६० चित्रक की जड, सेंधानमक, हरड और पीपल इन चारो को बराबर लेकर चूर्ण बनालो फिर ३ से ६ माशा तक चूर्ण खाकर ऊपर पानी पीना चाहिये। इससे अजीर्ण मिटकर अच्छी भूख लगती है।

६१. सफेद जीरा, कालीमिर्च, अनारदाना, सेंधानमक और मिश्री इन सबको बराबर लेकर चूर्ण बनाले यह खाने मे सुस्वाद होता है व पेट के लिये अच्छा होता है।

६२. सेंधानमक, सोठ, कालीमिर्च का चूर्ण ६ माशा प्रतिदिन गाय की छाछ मे १५ दिन सेवन करने से अजीर्ण, मन्दाग्नि आदि रोग मिटते हैं इससे पाडू रोग भी मिट जाता है।

६३ जिन्हे घी या तेल आदि चिकने पदार्थ खाने से अजीर्ण होता है उन्हे भोजन के पहले सोठ और अन्त मे हरड खाना चाहिये।

६४. यदि पेट फूलता हो तथा कब्ज रहता हो तो नीम्बू के रस मे जायफल घिसकर चाटना चाहिये जिससे पेट हल्का हो जाता है।

६५ छुहारा, कालीमिर्च, पोदीना, सेंधानमक, हीग भूनी, जीरा, कालोदाख को नीम्बू के रस मे घोटले और मटर के दाना प्रमाण गोलिया बनाले। भोजन के पश्चात् २-२ गोली ले। इससे अजीर्ण रोग मिटता है।

६६. नीम्बू का रस एक सेर, अदरक का रस आधासेर, सेंधानमक २

तोला, भुनी हींग ६ माशा और मिश्री एक सेर सबको कलईदार बर्तन मे पकावे, ३ उफान आने पर उतारले। मात्रा ६ माशा से २ तोला तक सुबह-शाम दोनो समय लेने से अजीर्ण मिटता है, मदाग्नि रोग मिटता है।

६७ नीम्बू का रस ५ तोला, गुवारपाठा का रस ५ तोला, अदरक का रस ५ तोला, कालानमक २॥ तोला इन चारो को मिलाकर शीशी मे भर ले और १० दिन पर्यन्त धूप मे रखे, शीशी का डाट खुलने न पाये, पश्चात् छान ले। मात्रा १ तोला सोफ के अर्क के साथ लेवे। इससे सम्पूर्ण उदर सम्बन्धी रोग मिटते हैं।

—पेट का कृमि-रोग—

यह रोग खट्टे, मीठे, पतले पदार्थों के अधिक सेवन से या व्यायाम न करने से, विपरीत खाने-पीने से पेट मे कीडे पैदा होते हैं। इस रोग मे हल्का बुखार रहता है, शरीर का रग पीला या काला हो जाता है, पेट मे कभी ज्यादा और कभी कम दर्द रहता है, ये सब इस रोग के लक्षण हैं। इस रोग वाला प्राय ठण्डे स्थान पर सोना पसन्द करता है उसके मुंह मे लार टपकती है तथा दात किटकिटाते हैं, जब कीडे ऊपर की ओर चढते है तो हृदय की धडकन बढ जाती है, शरीर मे दर्द और चक्कर आते है, अरुचि होती है, कभी—कभी दस्त भी लगते हैं।

१ रोजाना भोजन के पहले १॥-२ माशा नमक फाकने से पेट मे कृमि पैदा ही नही होती है।

२ नीम के पत्तो के सेवन करने से कृमि पैदा नही होती है। बथुआ का अर्क निकालकर पीने से कीडे नष्ट होते हैं।

३ सूरजमुखी के बीजो की ४ माशा की फाकी लेने [से पेट के कीडे नष्ट होते हैं तथा आफरा शूल मिटता है।

४. स्याहजीरा का क्वाथ पीने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

५ खट्टे अनार के २ तोला छिलके तथा शहतूत को औटाकर पीने से पेट के कीड़े मिट जाते हैं।

६ जलभागरे का रस ३–४ बार गुदा में मलने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

७. एरण्ड के रस मे हीग डालकर देने से पेट के कीड़े मिट जाते हैं।

८ ३ माशा अजवाइन के चूर्ण को छाछ के साथ सेवन करने से पेट के कीडे नष्ट होकर मल के साथ निकल जाते हैं।

९ पित्त पापडा और वायविडग को औटाकर पीने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

१० नीम्बू के बीजो के चूर्ण की फाकी लेने से पेट के कीड़े मिट जाते हैं।

११ ६ माशा नमक को गर्म पानी मे पीने से पेट के केचुए भी निकल जाते हैं।

१२ नारगी के क्वाथ मे हीग डालकर पीने से पेट के कीड़े मिट जाते हैं।

१३ अनार की छाल ५–१० तोला को २४ घण्टे तक ३ सेर पानी मे भिगोकर मल छान कर उबालना चाहिये, जब १। सेर पानी रह जाय तो उसको ३ भाग करके २-२ घण्टा मे रोगी को भूखे पेट पीना चाहिये, याद रहे उस दिन रोगी को खाने के लिये और कुछ न देवे। दूसरे दिन प्रातः एरण्डी के तेल का जुलाब देना चाहिये, जिससे पेट के तमाम कीड़े तथा गोल मुंह के कीड़े भी नष्ट होकर सही सलामत निकल जाते हैं। इस कृमि रोग के लिये यह दवा अचूक ही है।

१४. कच्ची गाजर के खाने से भी आंतो के कीड़े मिटते हैं।

१५ तसतुम्बे के फल की गिरी को गर्म करके पेट पर बाधने से पेट के सभी कीडे नष्ट हो जाते है।

१६. अनार के जड़ की छाल के क्वाथ मे मीठा तेल मिलाकर तीन दिन

तक पीने से आतो के कीडे नष्ट होते हैं ।

१७ केशर और दालचीनी की गोली बनाकर खाने से आतो के कीडे नष्ट हो जाते हैं ।

१८. मसूर की दाल के सेवन करने से आतो के रोग मिट जाते हैं ।

१९ करेला के पत्तो का रस पीने से आतो के कीडे नष्ट हो जाते हैं ।

२० ढाक (घिवरा) के बीजो को पानी मे भिगोकर छीलकर उनकी गिरी को सुखाकर कपड छानकर १। माशा की फाकी दिन मे ३ बार और ३ दिन तक लगातार लेकर चौथे दिन एरड का तेल पीने से आतो के लम्बे कीडे भी निकल जाते है ।

२१ कृमि रोग वाले को काली तुलसी, पलाश, छोटी पत्ती की तुलसी इनके रस मे सिद्ध घृत को पिलाना लाभदायक है ।

२२ सिरस, चिरचिरा, केमुक, पलाश इनके रस को तिल के तेल मे मिलाकर पीने से कृमियो के समूह भी निश्चित नष्ट हो जाते हैं ।

२३. वायविडग के चूर्ण को अच्छी तरह कई बार घोडे की लीद (मल) के रस मे भावना देकर फिर तिल का तैल व शक्कर के साथ मिला कर उपयोग करने से कृमि-समूह अवश्य ही नष्ट हो जाता है ।

२४ रालि, वायविडग के चूर्ण को मूसाकानी के रस मे घोले, फिर उसे घृत के साथ पकाकर खाने से कृमि नाश हो जाती है ।

२५ तुलसी, वायविडग, सफेद खैर कन्दक (बनसूरण) इनसे पकाई हुई छाछ से मिश्रित गर्म काजी मे घृत मिलाकर ३ दिन पीने से उदर मे रहनेवाली समस्त कृमि नाश हो जाती है ।

२६ दही के तोड मे इन्द्रायण के कल्क को मिलाकर ८ दिन मे एक दफा पीने से कृमि नाश हो जाती है ।

२७. तुलसी व जाई के रस मे पीसा हुआ पीपलामूल को बकरे के मूत्र के साथ प्रतिदिन पीने से कृमि रोग मिट जाता है ।

२८ कृमि रोग के उत्पन्न हो जाने पर सिर या हृदय से अत्यन्त पीडा,

वमन, छीक व ज्वर उत्पन्न होते हैं एवं बार-बार कृमियों से उत्पन्न अन्य अतिसार, भ्रम रोग आदि भी हो जाते हैं।

— संग्रहणी-रोग —

सर्वप्रथम अतिसार होता है, फिर रोगी कुपथ्य करता है जिससे अग्निमद हो जाती है, फिर मदाग्नि से पेट मे अन्नादि बिगड जाता है। यह सग्रहणी रोग ४ प्रकार का होता है—वाय, पित्त, कफ और सन्निपात इस प्रकार ये लक्षण जानना चाहिये, कच्चे अन्न का मल बनकर कभी बधा हुआ मल व कभी पतला मल लगता है सो जानना चाहिये।

बाय की संग्रहणी के लक्षण —वायु के पदार्थ ज्यादा खाने से वाय कुपित हो जाती है तब जठराग्नि बिगड जाती है, मैथुन आदि ज्यादा करने से तथा विरुद्ध भोजनादि करने से यह रोग हो जाता है।

लक्षण—प्यास ज्यादा लगना, भूख लगना, कान मे शब्द होना, जाघ मे, पेडू मे, कधे मे पीडा होना, शरीर दुबला होना, जीभ का स्वाद बिगड़ जाना, मीठा ज्यादा खाने की इच्छा होना, भोजन के बाद आफरा होना, बार-बार शौच जाना, खासी श्वास का चढना, ये सब लक्षण वाय की सग्रहणी के हैं।

१. गाय को छाछ मे सोठ, काली मिर्च, पीपलामूल, पीपल, चव्य, चित्रक इन सबको कूट-छानकर चूर्ण बनावे और पीवें फिर ऊपर से इच्छानुसार छाछ पीने से सग्रहणी रोग निश्चय मिट जाता है।

२ रसोत, अतीस, इन्द्रजौ, तज, धावड़ा का फूल, इन सबको महीन कूट-छानकर ८ माशा मात्रा मे गाय की छाछ मे या चावलो के पानी के साथ १५ दिन लेने से पित्त की सग्रहणी मिट जाती है।

३. हरड, पीपल, सोठ, चित्रक, सचर नमक, काली मिर्च इन सबका चूर्ण करके छाछ के साथ १५ दिन लेने से कफ की सग्रहणी मिट

जाती हैं।

४ अनार दाना २ तोला, सचर नमक २ तोला, जीरा २ तोला, धनिया २ तोला, काली मिर्च २ तोला, पीपल २ तोला, पीपलामूल २ तोला, बसलोचन २ तोला, मिश्री १६ तोला, इन सबको महीन कूट-छानकर गाय की छाछ मे १ महिने तक लेने से सन्निपात की सग्रहणी मिटती है तथा आमातिसार भी मिट जाता है।

५. बेलगिरी, आम की गुठली, जायफल, अफीम इन सबको पानी मे पीसकर पेट की नाभि पर लेप करने से अतिसार बद हो जाता है।

६ पाषाण भेद ४ माशा को कपड छान करके १ माशा बकरी के दूध के साथ दिन मे चार बार लेने से पानी जैसा अतिसार भी मिट जाता है।

—अतिसार-रोग—

ज्यादा भारी वस्तु खाने से, मल की बाधा रोकने से, विरुद्ध भोजन से, ज्यादा चिकनी या रूखी खाने से, पतली व शीतल वस्तु खाने से यह अतिसार रोग हो जाता है।

लक्षण—नाभि, गुदा और उदर मे पीडा होती है, अङ्ग मे फूटणी होती है, अधोपवन रुक जाती है, बद्ध कुष्ठ हो जाती है, पेट के आफरा होता है, अन्न पचता नही है, इत्यादि बातें हो तब समझलो कि अतिसार रोग है। यह रोग ६ प्रकार का होता है—वाय का, पित्त का, कफ का, सन्निपात का, शौच का और आम का।

—वाय का अतिसार—

ललाई रंग का मल हो, मल मे झाग का होना, रूखा होना, बार-बार शौच का होना, आम से मिला हुआ मल होना, मल के निकलते समय पेडू मे पीड़ा होना ये सब वाय के अतिसार के लक्षण हैं।

१. बच, अतीस, नागरमोथा, इन्द्रजौ और सोठ इन सबको बराबर लेकर जौ कूट करके ८ माशा का काढा बनावें और ७ दिन लेवें तो वाय का अतिसार मिटता है।

२. इन्द्रजौ, नागरमोथा, लोद, बेल की गिरी, आम की गुठली, धावडा का फूल, इन सबको समभाग लेकर महीन पीसकर मात्रा ८ माशा भैस की छाछ मे ७ दिन लेने से वाय का अतिसार मिटे।

—पित्त का अतिसार—

मल का पीला रग होना, शरीर मे पसेव ज्यादा आना, प्यास लगना, शरीर मे दाह का होना, मूर्छा आना, ये लक्षण पित्त अतिसार के है।

३ बेल की गिरी, इन्द्रजौ, नेत्रवाला, नागरमोथा, अतीस इनको जौ कूट करके मात्रा ८ माशा का काढा ८ दिन लेने से पित्त का अतिसार मिटता है।

४. रसोत, अतीस, इन्द्रजौ, धावडा का फूल और सोठ इन सबको बराबर लेकर महीन कूट करके चावलो के पानी में थोडी शक्कर मिलाकर लेने से भयकर पित्त का अतिसार भी मिटता है।

५ पित्त के साथ रक्त अतिसार हो तो—दाडम का छोडा ४ माशा को औटाकर मिश्री मिलाकर देने से रक्त अतिसार मिट जाता है।

६. सफेद चन्दन महीन करके ८ माशा और मिश्री १ तोला मिलाकर ८ दिन चाटे तो रक्तातिसार मिटता है।

७ पुराने अतिसार मे ४ माशा मोचरस पीसकर उसमे मिश्री मिलाकर खाना चाहिये।

८ गेहूँ के आटे मे घृत मिलाकर पानी मे गून्द कर फिर सुहावे जैसा सेक करने से गुदा का पाक मिटता है।

९ पटोल, मुलैठी, महुआ इनको औटाकर ठण्डा करके धोने से गुदा का मिट जाता है।

—कफ-अतिसार—

मल का चिकना होना, सफेद और गाढ़ा होना, दुर्गन्ध सहित होना, पीडा

होना, शरीर भारी होना, भोजन मे अरुचि होना, इन लक्षणों से कफ का अतिसार जाना जाता है।

१०. चव्य, अतीस, कूठ, बेल की गिरी, सोंठ, कुडा की छाल, तज इन सबको जौकूट करके मात्रा ८ माशा का काढा ५ दिन लेने से कफ अतिसार मिटता है।

११ भुनी हुई हींग, संचर नमक, सोठ, काली मिर्च, पीपल, अतीस इन सबको समान भाग लेकर जौकूट करके मात्रा ४ माशा ७ दिन लेने से कफ अतिसार मिटता है।

—सन्निपात-अतिसार—

जिसका मुँह लाल हो जाता है, मल अनेक रग का दिखता हो, निद्रातंद्रा ज्यादा आती हो, प्यास से मुँह सूखता हो, तो सन्निपात का अतिसार जानना चाहिये।

१२ जागी हरड, सोठ, नागरमोथा, इन सबको समान भाग लेकर कूट पीसकर फिर पुराने गुड मे ८ माशा प्रमाण ७ दिन खाने से सन्निपात का अतिसार मिटता है।

—शौच का अतिसार या भय-शोक अतिसार—

१३ इस रोग मे निर्भय होने से या चिंता मिटने से रोग मिटता है।

—आम अतिसार—

भोजन का अजीर्ण होय, मल बिगड जाना, मल पानी मे तिरे, आम जल मे डूब जाय, मल का चिकना होना, ये सब आम-अतिसार के लक्षण होते हैं।

१४ धनिया, सोफ, बेल की गिरी, नागर मोथा, नेत्रवाला, इन सबको बराबर लेकर जौ कूट करके मात्रा ८ माशा का काढा ७ दिन या १०–१५ दिन रोगानुसार लेने से आमातिसार मिटता है। इसे धनिया पञ्चक कहते हैं।

१५ सोफ को आधी सेककर पीसकर ठण्डे पानी से लेने से आमातिसार मे फायदा होता है।

१६. आम की गुठली, बेल की गिरी इनको पीसकर मात्रा ८ माशा का काढ़ा बनाकर १ तोला मिश्री मिलाकर ७ दिन लेने से आमातिसार व वमन मिट जाते हैं।

१७ धावड़े के फूल को महीन करके मात्रा ८ माशा दही के साथ ७ दिन खाने से मरोडा तथा अतिसार मिटता है।

१८ बेल की गिरी ८ माशा बकरी के दूध के साथ ७ दिन लेने से आम-अतिसार मिट जाता है।

१६. धनिया, सोठ, पोपल, सेंधानमक, अजमोद, सेकी हीग, जोरा इन सबको समान भाग लेकर महीन करके दही के मट्ठे के साथ मात्रा ८ माशा लेने से समस्त प्रकार का अतिसार और शूल आम मिट जाता है।

२० सोठ को पानी से महीन पीसकर उसका गोला बनाकर अरड के पत्तो से लपेटकर सूत बाधकर फिर उस पर माटी लपेटकर मन्द-मन्द आच मे पकावें, पश्चात् माटी उतारकर सोठ निकाल ले और महीन पीसकर मात्रा ८ माशा मिश्री की चासनी से ७ दिन खाने से आमातिसार मिट जाता है।

२१ १ भाग अफोम, २ भाग हिंगलु, ३ भाग लोंग, ४ भाग मोचरस और ३ भाग मिश्री इन सबको खरल करके १–२ रत्ती प्रमाण चावलो के पानी या छाछ के साथ लेने से भयकर अतिसार भी मिट जाता है।

२२ अफोम को ठीकरी पर मन्द आच पर सेक ले फिर अनुमान माफिक देने से अतिसार मिटती है।

२३ सोठ, जायफल, अफोम, कच्चो अनार के गुले इन सबको महीन करके फिर कच्ची दाडम में भरकर, पकाकर फिर मूंग प्रमाण गोलियाँ बनाले। १ गाली छाछ से ७ दिन लेने से अतिसार राग मिटता है।

२४ जायफल, लोग, धावड़ा के फूल, बेल को गिरी, नागरमोथा, सोंठ,

मोचरस, हींगलु, अफीम इन सबको बराबर लेकर खरल करें और पोस्त के डोडा के पानी में १–२ रत्ती प्रमाण गोलियाँ बनाले। मात्रा १–१ गोली चावलो के पानी या छाछ से लेने से सब प्रकार का अतिसार रोग मिटता है।

२५. सोठ, धाय के फूल, मोचरस, अजमोद इन चारो के चूर्ण को तक्र (छाछ) से लेने से उग्र अतिसार रोग भी मिट जाता है।

२६ जायफल, छुवारा, अफीम इन तीनो को बराबर लेकर नागर बेल के पान के रस मे घोटकर १ रत्ती प्रमाण गोलियाँ बनाले। १–१ गोली छाछ से ७ दिन लेने से भयकर अतिसार मिट जाता है।

२७ कूडा की छाल, नागरमोथा, बेलगिरी, अतीस और सुगधवाला इन सबका क्वाथ लेने से रक्त आम और शूलयुक्त अतिसार को भी नष्ट कर देता है।

२८. गुड मे बेलगिरी मिलाकर लेने से कुक्षिशूल, आमशूल तथा सर्व प्रकार के रक्तातिसार मिटते हैं।

२९. सोफ १ तोला, सफेद जीरा १ तोला, पोस्त का डोडा आधा तोला, आम की गुठली १ तोला, छोटी हरड १ तोला, इन सबको कूट-छानकर तवे पर १ माशा घृत डालकर भून ले फिर महीन करके सबके बराबर मिश्री मिलाकर १ तोला फाकी लेकर ऊपर पानी पीवे इस प्रकार ५ दिन लेने से अतिसार तथा मरोडा मिट जाते हैं।

३० १ माशा अफीम के छोटे-छोटे टुकडे करलें फिर १ तोला अजवाइन को तवे पर भूनें, जब अजवाइन में सुगधी आने लगे तो उन अफीम के टुकडो को उसमे डाल दो फिर आग से उतारकर खरल करलें। मात्रा ४ रत्ती प्रमाण शीतल पानी से लेवे तो दस्त तथा मरोडा मिट जाता है।

३१. कुआ की पुरानी ईन्ट ८ तोला को पीसकर फिर पत्तो के तरफ की मूली ८ तोला, दोनो को पीसकर २ तोले का गोला दोनो समय

पानी से सेवें तो घोर अतिसार व संग्रहणी रोग मिट जाता है।

३२ अतिसार मे असाध्य रोग हो जाय उसका लक्षण —प्यास ज्यादा होना, अरुचि होना, हिचकी आना, पसवाडो में शूल होना, मूर्च्छा होना, किसी काम मे मन न लगना, गुदा पक जाना, ज्वर रहना, मूत्र कम लगना, शरीर कमजोर हो जाना, ये लक्षण असाध्य रोग के होते हैं।

३३ अतिसार रोग मिटने पर —अधोवायु चले, भूख लगे, पेट हलका रहे इत्यादि लक्षणो से यह जाना जाता है।

३४ १ छुहारे की गुठली निकालकर उसमे अफीम भर दे, फिर उसके ऊपर गेहूँ के आटे का लेप करके उसे गर्म गोबर मे दबा दे, जब ऊपर वाले आटे का रग लाल हो जाय तो छुहारे को निकालकर अफीम सहित खरल कर ले और चने प्रमाण गोलियाँ बनाले। मात्रा १ से ३ गोली तक, इसके सेवन से दस्त मिटे।

३५ खस, बेल गिरी, धाय के फूल और मीठे इन्द्रजो, समान भाग लेकर कूट छानकर चूर्ण बनाले और बीही तथा जामुन के २-२ तोला स्वरस मे पानी मिलाकर उसमे ६ माशा चूर्ण खावें। इससे पेचिस, मरोड़ा और दस्तो मे फायदा हो जाता है।

३६. ४ तोला अमलतास के गूदे को २० तोला गाय के दूध में औटाकर छानकर मिश्री मिलाकर पीने से आतो मे फसी हुई मल को गाठे भी निकल जाती हैं।

३७. रेशा खतमी ५ माशा रात्रि मे पानी मे भिगो दें और प्रात काल मल छानकर उसमे अमलतास का गूदा ४ तोला मिलाकर छान ले तथा ५ दाना बादाम की गिरी को पानी मे पीसकर उसमे मिला कर पीने से आतो मे फसी मल की गाठे निकलकर पेट साफ हो जाता है तथा मरोड़ा आदि मिट जाते हैं।

३८. सोफ, पीली हरड़ पोस्त का डोडा समभाग लेकर गाय के घृत में भून लें और कूट छानकर चूर्ण बनालें मात्रा ६ माशा, २ तोला

मीठी बीही के स्वरस को पानी में मिलाकर उसके साथ सेवन करे। इससे अतिसार रोग मिटता है।

३६ उन्नाव ५ दाना, लिहुमोडा ६ दाना और तुख्मखतमी ७ माशा लेकर अधकुटा करके फिर पानी मे उबालकर छान ले, फिर २ तोला बनफसा मिलाकर पीवे। पथ्य मे जौ का पानी पिलावे, इससे जुकाम से होने वाला अतिसार भी मिट जाता है।

४०. अदरक को पीसकर नाभि के चारो ओर बाट बना दें फिर उसमे आवले का रस भरने से आम के दस्त तत्काल मिट जाते हैं।

—भस्मक-रोग—

जो खावे वही भस्म हो जाये, दाह मूर्च्छा हो, खाया हुआ पदार्थ तो क्या परन्तु सारे शरीर की धातुएँ भी भस्म हुई-सी जान पडे तो समझलो कि "भस्मक रोग" हो गया है, यदि इस रोग का शीघ्र इलाज न किया जाय तो थोडे ही दिनो मे शरीर की धातुएँ भस्म होकर शरीर नष्ट हो जाता है।

१ १० तोला चावलो को आधा सेर ऊँटनी के दूध में खीर बनाकर उसमे घृत डालकर खाने से १२ दिन तक भूख बिल्कुल न लगे और भस्मक रोग मिट जाता है।

२ बैर की मिगी २ तोला को पानी मे पीसकर पीने से भस्मक रोग मिट जाता है।

३. गूलर की छाल १ तोला को स्त्री के दूध मे पीसकर पीने से भस्मक रोग मिट जाता है।

४ केले के पके फलो की २४ तोला गिरी को घी के साथ ४१ दिन प्रात काल खाने से भस्मक रोग मिट जाता है।

५. चनो को पानी में भिगोकर उस पानी को पीने से भस्मक रोग मिट जाता है।

६. पर्याप्त मात्रा में केला खाने से भस्मक रोग मिट जाता है।

७ अजमोद को दूध और घी के साथ खाने से १ महीना भूख नहीं लगती है।

—शरीर का मोटापा दूर करना—

शरीर का मोटापा दूर करने के लिये गरिष्ठ भोजन बद करना चाहिये, भोजन की मात्रा भी कम करनी चाहिये, फल व हरी तरकारिया ज्यादा सेवन करनी चाहिये, नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिये और टहलना चाहिये।

१. कुल्थी को पकाकर खाने से मोटापा मिटता है।

२ त्रिफला के काढे मे मिश्री मिलाकर प्रात काल पीने से शरीर का मोटापा दूर हो जाता है।

३ इन्द्रायण की जड तथा अजवाइन का चूर्ण १-१ रत्ती खाने से कायाकल्प होता है।

४. इन्द्रायण को रविवार के दिन उखाडकर रस निकालकर लोहे की कढाई मे मद आच से औटाकर १ मास तक १ माशा भर रस सेवन करने से सब प्रकार का रोग नष्ट होकर बल बढता है।

५ जल भागरा ४ माशा की मात्रा मे गाय की छाछ के साथ ४१ दिन सेवन करने से सब रोग मिटते हैं, २ मास तक सेवन करने से शरीर पुष्ट हो जाता है, ३ मास पर्यन्त सेवन करने से शरीर देदीप्यमान और ४ मास तक सेवन करने से कायाकल्प होता है।

६. प्रात काल शीतल जल मे मिश्री (मधु) मिलाकर पीने से पेट का मोटापा मिट जाता है।

७. असगंध के चूर्ण मे बग भस्म मिलाकर फाकी लेवें और ऊपर अंगूर खावें या उनका रस पीवें तो शरीर ठीक हो जाता है।

८. १ पाव उड़द की दाल में बबूल की कच्ची फली के रस की ७

भावना देकर पीसकर २ तोला की मात्रा प्रतिदिन दूध के साथ खाने से शरीर पुष्ट हो जाता है।

६ १ गिलास पानी में १ नीम्बू का रस प्रतिदिन सुबह पीने से शरीर का मोटापा मिटता है।

—सर्व वात-रोग—

१. अरण्ड की लकडी की १ तोला भस्म खाने से वात रोग मिट जाता है।

२ तिलो के तेल मे लहसुन क्वाथ और सेधानमक मिलाकर सेवन करने से सभी तरह की वात व्याधि मिटती है।

३. पीपल और पीपलामूल के चूर्ण का सेवन करने से छोटे जोडो का सूजन, पक्षाघात, कमर को पीडा आदि वात-व्याधिया मिट जाती हैं।

४ १ तोला निर्गुन्डी १ तोला गाय के घृत मे खाने से कफ और वायु मिटती है।

५ घुटने, पैर तथा कमर की बादी का दर्द मिटाने के लिये भेड़ के दूध मे थोडा अरण्ड तेल मिलाकर गर्म करके दर्द की जगह मालिश करे, फिर कायफल का चूर्ण बुरकाकर पीपल या अरण्ड या आक के पीले पत्ते बाध ले, इस तरह ४–५ दिन उपचार करने से अवश्य दर्द मिट जाता है।

६ १ बडे तसतुम्बे के टाकी लगाकर गिरी निकाललो, फिर उसमे हल्दी का चूर्ण १० तोला भरदो और खाम लगाकर ऊपर मुलतानी मिट्टी मे कपडा भिगोकर लपेटकर सुखाकर भोभर में पका लें, हल्दी पकने पर निकाल लो और गुवारपाठा मिलाकर थोडा गर्म करके सुहाता-सुहाता जहाँ दर्द हो वहां लेप करे, ऊपर आक के ५-५ पत्ते देकर बाधने से कमर तक का दर्द अवश्य मिटता है।

७ यदि बार-बार चक्कर आते हो, आंखो के सामने अन्धेरा-सा घिरा रहता हो और खड़े होते ही गिर पड़ते हो तो भांवरे के ३ से ६ माशा रस में मिश्री मिलाकर दिन मे २ बार पीने से आराम होता है।

८ सवेरे उठकर शौचादि क्रियाओ से निपटकर १ गिलास ठण्डे पानी मे १ नीम्बू निचोडकर कई दिन पीने से घुटने का दर्द, पैरों की सूजन, शरीर का मोटापा तथा वायु विकार मिटते हैं।

९. भिलावा, कुचीला, एलवा, धतुरे का बीज एक-एक तोला को आधा सेर तेल मे मिलाकर आग पर चढा दो, पकाकर तेल छान कर रख लो। इस तेल की मालिश करने से बादी का दर्द मिटता है। याद रहे बची हुई वस्तुएं जमीन मे गाढ दो क्योंकि ये चीजे जहरीली है।

१० समुद्रफल को नीम्बू के रस मे घिसकर लगाने से बादी का दर्द मिटता है।

११ अरण्ड की गुली, काला तिल और भेड का दूध ५-५ तोला पीसकर लेप करने से बादी मिटती है।

१२ अरण्ड को जड को पीसकर घी या तेल मे मिलाकर गर्म करके लेप करने से वात रोग मिटता है।

१३ रास्ना, गिलोय, देवदारु, सोठ और अरण्ड की जड का क्वाथ बना कर प्रतिदिन २ बार लेने से आक्षेप, सप्त धातु मे समाया हुआ वात, आम वात और समस्त शरीर मे समाया हुआ वात रोग मिट जाता है।

१४. असगध के पचाग का पाक बनाकर खाने से वायु का समस्त विकार मिटता है।

१५. सिगीमोरा, कुचीला, चिरमी १—१ तोला, आमाहल्दी २ तोला मेहदी ४ तोला, तेल ४ तोला और अफीम आधा तोला का हलवा बनाकर हाड की बादी की पीड़ा पर बान्धने से आराम है

जाता है ।

१६ निगुंन्डी के पत्तो गर्म करके बाधने से बादी की गाठें बिखर जाती हैं ।

१७ प्रातःकाल लहसुन की २-४ गुलिया प्रतिदिन खाने से बुढापे की बादी की शिकायत मिटती है ।

१८. **सोंठ पाक**—सोठ १२ तोला को महीन करके १ सेर गाय के घृत मे मकरोयकर फिर ४ सेर दूध मे पकावे, पश्चात् १ सेर शक्कर की चासनी में मिलाकर १-१॥ तोला की गोलिया बनाले । प्रतिदिन दोनो समय एक-एक गोली लेने से सर्व प्रकार की बादी मिटती है, इससे ग्रामवात भी मिटती है तथा शरीर पुष्ट हो जाता है । इसे सोठ पाक कहते हैं ।

१६ इकपोथ्या लहसुन का रस ८ माशा व गाय का घृत ८ माशा मिला कर प्रतिदिन खाने से ग्रामवात मिटती है ।

२०. साजी ४ माशा तथा गुड ४ माशा मिलाकर प्रतिदिन खाने से पेट का गोला व ग्राफरा मिटता है ।

२१. यदि ग्रामवात रोग से कमर, कुक्षी ग्रादि मे पीडा हो तो, दशमूल के क्वाथ मे अथवा सोठ के क्वाथ मे ग्ररण्डी का तेल मिलाकर पीना लाभदायक है ।

२२ रास्ना, गिलोय, सोठ, देवदारु, दशमूल ग्रौर इन्द्रजौ इनके क्वाथ में ग्ररण्डी का तेल मिलाकर पीने से ग्रामवात रोग मिट जाता है ।

२३. ईरण्ा का पत्ता पानी मे उबालो उसमे चावलो की पोटली बांधकर डाल दो, जब चावल पक जाय तो निकालकर घृत ग्रौर शक्कर मिलाकर ८-१० दिन खाने से वायु का दर्द मिटता है ।

२४. सहेजना की छाल को उबालकर उसका पानी पीने से वायु का दर्द मिट जाता है ।

२५ ग्राक के नीचे को बालू को गर्म करके बिछाकर सोने से भी वायु का दर्द मिटता है ।

२६ गौमूत्र को उबालकर थैली या बोतल में भरकर सेक करने से वायु का दर्द मिट जाता है।

२७ ईंट को गर्म करके सेक करने से वायु का दर्द मिट जाता है।

२८ सरसो के तेल मे बारीक नमक मिलाकर लगाओ और धूप मे सेको तो वायु का दर्द मिटता है।

२९. तारपीन का तेल ५ तोला, कपूर अच्छा डलीवाला २ तोला मिला कर ८ घटे धूप मे रखकर प्रत्येक दर्द पर मर्दन करने से फायदा होता है।

३०. महुआ ३ भाग, खाने की तम्बाकू १ भाग को पीसकर गर्म करके जहाँ शरीर मे दर्द हो वहाँ बाधने से साधारण बादी का दर्द मिट जाता है।

३१ अजवायन ६ माशा को रात्रि मे भिगोकर सवेरे उसमें २ कालीमिर्च डालकर पीस लो और बिना छाने ही पीओ इससे सरण चलनी मिट जाती है।

—जोड़ों का दर्द व गठिया रोग—

ज्यादा गर्म पदार्थ खा पीकर तत्काल स्नान करने से वायु कुपित होकर जोडो मे प्रवेश कर जाती है, ज्यादा खट्टे पदार्थ खाने से भी यह रोग उत्पन्न होता है।

१. कैर की जड की भस्म घी मे मिलाकर प्रातःकाल चाटने से जोड़ों का दर्द मिटता है।

२. कैर की जड का बाफरा देने से हाथ-पैरो के जोड़ो का दर्द मिटता है।

३. मेहन्दी और अरण्ड के पत्ते पीसकर लेप करने से घुटनों का दर्द मिटता है।

४. साबुन और मेहन्दी के पत्ते पीसकर लेप करने से घुटनो का दर्द मिटता है।

५. गोरखमुण्डो के ८ माशा चूर्ण की गर्म जल के साथ फाकी लेने से सन्धि-वात मिटती है।

६. घुटनो पर तेल लगाकर ऊपर सोठ बुरकाकर मसलकर पुरानी रुई बाधने से पीडा मिटती है।

७. अडूसा और अरण्ड के पत्तो को अरण्ड के तेल व पानी मे औटाकर बफारा देने से रगो की पीडा मिट जाती है।

८. तिलो की खल को कूटकर थोडा पानी मिलाकर पकावें और घुटनो पर बाधें तो दर्द मिटता है।

९. १ पाव मेथी दाना और १ पाव आमाहल्दी को पीसकर भेड के दूध मे ३ भावना देकर मगोडी (बडी) बनाकर सुखाकर रख लो फिर प्रतिदिन हलवे के साथ १ मगोडी खाने से ऐडी तथा घुटनो का पुराना दर्द भी मिट जाता है।

१०. अरणी की जड पोसकर लगाकर तपाने से हड्डी तथा जोडो का दर्द मिट जाता है।

११ आक की जड को १ रत्ती औटाकर पिलाने से जोडो की सूजन भी मिटती है।

१२. हल्दी, चूना और गुड का लेप कई दिन करने से कलाई की जोड का दर्द मिट जाता है।

१३. गिलोय ८ माशा, त्रिफला ८ माशा का काढा बनाकर फिर गुग्गुल ८ माशा मिलाकर १ मास तक प्रतिदिन पीने से बादी के जोड़ो का दर्द मिट जाता है।

१४. तेल का मर्दन करके सोंठ बुरकाकर फिर तेल में चुपड कर अरड के पत्ते गर्म करके बाधने से जोडो का दर्द मिटता है।

१५ धतूरे के पत्ता को गर्म करके बाधने से भी जोड़ो का दर्द मिट जाता है।

१६. कोछी के बीज ६ माशा, दही के साथ ७ या १४ दिन लेने से गोडो का दर्द मिटता है।

१७ **पाँवों मे, जाँघ में, पुन्चा में, खाल में, बायन्टा आने पर :**—कूठ, सेंधानमक का काढा करके फिर उस काढा मे तेल मिलावें और उसमे अमलतास और अफीम का रस डालकर मद-मद आच पर पकावे, जब रस जलकर तेल मात्र रहने पर छानकर रख लें। फिर इस तेल को गर्म करके मालिश करें तो आराम होता है।

१८ पोस्त का डोडा और गुलबना को औटाकर बफारा देने से जोड़ो का दर्द मिटता है।

१९ इमली के पत्तो को उबालकर बफारा देने से जोडों का दर्द मिटता है।

२० एलामिन (घोडा दूध) लगाने से बादी का दर्द मिट जाता है।

२१ नागकेशर के बीजो के तेल का मर्दन करने से गठिया रोग मिटता है।

२२ अखरोट की गिरी खाने से खून शुद्ध होकर गठिया मिटती है।

२३ चोबचानी का क्वाथ पीने से या उसका तेल मर्दन करने से गठिया मिटती है।

२४. मालकागनी के बीजो की फाकी लेने से गठिया रोग और वात रोग मिटता है।

२५ प्रतिदिन १ छटाक से बढाकर पावभर तक बादाम खाने से गठिया रोग मिटता है।

२६. पुराना गुड और खोपरा सोते समय कूट कर खावे, ऊपर पानी न पीवे तो गठिया मिट जाती है।

२७. आधा सेर तम्बाकू को डैढ सेर पानी मे भिगोकर सवेरे मल छानकर तिल्ली के तेल मे सिद्ध करके उस तेल की मालिश करने से गठिया वात रोग मिटता है।

२८. गज पीपल को पानी मे घिसकर गर्म करके लेप करने से गठिया का दर्द मिट जाता है।

२९. राई के तेल मे कपूर मिलाकर मालिश करने से गठिया मिटती है।

३० २।। रत्ती कपूर और ।। रत्ती अफीम की गोली बनाकर लेने से अत्यधिक पसीना आकर गठिया का पुराना रोग भी मिट जाता है ।

३१. **पुराना गठिया रोग मिटाने के लिये**—कुचेला, सोठ और साभर के सीग को पीसकर लेप करने से फायदा होता है। इससे स्नायु सम्बन्धी रोग भी मिटते हैं ।

३२ **गठिया का तीव्र रोग मिटाने के लिये**—मेहदी के ताजे पत्ते महीन पीसकर रात मे सोते समय गाढा लेप करना चाहिये। जब तक गठिया न मिटे तब तक करते रहे ।

३३ प्याज का रस और राई का तेल बराबर मिलाकर मालिश करने से गठिया का दर्द मिटता है ।

३४ राई का प्लास्टर करने से गठिया का दर्द मिट जाता है ।

३५ कच्चे करेले के रस को गर्म करके लेप करने से गठिया मिटती है।

३६ **यदि गठिया रोग से हाथ-पैर सिकुड न सके तो**—केवडा की जड को तिल के तेल मे पकाकर लगावे। अथवा अजवाइन को पोटली गर्म करके जोडों को सेक। इसमे जोडो मे फायदा होता है।

३७ गठिया राग मे यदि झनझनाहट व चीटियाँ रेगने जैसी लगती हो तो, १०० वर्ष पुरानी ईंट लेकर पीस-छानकर तिल के तेल मे मिलाकर मालिश करे। फिर धूप मे बैठे।

३८ गठिया के दर्द पर केरोसिन तेल लगाने से भी फायदा होता है।

३९ १ सेर तिल्ली के तेल को कढाई मे चढा दो, उबलने पर २० टिकिया कुचेला की उस तेल मे डाल दो, जब टिकिया जल जाय तो नीचे उतार लो और उन टिकियो को निकालकर जमीन मे गाड दो, फिर धतूरे के पत्तो का रस ४०० ग्राम (डेढ पाव) उस तेल को ठडा करके उसमे डाल दो और खूब उबालो, फिर उतार कर छान लो और उस तेल मे १ तोला अफीम को महीन करके डाल दो और उबाल देकर बोतले भर लो (इस तेल की मालिश करने से

सब प्रकार की बादी का दर्द मिटता है तथा गठिया, जोडो का दर्द आदि मिटता है।

४० अरण्डी के बीजो को सोठ मिलाकर पीसकर दूध के साथ सेवन करने से कमर का दर्द मिटता है।

४१ चोबचीनी और असगध के चूर्ण में बराबर मिश्री मिलाकर खाने से दर्द मिटता है।

४२ गुग्गल ५ तोला, ऐलवा ५ तोला, सोठ २॥ तोला, छुहारा २॥ तोला गुठली निकाला हुआ इन सबको कूटकर मटर के दाने बराबर गोलिया बनालो। इससे वायु, कब्ज, हाजमा खराब, गैस, बवासीर व पेट की बीमारिया मिटती हैं।

४३ बबूल, अमलतास और सहेजना के सूखे पत्ते २-२ तोला, सोया का बीज, खुरासानी, अजवाइन, सोरञ्जानकडवा, गेरू, सेधानमक ६-६ माशा इन सबको पीसकर कपड छान करके जोडो पर मालिश करने से फायदा होगा।

४४. कायफल, बकायन, सोठ, जायफल, अकरकरा, लोद, आमाहल्दी, समुद्रखार, दारुहल्दी, कूलाबादाम की मिगी, कजा के बीज, कुलिजन, सिरमोर, काले धतूरे का रस, आक का दूध, सहेजना की छाल गोमा का अर्क, हरीमकोय का अर्क, इमली की छाल, भागरे का रस, ये सब १-१ तोला, मालकागणी २ तोला, सरसो का तेल १५ तोला, अरण्डी का तेल ५ तोला, इन सबको मिलाकर औटावे, जब तेल मात्र रह जाय तो छानकर रख ले। इस तेल की मालिश करने से दर्द का नामोनिशान तक नही रहता है।

४५ आक के फूल, भाग के पत्ते, सुरञ्जानकडवा और सोठ १-१ तोला लेकर कूट-छानकर १० तोला सरसो के तेल मे पकावे, जब दवाइयो का रग काला हो जाय तो तेल को गर्म करके मालिश करने से जोडो का दर्द, कमर तथा पिंडलियों का दर्द शीघ्र नष्ट हो जाता है।

४६ धतूरे और आक के पत्ते २–२ तोला, सोठ १ तोला और अफीम ६ माशा को कूट छानकर १० तोला सरसो के तेल मे पकावे, जब दवाइयाँ जल जाय तब तेल को छान लो। इस तेल को थोडा गर्म करके मालिश करने से सब प्रकार के दर्द मिट जाते हैं।

४७ आक के फूल, सोठ, काली मिर्च और बाँस के पत्ते समान भाग लेकर कूट छानकर गोलिया बनाले और सुबह-शाम २-२ गोली खावे। इससे गठिया रोग मिट जाता है।

४८ चोबचीनी को पानी में भिगो दें, जब वह नरम हो जाय तो उसमे से ६ माशा लेकर उसके बारीक टुकडे करके रात को गर्म पानी मे भिगो दे और सुबह पकाकर छानकर उसमे दो तोला मिश्री मिलाकर पीवे। इससे आतशक और रक्त विकारो से होने वाली गठिया नष्ट हो जाती है।

४६ लकवा होने वाले रोगी के मुँह मे जायफल रखना चाहिये तथा उसे दर्पण दिखाना लाभदायक होता है।

५० खुरासानी अजवाइन २ माशा, अफीम ३ माशा और भाग के पत्ते २ माशा लेकर तीनो को पीसकर २ तोला रोगन खसखस मे पकावे, जब दवाइया जल जाय तो तेल को छान लें, फिर दर्द की जगह मालिश करनी चाहिये। इसकी मालिश से अवयव सुन्न हो जाते हैं। इसलिये दर्द को तुरत मिटाता है। ध्यान रहे इस तेल को तीव्र दर्दों मे काम लेना चाहिये।

५१. शुद्ध कुचेला २। तोला, गावजुवा १॥ तोला, उस्ताखुदुस, कतीरागोद, खोपरा, चिलगोजा की गिरी, प्रत्येक १३॥–१३॥ माशा, छोटी इलायची के दाने, नरकचूर, सकाकुल मिश्री, सफेद चन्दन का चूरा, आवला और काली हरड ६–६ माशा, अगर ४॥ माशा और लोग ४॥ माशा सबको कूट छानकर तीनगुनी मिश्री की चासनी मे मिलाकर रखे। मात्रा १ से ५ माशा तक १२ तोला अर्क गावजुवा के साथ सेवन करे। इससे लकवा, कम्पवाय और

गठिया रोग मिट जाता है तथा मिर्गी को मिटाता है, यह दव सर्दी के दिनो में बूढो के लिये अमृत तुल्य है।

५२ इकपोथ्या लहसुन १ तोला को आधा सेर दूध में औटाकर ४० दि तक रात को सोते समय पीने से गठिया रोग मिट जाता है अथव धतूरे के पत्तो के रस मे अफीम डालकर मर्दन करने से गठिय मिटती है।

५३ भेड के दूध मे एरड तेल मिलाकर कुछ गर्म करके दर्द की जग मालिश करने से जोडो का दर्द मिटता है।

५४. उडदो को एरड की जड की छाल के साथ औटाकर पिलाने गठिया मिट जाती है।

५५ लहसुन १ तोला, अजवायन १।। तोला और सरसो का तेल १ तोला को पका छानकर मालिश करने से जोडो का दर्द मि जाता है।

५६ योगराज गुग्गल ३ माशा, एरड तेल ५ तोला को आधा सेर ग दूध में मिश्री मिलाकर पीने से जोडो का दर्द मिटता है।

– शून्य-वात-लकवा रोग –

१ नीम के तेल को मर्दन करने से लकवा मिट जाता है।

२ तुम्बे के बीजो को पीसकर लेप करने से लकवा (पक्षाघात) रे मिट जाता है।

३ यदि चक्कर आते हो तो अगर की लकड़ी सू घनी चाहिये।

४. उड़दो के आटे के बड़ो को तेल मे पकाकर मक्खन के साथ खाने मुंह का लकवा मिट जाता है।

५. अखरोट के तेल का मर्दन करके फिर सम्भालू के पत्तो का बफा देने से मुंह का लकवा मिटा जाता है।

—पुस्तबाय (हाथ-पैरो मे अधिक पसीना आना)—

६ कण्ठी और पीली कौडी को अलग-अलग जलाकर महीन खरल करके मर्दन करने से हाथ-पावो का पसीना आना मिट जाता है।

७. धतूरे के बीजो को आधी से १ रत्ती तक की मात्रा ७ दिन लेने से हाथ-पैरो का पसीना आना बन्द हो जाता है।

८ बैगन और पोस्त के डोडो के क्वाथ मे हाथ-पैर भिगोने से पुस्तबाय मिट जाती है।

९. बबूल के पत्तो और हरड को पीसकर मर्दन करके स्नान करने से ज्यादा पसीना आना बन्द हो जाता है।

१० बबूल के सूखे पत्तो को हाथ-पैरो पर मलने से पुस्तवाय मिटती है।

—कम्पवाय-हाथ-पैर कांपना—

११ तिल का तेल, अफीम और आक के पत्तो का गर्म लेप करने से कम्पवाय मिट जाती है।

१२ असगध का चूर्ण ३ माशा दिन मे २ बार दूध के साथ लेने से कपवाय मिटती है।

—अर्द्धांग-वाय—

१३ अरडी की गुली को बादाम के तेल मे भूनकर मिश्री की चासनी के साथ लेने से अर्द्धांग-वाय मिटती है।

१४ उडदो को सोठ के साथ औटाकर पीने से अर्द्धांगवाय मिटती है।

—शून्य—वात—

१५. अगर और सोठ का क्वाथ पीने से शरीर के हरेक अग की शून्यता मिटती है।

१६ मालकागनी के तेल की १०-१५ बूंद दिन मे २ बार लेने से शरीर की शून्यता मिटकर चैतन्यता आ जाती है और थोडी देर पीछे पसीना आकर शरीर हल्का हो जाता है।

१७ अकरकरा और लोग लेने से शरीर की शून्यता मिटती है।

—आम वात—

१८. १ तोला लहसुन के रस मे १ तोला गाय का घृत मिलाकर पीने से आमवात मिटती है।

१९. सोठ तथा गिलोय का क्वाथ पीने से पुराना आमवात मिटता है।

२० अजवाइन को बकरी के मूत्र में ७ भावनाएँ देकर बराबर चूना मिलाकर पीसकर ३ से ६ माशा दिन मे ३ बार लेने से धनुर्वात मिट जाता है।

—लकवा–रोग—

२१ उडद, कोछी का बीज, अरड की जड, खरेटी की जड, इन सबका काढा करके उसमे भुनी हीग व सेंधानमक डालकर पीने से लकवा (पक्षाघात) रोग मिट जाता है।

२२. पीपल, पीपलामूल, चित्रक, सोठ, रास्ना, सेंधानमक और उडद इन सबका काढा करके छानकर उस काढे मे तेल पकावें जब मात्र तेल रह जाय तो रख ले। इस तेल के मर्दन से पक्षाघात (लकवा) रोग मिट जाता है।

२३ उडदों का क्वाथ बनाकर पीने से हडफूटन मिटती है।

२४. जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र जितने समय हो उस समय काले घोडे के पैर की नाल (घोडा बिलकुल काला हो दूसरा रग न हो) किसी भी पाव का नाल (खुरताल) निकाल कर उसका कडा बना कर लकवे के रोगी को किसी भी अङ्ग मे पहना दिया जाय तो लकवा का दौरा दुबारा नहीं आयेगा। इस तान्त्रिक योग से निश्चित फायदा हो जाता है।

२५ मुरदासिह २ तोला, काला दाना भुना हुआ, सफेद कत्था, बडी इलायची का जला हुआ छिलका और पुरानी सुपारी प्रत्येक १–१ तोला, पीली हरड २ तोला इन सब दवाइयो को २०० अच्छे नीम्बुओ के रस मे घोट ले, फिर लोहे की कढाई मे लोहे के मसूले

से खूब घोटे। फिर चने बराबर गोलिया बनाले। यह आतशक वायु से होने वाली गठिया के लिये लाभदायक है। पथ्य मूग की दाल, घीया (लोकी) मात्रा १-१ गोली दोनो समय पानी के साथ।

—हाथ पैरों की ऐंठन (बाईन्टे) तथा चोट पर—

२६. अखरोट के तेल का मर्दन करने से हाथ-पैरो का बायण्टा मिटता है।

२७. अडूसे के पञ्चाग के क्वाथ या अवलेह के चाटने से आक्षेपक वायु और बाईन्टे मिटते हैं।

२८. अडूसे के फूल तथा पत्तो को तेल मे औटाकर उसका मर्दन करने से ऐंठन मिटती है।

२९. आक के पत्ते, पीलवान के पत्ते, काले धतूरे के पत्ते और लाल अरण्ड के पत्ते ५-५ लेकर इन सबको जलाकर खाख करले फिर तिल के तेल मे मिलाकर मालिश करके धूप मे बैठने से सरण चलना, बाईन्टा (साइटिका) रोग मिट जाता है।

३० मूली के पत्तो का रस निकालकर लगाने से सरण चलनी मिटती है।

३१. अफीम का मैल तेल मे गर्म करके लगाने से (मालिश) करने से ऐंठन मिट जाती है।

३२. १। माशा भाग का पत्ता सेवन करने से शरीर की पीडा और बाईन्टे मिटते हैं तथा मूत्र-वृद्धि होती है।

३३ बाईन्टे मिटाने के लिये २ से ५ रत्ती तक कपूर लेना चाहिये।

३४. देवदारु और सोठ को गुड मे मिलाकर गोली बनाकर खाने से वात रक्त पीडा और बाईन्टे मिटते हैं।

३५ तारपीन का तेल ५ तोला, कपूर डली वाला असली २ तोला दोनो को शीशी मे भरकर ८ घण्टे तक धूप मे रख दे दवा तैयार है। हर प्रकार के दर्द के लिये मलने से फायदा होता है।

३६. सोनपाठा की छाल १ पाव अन्दाजन लेकर कूट-छानकर रात्रि में

सोते समय उसमे थोडा पानी डालकर हथेली या पगथलियो मे बाधलें, आधी रात को जलन होने से खोलदे, इस तरह ८-१० दिन तक उसी दवा को प्रतिदिन बाधने से सरण चलनी मिट जाती है।

— चोट लगकर सूजन आने पर —

३७ छडिला ३ तोला और सोठ तथा कुचेला के टुकड़े करके १ सेर पानी हाडी मे भरकर दवाओ को डालकर मुंह बन्द करके पकावें, जब तीसरा भाग रह जाय तो पहले उसका बफारा देवें, तथा उस पानी से चोट को धोवें और दवा के लुगदे को गर्म करके बाधे इससे ३ दिन मे ही चोट और सूजन मिट जाती है।

३८. यदि चोट से गाठ बन जाय तो गेहूं को जलाकर बुकनी बनाकर बराबर गुड मिलाकर घृत के साथ २-२ तोला ३ दिन खाने से फायदा हो जाता है।

३९ यदि चोट से खून जम जावे तो १ माशा फिटकडी पीसकर ४ तोला घृत मे भूनले और शक्कर तथा आटा (मैदा) मिलाकर हलुवा बनाकर खाने से ३ दिन मे निश्चय ही आराम होगा।

४० सहेजना की पत्तियो को बराबर के तिल के तेल मे पीसकर लगाने से चोट से मोच आदि मे लाभदायक होता है।

—कमर और पसली पीड़ा—

१. आक की जड को बालक के मूत्र मे पीसकर लेप करके फिर कन्डे की आग से तपाने से पसली की पीडा मिटती है।

२. मकोय ६ माशा, सोफ ६ माशा, अलसी ३ माशा, गेहूं की चापड़ ९ माशा, मुश्री शक्कर १ तोला, सबको औटाकर पिलाने से पसली व हृदय की शूल मिटती है।

३. पसली शूल या हर एक अंगो की बादी की शूल मिटाने के लिये अजमोद को गर्म करके जितने भाग मे पीडा हो उतने भाग पर लगाकर बिस्तरे पर महीन कपडा ढककर सुला देना चाहिये।

४. अखरोट की गिरी को ताजी पीसकर उसका कमर या पसली पर लेप करके फिर इंट को गर्म करके उस पर थोडा पानी छिडककर कपडा लपेटकर सेक करने से बादी की पीडा तत्काल मिटती है।

५. पान की जड १-१। तोला प्रतिदिन गुड के हलुवे मे खाने से १०-१५ दिनो में कमर दर्द मिट जाता है।

६ रात को १ छटाक गेहूँ भिगोकर सुबह इनके साथ धनिया मिगी २।। तोला तथा खसखस २।। तोला मिलाकर बारीक पीसकर दूध मे खीर बनाकर खाने से कमर की पीडा मिटती है और ताकत भी आती है।

७ अलसी के तेल मे सोठ डालकर गर्म करके मर्दन करने से पीठ की शूल मिट जाती है।

८ कमर और वस्ती की शूल मे नमक, अजवाइन और गेहूँ के चोकर की पोटली बनाकर सेकने से आराम मिलता है।

९ उदर और पसली का शूल मिटाने के लिये आक की छाल को पीस कर लेप करना चाहिये।

१० चिरायता मे मधु (मिश्री) मिलाकर गर्म करके लेप करने से कुबडापन मिट जाता है।

११ बाबूने के बीज १७।। माशा, सोठ, मिर्च, पीपल, आवला, हरड, चीता, जराबन्दगोल, सालम, मिश्री, बाबूने की जड, चिलगोजा की गिरी, ताजा नारियल की गिरी, प्रत्येक २-२ तोला ११ माशा और निर्बीज मुनक्का ८।।। तोला, लेकर सबको कूट-छानकर फिर सबसे दूनी मिश्री की चासनी में मिलावे। मात्रा ७ माशा अर्क मकोय या अर्क सोफ या पानी के साथ सेवन करें। इससे कमर का दर्द मिटता है व गठिया के लिये अतिउत्तम दवा है। यह दवा दिल

और दिमाग को ताजगी देती है, भूख बढ़ाती है, स्मरण शक्ति बढ़ाती है, बार-बार पेशाब मे गुणकारी होती है, गुर्दे के दर्द को नष्ट कर देती है, कफ साफ होता है व दातो को मजबूत करती है।

१२. १ तोला गुलरोगन मे ५ माशा मोम को पिघलाकर उसमें १ माशा केशर और १ माशा एलुवे को बारीक खरल करके मिला दो, फिर दर्द की जगह मालिश करें। इससे पसली का दर्द मिट जाता है। कभी-कभी इसमे १ माशा लोबान व १ माशा मस्तगी मिलाते है।

१३. पोस्त दाना १ तोला और मिश्री १ तोला खाने से कमर पीड़ा मिटती है अथवा पोस्त का डोडा पीने से भी फायदा होता है।

१४. सोंठ के क्वाथ मे एरण्ड का तेल मिलाकर पीने से बस्ति, कुक्षि तथा कमर की शूल मिटती है।

— सूजन-रोग (शोथ रोग) —

१ अरणी की जड और पुनर्नवा की जड को पीसकर गर्म करके लेप करने से शरीर की ढीली पडी हुई सूजन भी उतर जाती है।

२ अडूसा और अरण्ड के पत्ते तथा अरण्ड के तेल को पानी मे औटाकर बफारा देने से हरेक अग की सूजन उतर जाती है।

३. कैर की लकडी घिसकर गर्म करके लेप करने से सूजन उतर जाती है।

४ अदरक के रस में पुराना गुड मिलाकर पीने से भी सूजन उतरती है।

५. सूजन रोग मे केवल बकरी का दूध सेवन करना लाभदायक होता है।

६. बुढ़ापे में कमजोरी से सूजन आने पर चिरपोटी का लेप करे अथवा पुनर्नवा की जड औटाकर पीवें अथवा धमासा को पानी मे उबालकर स्नान करने से सूजन बिल्कुल उतर जाती है।

७. अलसी और दालचीनी को बराबर पीसकर पकाकर लेप करने से दर्द और सूजन मिट जाती है। इसे शिव लेप कहते हैं।

८. अनार के छिलके को छुहारे के पानी के साथ पीसकर लेप करने से सूजन बिखर जाती है।

९. गाय के मूत्र मे दो तोला अजवाइन रात मे भिगो दे, सवेरे गोमूत्र निकाल दें और अजवाइन को ३ भाग करके तीन बार ठण्डे पानी में पीसकर पीने से हाथ-पैरो की सूजन उतर जाती है।

१० हरड, बहेडा, सोनामुखी १-१ तोला, अजवाइन ३ तोला और सेधानमक ५ माशा, सबको पीसकर ३ तोला शक्कर मिलाले और गर्म पानी के साथ ३दिन तक लेने से हाथ-पैरो की सूजन उतर जाती है।

११ शरीर के किसी भी भाग की जल युक्त सूजन मिटाने के लिये इन्द्रायण का बफारा व जुलाब देना चाहिये।

१२ सर्वांग जल युत शोथ मिटाने के लिए कालाजीरी १-१॥ माशा की फाकी लेनी चाहिये।

१३ सोठ और पीपल के चूर्ण को गुड मे मिलाकर खाने से सूजन, आमाजीर्ण तथा शूल मिटती है।

१४ सोठ, साटी की जड, अरण्ड की छाल, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक इन सबका काढा लेने से बादी की सूजन मिटती है।

१५. पटोल, त्रिफला, नीम की छाल, दारुहल्दी, इनके काढा मे गुगल डालकर लेने से पित्त की सूजन मिटती है।

१६ पीपल तथा हरडे को थोहर के दूध मे ३ दिन भिगोकर फिर सुखाकर महीन कूट छानकर मात्रा ३ माशा ३ दिन लेने से कफ की सूजन मिटती है।

१७ सोठ, कालीमिर्च, पीपल इनको महीन करके बेल पत्र के रस मे ४–५ दिन तक भिगोकर फिर सुखाकर महीन पीसकर १० दिन तक मात्रा ६ माशा लेने से सन्निपात की सूजन भी तत्काल मिटे।

१८ भिलावा का सूजन उतारने के लिए —तिल और काली माटी को

भैंस के दूध में या मक्खन मे पीसकर लेप करना चाहिये। इससे भिलावा की सूजन तत्काल मिट जाती है।

१६. हरड की छाल, हल्दी, भाडंगी, गिलोय, चित्रक, दारुहल्दी, साटी की जड और सोठ इन सबका काढा करके लेने से उदर की, हाथ-पावो को, मुँह की सूजन शीघ्र मिट जाती है।

२० त्रिफला के काढ़े मे गोमूत्र डालकर पीने से पोता की सूजन भी मिट जाती है।

२१. सनाय, विषखपरिया, नीम की छाल, गोमूत्र इनका काढा बनाकर लेने से तुरन्त सूजन मिटती है।

२२ गुड, पीपल इनको महीन करके १ महीना तक प्रतिदिन ८ माशा से बढाते-बढाते १।। तोला तक खाने से सूजन को, गले के रोगो को मिटाता है।

२३ पीपल, सोठ और गुड मिलाकर खाने से सूजन, आव, अजीर्ण और शूल रोग मिट जाता है।

२४. सूखीमूली, साटी की जड, दारुहल्दी, रास्ना, सोठ, इन सबको औटाले फिर उसमे तैल पकाले। पश्चात् इस तेल के मर्दन से शूल युक्त सूजन भी मिट जाती है।

२५ बहेडा की मिंगी को पानी मे पीसकर लेप करने से सूजन का दाह भी मिट जाता है।

२६. साटी की जड, दारुहल्दी, गिलोय, पाठ, सोठ, गोखरू इन सबको बराबर लेकर महीन करके मात्रा ८ माशा गोमूत्र मे डालकर पीवे तो सर्व प्रकार का शरीर मे फैला सूजन मिटता है।

२७. साटी का पचाग पीसकर लेप करने से शोथ रोग मिटता है अथवा मकोय के पत्ते पीसकर लेप करें।

२८. **नाभि की सूजन पर :**—बकरी की मिंगनी को दूध मे घोलकर गर्म करके लेप करें।

– मृगी-रोग –

चिंता, शोकादि की अधिकता से वात, पित्त, कफ हृदय को नसो में प्रवेश करके स्मरण-शक्ति आदि को नष्ट कर देते हैं। प्राय. यह मृगी रोग ४ प्रकार का होता है—वात, पित्त, कफ और सन्निपात का पित्त का प्रकोप होने मे १५ दिन मे मृगी का दौरा पडता है, वात का होने से १२ दिन मे और कफ का प्रकोप होने से १ महीना के अन्तराल से मृगी का दौरा पडता है।

लक्षण—एकाएक अन्धकार मे प्रवेश हुआ-सा जान पडे, आखें घूम जाना, शरीर पड जाना, हाथ-पैर और अग पटकता हुआ मूर्छित होकर गिर पडना, ये लक्षण मृगी रोग के प्राय होते हैं।

१ आक की जड की छाल को बकरी के दूध मे घिसकर नाक मे टपकाने से मृगी मिटती है।

२ ढाक की जड घिसकर रोग के वेग के समय नाक मे टपकाने से मृगी रोग मिटता है।

३ २१ जायफलो की माला पहने रहने से मृगी रोग मे फायदा होता है।

४ राई को पीसकर सू घने से मृगी का वेग दूर हो जाता है अथवा प्याज के रस को सू घने से मृगी मिटती है।

५ सरसो के तेल को गौमूत्र तथा गोबर और बकरो का मूत्र चौगुना मे पकाकर मालिश करने से मृगी मिटती है।

६ सीताफल के बीजो की मिंगी पीसकर कपडे की बत्ती में रखकर जलावे और उस धुएं को नाक मे लेने से मृगी के समय लाभ होता है।

७ वच के ८ माशा चूर्ण को दूध के साथ सेवन करने से पुरानी मृगी भी मिट जाती है।

८ मालकागनी के तेल मे कस्तूरी चटाने से मृगी रोग मिट जाता है।

९. अरोठा को कपडछान करके हमेशा सूंघने से मृगी रोग अवश्य मिट जाता है ।

१०. १ तोला असली हींग को कपडे में बांधकर गले मे रखें तो उसकी गध से मृगी के कीड़े नष्ट होकर रोग मिट जाता है।

११ भैंस के खुर की भस्म बनाकर ५ माशा प्रमाण मिश्री की चासनी मे चाटने से मृगी रोग मिट जाता है ।

१२. दिन के ३ से ५ बजे के बीच मे मृगी के रोगी के पाव के तलुवो पर १८ बूंद आक का दूध चौपड कर ऊपर कालीमिर्च का चूर्ण बुरका दें, फिर आक के पत्तो को ऊपर बाध दें तथा मौजा पहना दे ४० दिन तक पैर न धोकर यह प्रयोग करते रहने से मृगी रोग नष्ट हो जाता है।

१३ मैनसिल और कबूतर की बीट का नेत्राजन करने से मृगी और उन्माद मिट जाता है ।

१४ अनार के हरे पत्ते २ तोला आधा सेर पानी मे पकाकर आधा पाव रहने पर छान ले और गौघृत और चीनी १–१ तोला मिलाकर दोनो समय पीने से मृगी रोग मिट जाता है ।

१५ ३ भाग तिल और १ भाग लहसुन पीसकर २ तोला की मात्रा थोड दिन खाने से वात मृगी मिट जाती है ।

१६ दूध मे शतावरी डालकर पीने मे पित्त की मृगी मिट जाती है।

१७ अरोठा की थोडी-सी मिगी मुंह मे रखने से मृगी वाले रोगी को होश आ जाता है।

१८ राई और सरसा को गौमूत्र मे पीसकर शरीर के लेप करने से मृगी रोक मिट जाता है ।

१९. नेवले की, बिलाव की तथा काग की विष्ठा (बीट) की धूणी देने से मृगी रोग मिटता है।

२०. ब्राह्मी के रस में, वच और सोठ को महीन पीसकर ८ माशा मात्रा मे पीने से मृगी मिटती है ।

२१ बच का चूर्ण ८ माशा प्रमाण दूध के साथ १ माशा तक लेने से मृगी रोग मिट जाता है।

२२. कबूतर की बीट ६ माशा, नीलटाच (गरुड) की बीट ६ माशा और मेनसिल ६ माशा इनको गोमूत्र मे पीसकर अंजन करने से मृगी रोग मिट जाता है।

२३ भेडिया के दात गले मे बाधने से मृगी नही आती है।

२४ कालीमिर्च को महीन छानकर ३ बार गडतुम्बा के रस की भावना देकर खूब खरल करलो। फिर नाक से सू घने से मृगी रोग का नाश हो जाता है।

— उन्माद (पागलपन) रोग —

प्रकृति विरुद्ध भोजन के सेवन से या अधिक खाने से या नशीली वस्तुओ से तथा विष आदि भक्षण से, भय तथा हर्ष की अधिकता से मन बिगड़ कर वातादि दोषयुक्त हो जाता है, तब व्यक्ति की स्मरण शक्ति नष्ट होकर वह उन्मत दीवाना तथा पागल सदृश हो जाता है, यह एक मानसिक रोग है इससे बुद्धि खराब हो जाती है, इसे पागलपन कहते हैं।

१. नीम्बू की गिरी निकालकर धूप मे सुखाकर उन्माद रोगी के तकिये के नीचे रखने से शांति मिलती है।

२ नीम्बू के रस का मस्तक पर मर्दन करने से पागलपन मिट जाता है।

३ ब्राह्मी के साथ गिलोय का क्वाथ पीने से उन्माद रोग मिटता है।

४ उन्माद मिटाने के लिये सरसो का तैल की नस्य व मालिश का प्रतिदिन प्रयोग करना चाहिये।

५ किसी मनुष्य के सिर के बाल जलाकर तिल के तैल मे या रोगनगुल मे मिलकार नाक मे टपकाने से पागलपन मिटता है।

६. मुर्गे के बाल जलाकर नाक मे धूनी देने से उन्माद रोग मिटता है।

७. पारा भस्म आधी रत्ती गाय के मक्खन मे देने से पागलपन मिट जाता है।

८. घी और कालीमिर्चं पीने से बादी का पागलपन मिट जाता है।

९ रेवत चीनी को पानी मे पीसकर दोनो कधो के बीच मे लेप करने से बादी का उन्माद मिट जाता है।

१०. अच्छा जुलाब देने से पित्त का उन्माद मिटता है अथवा वमन कराने से कफ का उन्माद मिटता है।

११ प्रलाप करने वाले के सिर को मुण्डवाकर मस्तक पर आल को गिरी बाधने से शाति मिलती है।

१२ मेहदी के बीजो की फाकी लेने से प्रलाप रोग मिटता है।

१३ " खमुण्डी को दूध के साथ लेने से चित्तभ्रम रोग मिटता है और बुद्धि का विकास होता है।

१४ अजवाइन ३ माशा दाख के साथ सेवन करने से चित्तभ्रम राग मिटता है।

१५ सोठ, अजमोद, हल्दी, दारुहल्दी, सेधानमक, वच, मुलैठी, कूट, पीपल और जीरा इन सबको बराबर लेकर महीन कूट-छानकर मात्रा ८ माशा घृत के साथ लेने से उन्माद रोग मिटता है तथा उसकी जीभ पर सरस्वती का निवास होता है।

१६ भुनी हीग, सचर नमक, सोठ, कालीमिर्च, पीपल इन सबको ३-३ तोला लेकर फिर गाय का घृत ४ सेर तथा घृत से चौगुना गौमूत्र लेकर सबको मदी-मदी आच पर पकावे जब घृत रह जाय तब छान ले, मात्रा १।।-२ तोला प्रतिदिन खाने से भोजन के साथ निश्चित ही उन्माद रोग मिट जाता है।

१७. सरस का फूल, मजीठ, पीपल, सरसो, वच, हल्दी, सोठ इन सबको समभाग लेकर कूट-छानकर बकरा के मूत्र मे महीन घोट लें और गोलियां बनालें फिर १ गोली घिसकर अजन करने से उन्माद रोग

मिट जाता है ।

१८ लोहे के टुकडो को गर्म लाल करके पानी मे बुझावे और ३ बार कहे कि जिस तरह यह लोहा पानी मे शांति पाता है उसी प्रकार मेरा हृदय भी अमुक भय से शात बने कहकर ९ बार णमोकार मत्र जपने से शाति मिलती है, फिर उस पानी से मुँह धोवे और हृदय पर छिडके ।

१९. जवासा का क्वाथ बनाकर उसमे घृत मिलाकर पीने से उन्माद रोग मिटता है ।

२० भाडगी के क्वाथ मे लोह भस्म व गुड मिलाकर १ घडे मे भर दे और उसे धान्यो की राशि में १ महीने तक गाड दे फिर निकाल कर उसमे कपूरादि सुगधित वस्तुओ से सुगधित करे। इस भाडग्यादि अरिष्ट का बार-बार पीने से उन्माद रोग मिट जाता है।

२१ सफेद निशोथ, मुलेठी, वज्रखार इनको गौमूत्र मे पीसकर नस्य देने से उन्माद (अपस्मार) रोग मिट जाता है अथवा आख मे घृत आजने से तथा लेप करने से शाति मिलती है ।

२२. तीव्र उन्माद के आरम्भ मे कुप्पी (अरित मजरी) के २॥ तोला ताजे स्वरस मे ३ रत्ती सेधानमक डालकर प्रात काल रोगी के नाक के दोनो नथनो मे डालकर ठडे पानी के फव्वारे से स्नान कराये, इस प्रकार ३ दिन तक लगातार करने से पागल की नाक टपकने लगेगी और उससे मस्तक मे जमे हुए दुष्ट कफादि निकलकर पागलपन मिट जायेगा अथवा मस्तक मे दुष्ट रसादि जमजाने से जो मस्तक पीडा होती है, उसके लिये भी उक्त प्रयोग करे या कुप्पी के पत्तो का स्वरस मे रुई का फोहा भिगोकर नाक के नथनो मे रख देने से भी नाक टपककर मस्तक शुद्ध हो जाता है ।

२३. चाबुक की मार लगाने से या बिजली का सेक करने से भी उन्माद दूर होता है ।

– मूर्च्छा-रोग –

अतिकुपथ्य, क्षीणता, मल-मूत्रादि को रोकना, प्रहार तथा चोट के कारण अकस्मात् शोक हो जाने पर, बाहरी इंद्रिया तथा मनोस्थान में त्रिदोष प्रवेश होकर सज्ञा प्रवाहणी नसो को रोक देती है, जब व्यक्ति एकदम बेहोश हो जाता है तब उसे मूर्च्छा रोग कहते हैं ।

१ ठण्डा शर्बत पीने से मूर्च्छा मिटती है अथवा आखो पर गुलाब जल का छीटा देने से गर्मी की मूर्च्छा मिटती है ।

२ १ माशा कपूर और ६ माशा चन्दन घिसकर मस्तक पर लेप करने से बेहोशी मिटती है । इसे गुलाबजल मे घिसना चाहिये ।

३ थोडी देर नाक व मुँह को बद करने से भी मूर्च्छा मिटती है अथवा पोदीने के ताजे पत्ते सू घने से मूर्च्छा मिटती है ।

४ पीपल को पानी मे घिसकर अजन करने से मूर्च्छा मिटती है अथवा राई पीसकर सु घाने से मूर्च्छा मिटती है ।

५ यदि किसी हालत मे मूर्च्छा न मिटती हो तो लोग को पानी मे घिसकर आख मे डाल दो तत्काल होश आयेगा ।

६ मूर्च्छा वाले रोगी के शरीर पर सुई चुभाओ या खाल के बाल उखाडो तो मूर्च्छा मिट जायेगी ।

७ इमली के गूदे को ठण्डे पानी मे पीसकर मु डे हुए सिर पर लगाओ, जिससे मूर्च्छा व लू का असर मिटेगा ।

८. चूना और नोसादर को थोडी मात्रा मे रगीन शीशी मे डालकर २-४ बूँद पानी की डालकर ढक्कन लगाकर हिलाने से गैस बनेगी, जिसको फिर आवश्यकतानुसार सु घाने से मूर्च्छा मिटती है ।

९. ठण्डे पानी के मुँह पर छीटे मारने से व पखे पर पानी डालकर मुँह पर ढुलाने से मूर्च्छा मिटती है।

१०. धमासा के काढा से भवल (चक्कर) की मूर्च्छा मिटती है अथवा कपूर-चदन तथा शीतल पदार्थों के लेप से मूर्च्छा मिटती है।

११ बेर को भिगो, शीतलमिर्च, खस, नागकेशर, ४-४ माशा को भिगो कर शबत बनावे। मिश्री मिलाकर पीने से मूर्च्छा मिटती है।

१२ साबुन को पानी मे घिसकर आख मे आजने से मूर्च्छा मिट जाती है।

१३ मेनसिल, वच और लहसुन को गोमूत्र मे घिसकर आजने से मूर्च्छा मिटती है।

१४ विष भक्षण वाले रोगी की मूर्च्छा मिटाने के लिये वमन कराना चाहिये। फिटकरी व नीला थोथा से वमन कराने से मूर्च्छा मिटती है।

१५ महुवा का फूल, सेधानमक, कपूर, सरसो, मेनसिल, पीपल इनको घोडे की नाल मे घिसकर अजन कराने से मूर्च्छा मिटती है।

१६ सहेजणा का बीज, सेधानमक, सरसो, कूट इन सबको बकरे के मूत्र मे महीन घिसकर नास देने से मूर्च्छा-तंद्रादि मिटती है।

१७. तिलादि के सेक करने से बादी की मूर्च्छा मिटती है।

१८. चमत्कारी मणि को सिर पर धरने से मूर्च्छा मिटती है।

१९ मीठे अनार के शर्बत मे मिश्री मिलाकर या दाख के शर्बत मे मिश्री मिलाकर पीने से मूर्च्छा मिटत ।

२० मद्यपान की मूर्च्छा मे पीटने से या सो जाने से फायदा होता है।

— पाण्डु-रोग —

मिट्टी खाने से, अधिक परिश्रम से, खटाई तथा तीक्ष्ण पदार्थों का ज्यादा सेवन करने से, वात-पित्त और कफ कुपित होकर रुधिर बिगड जाता है जिससे चमडी भी पीली पड जाती है।

लक्षण :—त्वचा का फटना, अंगो में पीडा होना, मिट्टी खाने की इच्छा होना, नेत्रो मे सूजन होना, मूत्र पीला होना तथा अन्न का पाचन न

होना। इस रोग में वात के रोगी के नेत्र, त्वचा व मूत्र काला तथा लाल होता है, पित्त वाले के पीले तथा कफ वाले के श्वेत होते हैं।

१ लोहे का काठ (मैल) बारीक खरल करके मात्रा १माशा, ६ माशा गुड मे ८ दिन खाने से पाडु रोग मिट जाता है।

२. लोहे का (मैल) तपाकर गोमूत्र मे बुझालें फिर ४ रत्ती की मात्रा को ६ माशा शक्कर और ३ माशा घृत मे मिलाकर चाटे तो असाध्य पाडु रोग भी मिट जाता है।

३ अडूसा के रस मे कलमीशोरा डालकर पीने से मूत्र-वृद्धि होकर पाण्डु रोग मिटता है तथा जलोदर भी मिटता है।

४. हरड को गोमूत्र मे पकाकर खाने से सूजन और पाण्डु रोग मिटता है।

५ छाछ के साथ ७ कालीमिर्च सेवन करने से पाडु रोग मिटता है।

६ गोमूत्र के साथ योगराज गुग्गल लेने से पाण्डु रोग तथा सूजन मिटती है।

७ कडवी तुम्बी के रस की नास देने से पाण्डु रोग तथा पीलिया रोग मिट जाता है।

८ चिरायता, कुटकी, देवदारु, हल्दी, नागरमोथा, गिलोय, पटोल, धमाशा, पित्तपापडा, नीम की छाल, सोठ, कालीमिर्च, पीपल, चित्रक, त्रिफला, वायविडंग इन सबको बराबर लेकर महीन कूट छान कर रख ल। मात्रा ५ माशा प्रतिदिन छाछ से लेने से पाण्डु रोग, कामला, सूजन, संग्रहणी, खासी, श्वास और आमवात आदि रोगो को मिटाता है। इसे अष्टदशाग अवलेह कहते हैं।

९. अडूसा, गिलोय, नीम की छाल, त्रिफला, चिरायता, कुटकी इन सबको समान भाग लेकर जौ कूट करके १० माशा का काढा बनाकर मिश्री मिलाकर १० दिन लेने से पाडु रोग मिट जाता है।

— पीलिया रोग —

पाण्डु रोग वाले को अत्यन्त उष्ण और पित्त कारक पदार्थ भक्षण करने

से पित्त, रुधिर और मास दग्ध होकर पोलिया रोग हो जाता है, पाण्डु और पीलिया मे विशेष फर्क नही होता है।

लक्षण :—जिस रोगी के नेत्र, त्वचा, नख, मुख, मूत्रादि हल्दी की तरह पीले हो जाते हैं, इन्द्रिया निर्बल हो जाती हैं, शरीर मे दाह रहती है, भोजन से अरुचि रहती है, ज्वर रहता है तो जान लो पीलिया रोग हो गया है।

१ नीम के पत्तो के रस मे मिश्री मिलाकर पीने से पीलिया (कामला) रोग मिटता है।

२. आक (मदार) के जड की छाल ६ रत्ती और १२ कालीमिर्च को पीसकर दिन मे २ बार देने से कामला रोग मिट जाता है। इसकी जड को चावलो के पानी के साथ घिसकर नस्य लेने से भी फायदा होता है।

३ नीम्बू का रस आख मे डालने से कामला मिटता है अथवा पित्त पापडा का फाट पीने से भी कामला मिटता है।

४. करेला के पत्तो के रस मे बडी हरड घिसकर चाटने से पीलिया रोग मिट जाता है।

५ गाय की छाछ मे लाल फिटकरी का फूल्या पीने से पीलिया रोग मिट जाता है।

६ मेहदी के पत्तो को कूटकर रात भर पानी मे भिगोकर सुबह नितरा हुआ पानी ७ दिन तक पीने से कामला (पीलिया) रोग मिट जाता है अथवा मेहन्दी की छाल की फाकी लेनी चाहिये।

७ पीलिया रोग मे गन्ना अमृत तुल्य होता है। जब पेशाब पीला या कम मात्रा मे होता हो तो गन्ना चूसने मे सर्व-उष्णता निकल जाती है और पित्त शान्त होकर फायदा होता है।

८ जामुन के रस मे सेधानमक डालकर एक मजबूत काग वाली शीशी मे ४० दिन रखे फिर आधा चम्मच प्रतिदिन लेने से कामला और

लीवर रोग मिट जाता है।

९ ६ माशा कुटकी को मिश्री के साथ कुछ दिन सेवन करने से कामला रोग मिट जाता है।

१० साजोखार एक तोला, सवरनमक एक तोला दोनो का नीम्बू के रस मे घोटकर ३ दिन पीने से कामला मिटता है।

११. मूली के हरे पत्तो का रस ४ तोला को आग पर गर्म करे जब फट जावे तो छानकर उसमे ४ तोला लाल शक्कर मिलाकर पीने से पाडु रोग मिट जाता है।

१२ कुटकी और चिरायता तथा नीम की छाल को ६ माशा मात्रा मे कोरे मिट्टी के बर्तन मे भिगोकर सुबह-शाम मसल-छानकर पीने से पीलिया रोग अवश्य नष्ट होकर शरीर कचनवत् हो जाता है।

१३ त्रिफला, अडूसा, चिरायता, नीम की छाल, कुटकी और गिलोय इनका क्वाथ मिश्री मिलाकर पीने से कामला तथा पाडु रोग मिट जाते हैं।

१४ गेरू, हल्दी और आवला इनका महीन खरल करके आखा मे लगाने से कामला रोग मिट जाता है।

१५. गाय के दूध मे सोठ मिलाकर पीने से कामला रोग मिटता है।

१६ गुड, हरड, गौमूत्र, लोहभस्म इनका काढा करके सेवन करने से कामला रोग मिट जाता है।

१७ हरड, बहेडा, आवला, सोठ, मिर्च, पीपल इनके चूर्ण को लोहभस्म के साथ घृत-शक्कर मिलाकर पीने से कामला मिटता है।

१८ हल्दी, दारुहल्दी, सोठ, मिर्च, पीपल के चूर्ण लोहभस्म के साथ घृत-शक्कर मिलाकर पीने से कामला मिटता है।

१९ बकरी की मिगनी भिगोकर उस पानी के साथ कालीमिर्च लेने से कामला रोग मिटता है।

२०. बबूल के पुष्पो के चूर्ण मे बराबर मिश्री मिलाकर १ तोला प्रतिदिन लेने से पीलिया रोग मिटता है।

२१. कपास की मिगी ८ माशा को रात्रि मे पानी मे भिगोदें, सवेरे पीस छानकर थोड़ा सेंधानमक मिलाकर पीने से पीलिया रोग मिट जाता है।

२२ कलोजी के ७ दाने स्त्री के दूध में पीसकर नाक मे टपकाने से कामला रोग का शेष पीलापन भी मिट जाता है।

२३. रेवतचीनी १ माशा, सोफ और कासनी के बीज ५-५ माशा तथा निर्बीज मुनक्का नग ६ इन सबको रात्रि मे भिगोकर प्रातःकाल मल छानकर उसमे ४ तोला खमीरा वनफशा मिलाकर पीने से पाडु रोग मिट जाता है।

२४ हीग का अजन करने से कामला रोग मिटता है अथवा कड़वा बादाम और गधक मिलाकर खाने से कामला मिटता है।

२५ भागरे के रस मे कालीमिर्च मिलाकर प्रात काल दही के साथ लेने से कामला रोग मिटता है।

२६ गिलोय के पत्तो को पीसकर गाय की छाछ मे छानकर पीने से कामला रोग मिटता है।

— कुष्ठ (कोढ़) रोग —

महापापो के करने से, मलमूत्रादि के वेग को रोकने से, विरुद्ध भोजन से, अति मैथुन से, वात-पित्त और कफ तीनो दोषो से सभी धातुएँ बिगड़-कर कुष्ठ रोग उत्पन्न करती है।

१ नीम के ताजे पत्तो का रस शरीर पर मर्दन करने से कुष्ठ रोग मे फायदा होता है।

२. नीम के कोमल पत्ते घोटकर लगातार पीने से कोढ रोग मिटता है।

३ तुरई के बीजो का लेप करने से कोढ मिटती है।

४ १ वर्ष लगातार कालाजीरी की फाकी लेने से कोढ-सम्बन्धी सभी रोग मिट जाते है।

५. बबूल की छाल ३ तोला का हिम प्रतिदिन पीने से कुष्ठ रोग मिट जाता है।

६. नीम की छाल के साथ योगराज गुगल लेने से कष्टसाध्य कुष्ठ रोग मिट जाता है।

७. आंवला के रस मे सनाय सेवन करने से कुष्ठ रोग मिट जाता है।

८. मेहदी के ७॥ तोला पत्तों को रात भर पानी मे भिगोकर प्रातःकाल मसल छानकर उसमे थोडा बूरा मिलाकर ४० दिन तक पीने से कोढ रोग मिटता है। दूब की ओस कई दिन लगाने से सफेद कोढ़ मिटती है।

९. गुड के साथ हल्दी की गोली बनाकर गोमूत्र के साथ लेने से कोढ रोग मिट जाता है।

१०. कोढ का रोगी यदि ४-६ महीने तक सिवाय चने के और कुछ न खावें तो १८ प्रकार का कोढ मिट जाता है, चनो को पानी मे भिगोकर कच्चे या उबालकर खावें, नमक-मिर्च न डालें, पानी के साथ खावे तथा चनो के पानी को भी पीवें तो अवश्य कोढ़ रोग से मुक्ति मिल सकती है।

११ नोसादर को तिल के तेल मे मिलाकर लेप करने से सफेद कोढ़ मिटता है।

१२. नीम के फूल, पत्ते और फल पीसकर २ माशा से आरम्भ करके ६ माशा तक धीरे-धीरे बढाकर ४० दिन तक लेने से सफेद कोढ मिट जाता है।

१३. नीम के पत्तो के साथ सोनामुखी लेने से सफेद कोढ मिट जाता है।

१४. मूली के बीजों को औंगाकर खारे पानी के साथ पीसकर लेप करने से श्वेत कोढ़ मिट जाती है।

१५. अनार के पत्ते छाया मे सुखाकर चूर्ण बनाकर ६ माशा प्रमाण ताजे पानी के साथ दोनों समय लेने से सफेद कोढ तथा अन्य कोढ भी मिट जाते हैं।

१६. सफेद कोढ़ के आरम्भ में अजीर के पत्तो का रस लगाने से रोग बढना बन्द हो जाता है।

१७. नया कोढ़ मिटाने के लिए आक की जड को छाल पाव रत्तो से १ रत्तो तक की फाकी लेनी चाहिये।

१८. इमली के बीजो की मिगी और बावची समभाग पानी मे पीसकर लकडो से सफेद दाग पर लगाने से दाग मिट जाता है।

१९. १२ वर्ष तक नीम के नीचे रहने से पित्त का गलित कोढ भी मिट जाता है।

२०. खेजडी के डोडे जो डाली पर लगते हैं, उन्हें पोसकर शक्कर और चने के आटे मे घृत मिलाकर लड्डू बनाकर खाने से गलित कोढ भी मिट जाता है।

२१ चित्रक का लेप या मर्दन करने से मडल कोढ भी मिट जाता है।

२२ हडताल की भस्म आधी रत्ती पान मे खाने से कुष्ठ रोग मिट जाता है, कम से कम २ महीने तक खावे।

२३ खैर का काढा प्रतिदिन पीने से व स्नान के काम लेने से नख, रोम उत्पन्न होकर शरीर शुद्ध हो जाता है अर्थात् कुष्ठ रोग का उपशमन हो जाता है।

२४ खैर के वृक्ष के सारभूत चूर्ण को खैर के रस मे भावना देवें और सुखाले, फिर उस शुष्क चूर्ण को खैर के काढ़ा के साथ मिलाकर पोने से समस्त प्रकार के कुष्ठ रोगो का शमन हो जाता है। यह प्रयोग सर्वश्रेष्ठ है।

२५ नीम के बीजो का गूदा, वायविड़ंग, भिलावे के बीज, हल्दी, दारुहल्दी, इन सबको कूट कपड छानकर, फिर नीम के बीजो के तेल के साथ मिलाकर उपयोग करने से सर्व जाति का कुष्ठ रोग मिट जाता है।

२६ श्वेत गोगची पीसकर, जल लेप करे कोय।
श्वेत दाग तिनके मिटे, निर्मल काया होय।।

— बभूति रोग —

२७. कूट, मूली का बीज, सरसों, हल्दी, केशर इन सबको सिरस के पानी मे पकाकर लेप करने से पुरानी वभूति मिट जाती है।

२८. केली का खार, हल्दी, दारुहल्दी, मूली का बीज, हरताल, देवदारु, शख का महीन चूर्ण, इन सबको बराबर लेकर नागरबेल के पान के रस मे महीन पीसकर लेप करने से वभूति रोग मिट जाता है।

२९. अमचूर तथा थोडा सेधानमक को ताम्बे के पात्र मे भिगो द, फिर ताम्बा के घोटे मे घोटकर लेप करने से चर्मदल का कोढ़ भी मिट जाता है।

३०. नीम के पत्ते एक-एक करके १०० तक प्रतिदिन खाने से तथा नाम का ही दातुन करने से कुष्ठ रोग मिट जाता है।

— श्वेत कुष्ठ रोग —

३१. घु घची और चित्रक को पानी मे पीसकर लगाना चाहिये अथवा मेनसिल और चिरचिरा की राख को पानी से पीसकर लेप करना चाहिये।

३२. पीली चमेली, गज पीपल, कसीस, विडग, मेनसिल, गौरोचन, सघव को समभाग गौमूत्र मे पीसकर लेप करने से श्वेत कुष्ठ मिटता है।

३३ गधक, आमलासार, चित्रक, कसीस, हरताल और त्रिफला इनके चूर्ण का गोमूत्र मे लेप करना चाहिये।

३४. बावची, गुग्गल, दारुहल्दी की जड़, कलोजी ५-५ तोला और गधक २॥ तोला को थोड़ा कुचलकर २ बोतलें भर दें, फिर नारियल का तेल भरकर मिला दें बोतलो के काग लगाकर लगातार ७ दिन तक धूप में रखें और प्रतिदिन २–३ बार हिलावें ७ दिन पीछे इस तेल का मर्दन करने से कोढ़ादि समस्त चर्म रोग मिटते हैं।

३५. मालकांगणी को २१ दिन गौमूत्र में भिगोकर उसका तेल लगाने

से श्वेत कोढ मिटता है।

३६ हरताल एक भाग, बावची दो भाग, गौरोचन एक भाग को गौमूत्र मे पीसकर लेप करने से सफेद कोढ मिटता है।

३७. चित्रक की जड़ और सफेद कनेर की जड़ को बराबर लेकर नीम्बू के रस मे घोटकर लेप करने से २१ दिन मे सफेद कोढ़ मिट जाता है।

३८ अरण्ड काकड़ी का दूधिया रस लगाने से सफेद दाग व चर्मरोग मिटते हैं।

३९. चालमोगरे का तेल मलहम की तरह लगाने से सफेद दाग मिटते हैं।

४० आक की जड, गन्धक, हरताल, कुटकी, हल्दी को बराबर लेकर गौमूत्र मे पीसकर ७ दिन तक लगातार लेप करने से सफेद दाग मिट जाते हैं।

— बवासीर (मस्सा) रोग —

व्यक्ति के गुदा में शख की अन्दर की नाभि की तरह चौड़ी चार अगुल प्रमाण ३ आटे होते हैं, एक ऊपर का, एक बीच का, एक नीचे का। ऊपर के आटे को प्रवाहिनी कहते हैं, उसका काम मल व पवन बाहर निकालना है, बीच का मल-पवन आदि को छुटाता है, तीसरा आटा मल आदि निकलने के बाद गुदा को वापिस बन्द करता है, इन तीनों आटो मे बवासीर पैदा होता है। पहले आटों में बवासीर पैदा होता है तो साध्य होता है, बीच मे होता है तो कष्ट साध्य होता है और तीसरे वाले आटे मे बवासीर होने से असाध्य होता है। बवासीर दो प्रकार के होते हैं एक खूनी तथा दूसरा बादी का।

१. गाय की छाछ में सेंधानमक मिलाकर कई दिन सेवन करने से बादी का बवासीर मिटता है।

२ जमोकन्द पर माटी लपेटकर भाड़ में भरोथ्यो (भून) करके पीछे माटी हटाकर फिर सैंधानमक लगाकर उसके टुकड़े कर लें। घी या तेल लगाकर २ तोला प्रमाण प्रतिदिन ३१ दिन पर्यन्त खाने से बादी का बवासीर मिटता है।

३. आक के ताजे पत्तों के पाचों नमक अनुमान माफिक लगाकर तथा तेल व खटाई लगाकर फिर दग्ध करें, पश्चात् उस भस्म को ४-५ माशा गर्म पानी से ५ दिन लेने से बादी का बवासीर मिट जाता है।

४. वन्दाल के पत्तों को औटाकर उससे सिंचा लेवें अथवा बन्दाल के डोडो की धूणी देवें तो बादी का बवासीर मिट जाता है।

५ हल्दी, कडवी तोरू की जड, आक का पत्ता, सहेजण की जड़, इन सबको कांजी मे पीसकर मस्सा के लेप करने से समस्त मस्सा झड जाते हैं।

६ पका हुआ जमीकन्द भाग १६, भांग भाग ८, इलायची भाग ४ इन सबको महीन पीसकर सबसे दुगुना गुड मिलाकर १-१ तोला की गोलिया बनाकर फिर १ गोली प्रतिदिन एक मास तक खाने से बवासीर, हिचकी, खांसी, श्वास रोग मिट जाते हैं।

७ बवासीर के कपूर की धूणी देने से मिट जाता है।

८. लालचन्दन, नीम की छाल, धमासा, सोठ इन सबका काढा ३१ दिन देने से सब तरह का मस्सा मिटे।

९. बसन्त मालिनी रस १ रत्ती, पीपल २-४ नग को मिश्री की चासनी में १५ दिन तक लेने से दोनों प्रकार का बवासीर मिटता है।

१०. १० माशा रसोत को पीसकर पानी में ४ घण्टे भिगोकर फिर पानी को छानकर २ महीने तक पीने से पित्त का खूनो बवासीर मिट जाता है।

११. यदि किसी दवा से बवासीर नहीं मिटता है तो सुबह उठकर शौच के

लिए जाओ उस समय पहले १ बर्तन मे पेशाब करलो और शौच जाने के बाद सिचा लेवो जिससे सभी प्रकार के मस्सा मिट जायेगे और आराम हो जायेगा।

१२ हजार बार मले हुए घृत मे मली तथा कपूर मिलाकर मस्सा के लगाने से फायदा होता है।

१३. भाग को उबाल कर गुदा पर बाधने से मस्सा रोग मे आराम मिलता है।

१४ पाव भर कण्डे (छाणा) की राख को आधे घडे पानी मे डालकर ८ दिन तक उसे झले, फिर पानी छानकर छाया मे सुखा दें और मात्रा ६ माशा १४ दिन तक खाने से दोनो प्रकार के मस्सा को जड भी न रहे। पथ्य मू ग की खिचडी खाना चाहिये।

१५. १ नारियल के छिलके को जलाकर उसकी राख बनाले फिर उसके बराबर शक्कर मिलाले और तीन खुराक करके लेले। इससे मस्सा का खून बन्द हो जायेगा और १ साल तक वापिस नही होगा।

१६ नीम और कनेर की जड की छाल की बुकनी बनाले, दोनो समान भाग करके और बवासीर पर थोडा-थोडा लगाने से मस्से सूखकर गिर पडेंगे।

१७ १ रत्ती जगाल को मलाई मे मिलाकर मस्सो पर मलकर ऊपर सेक करने से ३ दिन मे मस्सा दूर हो जायगा।

१८ नागकेशर ३ तोला, कालीमिर्च १॥ तोला, मिश्री ४ तोला इनको पीसकर ५ दिन तक गाय के मक्खन मे मिलाकर खाने से खूनी मस्सा मिट जाता है।

१९. चित्रक को बारोक पीसकर एक निर्मल घडे मे उसके अन्दर लेप करें, फिर उस घडे मे रखी हुई छाछ को प्रतिदिन सेवन करने से मस्सा रोग मिट जाता है।

२०. मस्सा के रोगी को खाने के लिये अन्न कम मात्रा मे देकर अम्ल

छाछ पीने को देनी चाहिये ।

२१. मस्सा के रोगी को अदरक, कूट, चित्रक, पुनर्नवा इनसे सिद्ध पानी व इन्हीं औषधियों से पकाए हुए दूध को पीना चाहिये ।

२२. नागकेशर ६ माशा, मिश्री १ तोला, मक्खन १ तोला मिलाकर नित्य खाने से खूनी बवासीर मे निश्चय ही आराम होगा ।

२३. **खूनी बवासीर के लिये**—सूखे आवलो के छिलको का चूर्ण ४ माशा और मिश्री ४ माशा मिलाकर खाना चाहिये ।

२४. थूहर का दूध मस्सा पर लगाने से बवासीर (मस्सा) नष्ट हो जाता है ।

२५. नीम और पीपल के पत्तों को पीसकर लेप करने से भी मस्सा रोग मिट जाता है ।

२६ सहेजना के पत्तो को महीन पीसकर लेप करने से मस्सा मिटता है ।

२७ **खूनी बवासीर के लिये**—माजुफल नग ७ लेकर पीस छानलो और उसकी ७ पुडिया बनालो, फिर मूग की दाल और चावल को खिचडी बनाकर थाली मे परोसो, उस खिचड़ी मे थोडोसी मे १ गड्ढा करलो फिर १ पुडिया की दवा डालदो और १॥ तोला घृत डालकर मिलाकर इस प्रकार ७ दिन खाने से खूनी बवासीर जड से मिट जाता है ।

२८ रसोत १ तोला, कलमीसोरा १ तोला दोनो को पानी मे पीसकर ४ गोली बनाले और ठण्डे पानी के साथ दोनो वक्त लेवे तो खूनी बवासीर मिट जायेगा । यदि इतने मे आराम न हुआ हो तो दूनी दवा ४ दिन मे लेवें। परहेज गुड, लालमिर्च, खटाई, तैल न खावें ।

२९. बारहसिंगा के सीग को पानी मे घिसकर लेप करने से मस्सा रोग मिट जाता है ।

३०. बवासीर की खाज पर कुचेला को पानी मे पीसकर लेप कर ।

३१. यदि मस्सा ज्यादा परेशान करता हो तो भांगरा और गूलर के पत्ते बराबर पीसकर लेप करे ।

३२ १ तोला पीली हरड को गर्म किये हुए मिट्टी के बर्तन में डालकर लाल होने पर इसे घृत में तर करके भून ले, जब छिलका उतर जाय तो तपाई हुई रसोत १ तोला मिलाकर फिर उड़द की दाल बराबर गोलिया बनालें। इससे खूनी बवासीर मे अच्छा फायदा होता है। मात्रा २ गोली शर्बत अजबार के २ तोला के साथ दिन मे ३-४ बार लेवें।

३३. नीम की पुरानी लकडी का चूर्ण और चोकिया सुहागा की खील २-२ तोला और गाय का मक्खन ३ तोला लेकर तीनो को फूल की थाली मे नीम के सोटे से इतना घोटें कि घोटते-घोटते काला मलहम सदृश बनजाय। इससे बवासीर (मस्सा) पर लगाने से पीडा मिटती है और मस्से मुर्झा जाते है।

३४. आम और जामुन की पुरानी गुठली की गिरी सम भाग लेकर चूर्ण बनालें। मात्रा ३ माशा चावलो के धोवन मे खावे। इससे बवासीर मे आने वाली खूनी दस्तो मे फायदा होगा।

३५ ५ खुरमानी को रात मे भिगो दे सुबह उस पानी को पीवे व खुरमानी को खावे इससे बवासीर मे आने वाली खूनी दस्त रुकेंगी।

— मूत्र-रोग —

१. खरेंटी की जड की छाल और उसके बराबर मिश्री मिलाकर ८ माशा प्रमाण गाय के दूध मे लेने से बार-बार मूत्र लगे, वह कम हो जाता है।

२ पेडू पर कलमीसोरा लगाने से अथवा हींग के पानी का लेप करने से मूत्र लगे।

३. ५ माशा जवाखार मिश्री के साथ लेने से मूत्र का बन्ध छूट जाये।

४. पेठे का बीज व सेबरसी के बीज इन दोनो को पानी मे पीसकर

२ मोशा जवाखार डालकर पीने से मूत्र का बन्ध छूटे।

५. आंवला को ठण्डे पानी मे पीसकर पेडू पर लेप करने से मूत्र बन्ध छूटता है।

६ चीणिया कपूर की बत्ती बनाकर लिग या बस्तिस्थान में देने से मूत्र बन्ध छूटता है।

७. काली भैस की पाडी के दाहिने कान की कीटी को तालवा पर लगाने से तुरन्त मूत्र लग जाता है।

८. ठण्डे पानी की धार कई देर तक गुप्त स्थान पर देने से पेशाब लग जाता है।

९ पेट के पेडू पर तालाब की माटी को गीली करके गोल कुण्डाला बनावे और उसमें ठण्डा पानी भरें तो पेशाब लगता है।

१० कुल्थी को उबालकर पानी पीवे या उसकी रोटी या साग बनाकर खाने से पेशाब लगे और पत्थरी मिट जावे।

११ गोखरू, किरमाला की गिरी, डाब की जड, जवासा, आंवला, पाषाणभेद, हरडे की छाल इन सबको जौकूट करके बराबर मात्रा मे ८ माशा का काढा बनाकर मिश्री मिलाकर प्रतिदिन लेने से मूत्र रोग व पत्थरी के असाध्य रोग को मिटाता है। इसे गोक्षुरादि क्वाथ कहते हैं।

१२. दूध मे पुराना गुड या मिश्री मिलाकर पीने से मूत्र रोग मिटता है। इसे पेट भर पीने से विशेष फायदा होता है।

१३ सम्पूर्ण आहार छोडकर बकरी के गर्म दूध में शक्कर और थोडा सोहागा का चूर्ण मिलाकर कई दिन पीने से शर्करा तथा पत्थरी रोग मिटता है।

१४. गोखरू के काढा में जवाखार मिलाकर पीने से मूत्र की रुकावट रोग मि-ता है।

१५. गिलोय, सोठ, आंवला, असगन्ध और गोखरू इन सबको बराबर लेकर जौकूट करके प्रतिदिन ८ माशा का काढा लेने से मूत्र कृच्छ्र

रोग मिटता है।

१६ पके नीम्बू के रस को गाय के कच्चे दूध मे डालकर पेट भर प्रतिदिन पीने से स्त्रियो के योनि सम्बन्धी रोग तथा दाह आदि मिट जाते हैं।

१७. डाभ की जड, कास की जड, दूब की जड, नोल की जड, साठा (ईख) की जड इन पाचो का काढा देने से मूत्र मे खून आता हो तो भी मिटता है। इससे पेशाब साफ उतरता है।

१८ कन्टाली के रस मे मिश्री मिलाकर पोने से मूत्र कृच्छ्र रोग मिटता है।

१६. ६ माशा जवाखार गाय की छाछ मे देने से मूत्र कृच्छ्र मिटता है।

२० खरेटी की जड का काढा देने से सब प्रकार का मूत्र कृच्छ्र रोग मिटता है।

२१ कपूर को पानी मे घिसकर बारीक कपडा मे लपेटकर उसकी बत्ती बनाकर गुप्त स्थान मे रखे तो मूत्र कृच्छ्र राग मिटता है।

२२ बकरी के दूध मे चमेलो को जड पोसकर पोने से यदि गर्म मूत्र उतरता हो तो फायदा होता है।

२३. कुलथी, सेंधानमक, वायविडग, सालमर्मिश्री, साठा (ईख) का रस, जवाखार, पेठे का रस, तिलखार, पेठे के बोज, गोखरू इन सबका काढा बनाकर फिर उसमे गाय का घृत पकाकर प्रतिदिन १-१॥ तोला खाने से पत्थरी, मूत्र बन्ध तथा मूत्र सम्बन्धो सब रोग मिट जाते हैं। इसे कुलथादि घृत कहते हैं।

२४ तिलो की नालो का खार ६ माशा को मिश्री की १॥ तोला चासनी मे दूध के साथ १५ दिन पीने से पत्थरी निश्चित गिर पड़े।

२५ पत्थरो रोग मे कुलथी, मूग, जौ, गेहूँ, चावल, दूध, घृत, टिंडसा और सेधानमक पथ्य है।

२६. गोखरू का चूर्ण १ तोला, भेड़ का दूध और मिश्री मिलाकर पीने से पत्थरी रोग मिट जाता है।

२७ शोरा ८ माशा, जवाखार ८ माशा इन दोनो की फाकी लेकर ऊपर गौमूत्र पीने से मूत्रावरोध मिटता है।

२८. तालमखाने का बीज, पीपल, कौच के बीज, मुलैठी,इन सबका चूर्ण बनाले और उसमे घी, शक्कर मिलाकर चाटें। ऊपर से दूध पीवें। इससे सम्पूर्ण मूत्र रोग मिटते हैं।

२९ खीरे के १ तोला बीजो के कल्क को अच्छी खट्टी काजी के साथ या लवण वर्ग की काजी के साथ पीने से व्यक्ति का भयकर मूत्र कृच्छ्र भी शात हो जाता है।

३० अनारदाना, जीरा, सोठ, पीपल व नमक इन सबका चूर्ण बनाकर प्रतिदिन काजी मे मिलाकर पीने से मूत्र कृच्छ्र रोग को नष्ट कर देता है।

३१ मूत्र रोग मे—मुलेठी, देवदारु, हल्दी, कटेली, छोटी इलायची, नागरमोथा, आवला, इन सबके चूर्ण को या कल्क को काजी या दूध व चावलो के धोवन के साथ लेने से मूत्र रोग मिट जाता है।

३२ मूत्राशय मे पीडा वाले व्यक्ति को १६ तोला आवला के रस मे ईख रस मिलाकर पीना चाहिये।

३३ छोटी इलायची और हीग के चूर्ण मे घी, गुड मिलाकर दूध के साथ पीने से सभी प्रकार के मूत्र कृच्छ्र रोगो को एव शुक्रगत मूत्र रोगो को नाश कर देता है।

३४ छोटी इलायची, शिलाजीत, पीपल व गुड इनको पानी मे सेवन करने से नाना प्रकार के मूत्र रोग सर्व जाति की अश्मरी एव शर्करा रोग भी शमन हो जाते हैं।

३५ लवण वर्ग और त्रिफला के चूर्ण को ठण्डे पानी से लेने से मूत्र रोग मिटते हैं।

३६. ज्येष्ठ मधु व कुकुम (केशर) के कल्क मे गुड मिलाकर पानी के साथ बिलोना चाहिये, फिर उसे रात्रि मे उसी तरह रहने दें फिर अच्छी तरह ठण्डा होने के बाद प्रात काल पीने से सब तरह के

मूत्र रोग व विकार दूर हो जाते हैं।

३७. शोतलमिर्च, इलायची, शोराकलमो, इनका चूर्ण महीन करके लेने से पेशाब की रुकावट मिटती है।

३८. पुनर्नवा (साटी की जड) के सेवन से मूत्र रोग मिट जाता है।

३९ मट्ठे के साथ ४ माशा शुद्ध गन्धक लेने से मूत्र रोग मिट जाता है।

४०. ६ माशा जवाखार और इतना ही गुड मिलाकर लेने से मूत्र रोग मिटता है या गाय की छाछ के साथ लेना चाहिये।

४१. अपमाग के क्षार को जवाखार मे मिलाकर ठण्डे पानो के साथ सेवन करने से मूत्र कृच्छ्र तथा अश्मरो (पत्थरो) रोग मिट जाता है।

•२. भयंकर मूत्र कृच्छ्र में—नाभि के आस पास कलमीसोरा व काली-मिट्टी मिलाकर लेप करना चाहिये अथवा इन्द्रिय के छिद्र मे कपूर रखने से पेशाब खुलकर आता है।

४३. मूत्र बन्द होने पर या कृच्छ्र होने पर—अभ्रक भस्म, भुईआवला, गोखरू, बडी इलायची के बीजो का पीसकर खाँड और घृत मे मिलाकर चाटना चाहिये।

४४. मूत्र रोकने का उदावर्त—३ माशा जवाखार और ३ माशा वच को पानी मे पीसकर पिलाने से दूर होगा।

४५. दही की लस्सी मे जवाखार मिलाकर पीने से पेशाब अधिक उतरता है।

४६ आवला का गूदा आधा तोला, एक छटाक बकरी का दूध मिलाकर पीने से मूत्र कृच्छ्र मिटता है।

४७. कलमीशोरा ३ माशा, नील एक तोला लेकर दोनो को पानी मे पीसकर नाभि के नीचे लेप करने से मूत्र खुलकर आता है।

४८. टेसू (ढाक-पलाश) के फूल ४ तोला, आक के फूल, हंसराज, कोदो, खरबूजे के छिलके और सोये का बीज २–२ तोला लेकर सबको तीन पाव पानी मे उबाले फिर एक पाव पानी रहने पर छानकर

उसे गुर्दा के दर्द की जगह धार बांधकर डालें (तरड़ा दें) इससे गुर्दा का दर्द मिट जाता है।

४६. चादी की लग (सिल्ली) को गर्म लाल करके बुझाये हुए पानी को पीने से गुर्दा की बीमारी मिटती है।

५०. विशुद्ध चीनी मे आरने छाणे की राख को पाव भर पानी मे मिला कर पीने से मूत्र रोग मिटता है।

५१. मुंगो की भस्म एक रत्ती मे मिश्री की चासनी मिलाकर लेने से कफ जन्य मूत्र कृच्छ्र रोग मिटता है।

२२ मिश्री के पावभर शर्बत मे ५ तोला कमला नीबू का रस मिलाकर सेवन करने से मूत्र जन्य रोगो की वेदना मिटती है।

५३. गोखरू के एक छटाक क्वाथ मे २-३ रत्ती जवाखार पीने से निश्चय ही पेशाब साफ आता है।

५४. पच तृण की जड सब मिलाकर २ तोला, बकरी का दूध एक छटांक और पानी एक सेर मे औटा ले जब दूध शेष रह जाय तब छान लें इसके पीने से रुधिर का पेशाब भी मिट जाता है, शीघ्र आराम मिलता है।

५५ टीडसा का रस ३ तोला मे १ माशा जवाखार डालकर गर्म पानी से लेने से पेशाब साफ आता है, पत्थरी तक निकल जाती है।

५६. गेरू ३ तोला और कच्चे चने अधकुटे ३ तोला लेकर रात्रि में गर्म पानी में भिगो दें, प्रात काल उस पानी को नितारकर उसमें मिश्री मिलाकर पीने से पेशाब की जलन व खून, पीप आने में फायदा होता है।

५७. सूखा सिंघाड़ा, कतीरागोंद ६-६ माशा, नशास्ता, तालमखाना और सालममिश्री ४-४ माशा, माजू और मस्तंगी ३-३ माशा तथा सबके बराबर मिश्री लेकर कूट-छानकर चूर्ण बनालें। मात्रा ५ माशा पानी या दूध मे सेवन करने से प्रमेह, मनी का पतलापन और शीघ्र पतनादि मे गुणकारी होता है।

५८. तुलसी के बीज ६ माशा और मिश्री २ तोला को पानी मे पीसकर १० तोला गाय के दूध में मिलाकर मंदाग्नि पर पकालें और गाढा होने पर पीवे। इससे काम-शक्ति की वृद्धि होती है व शीघ्र-पतन को रुकता है।

५६. सालममिश्री, सिंघाडा का आटा और बिनोला की गिरी ३-३ माशा तथा मिश्री २ तोला लेकर पानी मे पीस ले फिर उसमे दस तोला गाय का दूध व ७ माशा ईशबगोल की भूसी मिलाकर पकाकर गाढा करके पीवे। इससे शुक्रस्राव रुकता है।

६०. ६ माशा शुद्ध शीशा को एक लोहे की कढाई मे पिघलावें और सहेजना की लकडी से चलाते रहे, जब भस्म हो जाय तो कपडे से छानकर सुरक्षित रखे। मात्रा २ चावल गाय के मक्खन के साथ लें। इससे शुक्रस्राव का रोग मिट जाता है।

६१. चाकसु नग २० और सफेद चन्दन ५ माशा लेकर रात को गर्म पानी मे भिगो दें। फिर सुबह नितारकर पीने से पेशाब के स्थान मे खून आता हो तो तुरन्त फायदा होता है।

६२. कीकर का गोंद, पुरानी सुपारी, कत्था सफेद, ढाक का गोंद, काली हरड़, केशर, जायफल, रूमी मस्तगी, लाग, जावित्री, अकरकरा, पोस्त का डोडा, खुरासानी, अजवाइन, इलायची का दाना, मोचरस, कुन्दरू का गोंद ३-३ माशा तथा इमली के छिले हुए बीज २ तोला और बिनोला की गिरी, खोपरा, पिस्ता, अखरोट की गिरी और चिलगोजा की गिरी २-२ तोला लेकर सबका चूर्ण कूट-पीसकर बनाले फिर उसमे बराबर शक्कर मिलाकर रख ले। मात्रा ७ माशा प्रमाण गाय के दूध के साथ प्रतिदिन सेवन करें। इससे स्वप्नदोष, वीर्य का पतलापन, शुक्रस्राव आदि के लिये यह दवा अत्यन्त गुणकारी है।

६३. अर्क हरा-भरा—सफेद चन्दन, लाल चन्दन, खस पद्माख, नागरमोथा, ताजी गिलोय, पित्तपापड़ा, नीम की छाल, गुलनिलोफर

(निशोल्पल), कासनी के बीज, सोंफ, कद्दू के बीज, नेत्रवाला और धनिया १०-१० तोला, तुलसी के बीज, छोटी इलायची के दानें और पोस्त का डोडा २-२ तोला, ईख की जड, जवासे की जड, धमाशा, मुण्डी और मुलैठी ५-५ तोला लेकर सबको कूटकर ८ गुने पानी मे रात को भिगो दें फिर प्रात काल उसका अर्क खीच लें। मात्रा ६ तोला मे मिश्री मिलाकर पीवें। इससे तपेदिक (क्षय), सुजाक, पेशाब को जलन, पेशाब का रुकना और हृदय को धड़कन के रोगो मे अत्यन्त गुणकारी है।

६४. बिना बीज की बबूल की कच्ची फली, बबूल की कोपल और बबूल का गोंद इनको बराबर कूट छान ले और कपडछान करले। मात्रा ४ से ६ माशा लेकर ऊपर मिश्री मिलाकर दूध पीना चाहिये, इससे स्वप्न दोष, वीर्य का पतलापन, शुक्रमेह, मूत्र के साथ वीर्य का जाना आदि धातु दोषो को मिटाकर वीर्य को शुद्ध व पुष्ट करता है।

६५ सफेद मूसली, तालवृक्ष की जड, छुवारा, पक्का केला इनको दूध मे सेवन करने से अति मूत्र रोग मिटता है।

—निद्रा-रोग पित्ति-रोग—

१. भाग को सेककर चूर्ण बनाल अनुमान माफिक मिश्री की चासनी मे रात्रि मे चाटने से अच्छी निद्रा आती है।

२ पीपलामूल के चूर्ण को गुड मे खाने से नींद आती है।

३ काक लहरी की जड को सिर पर बाधने से नींद आती है।

४. बैंगन का भरोत्या (भडीता) बनाकर मिश्री के साथ खाने से निद्रा आती है।

५. अरण्ड का तेल और अलसी का तेल इन दोनो को बराबर लेकर

कासी की थाली में खूब घोटकर आखो मे अंजन करने से निद्रा अधिक आती है।

६. बकरी के दूध से पांवों की पगथलियो में मालिश करने से नीद आती है और दाह मिटती है।

७. स्त्री के दूध मे थोड़ी कस्तूरी घिसकर आजने से बहुत दिनो की रही हुई नींद आती है।

८ कमलगट्टा, सहेजना का बीज, नागकेशर इन सबको महीन घोटकर आखो मे आजने से नींद आती है।

९ थोडा जायफल घृत मे घिसकर पलको पर लगाने से निद्रा बहुत आती है।

१०. औटाया हुआ भैस का दूध मिश्री मिलाकर पीने से निद्रा आती है।

— स्वप्न-दोष —

१. काले धतूरे की जड ३-४ माशा का टुकडा कमर में बाधने से स्वप्न-दोष नही होता है।

२ आवला, हल्दी और चदन का चूरा इन सबके बराबर मिश्री मिला कर पीसकर दोनो समय दूध के साथ सेवन करने से स्वप्न-दोष रोग मिटता है, मिर्च-मशाला को छोडना चाहिये।

३ स्वर्णवग, मुक्ताभस्म, गिलोयसत, २-२ रत्ती, शतावर का चूर्ण ४ रत्ती विधायरे की लकडी का चूर्ण १ माशा, शुद्ध शिलाजीत २ रत्ती लेकर ऊपर गर्म दूध पीना चाहिये।

नोट—विधायरे की लकडी कठिनता से कूटी जाती है, इसी तरह शतावर को कूटकर कपडछान करके गोली बना लेना चाहिये।

— पित्ति (पित्ती) रोग —

१. सेंधानमक को घृत मे महीन पीसकर शरीर के मर्दन करके फिर लाल कम्बल ओढने से पित्ति मिटती है।

२. गाय का घृत, गेरू, सेंधानमक, कसूम्बा का फूल, इनको बराबर

महीन पीसकर शरीर के उबटन करने से पित्ति मिटती है।

३. चिरायता, अडूसा, कुटक, पटोल, त्रिफला, लालचन्दन, नीम की छाल इन सबका काढा लेने से पित्ति, फोडा और शरीर मे दाह रोग मिट जाता है।

४. आरणा छाणा को राख को सिर पर मर्दन करने से पित्ति मिटती है।

५. नागर बेल के पान के रस मे फिटकरी पीसकर लेप करने से पित्ति मिटती है।

६. घृत मे कालीमिर्च का चूर्ण पीने से अथवा ताबा का पैसा मोटा वाला मुँह मे रखने से पित्ति मिटती है।

७. मून्ज की खाट पर सोकर कम्बल लाल रग की ओढ ले और नीचे से मोम और सेल्या का काटा की धूनी देने से पित्ति रोग मिटता है।

८ दानामेथी १।। तोला, हरताल और काली मिर्च को महीन पीसकर अदरक के रस मे तीन पुट देवें। मात्रा ६ माशा प्रमाण गोली बना कर प्रतिदिन खाने से पित्ति का रोग मिटता है।

९ मोम के अन्दर अजवाइन की धूनी दें, रोगी को लाल कम्बल ओढा कर लेटाने से पित्ती मिटती है।

१० १ तोला सोडाबाईकार्ब को २० तोला गर्म पानी मे मिलाकर उसमे कपडा भिगोकर पित्ती के चकत्तो पर लगाने से फायदा होता है।

— प्रमेह और मधुमेह रोग —

१. नागरमोथा, त्रिफला, हल्दी, देवदारु, मुर्वा, इन्द्रजो, लोद इन सबका काढ़ा देने से सब तरह का प्रमेह रोग मिटता है।

२. सिघाड़ा, मिश्री, रेवतचीनी, इन सबको बराबर लेकर महीन

छानकर ८ माशा प्रतिदिन जल के साथ लेने से बहुत दिनों का प्रमेह रोग मिट जाता है।

३. पक्का गूलर का फल, सेंधानमक के साथ खाने से असाध्य प्रमेह रोग भी मिट जाता है।

४ चित्रक तथा पक्के गूलर के फलो का चूर्ण मिश्री की चासनी के साथ खाने से असाध्य प्रमेह रोग मिटता है।

५. कपास की मिंगी को भैंस की छाछ मे ७ दिन तक घोट फिर दो माशा प्रतिदिन खाने से नाना प्रकार का प्रमेह रोग मिटता है।

६. कच्ची हल्दी को छीलकर बारीक कतर लो, फिर नमक मशाला लगाकर खावे या साग बनाकर खाने से सुगर मधुमेह) की सभी प्रकार की बीमारी मिट जाती है।

७ सुपारी पाक—दक्षिणी सुपारी १२ तोला को महीन खरल करके १२ तोला घृत मे भोसण ले, फिर ३ सेर गाय के दूध मे आग पर चढाकर उसका मावा बनाले पश्चात् उस मावे में नीचे लिखे अनुसार औषधिया महीन करके मिलावे, नागकेशर, नागरमोथा, चन्दन, सोठ, कालीमिर्च, पीपल, आंवला, कोयला का बीज, चारोली, तज, पत्रज, इलायचीदाना, जीरा सफेद, जीरा स्याह, सिगोडा, बसलोचन, जायफल, लोग, धणिया १।।–१।। तोला इन सभी वस्तुओ को महीन छानकर उस मावे मे मिलालो फिर ५० तोला मिश्री की चासनी मे उस मावे और औषधियो को मिलालो, मात्रा १।। तोला प्रमाण गोलिया बनालें और १-१ गोली प्रतिदिन दोनो समय खाने से प्रमेह रोग, जीर्णज्वर, अम्लपित्त, मन्दाग्नि और प्रदर रोग को नाश करता है।

— मधुमेह-रोग —

८. जामुन की गुठली की गिरी १ तोला, अफीम १ माशा लेकर पानी मे पीसकर ३२ गोलिया बनाले फिर प्रतिदिन सुबह-शाम २-२ गोली

खावें। इससे पुराना मधुमेह रोग नष्ट हो जाता है।

९. कपास की गिरो १ तोला को अधकुटा करके रात को गर्म पानी मे भिगो दें और सुबह पानी को नितारकर उस पानी मे ४ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर पीवें। इससे मधुमेह, बहुमूत्र और कमर का दर्द मिट जाता है।

१०. जामुन की गुठली, करेला का बीज, आवला, बीज पत्र इन चारो को समभाग कूट-छानकर चूर्ण बनालें और पानी से लेवें। इससे मधुमेह (सुगर) की बीमारी मिट जाती है।

११ केले का रस निचोडकर १ तोला और कलमीशोरा आधा माशा मिलाकर पीने से जलन व सुजाक रोग मिट जाता है।

१२. बडे आकार के ५ सेर करेलो को बीचो-बीच लम्बे रूप में काटकर छाया मे सुखा दें, सूख जाने पर उनका दानेदार छिलका चाकू से रगडकर उतार ले फिर पीसकर चूर्ण बनालें। मात्रा १ तोला दोनो समय पानी से लेवें। इससे मधुमेह रोग मिट जाता है।

१३ जामुन के हरे पत्ते कोमल देखकर ९ माशा को बारीक पीसकर छान ले और ५ तोला जल मे ११ दिन तक पीने से मधुमेह रोग मिटता है।

१४. जामुन की गुठली का चूर्ण ६ माशा दिन मे ३ बार पानी से लेने से मधुमेह रोग मिटता है।

—मेद रोग व शरीर का पसीना रोग—

१. गिलोय और त्रिफला का काढ़ा बनाकर मिश्री डालकर पीने से मेद रोग तत्काल मिट जाता है।

२. चावलो का माड पीने से अथवा बासी ठण्डा पानी मे मिश्री मिलाकर पीने से मेद रोग मिटता है।

३. धतूरे के पत्तो के रस का मर्दन करने से मेद रोग मिटता है।

४. पीपल का चूर्ण मिश्री की चासनी मे चाटने से मेद रोग मिटता है ।

५. गिलोय, इलायची, कूडा की छाल, इन्द्रजौ, हरड़ की छाल, आवला इन सबको एक से एक बधता लेकर फिर सबके बराबर गुग्गल लेकर मिलाले, मात्रा ५ माशा, मिश्री की चासनी मे लेने से मेद रोग तथा भगदर रोग भी मिट जाता है ।

६. इस मेद रोग मे पुराना चावल, मूग कुलथ, कोदु आदि का सेवन उत्तम होता है ।

७. सोठ, कालीमिर्च, पीपल, चित्रक, त्रिफला, नागरमोथा, वायविडग का काढा करके फिर गुग्गल मिलाकर पीने से मेद का रोग मिटता है ।

८. **त्रिफलादि तेल**—त्रिफला, अतीस, मुर्वा, निसोत, चित्रक, अडूसा, नीम की वकल, गिलोय, बील की गिरी, पीपलामूल, दानो हल्दी, इन्द्रायण, पीपल, कूट, सरसो, सोठ इन सबको बराबर लेकर काढा करके फिर उसमे तुलसी का रस मिलाकर उसमे तेल पकावे । इस तेल के मर्दन से मेद रोग मिटता है ।

९. चव्य, जीरा, सोठ, कालीमिर्च, पीपल, सेकी हीग, सचरनमक, इन सबको समभाग लेकर महीन छानकर, मात्रा ८ माशा जौ के सातु के साथ लेने से मेद रोग मिट जाता है ।

१०. वायविडग, सोठ, जवाखार, पीपलसार इन सबको महीन कूट छान कर मात्रा ४ को जौ और आवला के चूर्ण मे मिलाकर मिश्री की चासनी मे लेने से मेद रोग मिट जाता है ।

— शरीर में पसीने की दुर्गन्ध —

१. नित्य स्नान करते समय पानी मे थोडा डिटोल डालकर स्नान करने से शरीर की सफाई होती है ।

२ शरीर पर मसाले का तेल लगाने से गध मिट जाती है ।

३. बालछड़, बुढ़ना, नागरमोथा, सरसो का उबटन लगाने से शरीर

के पसीने की गन्ध मिट जाती है।

४. नागकेशर, सिरस की बकल, लोद, खस, हरड़े को छाल इन सबको पानी मे पीसकर उबटन करने से शरीर की दुर्गन्ध मिटती है।

५. कुल्थी, कूट, छडछडिला, चदन, भुना हुआ जौ का आटा, तज, वच। इन सबका उबटन करने से शरीर की दुर्गन्ध मिटती है।

६. नागरबेल का पान, हरड की छाल, कूट इनको पानी में पीसकर मर्दन करने से शरीर की दुर्गन्ध तत्काल मिटती है।

७ बबूल को छाल को पानी मे पीसकर मर्दन करने से या स्नान करने से शरीर की दुर्गन्ध तत्काल मिटती है।

८ हाथ-पैरो के पसीना ज्यादा आना तथा ठण्डा रहना। इसका मुख्य कारण कफ और सर्दी का प्रकोप है, जलाई हुई पीली कौड़ी को राख, फिटकरी, कलथी, मुर्दासिंगी को अलग-अलग खरल करके मलने से फायदा होता है।

९. स्याह धतूरे के बीज जलाये हुए ७ माशा, ऊँट कटेरी की सूखी जड ७ तोला को महीन करके १ तोला खाने से हाथ-पैरो का पसीना आना मिट जाता है।

—कांख की दुर्गन्ध के लिये—

१० नीम्बू के पत्तो के रस का लेप करने से पसीना तथा दुर्गन्ध मिट जाती है।

११. हल्दी को अधजली करके चूर्ण बनाकर पानी मे लेप करने से पसीना आदि मिटता है।

१२. हल्दी दोनो, कूट, इनको गौमूत्र मे पीसकर फिर जल के साथ लेप करने से कांख की दुर्गंध मिटती है तथा इससे कोढ भी मिटता है।

१३. हरड़ की छाल, लोद, नीम का पत्ता, दाडम की छाल इन सबको पानी मे पीसकर शरीर के लेप करने से शरीर की कांति बढ़ती है।

– अंत्र (अण्ड) वृद्धि रोग –

१. दूध मे अरण्ड का तेल डालकर पीने से बादी की अण्ड वृद्धि मिटती है इसे एक मास तक पीवें।

२. गुग्गल, अरण्ड के तेल को गोमूत्र मे मिलाकर पीने से बादी की अड वृद्धि मिटती है।

३. तुलसी के पत्तो को मिलाकर पीस लें और उनका लेप करने से अण्ड वृद्धि मिटती है।

४. खेरीगोद ४ तोला, वच ५ तोला, सोठ ४ तोला और गाय का दूध १२ तोला में सालिम मिश्री १२ तोला मिलाकर प्रतिदिन १ तोला अण्ड के लेप २१ दिन तक करें। इससे अण्ड वृद्धि मिटती है।

५ सोठ, मिर्च, पीपल और त्रिफला के काढा मे जवाखार, सेंधानमक डालकर पीने से कफ की अण्ड वृद्धि मिटती है।

६. पानी मे मिश्री मिलाकर या शीतल पदार्थों का सेवन करने से रक्त की तथा पित्त की अण्ड वृद्धि मिटती है।

७. लालचन्दन, महूवा, कमलगट्टा, खस, कमल की जड इन सबको बराबर लेकर गाय के दूध मे महीन पीसकर लेप करने से पित्त की अण्ड वृद्धि तथा दाह मिटती है।

८. रास्ना, मुलैठी, गिलोय, अरण्ड की जड, खरेटी, किरमाला की गिरी, गोखरू, पटोल तथा अडूसा इन सबका काढा करके उसमे अरण्ड का तेल डालकर पीने से अण्ड वृद्धि मिट जाती है।

९. हरड़ की छाल, चिरायता, धणिया १।।-१।। तोला और लोग एक तोला, सोनामुखी १।। तोला फिर सबके बराबर से मिश्री दूनी डालकर कूट छान ले। मात्रा ८ माशा लेने से निश्चय ही अण्ड वृद्धि मिटती है।

— आन्त्र वृद्धि (एपेण्डिसाईटिस) रोग —

१०. आन्त्र वृद्धि रोग के प्रारम्भ से ही अरण्ड का तेल देने से व अरण्डी

के तैल के साथ हींग मिलाकर एनोमा देने से बिना ऑपरेशन के ही यह रोग मिट जाता है, इस रोग में पेट दुखने पर खुरासानी अजवाइन का सेवन करना हितकारी है ।

— गोसा चढ़ाने के लिए —

११. भेड के दूध को कासी की थाली मे मथकर उसमें राल मिलावे फिर मथें और थोडा सिंगीमोरा डालकर गोसा पर लेप करे तो तत्काल गोसा चढ जावे ।

१२ केशूला के फूलो को उबालकर बफारा देने से और उन फूलों को बाधने से गोसा चढ जाता है ।

१३ साजीखार, सेंधानमक, हीग, जीरा, छोटी-बड़ी करंजा, श्रवणी, त्रिकुटा इन सबका चूर्ण बनाकर दूध के साथ सेवन करने से अड-कोश का रोग मिटकर सुदृढ हो जाता है ।

— केन्सर रोग —

१४. तुलसी के ७-८ पत्ते दही मे खाने से केन्सर रोग मिटता है, इसका लम्बे समय तक प्रयोग करना चाहिये ।

१५ गेहूँ के कोमल पौधों को पीसकर उसमे मिश्री मिलाकर लम्बे समय तक पीने से केन्सर रोग मिटता है ।

मुँह पर धब्बे का रोग व सुन्दरता के लिए

१. छुहारे के बीज, फिटकरी, थोडी केशर को गाय के दूध में पीसकर लगाने से मुँह के नीले-काले धब्बे मिट जाते हैं ।

२. कालौंजन को पानी में पीसकर लगाने से मुँह के धब्बे मिटते हैं । ऊपर से चावलो को पीसकर लगाने से चेहरे का रग अच्छा बन जाता है ।

३. कंजे की गूदी को गाय के दूध मे पीसकर लगाने से मुँह का रग चमकने लगता है ।

४. जवासा के गर्म पानी से मुँह धोने से तथा स्नान के समय तोलिया से रगड़ने से मुँह पर जवानी की फुन्सिया मिट जाती हैं।

५. अनार, अमलतास, नीम की छाल, लोध, आमाहल्दी, नागरमोथा, नरकचूर बराबर लेकर थोड़ा समुद्रफेन गाय के दूध मे पीसें और मुँह के लगावें तो मुँहासा, झाई और फुन्सिया मिट जाती हैं।

६. बीजपोस्ता, अजवाइन १-१ तोला पीसकर फिर एक तोला घृत और दो तोला गुड मे पकाकर प्रतिदिन सवेरे खाने से शरीर और मुख की सुन्दरता निखरती है।

७. आधीकच्ची और आधीपक्की ५ तोला मेथी, नागरमोथा १० तोला को महीन पीसकर सरसो के तेल तथा थोड़ा पानी मे मिलाकर लगाने से खूबसूरती आती है।

८ पठानीलोद, आमाहल्दी, कुलथी इन सबको बराबर लेकर महीन पीसकर फिर थोडे गाय के मक्खन और पानी मे उबटन करने से शरद्चन्द्र का सा शरीर हो जावे, इससे पूरा शरीर सुन्दर बन जाता है।

९ हरताल, मैनशिल, वटपत्र, सफेदअभ्रक, पारद इन सबको दूध के साथ महीन पीसकर मुख पर लेप करने से मुख कमल के समान बन जाता है अर्थात् मन मोहक बन जाता है।

१० केशर, चन्दन, लालचन्दन, लोध, कूट, लाख, मैनशिल, हरताल, हल्दी, कमलकेशर, मजीठ, सोनागेरू, काकोली, क्षीर काकोली, जीवक, ऋषभक, मेदा, महा मेदा, बुद्धि, ऋद्धि इन सब चीजो से चौगुना घृत तथा दूना दूध से प्रयत्नपूर्वक घृत सिद्ध करें। इस घृत (Snow) को मुख पर लेपन करने से मुख मे उत्पन्न व्यंग, नीलिका आदि समस्त रोग नाश होकर मुख चन्द्रमा सदृश कान्तिमय हो जाता है।

११ गर्मी के दिनो मे शरीर पर अलाइयाँ निकलती हो तो मसूर के छिलके और आवला को जलालो फिर उनके बराबर मेहदी और कपीला पीसकर घृत मे मिलाकर लगालो फिर २-४ घण्टे बाद

मेहंदी को औटाकर पानी छान लो और उससे स्नान कर लो। इससे ग्लाइया मिट जायेंगी।

१२ आक के दूध मे हल्दी पीसकर लगाने से मुंह पर नीले, काले, लाल और सफेद दाग हो तो मिट जाते हैं।

१३ बड के अकुर और मसूर को पानी में पीसकर लगाने से भी मुंह के धब्बे मिटते हैं।

१४. हल्दी और काले तिल पानी मे पीसकर लगाने से मुंह के धब्बे मिट जाते हैं।

१५. मस्सा (उडद के समान गाठें शरीर पर होना) :—सज्जी, चूना और साबुन को पानी मे पीसकर लगावें अथवा मोर की बीट पीस कर लगावे अथवा लहसुन को उस्तरे से रगडकर पीछे सरसो, हल्दी, कूट, सज्जी, जवाखार, केशर पानी मे पीसकर लेप करने से फायदा होता है।

— व्रण (फोड़ा-फुन्सी) रोग —

१ व्रण पकने के लिये :—जो, गेहूं और उडद का महीन पीसकर पानी मे गर्म करके लेप करने से व्रण पक जाता है।

२. व्रण को गूलर की बकल के काढे से धोना चाहिये या नीम के पत्तो के काढे से धोना चाहिये।

३. नीम का पत्ता, नील, दांतुणी, निसोत, सेंधानमक, इन सबको महीन पीसकर लेप करने से भयकर व्रण भी मिट जाता है।

४. असगन्ध, लोध, कायफल, मुलैठी, मजीठ, धावड्या इनको पीसकर फोड़े पर बाधने से व्रण रोग मिटे, व्रण (फोडा) भरकर अच्छा हो जाता है।

५. जौ का आटा, मिश्री, घृत और तेल इन सबको मिलाकर थोड़ा गर्म करके लेप करने से फोडे की दारुण शूल मिट जाती है।

६. कणगच की जड, नीम की छाल, निर्गुण्डो, इन सबको पीसकर लेप करने से फोडा की कृमि नष्ट होती है अथवा लहसुन को पीसकर लेप करने से भी कृमि नाश हो जाती है ।

७ नीम का पत्ता, वच, हीग, घृत, नमक, सरसो इन सबको घृत मे पीसकर फिर उनकी धूनी देने से व्रण की कृमि मिटे, छोत उतर जाय, खाज मिटे तथा पीडा मिट जाय ।

८. गुग्गल के साथ त्रिफला का क्वाथ पीने से व्रण रोग मिट जाता है।

९ सिरस वृक्ष की वकल को १०० बार धोये हुए घृत के साथ पीसकर लेप करने से सब प्रकार के फोडा-फुन्सो मिट जाते है तथा विसर्प रोग भी मिट जाता है ।

१०. **व्रण की सूजन तथा लक्षण** —जिस व्रण मे सूजन होय तथा कडा होय, दर्द कम होता है तो जान लो कि अभी व्रण कच्चा है, व्रण उसे कहते हैं कि शरीर के किसी भाग मे सूजन हो और फिर पके फोडे के सदृश हो जाय पश्चात् फूटकर घाव बन जाय, जिस व्यक्ति के सूजन अग्नि की तरह जले और खार की तरह पके तथा चीटी की तरह काटे, दबाने पर सुई चुभे जैसी पीडा होय, दाह ज्यादा होय, रग बदल जाय तब तक व्रण पक्का नही जानना चाहिये । इसके अलावा व्रण के पकने की पहचान, पीडा कम होती है, ललाई कम होती है, सूजन मे तह पडता है, खुजाल चले, दबाने से मवाद (रस्सी) निकले, इत्यादि लक्षण व्रण पकने पर होते हैं ।

११. **घावो के नाम** —(१) अग्नि से जला हुआ, (२) तेल घृत आदि से जला हुआ, (३) चोट लगने का, (४) लाठी आदि से चोट का, (५) पत्थर आदि की चोट का, (६) तलवार आदि शस्त्र का, (७) बन्दूक आदि की गोली का, (८) तीर या शस्त्र का ।

— नासूर रोग —

१२ बारूद दो तोला और असली तिल का तेल चार तोला इन दोनो

को अच्छी तरह मिलाकर और खूब घोटकर रखें। इससे नासूर जल्दी से जल्दी अच्छा होता है, यदि नासूर गहरा हो तो पिचकारी से दवा भर दो, अन्यथा कपड़ा तर करके नासूर पर रखें।

१३ अकौवे के जड के साथ पकाया हुआ पायस (खीर) ही प्रतिदिन भोजन मे देना चाहिये अथवा बेर, खैर, बडीकरज इनके जड़ से सिद्ध पायस के सेवन से सर्व नाडी व्रण (नासूर) व अपची रोग मिट जाता है।

१४ रसयुक्त एक ही नील की जड को पीसकर काली गाय के दूध मे मिलाकर जिस दिन सूर्य और चन्द्रमा का सयोग होता हो तो उसी रात को अन्धेरे मे पीने से अपची रोग मिट जाता है। अपची रोग नासूर को कहते है। इस तन्त्र विद्या से रोगी को भारी लाभ होता है।

१५ स्त्रियो के स्तन पर फोडा हो जाने पर मल्हम–सुपारी आधी भुनी ६ माशा, सफेद कत्था भुना हुआ ६ माशा, सिंदूर गुजराती ६ माशा, सफेदा काशगारी ६ माशा, गौ का घृत सात तोला, पहले घृत को गर्म करके उसमे एक तोला मोम पिघलावो फिर सब दवाइयो को कूट छानकर मिलादो और खूब घोटे, जब ठण्डा हो जाय तो ६ माशा पारा मिलाकर खूब रगडें, इस मल्हम को लगाने से फायदा होता है।

१६ नीम के पत्ते एक सेर, आमा हल्दी आधा पाव, काले तिलो का तेल एक सेर, पहले तेल को तावे के बर्तन मे गर्म करो फिर उसमे नीम के पत्ते डालो वे जलकर काले स्याह हो जाये तो उनको निकालकर दोनो हल्दियो को जौकूट करके उस तेल मे डालो जब वे भी जलकर स्याह हो जायें तब तेल को छानकर रखो और फोडे पर लगावो, इससे बिना दूध वाली स्त्रियो के स्तनो की गाठ को भी फायदा होता है।

१७. व्यक्तियो के पेडू और जाघ के बीच जो फोडा होता है उसको बद गाठ कहते हैं, उसे बैठाने के लिये लेप करें सफेद कत्था, कलमी-शोरा, तज, कबेला, बबूल का गोद ६-६ माशा इन सबको पानी मे पीसकर गाढा-गाढा लेप करना चाहिये, यदि गाठ बडी होकर पककर फूट जाय तो मल्हम —गोघृत आधा पाव लेकर गर्म करे, फिर उसमे दो तोला पीला मोम पिघलावें, फिर सफेद राल ७ तोला मिलावें जब अच्छी मिल जाय तो एक सकोरे मे रखकर पानी से धोवें और ४ तोला भागरे का रस मिलाले। इस मल्हम को घाव पर लगावें इससे फायदा होता है। इसके अलावा दूसरा लेप है जो आदि मे फोडे को पकाकर फोड देता है तथा कच्चे फोडे को पका देता है, हालो, तज, अलसी, मेथी के बीज १—१ तोला तथा एलुवा, कमगरी, साबुन, भसागुग्गल रेवतचीनी, लाल साजी ६—६ माशा इन सबको पानी से पीसकर गर्म करके गाढा-गाढा लेप करे और ऊपर से बगला पान गर्म करके बाध देवे। इस लेप के बहुत गुण हैं :—यदि इस लेप को चोट पर लगावें तो साजी न डाले, परन्तु साजी के बदले मे सेधानमक डाले, यदि चोट से हड्डी टूट गई हो तो आमाहल्दी और मिला दे तो निश्चित आराम हो जाता है।

१८. गुदा पर जो फोड़ा होता है उसके लिये मल्हम :—काले तिलो का तेल १५ तोला, विलायती साबुन ३ तोला, सफेद काशकारी २ तोला, सफेदा गुजराती २ तोला, पहले तेल को गर्म करके उसमे साबुन पिघलाकर चासनी बनालें फिर उसमे सब चीजो को डाल कर मलहम बनाले और ठडा करके घाव पर लगाने से फायदा होता है। दूसरा मल्हम —सफेदराल २ तोला, महीन पीस छान-कर तिल से तेल २ तोला मे मिलावें फिर नदी के जल मे धोवें जब अच्छा सफेद हो जाय तो उसमें कत्था सफेद ४ माशा, नीला थोथा २ माशा, रसकपूर ३ माशा पीसकर मिलाले और घाव पर

लगाने से फायदा होता है।

१९. पांवों की अगुलियों के फोड़ा होने पर उपाय .—गुलाब की पत्तियों को गुलाबजल मे पीसकर गर्म करके गाढ़ा-गाढ़ा लेप करें और ऊपर से बगला पान बाधने से सब प्रकार के फोड़ो को पकाकर मवाद निकाल देता है।

२०. बबूल को गोद और कबेला १-१ तोला इनको पानी में पीसकर लगावें, ऊपर से बगला पान बाधे इससे फोड़ा पककर मवाद निकलकर फायदा होगा।

२१ घृत को गर्म करके उसमें ४ माशा कालीमिर्च और ४ माशा कलोजी महीन पीसकर डाले और अच्छी तरह पकावें जब दवा जल जाय तो लोहे के घोटे से खूब रगडे मल्हम सदृश हो जावे तब काम लेवें। इससे फोडा पककर मवाद निकल जाती है।

२२ कडवा तेल ५ तोला कबेला, कालीमिर्च, मेहंदी के हरे पत्ते, नीम के पत्ते, सूखे आवले ये सब ६-६ माशा तथा नीला थोथा (कपैला) ४ माशा इन सबको तेल मे जलाकर लोहे के घोटे से खूब घोटकर मल्हम बनाले। इस मल्हम से फोडा (व्रण) मे फायदा होता है और आराम मिल जाता है।

— दाद और पांव तथा खुजली रोग —

२३ जीरा १।। तोला और सिंदूर १।। तोला इन दोनो को कडवा तेल मे महीन पीसकर पकाकर लेप करने से पांव मिट जाती है।

२४. मजीठ, त्रिफला, लाख, कलहारी की जड, हल्दी, आवलासार, गन्धक इन सबको समभाग लेकर महीन पीसकर धूप मे गम करके लेप करने से पांव रोग मिट जाता है।

२५. १०० बार धोये घृत को पानी मे धोकर लगाने से खुजली आदि रोगो मे रामबाण दवा है।

२६. कालाजीरा, खुरासानी, अजवाइन, आमाहल्दी २-२ माशा, गंधक ६ माशा, इन सबको पीसकर आटे की लोई मे बीच में बन्द करे,

फिर किसी तवे पर आग पर पकावें, पक जाने पर लोई तोडकर खा जावे और दवा की राख निकालकर चमेली के तेल मे मिलाकर लगाने से खुजली निश्चय ही मिट जाय।

२७. स्याह जीरा, सफेद जीरा, हल्दी, दारुहल्दी, कालीमिच, सिंदूर, पारा गन्धक और मैनशिल इन सबको महीन पीसकर घत मे छानकर शरीर पर ३ दिन मर्दन करें तो खुजली का रोग मिट जाता है।

२८. घृत, धतूरा, पारा और गन्धक के चूर्ण का मर्दन करने से खुजली मिटती है।

२९. आक के पत्तो का रस, हल्दी के काढे का रस इन दोनो को सरसो के तेल मे पकाकर मर्दन करने से कछ दाद मिट जाते हैं।

३०. हल्दी १२ तोला, गाय का घृत ६ तोला, गाय का दूध ४ सेर, मिश्री ७५ तोला, सोठ १॥ तोला, कालीमिर्च १॥ तोला, तज १॥ तोला, पत्रज १॥ तोला, नागकेशर १॥ तोला, नागरमोथा १॥ तोला, त्रिफला ४॥ तोला इन सबको अलग-अलग कूट-छानकर घृत मे मकरोकर हल्दी और दूध मे इनका खरा मावा बनावें फिर मिश्री की चासनो मे तथा मावा मे सब औषधियो को मिलाले। मात्रा १॥-१॥ तोला को गोली बनालें और प्रतिदिन खाने से खुजली, कोढ, फोडा और दाद रोग मिटता है।

३१. पवाड का बीज, सरसो, बावची, तिल, कूट, दोनो हल्दी, नागरमोथा, सबको बराबर लेकर छाछ मे महीन पीस ले और उसका लेप करने से दाद और बिच्छी दाद भी मिट जाता है।

३२. आकूबीज, सुसायड्या, नोसादर, अरु केर। नीम्बू रस मिलायदो। करो दाद से बैर। अर्थ—पोस्त का दाना, फोग की लकडी को जलाने से निकलने वाला सुसायड्या, नोसादर तथा काचा केर की कोपल इन सबको नीम्बू के रस मे घोटकर लेप करने से दाद से बैर हो जाता है।

३३ अन्दाजन एक पाव गुड़ की नरम डली को दाद पर बार-बार रख-कर उठाते रहने से पुराना से पुराना भयानक दाद भी मिट जाता है।

३४ लोपा हुआ पुराना लेवड़ा पर सुबह उठते ही थूक डालकर रगड़ कर उस मल्हम को लगाने से दाद मिट जाता है।

३५ सुबह उठते ही अपने बासी थूक को लगाने से दाद मिटता है।

३६ इमली छाल जलायके, अलसी तेल मिलाय।
दाद होय तहा लेपिये, रोग पुरानो जाय ॥

३७ सिघाडा का आटा ६ माशा और अफीम एक माशा इन दोनो को नीबू के रस मे घोटकर लेप करने से सूखा दाद मिट जाता है।

३८ गुग्गल, आवलासार (गन्धक) और सोहागा की खील समान भाग लेकर नीबू के रस मे घोट ले और लेप करें जिससे भेंसिया दाद भी मिट जाता है।

३९ ३ माशा नोसादर को दो तोला प्याज के रस मे घोट ले और दाद को गीले कपडे से रगड़कर लेप करे इससे दाद और छीपका भी मिट जाता है।

४०. १००-५० वर्ष पुराना घृत दाद को रगड़कर लगाने से दाद मिट जाता है।

४१ सफद चन्दन का चूरा और कमीला बराबर लेकर १०८ बार धोये घृत मे मिलाकर नीम के सोटे से खूब घोटे। इसको अड कोष पर लगाने से खाज मिट जाती है।

४२. खुजली रोग २ प्रकार का होता है—(१) सूखी खुजली, (२) गीली तर खुजली।

४३ लाल करेला एक तोला, चौकिया सोहागा भुना हुआ एक तोला, फिटकरी एक तोला इन तीनो को महीन छानकर फिर दो तोला कड़वा तेल मे खूब मिलालें। ३ दिन शरीर पर मर्दन करें और लौनी मिट्टी शरीर पर मलकर स्नान करने से गीली खुजली मिट जाती है।

४४. कबेला सफेद, कत्था, मेहन्दी १-१ तोला, भुना सोहागा ३ माशा, कालीमिर्च १ माशा इन सबको महीन छानकर गाय के धोये हुए घृत मे मिलाकर ४ दिन लगावें तथा मर्दन करें फिर लौनीमिट्टी को शरीर पर मलकर स्नान करने से गीली खुजली निश्चित मिट जाती है।

४५. ४ तोला सरसो को जल में महीन पीसकर गुनगुना करके उबटन करें फिर गर्म पानी से स्नान करें तो सूखी खुजली मिट जाय।

४६ सूखे आंवले, सफेद कत्था, पवाड के बीज इनको बराबर लेकर दही के तोड मे पीसकर मेहन्दी की तरह लगावे इससे नया दाद मिट जाता है।

४७. पलासपापडा, नीला थोथा, सफेद कत्था, इनको समान भाग लेकर नीबू के रस मे पीसकर दाद पर लेप करे फिर थोडी देर धूप मे बेठें इस प्रकार ७ दिन करने से दाद रोग मिट जायेगा।

४८. कपास के बीजो को नीम्बू के रस मे पीसकर, दाद को कण्डे से खुजलाकर लेप करने से दाद रोग मिटता है।

४९. अफीम, पमाड के बीज, नोसादर और खैरसार इन सबको समान भाग लेकर नीम्बू के रस मे पीसकर दाद पर लेप करे तो दाद का नाश हो जाता है।

५०. राल, माजूफल और नीलाथोथा इन सबको बराबर लेकर नीम्बू के रस मे या हुक्के के पानी मे पीसकर लगाने से दाद रोग मिटता है।

५१. ११।। माशा राई को कूट-छानकर सिरका मे मिलाकर लेप करने से दाद मिट जाता है। याद रहे यह दवा तब करें जब दाद खाल के नीचे पहुँच गया हो नहीं तो न करे।

५२. पवाड़ के बीज एक तोला पानी मे पीसकर ३ माशा पारा मिला कर खूब खरल करे जब मल्हम सदृश बन जाय तो दाद को खुजा-कर लगाने से निश्चित ही दाद रोग मिटता है।

— घाव ठीक होने के बाद सफेद दाग रह जाय उसका उपाय —

५३. मैनशिल, मजीठ, लाख तथा दोनो हल्दी सबको बराबर महीन पीसकर घृत और मधु (चाशनी) मिलाकर दाग पर लेप करने से घाव के दाग मिटकर शरीर की त्वचा सदृश हो जाता है।

५४ मूली के बीजो को पानी मे पीसकर लगावें और धूप में बैठे। इस तरह ७ दिन तक करने से घाव का दाग मिट जाता है।

५५. आधापाव नीम के पत्तो को कूटकर एक पाव कडवे तैल मे पकावें फिर नीलाथोथा एक तोला, गधक एक तोला, फिटकडो एक तोला, हरड की छाल एक तोला, हल्दी एक तोला, इन सबको पीसकर उस तैल मे मिलालें और लोहे के मुसलिया से खूब अच्छी तरह घोटले, जब मल्हम सदृश बन जावे तो इस तैल को लगाने से दाद, गुमडी, पीलपाव ये समस्त रोग मिट जाते हैं।

५६ गूगल एक तोला, नीलाथोथा एक तोला, सिंदूर एक तोला, रसोत एक तोला, मैनशिल एक तोला इन सबको आधा पाव कडवे तेल मे एक पहर तक खूब घोटलें। इस तैल को लगाने से खाज, दाद, दाफड, विचर्चिका आदि मिटते हैं।

५७. सरसो का तैल एक तोला, कालीमिर्च नग ८-१० और कपूर इनको पीसकर लगाने से दाद-खाज मिटती है।

५८. नीम्बू के रस मे कालीमिर्च घोटकर लेप करने से दाद-खाज-खुजली मिटती है।

५९. चर्म रोग हर मल्हम-पारा, गधक, कालीमिर्च, नीलाथोथा, सिंदूर, कालाजीरा, सफेदजीरा, १-१ तोला लेकर पहले पारा और गधक, की कजली करें फिर सबका बारीक चूर्ण मिलाकर खूब खरल करें पश्चात् सबके बराबर धोये हुए घृत मे मिलाकर मल्हम बनालें। इसके लगाने से पामा, खुजली, दाद आदि रोग मिटते हैं।

६०. पारदादि मल्हम-पारद और गधक १-१ तोला, मुर्दासिगी दो तोला, कपीला ४ तोला, नीलेथोथे का फूला ३ माशा सबको खरल करके

३२ तोले धोये हुए गौ घृत में मिलाकर मल्हम बनालें। इस मल्हम को लगाने से सर्व प्रकार के दुष्ट व्रण, नासूर शुद्ध होकर भर जाते हैं।

६१. सिंदूर १२ तोला, तिल का तेल १८ तोला, मोम ६ माशा लेकर, पहले तेल को कढाई मे डालकर आग पर चढावें और मन्द-मन्द आच पर तेल गर्म होने पर थोडा-थोडा सिंदूर डालते जावे जब रग काला हो जाय तो मोम को डालदे फिर एक दो उफान आने पर उतारले। इस मल्हम से समस्त प्रकार के फोडे, फुन्सी, घाव से पीप निकालकर भरने मे अच्छा फायदा होता है।

६२ कपूर एक तोला, सफेद मोम ५ तोला, सफेदा १० तोला, तिल का तेल १० तोला लेकर, पहले तेल और मोम को गर्म करे थोडा ठन्डा होने पर सफेदा मिलावे फिर कपूर मिलाकर मल्हम बनालें। यह फोडा फुन्सी आदि मे अत्यन्त हितकारी है।

६३. **नाड़ी व्रण (नासूर)** - थूहर के दूध तथा आक के दूध मे दारु हल्दी भिगोकर घिसले और बत्ती बनाकर व्रण के मुह मे रखे। इससे नासूर तक मिट जाता है।

६४. **वर्षा ऋतु में होने वाली फुन्सियां** -मसूर की राख, आवले की भस्म, मेहदी, कपीला, भुना हुआ नीलाथोथा, का चूर्ण तेल मे मिलाकर लगाने से फायदा होता है।

६५ पुराने घी मे आक का दूध मिलाकर आग पर चढादो जब मात्र घृत रह जाय तो उतारलो, यह घृत दाद को थोडा रगडकर कई दिन लगाने से दाद मिट जाते हैं और तो क्या बिच्छि दाद का भी नाम निशान नही रहता है।

— अग्नि से जले हुए तथा अन्य उपाय —

१ अग्नि से जले हुए रोगी को अग्नि से तपाना लाभदायक होता है।

२. अगर आदि गर्म वस्तुओं का लेप करने से अग्नि से जले हुए के फायदा होता है।

३. तबाखीर, बड की जड, चन्दन, रसोत, गेरू, गिलोय इनको घृत मे महीन पीसकर लेप करने से फायदा होता है।

४. मोम, महूवा, राल, लोध, मजीठ, लालचन्दन और मूर्वा इन सबको बराबर लेकर महीन पीसकर गौघृत मे पकाकर लेप करने से अग्नि का दग्ध रोगी निरोग हो जाता है।

५. पटोल के पचाग को पानी मे औटावे, जब पानी जलकर चोथा हिस्सा रह जाय तब कडवे तेल मे मिलाकर पकावे, जब तेल मात्र रह जाय तब ठण्डा करके लगाने से जले हुए का घाव आदि मिट जाता है।

६ पुराना खाने का चूना लेकर दही के तोड़ मे मिलाकर लेप करने से जले हुए का फफोला मिट जाता है।

७. जौ को जलाकर राख बनाकर तिल के तेल में मिलाकर लेप करने से जले हुये मे फायदा होता है।

८ भुना हुआ जीरा महीन कर उसके बराबर मोम, राल और घृत मिलाकर लेप करने से जले हुए मे फायदा होता है।

९. तिल का तेल एक पाव, खाने वाला चूना पुराना एक छटाक इनको हाथ से ३ घण्टे तक खूब मसल ले, जब मल्हम सदृश बन जाय तब रूई के फोहे से तेल आदि के जले हुए पर लगाने से फायदा हो जायेगा।

१०. सफेद चन्दन, गेरू, बसलोचन, गिलोय के पत्ते इन सबको बारीक पीसकर घृत मे मिलाकर लगाने से अग्नि आदि से जला हुआ ठीक हो जाता है।

११. फिरास की छाल को जलाकर राख कर ले और जले हुए पर तेल लगाकर उस भस्म को बुरका दे तो तत्काल आराम हो जाता है।

१२ दही (मट्ठा) में बारीक नमक मिलाकर जले हुए पर लगाने से तत्काल आराम हो जाता है।

१३. चने के पानी मे नारियल का तेल खूब मथकर लगाने से जले हुए

में फायदा होता है ।

१४. सरसो का तेल लगाकर ऊपर पीसी हुई मेहन्दी बुरकाने से जले हुए मे आराम हो जाता है ।

— भगंदर रोग —

१५ पारा एक तोला, रागा एक तोला इन दोनो को खरल करके मिलावें फिर एक तोला रसकपूर मिलाकर एक पहर तक खरल करें, पश्चात् उसमे ५ तोला गाय का मक्खन मिलाकर गर्म करके लेप करने से भगदर रोग और बवासीर मिट जाता है ।

१६. शुद्धपारा ४ तोला, शुद्धगन्धक ८ तोला इन दोनो की कजली करलें, फिर खीप के रस मे ७ दिन पर्यन्त खरल करें, फिर धूप मे सुखाकर शीशी मे भरकर शीशी का मुह बन्द करके चारो ओर कपड मिट्टी लगादे, फिर एक हाथ चौडा, गहरा खड्डा खोदकर उसमे १० सेर घोडा की लीद डालकर उस शीशी को उस लीद मे अच्छी तरह दबादे इस तरह ३ महीना तक उस शीशी को उसमे रखें, फिर निकालकर ८ रत्ती प्रमाण इस औषध को तथा ४ कालीमिर्च को एक पान मे रखकर प्रातःकाल १ वर्ष तक लगातार सेवन करे तो भयकर भगदर रोग मिटता है तथा इसके सेवन से आख के भीतर का नासूर और मुह के भीतर का नासूर भी मिट जाता है ।

— हड्डी टूटने पर —

१७. लाख, गगेरन की छाल, अर्जुन वृक्ष की छाल, असगध, विजैसार इन सबको समान भाग लेकर तथा गूगल एक दवा से तिगुना लेकर सबको पीसकर घृत मे अच्छी तरह मिलालें, फिर उसकी ८ माशा प्रमाण गोलिया बनाकर १ गोली दूध के साथ खाने से अस्थि भंग, तथा टूटा हुआ हाड जुड जाय और दृढ़ हो जाता है ।

— कांच निकलना —

१८ ४ तोला अनार के छिलके को पानी में उबालले और छानकर

ठण्डा होने पर उससे सिचा (आबदस्त) लेवें, इससे कांच निकलना रोग मिट जाता है ।

१९ गुलनार, मांजू और अनार का छिलका समान भाग लेकर चूर्ण महीन बनालें, जब काच बाहर निकले तब उस पर इसमें से थोडा चूर्ण छिड़क दे और लगोट बान्ध ले, इससे कांच रोग मिट जाता है ।

२० आरणा छाणा या खेजडी के छोडों की राख कपडछान करके प्रतिदिन हाथों को २-४ दफा धोने से हाथो की चमड़ी खराब होना व फाटना मिटता है ।

२१ पांव मे जूता लग जाने से छाला (फफोला) हो जाने पर बास को घिसकर लगाने से फायदा होता है ।

— हाथ पांवो की ब्याऊ फटने पर —

२२ राई १॥ तोला, कत्था १॥ तोला, कालीमिर्च १॥ तोला, गाय का घृत तथा चमेली का तेल ६ तोला इन सबको महीन पीसकर लोहे के बर्तन मे मल्हम बनावे । इसे ब्याऊ पर लगाने से, मर्दन करने से फायदा होता है ।

२३ मोम, सेंधानमक, गूगल, गेरू, घृत, मिश्री और खस की मल्हम बनाकर लगाने से ब्याऊ रोग मिटता है ।

२४ धतूरे के बीज और जवाखार को सरसों के तेल में पकाकर मर्दन करने से ब्याऊ रोग मिट जाता है ।

२५ कमलिनी के कोमल पत्तो को सुखाकर चूर्ण बनाले, उसमे मिश्री मिलाकर ६ माशा प्रतिदिन खाने से काच निकलना बन्द हो जाता है ।

२६. पुराने गुड़ को गर्म करके लगाने से ब्याऊ रोग मिटता है ।

२७. इलायची के दाने ६ माशा, मुरदासिंगी ६ माशा दोनों को पीसकर गोघृत में पकाकर लगावें, इससे ब्याऊ मिटती है ।

२८ गाय का घृत ८ तोला को तपाकर उसमें ४ तोला मोम मिलाले, फिर उसमें मुरदासिंगी २ तोला, राल २ तोला, मस्तगी २ तोला पीसकर मिलाले, फिर ठन्डे पानी से ५ बार धोवे और उसमे सिंदूर २ तोला, नीलाथोथा १॥ तोला पीसकर मिलादें बस मल्हम तैयार हो गया। सभी प्रकार के व्रणो पर तथा ब्याऊ आदि रोगो पर ७ या १४ दिन लगाने से रोग मिट जाते हैं, मल्हम लगाकर कपडे की चिंधी लगानी चाहिये।

२९. मोम को दीपक की लौ से गर्म करके ब्याऊ मे भरने से ब्याऊ रोग मिटता है।

३०. मोम, घृत और नमक इन तीनो को किसी पात्र मे गर्म करके ब्याऊ मे लगाने से आराम मिलता है।

— पांव की एड़ी का दर्द —

३१ आमाहल्दी और इमली की पत्ती पीसकर गर्म करके लेप करने से चोट का व एड़ी का दर्द मिट जाता है।

३२ पुरानी मिट्टी के दीपक को कन्डे की आग पर औंधा रखकर उसपर एडी रखना चाहिये, अथवा ईन्ट या पत्थर को गर्म करके सेक करने से एडी की पुरानी पीडा भी मिट जाती है।

— नख टूटने पर —

३३. लोहे के बर्तन मे हरताल को खरल करके उसके बराबर सरेस लेकर भेंस के मक्खन मे आग पर मल्हम बनाकर लगाने से फटा हुआ नख ठीक हो जाता है।

३४. अनार को पत्ती और आमाहल्दी पीसकर बान्धने से टूटा हुआ नख ठीक हो जाता है।

— गुप्तेन्द्रिय रोग —

३५ यदि पुरुष के गुप्तेन्द्रिय पर रस्सी (मवाद) आवे तो - कहुवा की बकल, कदंब की बकल, तीडू की अन्तरछाल इनका काढ़ा करके

धोने से रोग मिट जाय ।

३६ यदि इन्द्रिय पर फुन्सियें होकर पक जाय तो – ठन्डे पानी से धोया घृत लेप करने से रोग तथा दाह मिटती है ।

— गांठ के लिए लेप —

३७ कालीमिर्च, पोहकरमूल, कूट, हल्दी और सेधानमक इन्हे पीसकर लेप करने से सब प्रकार की गाठ मिटती है ।

३८. कांखोलाई के लिए - देवदारु, मेनशिल, कूट इन्हे पानी मे पीसकर गर्म करके लेप करने से फायदा हो जाता है ।

अदीठ फोड़ा, विषाली, कीड़ानाल नहरुआ आदि

— अदीठ —

१ रामचना की जड एक तोला, सहेजना का गोद एक तोला, कीकर का गोद एक तोला, छीपीगोद एक तोला, मुरदा की हड्डी एक तोला, पुराना लोह सिघान एक तोला, पुरानी चूडी एक तोला, रीछ का गरेडा एक तोला इन सबको कूट छानकर फिर ३ तोला गोमूत्र मे पीसकर गर्म करके ३ बार लेप करने से अदीठ (पीठ का फोडा) निश्चय मिट जाता है ।

२. एक मिट्टी का शेर (सिह) विकराल आकृतिवाला लेकर उसके दोनो बाजू में नक्शे वाला यन्त्र केशर से बनाले फिर अदीठ फोडे के सामने रखकर णमोकार मन्त्र का १०८ बार जाप करे, इस तरह ८ दिन करने से अदीठ रोग मिट जाता है । क्योकि अदीठ हाथी का रूप है, वह सिह से भाग जाता है ।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

३. कत्थे के पत्तों, बांसा के पत्ते, इनको एक हांडी में डालकर आधा पाव पानी मे औटावें, जब पानी जल जाय तो पहले बफारा देवें, फिर उन पत्तो को अदीठ पर बान्धने से अदीठ (फोड़ा) मिट जाता है।

— बिषाली रोग —

४. मेदा लकड़ो एक तोला, आमाहल्दी एक तोला, खुरासानी अजवाइन एक तोला, इनको पीसकर ३ तोला गुड मे मिलाकर गर्म करके विषकटा की अगुली पर लगाने से विषकटा मिटती है तथा जलन भी मिटती है।

५. दो तोला नीम के पत्तो को बकरी के दूध मे पीसले, फिर उसमे मेदालकड़ी २ तोला, खारी नमक २ तोला मिलाले, खूब पीसकर पकाले, इसे ३ दिन तक विषकटा की अगुली पर लगाने से रोग मिट जाता है।

६ बिषाली की अगुली पर प्रारम्भ से ही एक शीशी मे गाय का घृत भरकर उसमे अगुली रखे इस तरह उस घृत मे अगुली रहने से विषाली रोग मिट जाता है।

— कोड़ीमाल निकलना —

७. नौसादर एक तोला, सोमल्ल (सखिया) एक तोला, नीलाथोथा एक तौला, चूना एक तोला, तिल्लो का खार एक तोला, बाजरा की राख एक तोला, जुवार की राख एक तोला, कोडी भस्म एक तोला, लोट की साजी एक तोला इन सबको पानी मे पीसकर पैर में निकलते हुए कोडीनाल की जगह लेप करने से कोडिया निकल आती हैं तथा विषकटा रोग भी मिट जाता है।

— नहरूआ (बाला) रोग —

८ भांग एक पाव, वच एक तोला, सिंदूर एक तोला तथा भिलावा नग ५ ऐसे लेना तहाँ पहले भिलावो की टोपी दूर करके उन्हे तेल

मे पकालें, जब भिलावा पककर उनका पेट फूल जाय तब उनको नीच उतार कर पहले लिखी औषधियों को मिलाकर घोटलें, फिर आक का पत्ता लेकर उस पर दवा को लगाकर "बाला" नहरुआ के ऊपर ४ पहर तक बान्धे रखे। इस तरह ३ दिन करने से बाला रोग मिट जाता है।

९. ४ माशा हींग को १ पाव गाय के दही मे मिलाकर जाड़े (ठन्ड) के दिनो मे जिस व्यक्ति के बाला निकलता हो वह व्यक्ति ११ दिन तक सेवन करे तो उसका बाला भीतर ही भस्म हो जाता है तथा फिर कभी बाला नही निकलता है।

१०. तिल के तेल मे चूना (कली) को खूब घोटलें और अनुमान माफिक आक के पीले पत्ते पर उस मल्हम को लगाकर "बाला" के मुह पर बान्ध ले, ऊपर १०-५ आक के हरे पत्ते बान्ध लें तथा पट्टी बान्ध ले। इसे ३ दिन पीछे खोले तो बाला रोग मिट जाता है।

११. बेरजा, सोनागेरू को कपडछान करके १॥-१॥ रत्ती की ६ खुराक बनाकर एक-एक प्रतिदिन ठन्डे पानी से लेवें तो बाला का रोग जड से मिट जाता है।

१२. १। सेर उडद को उल्टी चाकी से पीसकर फिर उस आटे को गूदकर उसकी टोपी सी बनाले, पश्चात् शिर के बाल मुडवाकर रोगी के शिर पर उस टोपी को १२ घण्टे तक रखें और णमोकार मन्त्र का जाप करे तो सम्पूर्ण शरीर मे निकला हुआ बाला तत्काल चला जायेगा एव उसके शरीर मे कभी भी और कही भी बाला रोग नही होगा। ऐसी यह तन्त्र विद्या है।

१३. गाय का घृत २० तोला ३ दिन प्रतिदिन पीने से नहरुआ रोग मिटता है।

१४. एरड की जड़ का रस १ तोला, गाय का घृत २ तोला ७ दिन तक लगातार पीने से भी बाला रोग मिटता है।

सर्प, बिच्छू तथा हिड़क्या (पागल) कुत्ता के काटने पर

१. घृत, मिश्री की चासनी, मक्खन, पीपल, कालीमिर्च, सेंघानमक । इन सबको महीन पीसकर पीने से काले सर्प का भी जहर उतर जाता है ।

२ सहेजना के बीजो के सिरस के फूलो के रस को ७ पुट देवें, फिर उसका अजन करें तो सर्प का जहर उतर जाता है ।

३. सफेद साटी की जड को पुष्यनक्षत्र मे उखाडकर लावें, फिर उसको चावलो के पानी मे पीसकर पीने से सर्प का काटा हुआ अच्छा हो जाय ।

४ राई व नोसादर को पीसकर घर मे डालने से सर्प भाग जाता है ।

५. अरड की कोपल ७ माशा से एक तोला तक पानी मे पीसलो और छानकर पिलावे, फिर उसकी लुगदी को दश स्थान पर लेप करदे, इससे वमन होकर या दस्त लगकर सर्प का जहर नष्ट हो जाता है ।

६. शुद्ध जमालगोटे की मीगियो को २१ दिन तक नीम्बू के रस की भावना देवे फिर उनको महीन घोटकर गोलिया बनाले । इस गोली को मनुष्य की लार मे घिसकर नेत्रो मे लगाने से सर्प का विष उतर जाता है ।

७. जिस व्यक्ति को सर्प ने काटा हो उसके दोनों कानो मे पीपल के हरे पत्ते डन्ठल सहित कान के पडदे तक पहुचादो जब तक जहर न उतर जाय तब तक कान मे ही रखे तथा णमोकार मत्र का जाप करते रहे, जब रोगी चिल्लाने जग जाय तब उन पत्तो को निकाललो, रोगी का जहर निश्चित ही उतर जायेगा, उसके बाद रोगी को घृत और कालीमिर्च पिलावो, याद रहे ८ घण्टे तक रोगी नीन्द न लेने पावे । नोट -ठण्डल को पकड़े रहे, जहर से खिचकर कान के भीतर जा सकते हैं ।

— बिच्छू का जहर —

८ दियासलाई (माचिस) की ५-७ काडी (तूली) का रोगन उतारकर पानी मे घिसकर डक पर लगाने से तत्काल ही बिच्छू का जहर उतर जाता है।

६. जमालगोटे को पानी मे घिसकर लगाने से, अथवा नोसादर और हरताल को पानी में घिसकर बिच्छू के डक पर लगाने से जहर उतर जाता है।

१० पलास पापडा को आक के दूध मे घिसकर डक पर लगाने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

११. सिरस के बीजो को बकरी के दूध मे पीसकर डक पर लगाने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

१२ बिच्छू के जहर को उतारने के लिए ॐ फू ॐ फू बोलकर २१ बार झाडने से जहर उतर जाता है।

१३. नीलाथोथा को नीम्बू के रस में घिसकर लगाने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

१४ नोसादर और हरताल को पानी मे पीसकर लगाने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

— पागल कुत्ता काटने पर —

१५ जिस जगह पागल कुत्ता डक मारे उसी जगह-पर लोह का डाम देवे तो जहर मिट जाता है।

१६ धतूरे का रस, आक के पत्तो का दूध, गुड, घृत इन सबको १।।-१।। तोला पीसकर लेप करने से पागल कुत्ते का जहर उतर जाता है।

१७ धतूरे के फूल तथा बीजो को चौलाई के रस मे पीसकर लेप करने से श्वान जहर उतरता है।

१८ कूकड़ा (मुर्गा) की बीम्ट को पानी मे पीसकर लेप करने से पागल कुत्ता का जहर नाश होता है।

१९. गवारपाठा की गिरी और सैंधानमक को बान्धने से बावला कुत्ता का काटा हुआ अच्छा होता है।

२०. गुड़, तेल, आक का दूध पीसकर लेप करने से श्वान विष उतरता है।

२१. कडवी तुम्बी की जड, हिंगलु, शुद्ध किया जमालगोटा, कालीमिर्च, फुलाया सोहागा इन सबको बराबर लेकर चौलाई के रस मे पीसकर दो रत्ती की गोलिया बनाले। ७ दिन तक एक-एक गोली गर्म पानी से लेने से श्वान विष मिटता है।

२२. १ तोला चोख को पीसकर दही मे मिलाकर पीने से दस्त और वमन होकर बावले कुत्ते के काटने का जहर दूर हो जाता है, याद रहे कुत्ते के काटे हुए का जहर दूर करने के लिए इस दवा को ५ दिन के अन्दर-अन्दर दिलानी चाहिये, अन्यथा फिर कोई उपाय नही है।

२३. गुवार पाठा के रस और सेधानमक को तीन दिन तक गर्म जल से पीने से बावले कुत्ते का जहर उतर जाता है।

२४. गुड, तैल और आक के दूध को पीसकर दष्टस्थान पर लेप करने से कुत्ते का विष उतर जाता है।

२५ कडवे घीये का गूदा, मालवोगुड, हिंगलु, जमालगोटा की मिंगी, कालीमिर्च और सोहागा इन सबको बराबर लेकर गोलिया बनाले और गर्म जल के साथ एक गोली खावे, इससे श्वान विष उतर जाता है।

— बर्र-ततैया के जहर पर —

२६. गेंदे के पत्ते एक तोला और कालीमिर्च नग ५ को पानी मे पीसकर लेप करने से ततैया का जहर उतर जाता है।

— शिर की जूं या लीक —

२७. धतूरे के पत्तो का रस या नागर बेल के पत्तों के रस मे पारा मिलाकर बालो पर लेप करने से जूं और लीक रहे भी नही

और न उत्पन्न होती है ।

— खटमल और मच्छर भगाने के लिए —

२८ कहवा का फूल, वायविडंग, कटारी की जड, मटर, चन्दन, राल, खस, कूट, भिलावा, लोबान इन सबको बराबर लेकर धूणी देने से मच्छर और खटमल भाग जाते हैं ।

२९ मकान के दरवाजे पर घोडे के बाल लटकावें । अथवा भूसी, गूगल, गन्धक और बारहसिंगा के सींग की धूनी देने से मच्छर, डास, खटमल सब भाग जाते है ।

— मनुष्यो की भीड भगाने के लिए —

३० गधक तथा लहसुन को जलाये तो सारी भीड़ भाग जाती है ।

— चींटिया भगाने का उपाय —

३१ चीटी काहू चीज मे, लिपटी बहुत ही जाय ।
मुरकत पीसे कपूर को, तुरत भागि सब जाय ।।

— चूहे-भगाने का उपाय —

३२ मूस पकड रग दीजिये, गाढी नील सू एक ।
वा को घर में छोडिये, चूहों रहे ना एक ।।

— टाटिया और मधुमक्खियो का जहर उतारने का उपाय —

३३. किरोसनी (मिट्टी) का तेल डालकर ऊपर बारीक नमक रगडने से टाटिया तथा मधुमक्खियो का जहर तत्काल ही उतर जाता है ।

— भिलावा आदि के चढ़ने पर उपाय —

३४. १०० बार धोया घृत का लेप करने से भिलावा का जहर उतर जाता है ।

३५. हल्दी, तिल, दोब इनको पीसकर लेप करने से आक का विष भी उतर जाता है ।

३६. घृत का लेप करने से कोछ का विष उतर जाता है । घृत का लेप करने से प्राय. सभी विष उतरते हैं ।

३७. धतूरा का विष उतारने के लिए - कपास के पचाग को पीसकर पीने से फायदा होता है ।

३८. मकड़ी फिरने पर -नीम्बू के रस मे चूना पीसकर लगावें । अथवा अमचूर पीसकर लगावें ।

३९. बन्दर के काटने पर:-प्याज पीसकर लेप करने से फायदा होता है ।

४०. बिल्ली के काटने पर -काले तिल और कलोंजी को पीसकर लेप करने से लाभ होता है ।

४१. मकड़ी के विष की चिकित्सा - सफेद दूब और हल्दी पीसकर लेप करें ।

४२ मूषक विष - सिरस के बीज, नीम के पत्ते, करज की मीगी, गोमूत्र में पीसकर लेप करे ।

४३. जोक के घाव पर:- प्याज और लहसुन पीसकर लगावें ।

४४. सर्प विष नाशक -आक की तीन कोपलें गुड में लपेटकर खिलावें और उसके ऊपर घृत पिलावें ।

४५. जामुन का २।। पत्ता पानी में पीसकर पीने से सर्प का विष उतरता है ।

४६ समुद्र फल को महीन पीसकर आखो मे आजने से सर्प का विष उतरता है ।

४७. आक का दूध काटे हुए स्थान पर मलने से बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

४८. छिपकली का विषनाश करने के लिए - घी या तेल मे राख मिलाकर मलने से फायदा होता है । बिच्छू के काटे हुए स्थान पर आक का दूध मलने से जहर उतर जाता है ।

– स्त्री-चिकित्सा –

— प्रदर-रोग —

१. दही, सचर नमक, जीरा, मुलेठी, कमलगट्टा इनके काढ़े मे मिश्री डालकर पीवे से वात का प्रदर रोग मिटता है ।

२. मुलैठी, कमलगट्टा और मिश्री इनको पीसकर चावलों के पानी से लेने से पित्त का प्रदर रोग मिटता है।

३. १० माशा रसोत, १० माशा चौलाई की जड़ का रस, मिश्री डालकर ७ दिन तक पीने से सर्व प्रकार का प्रदर रोग मिटता है।

४. डाब की जड़ को पीसकर चावलो के पानी से ३ दिन लेने से प्रदर रोग मिट जाता है।

५ दारुहल्दी, रसोत, चिरायता, अडूसा, नागरमोथा, लालचन्दन, आक का फूल इन सबके काढे मे मिश्री डालकर पीने से सर्व प्रकार का लाल-सफेद व पीला समस्त प्रदर रोग मिट जाता है।

६ गूलर के फूलो को सुखाकर पीसकर उसमें मिश्री की चासनी मिलाकर फिर ३-४ माशा प्रमाण गोलिया बनालें और ७ दिन लेने से प्रदर रोग मिट जाता है।

७ एक तोला नागकेशर को पीसकर गाय की छाछ मे ७ दिन पीने से श्वेत प्रदर मिट जाता है।

८. मूसा (चूहा) की मिगनी ८ माशा और मिश्री ८ माशा कूट छानकर दूध के साथ ३ दिन पीने से स्त्रियो के सर्व प्रकार का रक्त-सफेद प्रदर मिट जाता है।

९ चूहा की मिगनी पीसकर गाय या बकरी के दूध के साथ जठराग्नि विचार करके एक-दो दिन पीने से स्त्रियो का भयकर प्रदर (पैर छूटना) शीघ्र ही बन्द हो जाता है।

१०. १० माशा लाख को पीसकर १ पाव दूध के साथ ३ दिन लेने से प्रदर रोग एव रक्त पित्त दूर हो जाता है।

११. मुल्तानी माटी आधा पाव, चना भूना आधा पाव इन दोनो को कूट छानकर रखलो, प्रतिदिन दोनो समय एक-एक तोला की फाकी ठन्डे पानी से लेने से प्रदर रोग मिट जाता है। ऊपर दूध पीना चाहिये।

१२. ढाक के पत्तो की राख, भिर के छत्ता की राख मिलाकर, मात्रा

३ माशा की फाकी ठन्डे पानी से लेने से प्रदर रोग मिट जाता है। ऊपर दूध पीना चाहिये।

१३. चावलों को भिगोकर फिर मथकर उस पानी को पीने से प्रदर रोग मिटता है। इस रोग मे बकरी का दूध गुणकारी होता है।

१४ असगन्ध, पठानीलोद और इमली के बीज इन तीनो को बराबर लेकर सबके बराबर मिश्री मिलाले और कूट छानकर चूर्ण बनालें। मात्रा ६ माशा से एक तोला तक ऊपर दूध पीवें। इससे चौथे दिन प्रदर-प्रमेह व अल्पस्राव होने का रोग भी मिट जाता है।

१५ इमली के पुराने बीजो को कुछ देर पानी में भिगोकर रखें, फिर उन्हे छोलकर दुबारा भिगोवें और कूट छानकर चूर्ण करलें, फिर इसमे बकायन की गिरी और सफेद चन्दन का चूरा प्रत्येक इसके बराबर तथा सबके बराबर मिश्री मिलाकर रखे। मात्रा ६ माशा सुबह पानी के साथ लेने से प्रदर रोग मिट जाता है।

१६ धाय के फूल, सुपारी के फूल, मोचरस, कीकर का गोद, और मोलसिरी का गोद एक एक तोला तथा मिश्री ५ तोला लेकर सबको कूट छानलें और चूर्ण बनाले। मात्रा ६ माशा सुबह-शाम पानी के साथ लेने से प्रदर रोग मिट जाता है।

— रुका हुआ मासिक धर्म खुलने के लिए —

१७. रेंवतचीनी, कलमीशोरा, जवाखार, सफेद जीरा एक-एक तोला और शक्कर ४ तोला को कूट छानकर चूर्ण बनाले। मात्रा ७ माशा इसके सेवन से रुका हुआ मासिक धर्म खुल जाता है।

१८. सोफ ३ माशा और हाउबेर ३ को पानी में पकाकर छानलें; फिर उसमे दो तोला शर्बत बजरी मिलाकर पीने से मासिक धर्म खुलकर होने लगता है। यदि बच्चा उत्पन्न होने के पश्चात् खून अन्दर रुक गया हो तो वह भी इससे निकल जाता है।

१९. सोफ और पित्त पापड़ा एक एक तोला को आधा सेर पानी मे

औटावें जब १ पाव पानी रह जाय तो छानकर उसमे ४ तोला गुड़ या बाजूरी शर्बत मिलाकर पीवे। इससे मासिक धर्म खुलकर होगा, यदि बच्चा होने के बाद गन्दा खून रुक गया हो तो वह भी निकलकर साफ हो जाता है।

२०. एलवा २ माशा, हीराकसीस और केशर एक-एक माशा, तीनो को पानी मे घोटकर ३ गोलिया बनाले, फिर एक दिन में ३ बार खायें इस प्रकार ४-५ दिन तक सेवन करें, यदि गर्मी मालूम देवे तो छाछ पीवें। इससे रुका हुआ मासिक धर्म खुल जाता है।

२१. मुरमुकी और हाऊवैर ६-६ माशा को पानी मे पकाकर छानले उसमे ४ तोला शर्बत बाजूरी मिलाकर पीवें। इससे कैसा ही रुका हुआ मासिक धर्म हो परन्तु वह भी अवश्य खुल जाता है।

२२. माला कागणी, राई, विजयसार और वच इनको महीन पीसकर ५ दिन तक ठन्डे पानी से लेने से स्त्री-धर्म होय तथा बान्झपण मिटे।

२३ तिल खाने से अथवा उड़द खाने से, तथा दही खाने से स्त्री धर्म हो जाता है।

— गर्भ धारण करना —

२४ खरेटी, गगेरण की छाल, महूवा, बड की कोपल, नागकेशर, इन सबको सम भाग लेकर महीन कूट छानकर गाय के दूध मे मिश्री मिलाकर उसके साथ १५ दिन प्रतिदिन लेने से गर्भ धारण होय तथा बान्झपना मिट जाय व पुत्र उत्पन्न होता है।

२५. ऋतु के समय मे असगन्ध का काढा बनाकर गाय का घृत मिलाकर और दूध से ५ दिन तक लेवें तो स्त्री गर्भ धारण करे।

२६ ऋतु समय मे पुष्यनक्षत्र मे उपाडी हुई सफेद कटाली की जड को पीसकर ८ माशा मात्रा मे दूध के साथ ३ दिन पीवें तो निश्चय स्त्री गर्भ धारे।

२७ इरन्ड की इन्डोलो तथा बिजोरा के बीज को घृत में पीसकर दूध के साथ स्त्री ऋतु समय मे ३ दिन पीवे तो गर्भ धारण करले ।

२८ **गर्भ स्थापनार्थः**-बिनोले के बीजो की मिंजो ६ माशा और असगन्ध १ माशा को लेकर ऋतु स्नानोत्तर प्रात ही गौघृत के साथ पीने से गर्भ स्थिति हो जाती है । इस प्रयोग के १ महीने तक करने से अनेक स्त्रिया फायदा उठा चुकी हैं, प्राय दो तीन महीने तक दिया जाना चाहिये, प्रतिदिन एक मात्रा ।

२९. सफेद कटहेली की जड को पुष्यनक्षत्र के दिन उखाडलावे, फिर कन्या के हाथ से पिलवाये, तथा बच्छडा वाली गाय १ रग की हो उस के दूध मे ऋतु समय मे चौथे दिन सेवन करने से अवश्य ही बन्ध्या स्त्री के भी गर्भ रहे ।

३०. जिस स्त्री के मात्र कन्या ही कन्या होती है वह यदि ऋतु समय मे ढाक के १ पत्ते को दूध मे पीसकर पीवे तो उसके नियम से पराक्रम वाला पुत्र उत्पन्न होगा ।

३१ पीपल, नागकेशर, सोठ, कालीमिर्च इन सबको घृत मे पीसकर गाय के दूध मे पीने से बन्ध्या स्त्री के भी गर्भ धारण करने की स्थिति होकर पुत्र उत्पन्न होता है ।

३२ जिस स्त्री के एक बार बच्चा होकर फिर न होवे उसके लिए पुष्य नक्षत्र के दिन रविवार हो उस दिन असगध की जड को उखाड लावे फिर भेस के दूध मे दो तोला पीसकर पीवे इस प्रकार ७ दिन तक करने से काक बन्ध्या स्त्री के भी फिर गर्भ रहे ।

३३ पुत्रवती स्त्री का पहना हुआ वस्त्र, माला आदि को ि।रण करने से तथा उस स्त्री के स्नान का पानी पीने े, व उससे स्नान करने से भी बन्ध्या स्त्री के गर्भ की स्थिति हा जाती है ।

३४ जिन माताओ के केवल लडकिया होती है लडका नही होता है उन्हे नीचे मुजब दवा करनी चाहिये । मोरपख का चन्दोवा लेकर उसके चारो ओर के किनारे के सर्व बाल काटदे केवल चन्दोवा रखे,

फिर उसे बारीक पीसकर पुराने गुड मे मिलाकर गोली बनालें। चाहे तो ऊपर चान्दी का वर्क लगालें, फिर गर्भ से १।।। महीने से २। महीने के भीतर रविवार या मगलवार को काली गाय बछड़े वाली के दूध के साथ निगलादें, उस दिन केवल दूध ही पीवे और कुछ न खावें पीवें। इससे उसके पुत्र उत्पन्न होगा।

३५ असगन्ध का काढा मदी-मदी आच पर पकाकर ऋतुमती स्त्री पीवे तो जिसके आज तक सन्तान न हुई हो उसके भी हो जावे।

३६ नागकेशर का चूर्ण २-३ माशा बछड़े वाली गाय के दूध के साथ लेने से सन्तान होती है।

३७ बिजोरे नीम्बू के बीज बछड़े वाली गाय के दूध के साथ चोथे दिन पीने से सन्तान होती है।

३८ पीपल, सोठ, कालीमिर्च और केशर इनके चूर्ण को घृत के साथ सेवन करने से बन्ध्या स्त्री भी गर्भ धारण करती है।

पिप्पली शृ गवेरश्च, मरिच केशर तथा,
घृतेनसह पातव्य, बन्ध्यापि लभते सुतम् ।।

३९ नागकेशर और बिजौरा की जड के चूर्ण को दूध के साथ लेने से गर्भ धारण होता है।

— प्रसव के समय —

४० सर्प की काचलो तथा मरवा इन दोनों की गुप्त स्थान मे धूणी देवे तो तत्काल ही प्रसव होय।

४१ कलहारी की जड को स्त्री के हाथ-पावो के बाधने से तत्काल प्रसव हो जाता है।

४२. पोई की जड के काढा मे तिल का तैल मिलाकर गुप्त स्थान पर लेप करने से शान्ति के साथ तत्काल प्रसव होता है।

४३. पीपल, बच को पानी मे पीसकर गुप्त स्थान पर लेप करने से प्रसव हो जाता है।

४४. इस यन्त्र को लिखकर स्त्री को दिखाने से तत्काल प्रसव होता है।

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

४५ इस मन्त्र को ७ बार जपकर पानी पीलाने से स्त्री के तत्काल प्रसव होता है,

मुक्ता पाशा विमुक्ताश्च, मुक्ता सूर्येण रश्मय. ।
मुक्त सर्व भयाद् गर्भो, गृहिमा चिरमाचर ॥

४६. नीम्बोली और अरन्ड के बीजो को महीन पीसकर नीम के पत्तो के रस मे गोली बनाकर योनि के अन्दर रखने से योनिशूल तत्काल मिट जाती है।

४७ प्रसव के समय बालक होने मे विलम्ब होता हो तो- साप की काचली और मैनफल की धूणी गुप्त स्थान पर देने से तुरन्त प्रसव हो जाता है।

४८ पीपल और बच को अरडी के तेल मे पीसकर नाभि पर लेप करने से अनेक पीडा वाली स्त्री भी शान्ति से बालक उत्पन्न करती है।

४६ स्त्री के स्तनो पर पीडा या सूजन आनेपर हल्दी और धतूरे के पत्तो को पीसकर कल्क बनाकर लेप करने से स्तनो की पीडा मिट जाती है।

ॐ ऐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रैं ह्रौ ह्र

५०. यदि स्त्री के बालक उलटा आ रहा हो तो निम्न मत्र बनाकर भोजपत्र पर लिखे और उस स्त्री को दिखावे तथा उसकी शय्या के नीचे रखे तो शान्ति से बच्चा उत्पन्न हो जाता है।

८	३	४
१	५	६
६	७	२

५१. यदि स्त्री के अपरा (जेर) नहीं पडी हो तो - कडवी तुम्बी की गिरी, साप की कांचली, हीग, सिरसम, इनको पीसकर कडवे तैल मे मिलाकर फिर गुप्त स्थान पर धूणी देने से तत्काल जेर पड़ जाती है।

५२. प्रसूता स्त्री के गुप्त स्थान में यदि घाव हो जावे तो -तुम्बी के पत्ते और लोद इनको समभाग लेकर पानी में पीसकर गुप्त स्थान पर लेप करने से फायदा हो जाता है।

५३. यदि स्त्री के बच्चा होने में देर हो रही हो और अधिक कष्ट पा रही हो तो - उसकी जघा पर चिरचिटे की जड़ को बान्धदें, तुरन्त प्रसव हो जायेगा।

— स्तन-पीडा व अन्य रोगों का उपाय —

५४. भोजन के बाद १ माशा जोरे का चूर्ण खाने से स्त्री के स्तनो में दूध बढ जाता है।

५५ उन्नाव के ५ दाने, और शर्बत बजूरी ४ तोला को पानी मे डालकर एक हल्कासा उबाल देकर छानकर पीने से प्रसूती स्त्री का बुखार उतर जाता है।

५६. दालचोनी २ माशा और चीणी ४ माशा का चूर्ण को फाकी पानी से लेकर ऊपर दो घण्टा पानी नही पीने से प्रसूता स्त्री का मलेरिया बुखार भी उतर जाता है।

५७ गर्भवती स्त्री का ज्वर मिटाने के लिए - लालचन्दन २ माशा, खसखस २ माशा, मुलैठी २ माशा, धणिया २ माशा, मुनक्का नग ५ और मिश्री २ ताला इनका काढा करके पीने से ज्वर मिट जाता है।

५८ पीपल, पीपलामूल, सोठ, नागरमोथा, नेत्रवाला, धणिया और मजीठ इन सबको दूध मे पीसकर कल्क बनाकर पीने से तथा ऊपर दूध पीने से स्त्री के स्तनो का दूध बढ जाता है।

५९ जिस स्त्री के मसान का रोग होकर बच्चा मर जाता हो :- उसको कृत्तिका नक्षत्र के दिन पूर्व के तरफ मुह करके बाझकंकोड़ी को उखाड लाना चाहिये, फिर उसकी जड़ १० माशा प्रमाण प्रतिदिन पानी मे पीसकर पीने से स्त्री का मसान रोग मिट जाता है।

६०. गर्भवती स्त्री के मूत्र न लगता हो तो - खीरा के बीज, नेत्र वाला, पीपल, पाषाण भेद इन सबको पीसकर मिश्री मिलाकर चावलों

के धोवन के पानी के साथ पीना चाहिये। इससे गर्भवती स्त्रियो का मूत्र बन्ध रोग मिट जाता है।

६१ **स्त्रियो के स्तनो पर पीडा या सूजन होने पर** - हल्दी को पीसकर गुवार पाठा को चीरकर उस पर हल्दी लगादे और गर्म करके स्तनो पर सेक करे तथा ऊपर बान्धने से स्तन पीडा तथा थानेला रोग मिटता है।

६२. चावलो के धोवण मे जायफल घिसकर फिर उसमे नीम्बू का रस और मिश्री मिलाकर पोने से गभवती स्त्री का जीव मचलना तथा वमन होना मिट जाता है। यह अति उत्तम प्रयोग हानिकारक नही है अत जब जरूरत हो तब ही प्रयोग किया जा सकता है।

६३ इन्द्रायण की जड को पीसकर लेप करने से, अथवा हल्दी व धतूरा के पत्तो को पीसकर लेप करने से स्त्रिया की स्तन पीडा मिट जाती है।

६४. कमलगट्टा की मीजी का चूर्ण ६ माशा शक्कर सहित दूध मे स्त्रिया सेवन करें तो गर्भस्थापक, श्वेत प्रदर नाशक होता है, इससे स्तनो की दृढता भी होती है।

६५ यदि स्त्री के मृत बालक हो तो उसे बास व ताम्बे के पैसे औटाकर पिलावे, अन्न न दे।

६६ **गर्भस्राव व गर्भपात हो तो** - खरेटी की जड को कन्या के काते हुए सूत मे बान्धकर कमर मे लपेटे।

६७ **स्त्रियो की योनि के खुजली हो तो** :- गिलोय, हरड, आवला, जमालगोटा के क्वाथ से धोने से फायदा होता है।

६८. **स्त्रियो की योनि मे दुर्गन्ध होने पर** - नीम के पत्ते, अडूसा के पत्ते, पटोल पत्र इनके क्वाथ से धोवे तो लाभदायक है।

६९ **स्त्रियो के प्रसव मे विलम्ब हो तो** :-अमलतास के छिलके १॥ तोला को पाव भर पानी मे औटाकर पीने को दे।

७० चुम्बक पत्थर को कपडे मे लपेटकर गर्भवती के रान पर बान्धने से

तत्काल प्रसव हो जाता है ।

७१ **रक्त प्रदर के लिए** - आम की गुठली को आग मे भूनकर खाने से फायदा हो जाता है ।

७२. रसोत और लाख का चूर्ण ६ माशा की मात्रा मे दूध से पीने से रक्तप्रदर मिट जाता है ।

७३ **श्वेत प्रदर** - नागकेशर ६ माशा को छाछ के साथ पीने से फायदा होता है ।

७४ चौलाई की जड को चावलो के धोवन के साथ लेने से सर्व प्रकार का प्रदर रोग मिटता है ।

७५ चिकनी सुपारी का चूर्ण दो तोला घृत व मिश्री से लेने से भी सर्व प्रकार का प्रदर रोग मिटता है ।

७६. ककडी के बीजो की मीगी १ तोला, सफेद कमल की पाखडिया एक तोला, जीरा ३ माशा इनका चूर्ण मिश्री मिलाकर पानी से पीवे । इससे श्वेत प्रदर रोग मिट जाता है ।

७७ केले के मिश्री लगाकर खाने से सोम रोग (हर समय योनि से स्त्राव होना) मिट जाता है ।

७८ **स्त्रियो के स्तनों मे दूध बढ़ाने क लिए** - गाय के दूध मे शतावरी का चूर्ण ६ माशा व मिश्री मिलाकर पिलावे ।

७९ गेहूँ का दलिया दूध मे बनाकर खिलाने से स्तन दूध बढ जाता है ।

८० **स्तनो पर फोडा होने पर** -नागरमोथा और दानामेथी दूध मे पीसकर लगावे ।

८१ **स्तनो की पीड़ा हेतु** -रूपीमस्तगी और फिटकडी पानी मे पीसकर स्तनो पर लगाने से फायदा होता है ।

— आरोग्य सम्बन्धी दोहे —

१ दूध बियारी जो करे, नित उठ हरड खाय ।
माटी दान्तुन जो करे, ता घर वैद्य ना आय ।।

२. हरडा बहेडा आवला, चौथी डाल गिलोय।
पचम जीरा डाल के, निर्मल काया होय ।।

३. दोनो बैर जो चले-फिरे, तीन काल जो खाय।
सदा स्वास्थ्य सुन्दर रहे, जो प्रातही उठ न्हाय ।।

४ आखिन त्रिफला, दान्तन नौन, पेट के भरिये तीनिय कौन।
शीत बचाय सदा जो सोवे, ताके वैद्य पिछारी रोवें ।।

— निषेध —

५. क्वार करेला, चैत्र गुड, भादो मूली खाय।
पैसा जावे गाठ का, रोग गले पड जाय ।।

६ सावन साग न भादो दही, क्वार करेला न कार्तिक मही ।।

७ बिना चबाये उदर कोष्ठ मे, करके भोजन की भरमार।
बेचारी आतो के ऊपर, करते हो क्यो अत्याचार ।।

८ गेहूँ के आटे मे चोकर, होता माड भात मे सार।
इससे यही युक्ति सगत है, फेके नही उसे बेकार ।।

९. किया जाय यदि सादा भोजन, परिमित ऋतुओ के अनुसार।
तो रहते हैं रोग दूर ही, होकर कीलित से लाचार ।।

१०. एक साथ ही भोज्य वस्तुएँ, खाकर कई अनाप-सनाप।
जान बूझकर बीमारो को, आमन्त्रित करते हैं आप ।।

११ आधा पेट भरे भोजन से, उसका आधा कर जल पान।
शेष सर्वदा खाली रखे, है यह मिताहार का मान ।।

१२ हलुवा पूडी चना चबैना, खाने वाला जो कुछ खाय।
खाना धैर्य के साथ चबाकर, यो ही सहसा गटक न जाय।

१३ प्रात कालिक रवि किरणो का, सेवन करता जो सविधान।
उसका रुज विकार उडजाता, क्रमश कच्चे रग समान ।।

१४ प्रात खुले वाय मडल मे, विचरण करते हैं जो लोग।
वे स्वभावत. ही रहते हैं, तनु से पुष्ट तथा नीरोग ।।

१५ उषा काल में नासा द्वारा, पानी पीये बिना व्यतिरेक।
इससे नेत्र तथा मस्तक के, मिट जाते हैं रोग अनेक॥

१६ तीन मील से लेकर दस तक, घूमो सुविधा के अनुसार।
बिना मूल्य की सुलभ दवा यह, करती है भारी उपकार॥

१७ जैसे तन की दुष्ट व्याधिया, करती हैं मन को बल हीन।
वैसे ही मन के विकार भी, करते हैं तन को बल हीन॥

१८. बनना हो तुमको भविष्य मे, विशद विवेक बुद्धि निधान।
उनके हित यह आवश्यक है, दे निजदेह पुष्टि पर ध्यान॥

१९ यदि व्यायाम तथा भोजन मे, सयमशील बनेंगे आप।
तो आजीवन स्वस्थ रहेगे, नहीं सहेगे दैहिक ताप॥

२०. जितना ही प्रभात का उठना, है उपयोगी मजु, मनोज्ञ।
उतना ही कच्ची निद्रा मे, उठना है अत्यन्त अयोग्य॥

२१ सोना शीघ्र शीघ्र ही उठना, है यह दोनो ऐसे काम।
निस्सन्देह बनाते है जो सम्यग्ज्ञान विज्ञ बल धाम॥

२२ सविधि नहाने से बढता है, बल के साथ साथ हो ओज।
हटता है मल और पसीना, खिलता है मन यथा सरोज॥

२३ शीत काल मे करे अधिकतर, पाक पयादिक का आहार।
किन्तु घटादे उनकी मात्रा ग्रीष्म काल मे उसी प्रकार॥

२४. गरम नही ताजे पानी से, नित्य नहाते दूरन्देश।
क्योंकि गरम से ताजा पानी, पहुँचाता है लाभ विशेष॥

२५. शीतल जल से नही नहाओ, जब तबियत मे जचे विकार।
उससे ज्वर जुकाम होने की, आशका रहती है यार॥

२६. कोष्ठ बद्धता या ज्वर जैसा, कोई रुज बाधक बन जाय।
तो विधिवत लघन कर लेना, है अतीव उत्कृष्ट उपाय॥

२७. रुग्ण बनाता आयु घटाता, दिखलाता यम का आगार।
जग मे निंदित समझा जाता, शुचिता हीन अयुक्ताहार॥

२८. नैसर्गिक नियमो को पाले, करे न तन पर अत्याचार।
यह रुज बाधा से बचने का, है अनुपान अतीव उदार ।।

२९ प्रेम दया सन्तोष शान्ति से, भरे हुए उत्कृष्ट विचार।
करते हैं बल वर्द्धनकारी, तत्वो का नित नव विस्तार ।।

३०. मधुर हास्य जिसके आननपर, करता रहता सदा विहार।
वह नर नही मनुष्य रूप मे, किसी देव का है अवतार ।।

३१. निजानन्द सन्तोष शान्ति की, जड प्रसन्नता ही है एक।
सबकी रगत उड जाती है, उसमे पडते ही व्यतिरेक ।।

३२ काम क्रोध मद लोभ वृत्तिया, करती नित जीवन का ह्रास।
समता तुला बिगडती इससे, नही फटकता सुख निज पास ।।

३३ धोये बिना यथा विधिकर पद, भोजन करते नही सुजान।
गिनते है वे सदाचार को, रोगो का रिपु मुख्य महान्।

३४ करते हैं अत्यधिक मात्रा मे, जो मिठाइयो का आहार।
वे अदूरदर्शी प्रमेह के, बनते हैं स्वयमेव शिकार ।।

३५ विधिवत् फूलेल मलने से, तनु मे बढती धातु सदैव।
वृक्ष मूल मे जल देने से, बढते शाखा पत्र तथैव ।।

३६. दुष्कर ब्रह्मचर्य का पालन, कर सकता है कौन सुखेन।
वही कि जो अपनी रसना को, रखता स्ववश पूर्ण रूपेण।।

३७ निज मुख दत शुद्धि के हित जो, विधिवत् करता नही दतौन।
उस अयोग्य नियम भजक को, अविवेकी न कहेगा कौन ?।।

३८. मत देखो कपडो की रगत, अथवा उनका पतला सूत।
आवश्यक है यही कि वे हो, साफ स्वच्छ सादा मजबूत ।।

– विशेष नुस्खे –

— त्रिफला-प्रशंसा —

१. अभया (हरड) सचमुच मे अभया ही है, सुख देने वाली है, सतत अभ्यास रखने से वह रसो की वृद्धि के लिए रसायन के समान है।

इस हरड का प्रयोग (उपयोग) सेंधानमक आदि लवण वर्ग के साथ करने से वातकोप को मिटाती है तथा घृत के साथ सेवन करने से तीव्र पित्त काप को मिटा देती है ।

२. सोंठ के साथ अभया का सेवन किया जाय तो कफ को मिटाती है, कूट के साथ सेवन करने से सम्पूर्ण दोषो का नाश कर देती है, यदि अभया का उपयोग शक्कर के साथ किया जाय तो रोगगत उपद्रवो का नाश करती है ।

३ अभयाको अग्निवर्द्धक कहते हैं, आमलक (आवला) फल फलो मे उत्तम व श्रेष्ठ होता है, आवला हिम के समान अत्यन्त शीत होता है और अभया अति उष्ण होती है यही इन दोनो पदार्थों के गुणो की अपेक्षा भेद है ।

४ अभया के समान ही बहेडा गुण युक्त होता है, ऐसा वैद्य लोगो का अभिमत है, अतः हरड बहेडा और आवला ये तीनो त्रिफला के नाम से पुकारे जाते हैं, ये त्रिदोष वर्ग से उत्पन्न दोषो को नाश करते हैं इसीलिए तो इनका नाम त्रिफला सार्थक माना जाता है ।

५ यथार्थ मे त्रिफला मनुष्यो को जगत् मे अमृत के समान होते हैं, तथा सर्व रोगो का नाश करने मे कारण होते है, यह स्वास्थ्य लाभ मे कारण हैं तथा शरीर मे दृढता पैदा करता है, त्रिफला तीन फलो से युक्त है ऐसी यह अद्भुत बुद्धि की देने वाली है, इससे मल का शोधन होता है, अग्नि तेज होती है इतना ही नही त्रिफला से शक्ति भी बढती है ।

६ यदि त्रिफला को लोह भस्म, सोना मुखी, पीपल, वायविडग, भागरा के चूर्ण के साथ सेवन की जाय तो यह तीन गुणो को प्रगट करता है तथा इसे घृत और दूध के साथ सेवन करें तो कुष्ठ रोग को भी मिटाती है ।

७ त्रिफला को गोघृत के साथ लेना चाहिए, त्रिफला को शक्कर के साथ लेना चाहिये, त्रिफला को अतिबला के साथ सेवन करना

चाहिए तथा त्रिफला को शिलाजीत के साथ कषाय करके पीना चाहिये ।

८. हरड-बहेडा-आवला, घी शक्कर से खाय ।
हाथी दाबे काख मे, सो कोस लेजाय ।।

— शिलाजीत-योग —

९. **शिलाजीत की उत्पत्ति**—गर्मी ऋतु मे अत्यन्त तेज युक्त अग्नि के समान रहने वाले सूर्य किरणो से पर्वत अत्यन्त तप्त होकर वे अपने सिर रूपी ऊँची-ऊँची चोटियो के प्रदेश रूपी कपोल युक्त पर्वतो के शिखर मे रहने वाले कठिन पत्थरो से मदोन्मत्त हाथी के जैसा मदजल बहता है, उसी प्रकार लाख के रस के समान लालरग का रस बहता है, इसी रस को ससार में अतिशयकारक व उत्कृष्ट शिलाजीत कहते हैं ।

१०. शिलाजीत, पत्थर का फूल, इनका कल्क, लोहभस्म, नागरमोथा, अतिनील, बडी इलायची, इनका अलग-अलग चूर्ण करके प्रत्येक के त्रिफला के कषाय मे भावना देवें, फिर उनका सेवन करने से सब प्रकार के रोगो का वह नाश करता है ।

११ पत्थर के फूल को खादिरसार के साथ अच्छी तरह बहुत यत्नपूर्वक पकावे फिर उसे त्रिफला के रस मे सेवन करने से भयकर से भयंकर कुष्ठ रोग मिट जाता है ।

१२. पत्थर के फूल का कल्क, नीम्ब व कुनीम्ब की छाल के साथ व शिलाजीत के साथ शिलाजल को पीवे तो सब प्रकार के कुष्ठ रोग नाश हो जाते हैं ।

१३. पत्थर के फूल व शिलावल्क के कल्क के साथ कथित गोदुग्ध के पीपल व शक्कर मिलाकर सेवन करने से क्षय रोग अतिशीघ्र नाश हो जाता है ।

१४. शिलावल्क के चूर्ण के साथ दूध मिलाकर बनाई हुई पायस (खीर) का सतत सेवन करने से एक मास में अतिदुर्बल व्यक्ति भी अत्यन्त

बलवान् बन जाता है ।

१५. शुद्ध शिलावल्क के चूर्ण मे लाख का पटल मिलाकर फिर घृत के साथ अजन तैयार करें और उस अजन को आंखो में आंजे तो अति उपयोगी होता है ।

१६ शिला की छाल के कल्क को त्रिफला, शक्कर, घृत, पीपल व वायविडग के साथ सेवन करने से सब रोगो का नाश हो जाता है ।

१७. ससार मे रांगा, सीसा, लोह, ताम्बा, चादी और सोना ये छह धातु शिलाजीत के जनक (पिता) है, इन धातुओ से उत्पन्न शिलाजीत अत्यन्त गुण वाला होता है, ऐसे शिलाजीत को यथा विधि सेवन करने से लाभ होता है ।

१८ शिलाजीत, त्रिफला का काढा, दूध, घृत इन सबको मिलाकर सेवन करने से महान् कफ, पित्त और वातजन्य विकार को मिटाता है । वास्तव मे सम्पूर्ण रसो से युक्त यह शिलाजीत स्वर्ण से युक्त होता है और सम्पूर्ण व्याधियो को दूर करने मे समर्थ होता है ।

१९ काले शिलाजीत को उषा कहते हैं, यह लाख के समान द्रव व चमकीला होता है, इसमे पचवर्ण स्पष्ट दिखाई देते हैं, इसे पारद कर्म मे उपयोग करते हैं तथा यह छह धातुओ का द्रव करने वाला होता है । इस प्रकार काले शिलाजीत के साथ टकणक्षार, गुञ्जा, घृत, मधु और गुड को मिश्रित करके और मर्दित करके अग्नि से फूकने से कुछ समय मे ही स्वर्ण (सोना) निकलता है ।

— विशेष-नुस्खे प्रयोग सग्रह —

२०. **सितोपलादि चूर्ण**:-दालचीनी एक तोला, इलायची दो तोला, पीपल ४ तोला, बन्सलोचन ८ तोला और मिश्री १६ तोला को पीस छानकर चूर्ण करें । इससे रक्त पित्त, क्षय, श्वास, हिचकी, ज्वर, खासी, अरुचि और दाह आदि रोग मिटते हैं ।

२१. **एलादि चूर्ण** –इलायची, दालचीनी, नागकेशर, पीपल, कालीमिर्च, सोठ इनका क्रमश एक-एक भाग अधिक लेकर चूर्ण बनाले, फिर उसमे बराबर शक्कर मिलाले। मात्रानुसार सेवन करने से कफ, पित्त, रक्त, पाडु, मद, क्षय, अरुचि, अजीर्ण, खासी और हृदय रोगो को दूर करता है।

२२ **अश्वगन्धादि चूर्ण**—असगन्ध ५ तोला, बिधारा ५ तोला, मिश्री १५ तोला, अकरकरो दो तोला, इन सबका चूर्ण घृत में भूनकर फिर मिश्री मिलाले और चूर्ण को चिकने पात्र मे रखें। मात्रा ६ माशा से एक तोला लेकर ऊपर गर्म दूध पीवे, इससे धातु की कमी, प्रमेह, धातु विकार और दुर्बलता मिटती है।

२३ **लवगादि पाचन** -लोग नग ५, कालीमिर्च नग २१, पोदीना, मुलैठी और सोफ ५-५ माशा इनको कूट कर १६ गुना पानी मे पकावे जब चौथाई पानी शेष रहे तब मल छानकर मधुरता योग्य मिश्री डालकर पीवें, यह मात्रा पूर्ण यौवन के लिए है बालक के लिये अवस्थानुसार देवें। इससे पाचक, स्वेद प्रवर्तक, वर्द्धन होता है।

२४. **अनेक रोगों की दवा** - अजवाइन का सत् (फूल), पीपरमेट और कपूर इन तीनो को बराबर लेकर शीशी मे बन्द करें, इसे अमृत-धारा कहते हैं। यह पेट दर्द, सिर दर्द, जी मचलना, आदि रोगो मे लाभदायक होती है, इसे जीभ के छालो पर भी लगाई जाती है।

२५ **अजमोदादि चूर्ण** :—अजमोद, वायविडग, सेधानमक, देवदारु, चित्रकमूल, पीपलामूल, सोफ, पीपल और कालीमिर्च एक-एक तोला, छोटी हरड ५ तोला, विधारा १० तोला, और सोठ १० तोला सबको कूट छान कपड छान कर लें। मात्रा एक माशा से ४ माशा तक प्रतिदिन दो बार गर्म पानी से लेना चाहिये। यह चूर्ण आमवात, सन्धिवात, गृध्रसीवात, कमर, गुदा, पीठ और पेट के शूल मे तथा उदरवात, बात विकार, शोथ और कफ दोष को मिटाता है।

२६. चोपचीन्यादि चूर्ण - चोपचीनी १६ तोला, मिश्री ४ तोला, पीपल, पीपलामूल, कालीमिर्च, लोग, अकरकरा, खुरासानी, अजवाइन, सोंठ, वायविडग और दालचीणी ये ६ चीजे एक-एक तोला लेकर सबका कपड छान चूर्ण बनालें। मात्रा ३ से ६ माशा गर्म किये ठन्डे पानी से या घृत से लेना चाहिये। इससे उपदंश, सुजाक, व्रण, कोढ, सन्धिवात, रक्त विकार और गर्मी को नाश करता है और वीर्य को शुद्ध करता है।

२७ पच कोल चूर्ण - पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक और सोठ इन पाचो को समभाग लेकर चूर्ण बनालें। इसको गर्म पानी से लेने से मदाग्नि, शूल, गोला, आम, कफ आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

२८ स्वर्ण भस्म का प्रयोग -बोली बन्द हो जाने पर एक चावल प्रमाण भस्म को तीन चम्मच चाय मे देना चाहिये। शरीर की कान्ति बढाने के लिये असली केशर के साथ स्वर्ण भस्म को देना चाहिये। बुद्धि के लिए- वच के साथ स्वर्ण भस्म को देना चाहिये। बल और पुरुषार्थ के लिये—गाय के दूध के साथ लेना चाहिये।

२६ चतुर्बीज का चूर्ण - मेथी, हालों (चन्द्रशूर), कालाजीरा और अजवाइन इन चारो को चतुर्बीज (चारदाना) कहते हैं, इनका चूर्ण खाने से वायु के रोग, अजीर्ण शूल, आफरा, कमर का शूल, पसली का दर्द आदि का नाश होता है। नोट :- हालों के क्षुप खेतो मे बोये जाते हैं, देखने मे धणिया के समान पत्ते और पौधे होते हैं तथा फूल असमानी रग के होते हैं, बीज काले और छोटे होते हैं।

३०. तक्र (छाछ) के प्रयोग -वायु के रोगी के लिये, सोंठ और सेंधानमक मिला हुआ खट्टा तक्र उत्तम है। पित्तावस्था वाले के लिये - बूरा मिला हुआ मीठा तक्र उत्तम होता है। कफ वाले को सोठ, काली-मिर्च और पीपल मिला हुआ तक्र श्रेष्ठ होता है। हीग, जीरा' तथा सेंधानमक मिला हुआ घोल अत्यन्त वात नाशक, बवासीर

तथा अतिसार नाशक, रुचिकारक, पुष्टिदायक, बलवर्द्धक व वस्ति शूल नाशक होता है। गुड मिला हुआ घोल मूत्र कृच्छ्र वाले को उत्तम होता है। चित्रक युक्त घोल पाडु रोग पर लाभदायक होता है। तक्र के विषय मे आचार्यों ने लिखा है कि .

न तक्र सेवी व्यथते कदाचित्, न तक्रदग्धा प्रभवन्ति रोगा· ।
यथा सुराणाममृत सुखाय तथा नाराणा भुवि तक्रमाहु ॥

अर्थात्—छाछ का सेवन करने वाला व्यक्ति कभी किसी रोगा से पीडित नही होता है, तक्र मे नष्ट हुए रोग फिर से उत्पन्न नही होते हैं, जैसे देवो के आनन्द हेतु अमृत होता है उसी प्रकार मनुष्यो के लिए छाछ अमृत के समान लाभदायक होती है।

३१. **दांत मञ्जन**—लोग, सोठ, दालचीनी, हरडबडी, कत्था, सुपारी चिकनी, नागरमोथा, एक-एक तोला और कालीमिर्च दो तोला, गेरू लाल १० तोला इन सबको बारीक कूट छान लो और कपूर एक तोला, पीपरमेट का फूल ३ माशा, अजवाइन का फूल ३ माशा मिलाकर मजन बनालो। इस मजन से दातो की अनेक प्रकार की बीमारिया मिट जाती हैं तथा इससे मुह साफ रहता है।

३२. **पीपलपाक** ·- पीपल ४ तोला, को चौगुना दूध मे औटावें तथा इसमें गाय का घत ८ तोला डालें फिर उसका खोवा (मावा) हो जाने पर १६ तोला मिश्री की चासनी करके उसमे खोवा डालकर पाक बनाले, जब ठण्डा हो जाय तो इलायची, पत्रज, नागकेशर, तज, इन चारो का ३-३ माशा का चूर्ण डाल दे और खैर गोद ४ तोला को घृत मे भुनकर डाल ले। मात्रा ताकत देखकर सेवन करना चाहिये इससे धातु, जठराग्नि वृद्धिगत होती है, हृदय के लिए हितकारी है, अजीर्ण ज्वर, क्षय, श्वास, ताप, तिल्ली और पाण्डु रोग को नाश करती है।

३३. **पेट की आंतों मे खुश्की हो तो**—साबुत उडद को पीसकर एक रोटी बनालो उसे एक तरफ अच्छी सेकलो और एक तरफ थोड़ी कच्ची

रखलें फिर तिल का तैल लगाकर पेट पर बाधने से फायदा होता है।

३४ **बनफसा क्वाथ**—गुलबनफसा, बनफसा, गावजवान, अडूसा, मुलैठी, गिलोय, लेसवा, जुफा, खतमीबीज सब बराबर तथा प्रत्येक से आधा हँसराज इन सबको जौ कूट कर लो और ८ माशा मात्रा की खुराक बनालो फिर प्रत्येक खुराक में २-४ मुनक्का तथा २-८ कालीमिर्च डालकर काढा करके छानकर उसमे थोडी मिश्री डाल कर पीवे। इससे ज्वर-जुकाम आदि मिट जाते हैं।

३५ **चित्रकबटी**—चित्रक, जवाखार, पीपलामूल, सोठ, अजमोद, चव्य, कालीमिर्च, पीपल और हीग एक-एक तोला और सेंधानमक २।। तोला, कालानमक २।। तोला लेकर सबको पीसकर कपड छान कर लो और नीम्बू के रस मे घोटकर गोलिया बनालें। भोजन के पीछे चूसने से हाजमा होती है।

३६. **मधुकर चूर्ण**—सनाय ५ तोला, मुलैठी दो तोला, सोफ एक तोला, शुद्ध गधक एक तोला और मिश्री ४। तोला मिलाकर कूट छानले। ३ माशा की फाकी लेने से कब्ज रोग तथा पेट सम्बन्धी विकार मिटते हैं।

३७. **अमलतास की चटनी**—अमलतास का गूदा आधा सेर, नीम्बू का रस एक सेर, दालचीनी दो तोला, सोठ २ तोला, कालीमिर्च दो तोला, पीपल दो तोला, हींग २ तोला, बडी इलायची का दाना दो तोला, सेंधानमक ५ तोला, काला नमक ५ तोला, कालादाना भूनकर ५ तोला, सफेद जीरा ५ तोला भूनकर, मुनक्का एक पाव, पीपल २ तोला, अकरकरा एक तोला, प्रथम ही नीम्बू के रस मे अमलतास का गूदा व मुनक्का भिगोदे और सभी वस्तुओं को कूट छानकर रखले १-२ दिन मे जब मुनक्का और अमलतास गल जाय तो अच्छी तरह से छानकर और उस चूर्ण को मिलालो, चटनी बन गई। यदि चूर्ण बनाना चाहें तो उस चटनी की बडी

देकर सुखा लो और कूट छान लो। इससे पेट सम्बन्धी अनेक रोग मिटते है।

३८ **हिंग्वष्टक चूर्ण**—सोठ, कालीमिर्च, पीपल, सेंधानमक, सफेद जीरा, स्याहजीरा, अजमोद, हीग भूनकर सबको समभाग लेकर कूट छान लो। यह चूर्ण हाजमा शक्ति प्रदान करता है तथा अजीर्ण नाशक एवं स्वादिष्ट होता है।

३९. **लवण भास्कर चूर्ण**—पित्तपापडा, पीपलामूल, पीपल, धणिया, स्याहजीरा, (कालाजीरा), सेंधानमक, वायविडग, तालीसपत्र, नागकेशर, अमलबेत, बीडनमक, जीरा सफेद, कालीमिर्च, सोठ दो-दो तोला, नमक सचर ५ तोला, तज आधा तोला, इलायची छोटी एक तोला, समुद्र नमक ५ तोला, अनार दाना ५ तोला, अमलबेत दो तोला, इन सबको कूट छान लो और चूर्ण बनालो। इससे गैस, अजीर्ण, आफरा आदि रोग मिटते हैं।

४० इसबगोल की भूसी २० तोला, सोफ बारीक ४ तोला, इलायची छोटी दो तोला, बसलोचन ३ तोला और मिश्री १० तोला, पीछे की चारो वस्तुओ को कूट छानकर इसबगोल की भूसी मे मिलाल। मात्रा ८ माशा प्रतिदिन दूध मे लेने से पेट को आम, पित्त, कब्ज, शूल आदि रोगो को मिटाता है।

४१ **शरबत बजूरी**—कासनी के बीज, ककडी के बीज, खीरे के बीज, खरबूजा के बोज और सोफ की जड ५-५ तोला तथा कासनी की जड १०॥ तोला लेकर सबको कूटकर काढा बनाले और छान ले, फिर उसमे ३ पाव मिश्री मिलाकर शर्बत बनाले। मात्रा २ से ४ तोला तक पानी मे मिलाकर सेवन करना चाहिये। यह जिगर, गुरदा और मूत्राशय को तथा मल को साफ करता है।

४२. इमली का गूदा, निर्बीज मुनक्का और मीठे अनार के दाने आधा-आधा सेर लेकर इमली और मुनक्का को अलग-अलग इतना कूटें कि वह मल्हम सदृश बन जाय, फिर अनार के दानो को कपड़े

से निचोडकर उस रस में एक पाव मिश्री मिलाकर चासनी बनालें और उसमे इमली तथा मुनक्का मिलाकर अच्छी तरह चलावें और साथ ही साथ थोडा नीम्बू का रस या अगूर का रस या खट्टे अनार का रस छिडकते रहे, फिर अन्त मे उसमे तुलसी के पत्ते ६ माशा, पोदीना के पत्ते एक तोला और कालीमिर्च, सोठ, तज, लौंग, जायफल, अगर तथा छोटी-बडी इलायची के दाने ५-५ माशा कूट छानकर मिलादें, फिर उसमे एक माशा कस्तूरी, गुलाब के अर्क मे घोटकर मिलादें, बस (जवा रस) दवा तैयार है, इसे कलईदार बर्तन मे बनाना चाहिये। मात्रा ५ से ६ माशा तक प्रात काल अर्क गावजुंवा १२ तोले के साथ सेवन करें। इससे आमाशय (मेदे) और यकृत (जिगर) को बल मिलता है, चित्त को प्रफुल्लित रखता है, भूख लगाता है, गर्मी के वमन और दस्तो को मिटाता है, गर्मी मे जब हैजा फैल रहा हो तो इसके सेवन से लाभ होता है।

४३ **विश्वाद्य चूर्ण**—सोठ, अजमोद, हल्दी, दारुहल्दी, सेधानमक, वच, मुलेठी, कूट, पीपल और जीरा इन दशो को बराबर लेकर कूट छान ले। प्रतिदिन सुबह घृत के साथ मिलाकर चाटने से साक्षात् सरस्वती मुख मे निवास करती है तथा इसके सेवन से उन्माद रोगी का चित्त सही हो जाता है।

४४. **संजीवनी बूटी**—वायविडग, सोठ, पीपल, हरड, बहेडा, आवला, वच, गिलोय, भिलावा, शुद्धबच्छनाग। इन दस वस्तुओ को समभाग लेकर गोमूत्र मे १२ घटे खरल करे और एक-एक रत्ती की गोलिया बनालें। मात्रा १ से ३ गोली अदरक के रस या पानी के साथ लें, इससे ज्वर, अजीर्ण, वमन, हैजा, कृमि, उदरशूल, सर्पदंश और सन्निपात मिटती हैं।

४५ **आनन्द भैरव रस**—शुद्धहिंगलु, सोठ, मिर्च, पीपल, सुहागे का फूला, बच्छनाग, गधक समभाग लेकर नीम्बू के रस मे १२ घटा घोट ल

और एक-एक रत्ती की गोलिया बनाले। मात्रा १ से २ गोली दिन मे दो बार पानी या चावलो के धोवन के साथ लेने से, कफ-ज्वर, खांसी, जुकाम और अतिसार मिटती है।

४६ **कर्पूर रस**—कपूर, शुद्धहिंगलु, अफीम, नागरमोथा, इन्द्रजौ, जायफल को समभाग लेकर ३ घण्टा अदरख के रस मे घोट ले और एक-एक रत्ती की गोलिया बनाले। मात्रा एक-एक गोली दिन मे तीन बार ले। इससे ज्वरातिसार, अतिसार और सग्रहणी रोग मिटते है।

४७ **अमर सुन्दरी बटी**—शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोहभस्म, शुद्ध बच्छनाग, सभालू के बीज, सोठ, मिर्च, पीपल, हरड, बहेडा, आवला, पीपलामूल, चित्रक, दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, बायविडंग, अकलकरा, नागरमोथा, एक-एक तोला पीसकर ४० तोला गुड मे मिलाकर चना प्रमाण गोलिया बनालें। मात्रा १ से ३ गोली दिन मे दो बार पानी के साथ ले, इससे सन्निपात, अपस्मार, श्वास कास और वात रोग मिटते हैं।

४८ **महाज्वराकुश**—शुद्ध पारा, शुद्ध गधक, शुद्ध बच्छनाग एक-एक भाग और शुद्ध धतूरे के बीज ३ भाग, सोठ, मिर्च, पीपल २-२ भाग को अदरक तथा नीम्बू के रस की १-१ भावना देकर १-१ रत्ती की गोलिया बनाले। मात्रा एक गोली अदरक के रस के साथ ले, यह विषम ज्वर नाशक तथा वेदना नाशक है।

४९. **कर्पूरादि बटी**—कर्पूर, अनार के फल की छाल, लोग, एक-एक तोला, कालीमिच, पीपल, बहेड़ा की छाल और कुलिजन दो-दो तोला, सफेद कत्था ११ तोला सबको मिलाले और बबूल की छाल के क्वाथ की भावना देकर एक-एक रत्ती की गोलिया बनाले। मात्रा १-१ गोली दिन मे १०-१५ गोली मुह मे चूसें, इससे सब प्रकार की खासी मिटती है।

५० **पच सकार चूर्ण**—सोठ, सोफ, सोनामुखी, सेधानमक और हरड

समभाग लेकर कूट छानकर चूर्ण बनाले। मात्रा ३ से ६ माशा तक गुनगुने पानी से ले, यह अमीरी जुलाब है, कब्ज, आमवृद्धि, अजीर्ण, उदर वात आदि रोगो में लाभदायक है।

५१. **निम्बादि चूर्ण**—नीम के पत्ते ४० तोला, सोठ, मिर्च, पीपल, जवाखार, सज्जीखार ४-४ तोला, अजवाइन २० तोला सबका चूर्ण बनाले। मात्रा ३ माशा गर्म पानी से लें, इससे विषमज्वर मिट जाता है।

५२ **दशमूल क्वाथ**—बेलछाल, गभारी छाल, पाढल, अरलू, अरणी, गोखरू का पचाग, छोटी कटेली और बडी कटेली का पचाग, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी का पचाग इन सबको बराबर लेकर जौकूट करले, मात्रा २ से ४ तोला काढा दिन मे दो बार पीपल का चूर्ण डालकर या घृत मिलाकर पीवे। इससे वात, कफ, ज्वर, सन्निपात का उपद्रव, कण्ठावरोध, हृदयावरोध, तन्द्रा, वात प्रकोप, कफवृद्धि, प्रसूता के सब रोग मिटते है।

५३ **आरोग्य पचक क्वाथ**—अमलतास, पीपलामूल, नागरमोथा, कुटकी और हरड सबको बराबर मिलाकर जौकूट करले। मात्रा दो तोला को २० तोला पानी मे औटाकर तिहाई रहने पर छानकर पीवे। वात, कफ, ज्वर, आमशूल और कब्ज को मिटाता है।

५४ **योगराज गुग्गल**—सोठ, मिर्च, पीपल, चव्य, पीपलामूल, चित्रक, भुनी हीग, अजमोद, पीली सरसो, जीरा, कालाजीरा, सभालू के बीज, इन्द्रजौ, पाठा, वायविडग, गजपीपल, कुटकी, अतीस, भाडगी, बच, मूर्वा, कूट, तेजपात, देवदारु, रास्ना, नागरमोथा, सेंधानमक, इलायची, गोखरू, धनिया, हरड़, बहेडा, आवला, खस, दालचीनी और जवाखार सबको समभाग मिलाकर चूर्ण करे फिर चूर्ण के बराबर गुग्गल मिलाकर घृत दे देकर ३ दिन तक खूब खरल करे और मटर के सदृश गोलिया बनाले। मात्रा ३ से ४ गोली दिन मे २ बार रास्नादि क्वाथ या दूध के साथ सेवन करें, यह

सर्व वातव्याधि, प्रमेह और शोथ मे लाभदायक है ।

५५ **चन्द्र-प्रभा बटी**—कपूर, बच, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, देवदारु, अतीस, दारुहल्दी, पीपलामूल, चित्रक, धणिया, हरड, बहेडा, आवला, चव्य, वायविडग, गजपीपल, सोठ, मिर्च, पीपल, स्वर्ण माक्षिक भस्म, जवाखार, सज्जीखार, सेधानमक, कालानमक, कचनमक सब ३–३ माशा, निसोत, दन्तीमूल, तेजपात, दालचीनी, बसलोचन, एक–एक तोला, लोहभस्म दो तोला, मिश्री ४ तोला, शिलाजीत ८ तोला, शुद्ध गुग्गल, ८ तोला, सबको बारीक कूट छान कर गुग्गल को पानी मे मिलाकर उबालकर एक रस बनाले । उस रस मे समस्त दवाइया डालकर चने प्रमाण गोलिया बनाले । मात्रा २ से ४ गोली दिन मे दो बार गिलोय के स्वरस, गोखरू के क्वाथ या दूध के साथ लेवे। यह प्रमेह, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, पत्थरी, भगन्दर, पाण्डु, कामला, बवासीर, कमर दर्द, नेत्र रोग तथा गर्भाशय के विकारो को मिटाता है ।

५६ **बाम**—वेसलीन २४ तोला, मोम ८ तोला, अमृतधारा (पीपरमेट, कपूर, अजवाइन के फूल) ३ तोला, नीलगिरी का तेल ३ तोला और दालचीनी का तेल एक तोला लेकर, पहले बेसलीन और मोम को गर्म कर लें, फिर तेल मिलाले फिर अमृतधारा मिलाकर अच्छी तरह हिलाकर मिलाले । इसकी मालिश करने से सिरदर्द, जोडो की पीडा, सूजन, अग्नि से जल जाने पर, शूल, वायु का दर्द, स्तन फटना, जहरी जानवरो के काटने पर काम आती है ।

५७ **हिग्वादि बटी**— सोठ, सुहागे का फूला, बडी हरड, सेंधानमक और भुनी हींग इन सबको समभाग लेकर फिर सहजने के रस मे घोट कर झाडी के बेर के प्रमाण गोलिया बनालें। मात्रा एक-एक गोली पानी के साथ, यह उदरवात, ताप, तिल्ली व घोर आफरा को मिटाती है ।

५८. **लघु सुदर्शन चूर्ण**—गिलोय, पीपल, हरड, बहेडा, सफेद चन्दन,

कुटकी, नीम की छाल, सोठ, देवदारु समभाग और सबसे आधा चिरायता मिलाकर बारीक चूर्ण बनालें। मात्रा ३ से ६ माशा दिन मे ३ बार पानी के साथ लें, इससे सब प्रकार के ज्वर और सिरदर्द आदि मिटते हैं।

५६ त्रिफलादि घृत—त्रिफला ६४ तोला को ८ गुने पानी में क्वाथ कर लें, अष्टमाश शेष रहने पर छान ले, फिर यह क्वाथ, भागरे का रस, अडूसा का रस, आवलो का रस, शतावरो का रस, गिलोय का रस, बकरी का दूध प्रत्येक ६४–६५ तोला, सबको एकत्र कर ले, फिर इनमे पीपल, मिश्री, मुनक्का, हरड, बहेडा, आवला, नीलकमल, मुलेठो, असगध, कटेलो समभाग मिलाकर १६ तोला कल्क डालकर घृत ६४ तोला के साथ पकावें, जब घृत मात्र रह जाय तो छान ले। मात्रा एक से दो तोला दिन मे दो बार भोजन के साथ ले, इससे सब प्रकार के नेत्र रोग मिटते हैं तथा बद्धकोष्ठ मिटता है।

६० जात्यादि घृत—चमेली के पत्ते, नीम के पत्ते, पटोल पत्र, मेनफल, हल्दी, दारुहल्दी, कुटकी, मजीठ, मुलेठी, करज के पत्ते, नेत्रवाला, अनन्तमूल, एक-एक तोला मिलाकर पानी मे घोटकर लुगदी बनाले फिर लुगदी से चार गुना गाय का घृत और १६ गुना पानो मिला कर मदाग्नि से पकाकर घृत सिद्ध करें। इससे पुराना नासूर, व्रण, गम्भीर व्रण, दुष्टव्रण मे फायदा होता है।

६१. पंचसम चूर्ण—सोठ, छोटी हरड, पीपल, निसोत और कालानमक समभाग लेकर चूर्ण कर ले। मात्रा ३ से ६ माशा गुनगुने पानी से ले। इससे शूल, आफरा, आमवात आदि दोष मिटते है।

६२. मिरच्यादि गुटिका—कालीमिर्च एक तोला, छोटी पीपल ६ माशा, अनार का छिलका ४ तोला और पुराना गुड तोला, ८ जवाखार ६ माशा सबको कूट छानकर ३-३ रत्ती की गोलिया बनाले।

मात्रा दो-दो गोली दिन मे ३–४ बार गुनगुने पानी से, इससे कफ-युक्त कास मिटती है।

६३. **स्वर्ण मालिनी बसत**—स्वर्ण भस्म एक तोला, मोनी पिष्टी दो तोला, शुद्ध हिंगलु ३ तोला, सफेद मिर्च ४ तोला, शुद्ध खर्पर ८ तोला, पहले स्वर्ण के वर्क या भस्म को हिंगलु मे मिलालें, फिर अन्य चोजो को मिलाले और मक्खन २।। तोला मिलाकर ३ घण्टा घुटाई करे, फिर नीम्बू का रस डालकर चिकनापन मिटे जब तक घोटले, फिर एक-एक रत्ती की गोलिया बनाले। मात्रा १ से २ गोली पीपल या गिलोयसत या सितोपलादि चूर्ण के साथ मिश्री को चासनी या मक्खन के साथ लेवे। इससे क्षय, जीर्णज्वर, विषम ज्वर, खासी, धातुक्षीणता, कमजोरी, मदाग्नि मिटती है।

६४ **कस्तूरी भैरव रस**—शुद्ध हिंगलु, शुद्ध वच्छनाग; सुहागे का फूल, जावित्री, जायफल, काली मिर्च, पीपल, कस्तूरी समभाग लेकर ब्राह्मी के क्वाथ मे ३ दिन व नागरबेल के पान मे ३ दिन घोटकर कालो मिर्च प्रमाण गोलिया बनाले। मात्रा २ से ३ गोली दिन मे २ बार जल या रोगानुसार अनुपान के साथ दे। इससे ज्वर की तरुणता मे, आमपाचन का ज्वर शमन के लिये मुद्दतीलाप, मोती-झरा आदि मे लाभदायक होता है।

६५ **विसूचिकाहर बटी**—भुनी हीग ३ तोला, आम की गुठली की गिरी, लालमिर्च के छिलके २-२ तोला, अफीम, जायफल, जावित्री, हिंगुल एक-एक तोला, पीपरमेट के फूल ६ माशा सबका चूर्ण ६ घण्टा तक नीम्बू व ६ घण्टा तक लहसुन के रस मे घोटकर आधी-आधी रत्तो की गोलिया बनाले। मात्रा एक गोली एक-एक घण्टा बाद एक तोला पानी के साथ या शक्कर के साथ लें। यह विसू-चिका, वमन, दस्त, तृषा, अन्तर्दाह, पेचिस, अरुचि आदि मे गुण कारक होती है।

६६ **"नवजीवन"**—तुलसी के ताजे पत्ते १० तोला, सूखे पत्ते ५ तोला,

कालीमिर्च २।। तोला, पीपल एक तोला, बडी इलायची के दाने ६ माशा, दालचीनी, लोग, जायफल, जावित्री ३-३ माशा इन सबका चूर्ण बनाकर रखें। मात्रा ३ माशा पानी मे या २० तोला दूध और १० तोला पानी में औटाकर शक्कर मिलाकर पीवें। इसके सेवन से अग्नि प्रदीप्त होती है, सिरदर्द, ज्वर, प्रतिश्याय आदि रोग मिट जाते हैं। मोतीझरा मे भी इसका प्रयोग होता है।

६७ "आरोग्य वर्द्धिनी":-पारा और गधक की कज्जली एक तोला, लोह-भस्म ६ माशा, अभ्रक भस्म ६ माशा, ताम्र भस्म ६ माशा, हरड एक तोला, बहेडा एक तोला, आवला एक तोला, शुद्ध शिलाजीत १।। तोला, शुद्ध गुग्गल १।। तोला, चित्रकमूल दो तोला, कुटकी ११ तोला, निर्माण विधि—काष्टादि औषधियो का कपडछान कर लें, फिर भस्मे मिलाले, बाद मे शिलाजीत और गुग्गल मिलाकर नीम के पत्तो के रस की भावना देकर घुटाई करें सूखने पर प्रयोग मे लावें। मात्रा ४ रत्ती, प्रवालपिष्ठि के साथ गर्म दूध मे या पानी से ले, इससे आतरिक पित्त की गर्मी को शाति मिलती है, हाथ-पावो की दाह मिटती है तथा उदर रोग मिटते हैं।



मानव-मार्ग दर्शन

तृतीय भाग

पर प्राप्त

आशीर्वाद एवं अभिमत

परमपूज्य १०८ आचार्यरत्न श्री धर्मसागरजी महाराज का शुभाशीर्वाद

क्षुल्लक सिद्धसागरजी ने मानव-मार्ग दर्शन के तीनो भागो का सकलन करके सराहनीय कार्य किया है, ऐसे उत्तम साहित्य से जैना-जैन सभी व्यक्तियो को लाभ हो सकता है, ये तीनो ही भाग उत्तरोत्तर गम्भीरता को लिये हुये हैं इनका पठन और मनन करने से मानव आत्म विकास के सन्मुख हो सकता है। क्योकि ये ग्रथ सरल और सुबोध भाषा मे जैनाचार्यों के आधार पर ही लिखे गये हैं, इसके आगे जो "स्वास्थ्य बाधामृत" प्रकाशित हो रहा है जिससे मानवो का अधिकाधिक हित हो यही मेरा शुभाशीर्वाद है।

प्रेषक—ब्र० प्यारेलाल बडजात्या।

पूज्य १०८ आचार्य प्रवर श्री विमलसागरजी महाराज का शुभाशीर्वाद

क्षुल्लक सिद्धसागर महाराज की लिखी हुई "मानव-मार्ग दर्शन तीसरा भाग" पुस्तक देखकर प्रसन्नता हुई; इसमे मानव-मात्र के हित के लिये अच्छी सामग्री एकत्रित की गई है, ऐसे साहित्य से सर्व साधारण जन पर अच्छा प्रभाव पड़ सकता है। आचार्य श्री ने

क्षुल्लकजी महाराज को शुभाशीर्वाद देते हुये कहा है कि आप इसी प्रकार अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग का कार्य करते रहे तथा अज्ञान-तिमिर का नाश करते हुये जैन धर्म के उद्योत करने मे कारण बनें। मेरी हार्दिक कामना है कि आप ज्ञानवृद्धि करते हुये समाज के अभ्युत्थान मे निमित्त सिद्ध हो। आपने इस ग्रथ मे उपयोगी दृष्टांतों से भावी पीढी को धर्म के सन्मुख होने का सफल प्रयास किया है, मेरा यही शुभाशीर्वाद है कि आप उत्तरोत्तर जिनवाणी का प्रचार व उत्थान करते रहे।

सोनागिर — प्रेषिका—ब्रह्मचारिणी चित्रा बाई

१२.१०.७९ — सघ सचालिका श्री १०८ आचार्य विमल सागर सघ

श्री १०८ आचार्य सन्मतिसागरजी महाराज पट्ट शिष्य आचार्य महावीर कीर्त्ति महाराज का शुभाशीर्वाद

क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज ने 'मानव-मार्ग-दर्शन तृतीय भाग' लिखकर अपना ही नही सर्व मानव समाज का हित किया है। इस रचना को देखकर बडी प्रसन्नता होती है, इस ग्रथ के स्वाध्याय करने वाले को भेद-विज्ञान के अभ्यास से आत्म-स्वरूप की भी उपलब्धि हो हो सकती है, इसे पढकर मानव अपनी अज्ञानता को छाडकर शातिमय जीवन की ओर अग्रसर हो सकता है; ऐसी सरल रचनाओ से सामान्य जीवो को भी गंभीरे आर्ष एव जटिल ग्रथों का रसास्वादन हो सकता है। आचार्य श्री ने आपको शुभाशीर्वाद प्रदान करते हुये सकेत किया है कि आप निरन्तर स्व पर के कल्याण हेतु इसी प्रकार दत्तचित्त रहे।

जबलपुर — प्रेषिका—ब्रह्मचारिणी मैना बाई

८ १० ७९ — आचार्य श्री के आदेशानुसार

पूज्य १०८ वयोवृद्ध आचार्यकल्प श्री सन्मतिसागरजी महाराज का शुभाशीर्वाद

क्षल्लक सिद्धसागरजी महाराज द्वारा लिखे हुये 'मानव-मार्ग दर्शन तृतीय भाग को देखकर अत्यन्त हर्ष हुआ, आपने अल्प समय मे ही जिन-वाणी की आराधना करके अच्छा ज्ञान व यश प्राप्त किया है, आपके परिश्रम से समाज व धर्म का गौरव बढा है, आपका साहित्य हृदयग्राही एव मानव मात्र के लिये हितकारी है, जिससे साधारण जन भी लाभान्वित हो सकते हैं। मैं आपके सफल प्रयास को सराहना करता हुआ शुभाशीर्वाद देता हूँ कि आप उतरोतर कल्याण पथ पर बढते हुये जन धर्म की प्रभावना करते रहे।

पूज्य १०८ मुनि उदयसागरजी महाराज का शुभाशीर्वाद

मानव-मार्ग-दर्शन के तीनो ही भाग देखकर बहुत प्रसन्नता हुई, इन ग्रथो के स्वाध्याय से प्राणीमात्र का हित हो सकता है। इसमे शास्त्रीय विषयो का सुगम भाषा मे बहुत अच्छा विवेचन किया गया है, इससे धर्म का प्रचार व प्रसार अधिक सम्भव है।

(सीकर)

पूज्य १०८ आचार्यकल्प श्री श्रेयान्ससागरजी महाराज का शुभाशीर्वाद।

(सुजानगढ़--चातुर्मास)

पूज्य १०८ आचार्य श्री सीमंधर सागरजी महाराज का शुभाशीर्वाद।

पूज्य १०८ श्री भव्यसागरजी मुनि महाराज का शुभाशीर्वाद।

(अहमदनगर--चातुर्मास)

पूज्य १०८ श्री चारित्र-विभूषण मुनि विवेक सागरजी महाराज का शुभाशीर्वाद ।
(कुचामनवाली—चातुर्मास)

पूज्य १०८ श्री विजयसागरजी महाराज का शुभाशीर्वाद ।

पूज्य १०८ श्री निर्वाणसागरजी महाराज का शुभाशीर्वाद ।

पूज्य १०८ आचार्यकल्प श्री सुबलसागरजी महाराज का शुभाशीर्वाद ।
(पोदनपुर—चातुर्मास)

पूज्य १०८ मुनि पुष्पदन्तजी महाराज का शुभाशीर्वाद ।

卐

पूज्या आर्यिकारत्न श्री १०५ ज्ञानमती माताजी का शुभाशीर्वाद

क्षुल्लक सिद्धसागरजी द्वारा लिखित व अनुवादित "मानव-मार्ग-दर्शन" तीनो भागो को देखकर हर्ष हुआ। ग्रन्थ सामग्री पाठको के लिये बहुत ही सुरुचि पूर्ण है। इस शुभ कार्य के लिये आपके सतत् प्रयास प्रशसनीय हैं, इस महत्वपूर्ण कार्य के लिये माताजी ने आपको शुभाशीर्वाद दिया है। आशा है आप उत्तरोत्तर ज्ञान की अभिवृद्धि करते रहेगे।

देहली
१५.९.७१

प्रेषक—रवीन्द्रकुमार जैन
(पूज्या माताजी की आज्ञानुसार)

पूज्या आर्यिकाशिरोमणि श्री १०५ सुपार्श्वमती माताजी का शुभाशीर्वाद

"मानव-मार्ग-दर्शन तृतीय भाग" का अवलोकन कर माताजी ने कहा है कि ग्रन्थ की पठन—सामग्री प्राणी मात्र के लिये हितकारी है, क्षुल्लकजी महाराज का प्रयास सराहनीय है, आपके द्वारा जो धर्म

प्रचार हो रहा है, उससे जैन धर्म के प्रचार एव प्रसार में बहुत सहायता मिलेगी।

प्रेषक—बद्रीप्रसाद सरावगी
पटना वाला
माताजी की आज्ञानुसार

नाथनगर
१५ ७ ७६

पूज्य वयोवृद्ध श्री १०५ श्री आर्यिका धर्ममती माताजी का शुभाशीर्वाद ।
(जयपुर—चातुर्मास)

पूज्य श्री १०५ श्री विदुषी आर्यिका विशुद्धमतीजी माताजी का शुभाशीर्वाद ।
(निवाई—चातुर्मास)

पूज्य वयोवृद्ध क्षुल्लक रत्न १०५ श्री सिद्धसागरजी महाराज का शुभाशीर्वाद

मौजमाबाद
२४ ९ ७९

श्रीमान् क्षुल्लकजी महाराज,

सादर प्रति इच्छाकार ।

सद्धर्मप्रभावेण अत्र कुशलम् तत्राप्यस्तु । आपके द्वारा लिखा हुआ 'मानव-मार्ग-दर्शन तीसरा भाग' व पत्र मिला । पुस्तक को अद्योपात पढ कर मन प्रसन्न हुआ । आपका श्रम सराहनीय है, सद्धर्म की उन्नति मे आपके द्वारा लिखित ग्रथो का साहित्य अवश्य हितकारी सिद्ध होगा ।

पूज्य क्षुल्लक १०५ श्री शीतलसागरजी महाराज का शुभाशीर्वाद ।

(अजागढ़—चातुर्मास)

पूज्य क्षुल्लक १०५ श्री सन्मतिसागरजी महाराज का शुभाशीर्वाद ।
(सोनागिरी—चातुर्मास)

ब्र० चिरंजीलालजी सोनी	—अजमेर वालों का अभिमत		
ब्र० सुगनचन्द्रजी	"	"	"
ब्र० सुन्दरलालजी	चांदसेन	"	"
ब्र० रामजीवनजी	माधोराजपुरा	"	"
ब्र० पूरणमलजी लुहाड़िया एडवोकेट	साभर	"	"
ब्र० चौथमलजी पाटनी	नागौर	"	"
ब्र० कपिलभाई कोटड़िया	हिम्मतनगर	"	"
ब्र० सेठ हीरालालजी पाटनी	निवाई	"	"
ब्र० सेठ चतुर्भुजजी अजमेरा	पांचवा	"	"
ब्र० गमनलालजी	सूरत	"	"
ब्र० महेन्द्रकुमारजी अजमेरा	पचेवर	"	"
ब्र० छितरमलजी सेठी	कुकनवाली	"	"
ब्र० मोतीलालजी	कामा	"	"
ब्र० महेशचन्द्रजी	सरधना	"	"

श्रीयुत् पंडितरत्न मक्खनलालजी शास्त्री मोरेनावालों का अभिमत

●

डॉ० पंडित पन्नालालजी साहित्याचार्य सागर

५.६.७६

'मानव-मार्ग-दर्शन तृतीय भाग' को देखकर बहुत खुशी हुई, पूज्य १०५ श्री क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज की लेखनी स्तुत्य है, आप अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी हैं, आपके द्वारा निरन्तर जिनवाणी की आराधना हो रही है, यह प्रसन्नता की बात है।

पंडित रत्नसुमेरचन्द्रजी दिवाकर-सिवनी

१३.६.७६

'मानव-मार्ग-दर्शन तृतीय भाग' में श्री क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज ने बड़े श्रम से महत्त्वपूर्ण रचना की है, आपका निर्मल जीवन

इन रचनाओ से प्रतिबिम्बित होता है। दिगम्बर जैन आचार्य धर्मसागर व्रती आश्रम सीकर की स्थापना करके आपने एक बहुत बडा रचनात्मक आदर्श कार्य किया है। मुझे विश्वास है कि आज के युग में आप जैसे निर्भीक एव निष्पक्ष साधुओ से धर्म तथा सस्कृति का हित हो सकेगा।

पं० तनसुखलालजी काला, बम्बई का अभिमत

परम गुरु भक्त आगम के दृढ श्रद्धानी, सदा स्वाध्याय रत, सुलेखक तथा प्रभावक प्रवचन वक्ता पूज्य श्री १०५ क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज द्वारा लिखित "मानव-मार्ग-दर्शन" के तीनो भाग स्वाध्याय तथा मनन करने योग्य हैं। इन ग्रथों मे संसार, शरीर तथा भोगो से विरक्त होकर स्व-पर-भेद विज्ञान की प्राप्ति करने हेतु प्रेरणा की गई है। यथार्थ मे इन रचनाओ ने सोने मे सुगन्ध की कहावत को चरितार्थ किया है। श्रीमद् कुलभद्राचार्य विरचित सार समुच्चय का विशद विवेचन बहुत ही सरल तथा रोचक भाषा मे किया गया है, इससे क्षुल्लकजी महाराज की अतरग परिणति एव बुद्धिमत्ता की स्पष्ट झलक प्रगट होती है, ग्रन्थ में मानव-मात्र के लिये उपयोगी सामग्री भर दी गई है। आत्मोन्नति के अर्थ जो मार्ग प्रदर्शन किया है, जिसको अपनाने से जैन समाज ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति को सुख तथा शांति प्राप्त हो सकती है। धार्मिक जन स्वाध्याय तथा मनन करके महाराज श्री के परिश्रम को सफल करेंगे। सम्पादक प० विद्याकुमारजी सेठी को को भी धन्यवाद दिये बिना नही रह सकता।

पं. तेजपालजी काला साहित्यभूषण विद्वद्रत्न सम्पादक–जैन दर्शन का अभिमत

नादगाव
१४ ६ ७६

मानव-मार्ग-दर्शन (तृतीय भाग) यह श्रीमद् कुलभद्राचार्य विरचित सार समुच्चय पर पूज्य विद्वान् क्षुल्लकजी श्री सिद्धसागरजी महाराज की विद्वत्ता पूर्ण लेखनी से लिखा हुआ विस्तृत विवेचन है। पूज्य क्षुल्लकजी महाराज ने अपने सलुलित लेखन से ग्रथ कर्ता के भाव को जो समग्र मानव जाति का यथार्थ मार्ग-दर्शन करने वाला है और शाश्वत समीचीन सुख को प्राप्त कराने वाला है, अत्यन्त सुस्पष्ट रीति से से अनेक उदाहरणो के द्वारा प्रस्तुत किया है, जिसके कारण यह ग्रन्थ वाचनोय, माननीय और सग्राह्य हो गया है। सचमुच मे आज के भौतिक युग मे भूले-भटके जन जीवन को पूज्य क्षुल्लकजी के ये प्रयास साहित्य जगत् मे प्रकाश स्तम्भ का काम देगे, इसमे कोई सदेह नही, वास्तव मे ऐसे ही सच्छील व्रतनिष्ठ आत्महित सलग्न विद्वान् तपस्वियो से हो जन जगत् की शोभा है। श्री १००८ वीर प्रभु आपको स्वस्थ, दोर्घायु जीवन-प्रदान करे ताकि आपके द्वारा सतत् इसी प्रकार मानव जाति का वास्तविक मार्ग-दर्शन होता रहे।

श्रीमान् चंदनमलजी "चांद" सम्पादक जैन जगत् (मासिक) बम्बई वालों का अभिमत

२६.२ ८०

मानव-मार्ग-दर्शन के तीनो भाग देखकर अत्यत हर्ष हुआ, जिसमे तीसरा भाग जैन साहित्य की अमूल्य निधि "सारसमुच्चय" नाम के ग्रन्थ का सरल और व्याख्यापूर्ण विवेचन करके श्री १०५ क्षुल्लक सिदध-

सागरजी महाराज ने जन साधारण को बोधगम्य ग्रन्थरत्न की उपलब्धि कराई है, इसमे मानव मात्र को अपना हित मार्ग निर्धारित करने और जीवन-विकास करने मे सहयोग प्राप्त होगा, लगभग पाच सौ पृष्ठो का यह सजिल्द ग्रथ विषय की गभीरता और उपादे-ना की दृष्टि से महत्त्व-पूर्ण है, अपितु हिन्दी साहित्य के दर्शन ग्रथो मे अमूल्य भट भी है।

ऐसे ग्रन्थ को स्वाध्याय और आत्मचिंतन के लिये नि शुल्क वितरण करना एक स्वस्थ परम्परा। महाराज श्री ने अपना योग इन ग्रन्थो के लिखने मे लगाकर धर्म प्रचार और प्रसार मे अच्छा सहयोग प्रदान किया है।

आपका

चन्दनमल "चाद"

*

श्री सेठ पण्डित अगरचंदजी नाहटा बीकानेर वालों का अभिमत

मानव-मार्ग-दर्शन तृतीय भाग को देखकर अपार हर्ष हुआ, आपने इसमे आत्म-हितकारी बहुत हो पठनीय सामग्री प्रकाशित का है, इसके लिये सारा समाज आभारी है, इतने बडे ग्रन्थो का प्रकाशन भी कठिन कार्य है, आप इसे स्वाध्याय के लिये भेट रूप वितरित करवा रहे हैं, यह बहुत ही सराहनीय है। इसका अधिकाधिक प्रचार हो और जन-गण इसे पढ़कर लाभ उठावें यही शुभकामना है। सपादक पंडित विद्या-कुमारजी सेठी का सहयोग भी सराहनीय है।

धर्मालंकार पं० हेमचन्द्र जैन शास्त्री, M.A. न्यायकाव्यतीर्थ प्रभाकर अजमेर का अभिमत

पूज्य १०५ क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज द्वारा रचित एव अनूदित 'मानव-मार्ग-दर्शन' के प्रथम, द्वितीय तृतीय भाग अवलोकन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इनमे प्रथम दो भाग आपकी स्वतन्त्र एव सगृहीत रचनाएँ है, जो जन साधारण के लिये धर्म के विभिन्न विषयो को लेकर सरल परिपाटी से लिखी गई हैं। आपकी सदैव इच्छा रही है कि जैन तत्त्वो का अधिक से अधिक मनन, पठन, प्रचार व प्रसार हो। आप सतत स्वाध्यायी तथा चितनशील त्यागी है।

तृतीय भाग श्री आचार्य कुलभद्रजी का 'सारसमुच्चय' ग्रथ है। जिसका आपने विस्तृत विवेचन बहुत सुन्दर ढग से किया है। श्री वीर प्रभु से प्रार्थना है कि आपकी ज्ञान-गरिमावृद्धिगत हो और ये ग्रथ मानव को मानवोत्तर बना सकने मे सहायक हो।

ब्र० कपिलभाई कोटडिया–हिम्मतनगर का अभिमत

पूज्य १०५ श्री सिद्धसागरजी महाराज ने मानव-मार्ग-दर्शन तीसरे भाग मे चरणानुयोग का अमूल्य व सुगम पथ प्रदर्शन किया है, जिसके पठन से मानव अपने अज्ञानाधकार को छोडकर आत्म विकास की ओर बढ सकता है। आचार्य कुलभद्र का यह 'सार–समुच्चय' ग्रन्थ पहले भी प्रकाशित हुआ था, किन्तु जैसा विस्तृत विवेचन, क्षुल्लकजी महाराज ने किया है वैसा हृदयग्राही विवेचन अन्यत्र देखने मे नही आया है। आपने अनेक शास्त्रो के प्रमाण एव दृष्टान्त देकर इसको अत्यन्त उपयोगी सिद्ध किया है।

प० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री—सम्पादक जैन गजट	शोलापुर।
डॉ० प० लालबहादुरजी शास्त्री—सम्पादक जैन दर्शन	देहली।
प० जिनेन्द्रप्रकाशजी शास्त्री—सम्पादक 'करुणादीप'	एटा।
प० रत्नेशजी—सम्पादक 'अहिंसा सदेश'	राची।
प० रत्न बाबूलालजी जमादार	बडौत (यू०पी०)।
प० दरबारीलालजी शास्त्री	ललितपुर (यू०पी०)।
डॉ० प० रमेशचन्द्रजी जैन	बिजनौर (यू०पी०)।
प० मिश्रीलालजी शाह शास्त्री—अतिशय क्षेत्र	पदमपुरा।
प० मोतीचन्द्रजी जैन-शास्त्री	हस्तिनापुर।
डॉ० प० कस्तूरचन्द्रजी कासलीवाल	जयपुर।

श्रीमान् श्री श्रेयांसप्रसादजी साहू बम्बई वालों का अभिमत

मानव-मार्ग-दर्शन तृतीय भाग प्राप्त हुआ, तदर्थ धन्यवाद। श्रीमद् कुलभद्राचार्य विरचित 'सार समुच्चय' ग्रथ का यह अनुवाद और विस्तृत विवेचन करके पूज्य १०५ क्षुल्लक श्री सिद्धसागरजी महाराज ने सरल हिन्दी मे प्रेरणादायी विवेचन करके जन साधारण के लिये मार्ग-दर्शन का यह अनुपम ग्रथ तैयार किया है। लगभग पाँच सौ पृष्ठो का यह विशाल ग्रथ मानव मात्र के लिय सद्बोध तथा जोवन के विकास के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा, इसके पठन और मनन से मानव तथा समाज का हित होगा, ऐसा मुझे विश्वास है।

पूज्य क्षुल्लकजी महाराज का सफल प्रयास धर्म प्रचार मे सहायक होगा, सम्पादक श्री सेठीजी एव प्रकाशक भो बधाई के पात्र हैं। मेरी शुभ कामनाएँ।

आपका
श्रेयासप्रसाद साहू जैन
बम्बई दिनाक २९ २ ८०

सेठ भागचंद्रजी साहब सोनी

अजमेर

१५.६.७६

मानव मार्ग-दर्शन के तीसरे भाग मे सरल परिपाटी से जैन धर्म के विषयो का प्रतिपादन किया गया है। यह ग्रथ स्वाध्यायार्थियो के लिये विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता है। पूज्य धर्मदिवाकर १०५ श्री क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज ने कुलभद्राचार्य विरचित सार समुच्चय ग्रथ का अनुवाद व वि य विभाजन करके मानव-मात्र के लिये हित का साधन बना दिया है, उक्त ग्रथ का पठन-पाठन धार्मिक जनता मे अधिक से अधिक हो तथा मानव अपने जीवन को ज्ञान मय बना सके यही जिनेन्द्र-देव से प्रार्थना है। इसके आगे आपका लिखा हुआ ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है वह उपयोगी तथा प्रेरणास्पद होगा, मानव को आत्म धर्म का परिज्ञान सरल, सरस भाषा मे हो जाय, इससे बडी उपलब्धि और क्या हो सकती है। मेरी हार्दिक भावना है कि आपका मार्ग-दर्शन मानव-मात्र का कल्याणास्पद बने।

सेठ डूंगरमलजी सबलावंत-डेह वालों का अभिमत

मानव-मार्ग-दर्शन के तीनो ही भाग एक से एक बढकर मानव का उपकार करने मे समर्थ है। इन ग्रथो की रचना करके क्षुल्लक सिद्ध सागरजी महाराज ने जैन साहित्य का अत्युपयोगी प्रचार व प्रसार किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ऐसे निर्भीक वक्ता, आगमोक्त मार्ग-दर्शक साधु अपनी ज्ञान रूपी किरणो से जिन वाणी माता का प्रकाश ससार मे फैला सकते है।

श्री सेठ झूमरमलजी बगड़ा-सुजानगढ़

मुझे मानव मार्ग-दर्शन के तीनो भागो के स्वाध्याय करने का सौभाग्य मिला। श्री व्याख्यान वाचस्पति धर्म दिवाकर क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज प्रखर वक्ता एव कर्मठ त्यागी है। आपका जहा जहा भी विहार होता है, वही पर अपूर्व धर्म चेतना जागृत होती है। आज मानव को सच्चा मानव बनने की अति आवश्यकता है, उसकी पूर्त्ति यह महाराज द्वारा लिखित सत्यसाहित्य एक अपूर्व दीपमालिका सदृश वरदान का कार्य सिद्ध हुआ है।

लाला ज्ञानचंदजी जैन देहली वालों का अभिमत

मानव-मार्ग-दर्शन के तीनो भागो का स्वाध्याय किया। जैसे श्री १०५ श्री धर्मदिवाकर, व्याख्यान वाचस्पति क्षल्लक सिद्धसागरजी महाराज के प्रवचनो मे ओजस्विता एव जीवन को परिवर्त्तित करने की शक्ति है वैसे ही इस लेखनी मे मानव-मात्र के जीवन को बदलने की अद्भुत प्रेरणा है। इन ग्रथो मे कही पक्ष व्यामोह भी दृष्टिगोचर नही होता। इनमे आचार्यों की वाणी को यथावत् सरल एव सुबोध भाषा मे अंकित किया गया है।

श्री मिलापचंद्रजी पाटनी मंत्री दि० जैन आगम सेवक मंडल, अजमेर

अजमेर

१-६-७१

मानव-मार्ग-दर्शन तृतीय भाग पढकर बहुत ही आनन्द हुआ, क्योकि इसमे संकलित सदुक्तियो व अवतरणो को पढ़ने से मानव-मात्र व्यावहारिक व निश्चयात्मक बोध को प्राप्तकर आत्मोन्नति की ओर

अग्रसर हो सकता है। यह ग्रन्थ प्रत्येक मानव को सदाचारी, विनयी, विवेक व गुरुभक्ति की महत्ता की सत्प्रेरणा देता है और ससार, शरीर व भोगो की ओर से उदासीनता दिला कर मुक्तिपद पर आरूढ़ कराता है। पूज्य १०५ श्री क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज ने अपने अमूल्य समय को लगाकर अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है जिसके लिये समाज हमेशा आपका कृतज्ञ रहेगा।

श्री गुरुभक्त महेन्द्रकुमारजी बोहरा पुरानी मंडी अजमेर

९-९-७९

मानव-मार्ग-दर्शन के तीनो भाग ही प्रत्येक मानव को सम्यक्श्रद्धान देव-गुरु-शास्त्र की भक्ति एव चरित्रवान् बनने की प्रेरणा देते हैं। इस पचम काल मे ऐसे सकलनो व अनुवादो की अत्यावश्यकता है। पूज्य १०५ श्री क्षुल्लकजी महाराज का यह कार्य परम आदर्श एव अनुकरणीय है। प्रत्येक भव्य प्राणी इसका स्वाध्याय कर आत्मोन्नति की ओर अग्रसर बने। यही भावना रखता हू।

श्रीमान् सेठ धर्मचन्दजी मोदी मत्री दिगम्बर जैन समाज, ब्यावर

,, ,, रतनलालजी जैन — किशनगढ़ (मदनगंज)

,, ,, महावीरप्रसादजी जैन लालासवाले अध्यक्ष जैन समाज, सीकर

,, ,, माणकचंद्रजी जयपुरिया सयोजक दिगम्बर जैन-आचार्य धर्मसागर व्रती आश्रम — सीकर

,, बाबू नागरमलजी जैन — कलकत्ता।

,, सेठ शांतिलालजी कामदार — ,, ।

,, ,, अमरचन्दजी पहाड़िया — ,,

,, लाला आनन्दप्रकाशजी जैन — सौरम (यू. पी.)

श्रीमान् सेठ कल्याणमलजी बाकलीवाल	छिंदवाड़ा (म०प्र०)
" " मूलचन्द्रजी छाबड़ा	उज्जैन (म०प्र०)
" " डूङ्गरमलजी जैन	फारबीसगज (बिहार)
" " डालमचन्दजी पांड्या	कूचबिहार (बगाल)
" " उम्मेदमलजी पांड्या	कुचामन सिटी।
" " हरकचन्द्रजी पाड्या	" "
" " झूमरमलजी बगड़ा	लाडनू।
" " नेमीचन्द्रजी जैन	बम्बई।
" " फूल्चीलालजी कटारिया	हवरा।
" " बदरीप्रसादजी सरावगी	पटना।
" " पारसमलजी बगड़ा	नागौर।
" " नेमीचन्द्रजी बाकलीवाल	सुजानगढ़।
" " मनोहरलालजी शाह	भावनगर।
" " रामदेवजी पाटनी	घूबड़ी (आसाम)।
" " सुनहरीलालजी	आगरा।
" लाला प्रेमचन्द्रजी जैन, जैना वाच कम्पनी	देहली।
" प्रो० उगमचन्द भागचन्द कोठारी प्रमुख हिन्दी विभाग प्रताप महाविद्यालय	अमलनेर (महाराष्ट्र)।
" सेठ कन्हैयालालजी पहाड़िया	मद्रास।
" " गुलाबचन्दजी जैन	कोटा।

श्रीमान् बसन्तलालजी, डी नरसिंहपुरा वालों का अभिमत

(सचिव, सुखानन्द धर्मशाला बम्बई व प्रमुख सलाहकार जैन सेवा समिति, बम्बई)

मुझे मानव-मार्ग-दर्शन का तृतीय भाग पढ़ने का पुनीत अवसर प्राप्त हुआ, इस ग्रन्थ के पठन से साहित्य के मर्मज्ञों के लिये श्री क्षुल्लकजी महाराज ने गागर में सागर भर दिया है और सच्चे दृष्टा को सत्य, शिव और सुन्दरम् का आभास होने लगता है।

आज के वैज्ञानिक युग में सर्वत्र भौतिकवाद का ही चलन है, किन्तु इस महान् ग्रंथराज को पढ़कर पाठक को अपना सच्चा स्वरूप प्रगट होता है और मार्ग-दर्शन मिलता है। ग्रन्थ की भाषा बड़ी सरल और राजस्थानी का पुट लिए हुए है तथा संस्कृत के श्लोक अत्यन्त सारयुक्त हैं जिससे पाठक के अंतरंग को आल्हाद प्रदान होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ऐसे साहित्य से श्री महाराज के ज्ञान की किरणें संसार में फैलकर ज्ञान दान का प्रकाश करती रहेंगी।

अभिमत

त्रिलोकचन्द जैन
चिकित्सा एवम् स्वास्थ्य मन्त्री

जयपुर
प. शा. प. क्रमांक २६१६/स्वा. मं. ७९
दिनांक ७ दिसम्बर, ७९

पूज्य १०५ श्री क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज लाडनूं वालों का दर्शन करने का पहला मौका मुझे सीकर के इन्द्रध्वज महामंडल विधान के समय मिला। महाराज श्री के दर्शन कर मैं बहुत प्रभावित हुआ। आपके द्वारा लिखित "मानव-मार्ग दर्शन" प्रथम, द्वितीय व तृतीय भाग आद्योपांत पढ़ने से मालूम हुआ कि इनमें मानव जीवन पर व्यापक विचारों का बेजोड़ संकलन है। आपकी रचनाओं से जैन एवं जैनेतर सभी लाभ उठा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त प्रस्तुत "स्वास्थ्य बोधामृत" ग्रन्थ मे आपने गहरी परोपकारी भावना से पूर्वाचार्यों के बताये हुए औषध-प्रयोगो का बड़े सुन्दर ढग से निरूपण किया है। इन प्रयोगों से स्वस्थ पुरुषो का स्वास्थ्य सरक्षण व रोगियो का रोग निवारण हो सके, इस सद्भावना व कारुण्य बुद्धि से आप्लावित होकर महाराज श्री ने इस ग्रन्थ के सकलन मे अपनी प्रतिभा व अविश्रांत परिश्रम का परिचय दिया है, जिसके लिये समस्त मानव समाज आपका चिर ऋणी रहेगा।

यह श्रम लोक हित की भावना का अनुपम उदाहरण है। यह ग्रथ प्राणी मात्र के लिये हितकर सिद्ध होगा। पूज्य श्री क्षुल्लकजी महाराज को प्रभु सुन्दर स्वास्थ्य प्रदान करे, ताकि वे उदारमन एव विशालता की भावना से प्राणी मात्र को मुक्ति का सन्देश देते रहे।

(त्रिलोकचन्द जैन)

श्री १०५ क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज लाडनू वाले,
श्री दिगम्बर जैन आचार्य धर्मसागर व्रती आश्रम,
बंग की नसिया, पार्श्वनाथ भवन,
सीकर (राज०)

卐

मुख्य मन्त्री, राजस्थान
जयपुर
Chief Minister of Rajasthan, Jaipur

(1600/C.M.D.G.) **19 मई, 1979**

१०५ श्री क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज द्वारा लिखित "मानव-मार्ग-दर्शन" तृतीय भाग प्राप्त हुआ, इसके लिये मै आपका आभारी हूँ। इस ग्रन्थ मे भारतीय दर्शन के मूल तत्वों को अत्यन्त बोधमय भाषा में

विस्तार से समझाने का श्लाघनीय प्रयास किया गया है, इसको पढने से लगता है कि सभी धर्मों की मान्यताओ और आदर्शों को एक समन्वित ग्रन्थ के रूप मे समझाने का सफल प्रयास किया गया है।

मै आशा करता हूँ कि इसके आगे छपने वाला ग्रन्थ और भी अधिक उपादेय सिद्ध होगा यद्यपि मैं स्वय को किसी भी धार्मिक ग्रन्थ पर टिप्पणी करने का अधिकारी नही मानता किन्तु एक विद्यार्थी के नाते मुझे लगता है कि आप यह उत्तम प्रयास कर रहे हैं, इससे सचमुच मे मानव मात्र को मार्ग-दर्शन मिलेगा।

आपका – (भैरोंसिह शेखावत)

श्रीमान् ठाकुर मदनसिंहजी दांता–सदस्य राजस्थान विधान सभा, जयपुर

पूज्यवर श्री १०५ क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज ने 'मानव-मार्ग-दर्शन' भाग प्रथम, द्वितोय एव तृतीय की मानव के हितार्थ रचना कर अत्यन्त हितकारी कार्य किया है। इन रचनाओ मे आपका "सादा जीवन, उच्च-विचार" तो परिलक्षित होता ही है, साथ ही आपका गहन अध्ययन तथा तत्वचिंतन का समन्वय होने से मणिकाचन योग की चरितार्थता सिद्ध हुई है। इन ग्रंथो से मानव अत्यावश्यक लाभ उठा सकता है बशर्ते इनका अध्ययन कर शिक्षाओ के अनुरूप पालन करे। मानव समाज इन कृतियो के लिये सदैव आपका ऋणी रहेगा।

श्री जगदीशप्रसाद माथुर
संसद् सदस्य
लोकसभा – दिल्ली

पूज्य श्री १०५ श्री सिद्धसागरजी महाराज द्वारा लिखित मानव-मार्ग-दर्शन तृतीय भाग देखने का सुअवसर मिला, इसमें भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों को अत्यन्त सरल भाषा में समझाने का तथा सभी धर्मों का समावेश कर एक आदर्श ग्रन्थ सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

आपका-
जगदीशप्रसाद

श्री शिखरचन्द्रजी कोचर जैन, रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट एण्ड सेशन्स जज, कोचरों का चौक, पो० बीकानेर

१६ १०.७

श्री १०५ श्री पूज्य क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज द्वारा लिखित ग्रन्थ में आचार्य कुलभद्र विरचित सार समुच्चय ग्रन्थ का अनुवाद होने के साथ २ श्लोकों में निहित गूढार्थ का विस्तृत विवेचन दृष्टांत देकर किया गया है। जिससे यह ग्रन्थ-रत्न सर्व साधारण के मार्ग-दर्शन के लिये अत्यन्त उपयोगी बन गया है, ऐसे अनुपम ग्रन्थ-रत्न के द्वारा

वाङ्मय की शोभा-वृद्धि करने के लिये सारा समाज आपका कृतज्ञ है, आशा है आप भविष्य में भी ऐसे अनुपम ग्रंथ रत्नो के द्वारा माता भारती के भण्डार को भरते रहेंगे ।

卐

श्री माणिकचंदजी जैन, उपजिलाधीश, सीकर (राजस्थान)

देश आज मानवता से विमुख होता आ रहा है, उसे सत्प्रेरणा के प्रकाश की अत्यन्त आवश्यकता है, ऐसी परिस्थिति मे पूज्य १०५ श्री क्षुल्लकजी महाराज द्वारा लिखित मानव-मार्ग-दर्शन सरीखे ग्रंथ-रचना से राष्ट्र मे एक समुज्जवल ज्योति का प्रकाश सिद्ध होगा ऐसा मेरा विश्वास है।

डॉ० किशनचंद्रजी जैन, चेस्टफीजिशियन, सीकर (राज०)

आज का मानव सदाचार से भटककर धर्म मर्यादाओं का उल्लंघन करके पतन के गहरेगर्त के सन्मुख होता आ रहा है, ऐसी हालत में क्षुल्लकजी महाराज द्वारा रचित 'मानव-मार्ग-दर्शन' ग्रंथ प्राणियों को सदाचारोन्मुख करने की पूर्ण क्षमता रखता है, इस ग्रंथ में प्राणीमात्र के हितार्थ समुचित प्रकाश डाला गया है ।

श्री लादुरामजी जोशी मुण्डवाड़ा
जिला कांग्रेस अध्यक्ष, सीकर

पूज्य श्री क्षुल्लकजी सिद्धसागरजी महाराज द्वारा विरचित मानव-मार्ग-दर्शन के तीनो भागो का मैने अध्ययन किया। वास्तव मे इनका अध्ययन मानव मात्र को उच्च सफलता प्राप्त करने में पूर्णतया सहायक है।

महाराज के द्वारा संग्रहीत स्वास्थ्य बोधामृत तो गागर में सागर के समान है जिसके प्रयोग देहात से लेकर नगरवासियो तक उचित समय पर पूर्ण सिद्धि देने वाला होगा ऐसा मेरा विश्वास है।

श्री मोहनलालजी जैन एस. डी. ओ. साहब
फलोदी

मानव-मार्ग-दर्शन ग्रथ 'यथा नाम तथा गुण है' सपूर्ण मानव-जाति के हित के लिये इस ग्रथ मे अनेक समस्याओ का समाधान करके मानवोचित गुणो पर प्रकाश डाला गया है।

सम्मति-पत्र

पूज्य श्री व्याख्यान वाचस्पति, धर्म दिवाकर क्षुल्लक श्री सिद्ध-सागरजी महाराज द्वारा रचित मानव मार्ग-दर्शन के तीनो भागो मे ही मानव के जीवन दर्शन पर अनुपम विचारो का अद्भुत सकलन है। इन ग्रथो मे प्रस्तुत किये गये सुझाव, मानव-जीवन के उत्थान के लिये प्रकाश स्तम्भ के समान हैं। यदि इनका आंशिक रूप से भी पालन किया जाय, तो व्यक्ति अपने जीवन मे सफलता प्राप्त करते हुए राष्ट्र का आदर्श नागरिक सिद्ध हो सकता है। आपकी रचनाओ मे पवित्रता, गहरा

अध्ययन तथा तत्त्व चिंतन परिलक्षित होते हैं। वास्तव में इन ग्रंथ-रत्नों से जैन, अजैन सभी लाभ उठा सकते हैं।

इसके अलावा प्रस्तुत "स्वास्थ्य-बोधामृत" ग्रंथ में आपने जनहित-कारिणी भावना से पूर्वाचार्यों के रचित ग्रथों से औषध प्रयोगो का सकलन करके आदर्श उपस्थित कर दिया। इन प्रयोगो से रोगीजनो का रोग विमोचन हो सकेगा तथा आसानी से प्राप्त होने वाली औषधियों से साधारण लोग भी प्रभावित होगे, आज देश में आधुनिक औषधियां इतनी महंगी और दुर्लभता से प्राप्त होती हैं कि सामान्य लोग आरोग्य लाभ करने से वंचित रह जाते हैं, परन्तु प्रस्तुत प्रयोगो से सभी जन लाभ उठा सकेंगे। हमारा दृढ विश्वास है कि आपके सुप्रयत्नो से संसार के प्राणियो का बहुत बडा हित होगा तथा आपके सग्रहीत औषध रत्नो से अनेकानेक जीवो को स्वास्थ्य लाभ होगा। वस्तुत सतजनो के शुभाशीर्वाद से ही व्यक्ति को शाति मिल सकती है तो फिर भला उन महापुरुषो के बताये हुए परोपकारमय सिद्ध प्रयोगो से अवश्य ही सिद्धि होगी, अर्थात् प्राणियो का हित होगा। इस ग्रथ में लिखी हुई चिकित्साओ को हमने गहरा अध्ययन करके देखा तो मालूम हुआ कि यह ग्रथ प्राणी मात्र के हित मे सहायक सिद्ध होगा, क्योंकि इसमे अनुपम औषधरत्नो का सग्रह है। हम परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि श्री क्षुल्लकजी महाराज का स्वास्थ्य एव धर्म उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होवे और इसी प्रकार प्राणियो का हित करते रहे।

श्रीमान् वैद्यराज श्री शंकरलालजी शर्मा, प्रिंसिपल आयुर्वेद		महाविद्यालय सीकर,
" "	श्री यतीन्द्रकुमारजी जैन आयुर्वेदाचार्य	आगरा
" "	" महेन्द्रकुमारजी जैन	पचेवर
" "	" रामपालजी शर्मा	.कुचामन
" "	" मदनलालजी शर्मा	सुजानगढ़

श्रीमान् वैद्यराज श्री प्रहलादरायजी शर्मा				सीकर
,,	,,	,,	भवानीशंकरजी जोशी	सीकर
,,	,,	,,	वासुदेवजी मिश्र शास्त्री	मुण्डवाड़ा (सीक
,,	,,	,,	मदनकुमारजी जैन	उनियारा (राज
,,	,,	,,	हुकमीचन्दजी जैन शास्त्री	आगरा
,,	,,	,,	मदनलालजी शर्मा	सीकर
,,	,,	,,	गौरीशंकरजी शर्मा	पाथवा (राज
,,	,,	,,	रामजीवणजी स्वामी	कोछोर (सीक
,,	,,	,,	इन्द्रमणिजी शर्मा	दाता (सीक
,,	,,	,,	मोहनलालजी शर्मा	लाडनू

॥ इति ॥

